हैंस एण्डरसन की कहानियाँ

भाग दो



सुप्रसिद्ध कहानियों के लेखक और महान बाल साहित्यकार **हैंस क्रिश्चियन एण्डरसन** (जन्म 2 अप्रैल 1805, निधन 4 अगस्त 1875) के पिता जूते बनाने का काम करते थे तो माँ कपड़े धोने का। परीलोक का यह महानायक बचपन में अपने छोटे-से घर में अपनी नन्ही दुनिया को इस रूप में पाता था—"जूते बनाने की बेंच, बिस्तरों और मेरे सोने की बेंच से ही मेरा वह कमरा भर जाता...उसकी सुन्दर दीवारें खूबसूरत चित्रों से सजी हुई थीं...उसकी आलमारियों में सुन्दर प्याले, गिलास और सजावटी सामान रखे रहते थे...पास ही एक खिड़की और दिलचस्प कहानियों और सुन्दर गीतों की किताबों से भरी एक आलमारी थी...दरवाज़े पर बने चित्रों को देखकर मुझे यही लगता जैसे मैं किसी आर्ट गैलरी में हूँ।"...अपनी आरंभिक कहानियों के प्रकाशन के बाद हैंस एण्डरसन की मौलिकता, उनकी अभिनव कल्पना और कथाकथन की अद्‌भुत तैयारी ने उन्हें बाल कथा साहित्य की दुनिया का सबसे बड़ा हस्ताक्षर बना दिया।

सत्तर साल की उम्र में उनके जिगर में कैंसर हो जाने के बाद भी **हैंस एण्डरसन** बहुत प्रसन्न और जीवन के प्रति आशावान बने रहे। 2 अप्रैल 1875 को उन्होंने अपना जन्म दिवस धूमधाम से मनाया था। किन्तु 4 अगस्त 1875 को वह अचानक ही चल बसे। मृत्यु के समय उनके पास उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उनके शव के पास डेनमार्क के तत्कालीन राजा और रानी तथा उनके बहुत-से दरबारी उपस्थित थे। उनके शोक में कोई एक परिवार नहीं बल्कि पूरा डेनमार्क रोया था।

इन कहानियों के माध्यम से उन्होंने मानवता, सच्चाई, भाईचारा और ईमानदारी जैसे शाश्वत मूल्यों की वकालत की और 'उपदेशक' होने से बचते रहे। इन्हीं मानवीय गुणों, सहज सौन्दर्य बोध तथा मानवीय संबंधों की पवित्रता के कारण पिछली डेढ़-दो शताब्दी में उनकी कहानियों के विश्व की सौ से अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं—जो उनकी अपार लोकप्रियता के प्रमाण हैं।

इस संचयन में **हैंस एण्डरसन** की श्रेष्ठ कहानियाँ (दो भागों में) प्रस्तुत हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा इस प्रकाशन आयोजन का भारतीय बाल साहित्य संसार द्वारा अवश्य ही स्वागत होगा।

चित्र : सुरेन्द्रपाल सिंह (भाग दो)



अस्त्र पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ—रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं, इसे नीचे बैठा लिपिक लिपिबद्ध कर रहा है। भारत में लेखन-कला का सम्भवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख।

नागार्जुन कोण्डा, दूसरी सदी ई.
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

हैंस एण्डरसन की कहानियाँ

भाग दो

कथा-प्रस्तुति
हरिकृष्ण देवसरे

साहित्य अकादेमी

Hans Anderson Ki Kahaniyan (Vol II) : Hindi translation by Harikrishna Devsare of Hans Anderson's Stories for children, Sahitya Akademi, New Delhi (2008) Rs.145

प्रथम संस्करण : 1999
पुनर्मुद्रण : 2008

साहित्य अकादेमी
मुख्य कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति' मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110 001

बेबसाइट: www.sahitya-akademi.gov.in
ई-मेल: sahityaakademisales@vsnl.net

क्षेत्रीय कार्यालय
जीवन तारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23ए/44एक्स, डायमंड हार्बर मार्ग, कोलकाता-700 053

172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400 014

सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी.आर. आंबेडकर वीथी, बंगलौर-560 001

चेन्नई कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई-600 018

ISBN 81-260-0505-X

मूल्य : एक सौ पैंतालीस रुपए

मुद्रक : वेलविश प्रिण्टर्स, दिल्ली

भूमिका

[भाग दो की]

हैंस एण्डरसन की कहानियों का पहला खण्ड पढ़ने के बाद पाठकों को यह अहसास हो चुका होगा कि उनकी कहानियाँ केवल श्रेष्ठ बाल साहित्य ही नहीं हैं, बल्कि उनकी समग्रता में मानवीय उदारता का ऐसा सार्थक भाव अन्तर्निहित है, जिसे बाल पाठकों को निस्सन्देह ग्रहण करना चाहिए। एण्डरसन की कहानियों के इस खण्ड में कुछ ऐसी ही कहानियाँ संकलित हैं, जिनमें कोमल मनोभावों को तो लेखक ने छुआ ही है, उसने उस शाश्वत सत्य से भी बाल पाठकों को परिचित कराया है—जिसे हम वयस्क लोग प्रायः बाल-साहित्य की परिधि से बाहर निकाल देते हैं। हाँ, यह अवश्य रेखांकित करना होगा कि ये कहानियाँ बड़ी उम्र के बच्चों के लिए ही पठनीय हैं। स्वयं एण्डरसन तथा उनके साहित्य-समीक्षकों ने भी प्रयोग और परीक्षण के बाद इस तथ्य की पुष्टि की है। मे हिल आर्बुथनॉट के अनुसार—"एण्डरसन की ये कहानियाँ बच्चों को एक-साथ पढ़ने के लिए न दें। चौथी कक्षा के पाठकों को एक या दो कहानियाँ ही दें। फिर पाँचवीं कक्षा के पाठकों को दो-तीन और छठवीं के पाठकों को तीन-चार या ज़्यादा भी दे सकते हैं। बच्चों को ये कहानियाँ पढ़ाने के बाद अनुभव किया गया है कि इनमें व्यक्त जीवन-दर्शन की अनेकार्थता, बच्चों को गंभीर और चिन्तनशील बना देती है और वे उसे गहराई से समझने के लिए माता-पिता से ऐसे प्रश्न पूछते हैं—जिनका उत्तर दे पाना या कोमलबाल-बुद्धि को समझा पाना कठिन होता है। हाँ, बड़ी उम्र के बच्चे, जो इन कहानियों को पढ़कर आनंद ले सकते हैं— उन्हें अवश्य ही ये कहानियाँ पढ़ने दें। ऐसे बहुत-से बच्चे भी होंगे, जो औरों की तुलना में इन कहानियों को बड़ी रुचि से पढ़ना पसंद करेंगे।"

इस खण्ड की कई कहानियों में नीतिपरक तथा धार्मिक विश्वासों-सम्बन्धी बातों को भी व्यक्त किया गया है जैसे—दया, सहिष्णुता, ईमानदारी, सच्चाई और ईश्वर में विश्वास। किन्तु ये विचार एण्डरसन ने अपनी कहानियों में इतने अप्रच्छन्न एवं सहज रूप से समाहित किए हैं कि वे किसी एक देश, धर्म या समाज के लिए सीमित नहीं हैं, बल्कि वे पूरे विश्व-समुदाय के लिए हैं। यह कुछ ऐसा ही है, जैसे चमकता हुआ सूर्य विश्व की हर वस्तु को बड़ी सहजता और समानता के साथ प्रकाश और ऊष्मा प्रदान करता है।

इस खण्ड की कई कहानियों में एण्डरसन को क्रूरता, गहरी वेदना, यहाँ तक कि मृत्यु को भी दिखाने में कोई भय या संकोच अनुभव नहीं हुआ, क्योंकि उन्होंने इन बातों को इतनी सावधानी और कोमलता के साथ प्रस्तुत किया है कि बच्चे उनका मर्म समझकर भी आहत नहीं होते।

एण्डरसन के इसी लेखन-कौशल पर प्रसिद्ध समालोचक पॉल हेज़ार्ड ने लिखा—"यह जीवन की सच्चाई ही है, जो इन कहानियों को गहन गुणवत्ता प्रदान करती है।

कहानियों की इसी गुणवत्ता से आनंदातिरेक की वह स्थिति उत्पन्न होती है, जो अपने पाठकों की आत्मा को आप्लावित कर लेती है। अन्ततः इसी गुणवत्ता से बाल पाठकों में शांति का श्रेष्ठ रूप जन्म लेता है। विशेष बात तो यह है कि बच्चे इन कहानियों को पढ़कर भ्रमित नहीं होते। वे इन सुन्दर कहानियों को पढ़कर न केवल आनन्दानुभूति प्राप्त करते हैं, बल्कि विश्व में अपने 'अस्तित्व' के होने और अपने महान् दायित्वों को पूरा करने जैसे शाश्वत सत्यों से भी परिचित होते हैं। वे भ्रमित होकर अपने चारों ओर और अपने अन्दर की बुराइयों को अनुभव तो करते हैं, लेकिन यह जीवंत वेदना क्षणिक होती है और वह उनकी शांति भंग नहीं करती। उनका तो मिशन होता है—विश्व में आशा और विश्वास को पुनर्स्थापना।"

इस खण्ड की कई कहानियों में निष्प्राण-वस्तुएँ, प्राणवान होकर सुन्दर कथा-संसार रचती हैं। यह मौलिक प्रयोग एण्डरसन ने ही शुरू किया था। 'रफ़ू की सुई', 'क़लम और दावात', 'देवदार का पेड़', 'कुत्ते वाली गुल्लक' 'चाँदी का सिक्का' ऐसी ही कहानियाँ हैं। एण्डरसन की इस कथा-शैली को परवर्ती बाल-कथा लेखकों ने भी अपनाया। 'अपनी जड़ों से उखड़ जाने पर हम कहीं के नहीं रहते'—जैसा संदेश देती हैं—'चाँदी का सिक्का', 'देवदार का पेड़' कहानियाँ; तो 'अहंकार' से बचने की प्रत्यक्ष सीख देती हैं—'दड़बे का मुर्ग़ा और हवाई मुर्ग़ा', 'रफ़ू की सुई', 'क़लम दावात', 'कुत्ते वाली गुल्लक' और 'एन लिस्बेथ' कहानियाँ। 'दुनिया का सबसे सुंदर गुलाब', 'देवदूत' 'दो भाई', 'एक माँ की कहानी' ईश्वर की सत्ता, जीवन के सत्यों और मानवीय गुणों की व्याख्या करते हुए, बाल पाठक के कोमल मन को स्पर्श करके भी उसे आहत नहीं होने देतीं। 'बर्फ़ की रानी की सात कहानियाँ'—एक छोटी उपन्यासिका-जैसी है। इसे कई समालोचकों ने एण्डरसन की श्रेष्ठतम कहानी माना हैं। इस कहानी में जहाँ संतुलित प्रतीकात्मकता के दर्शन होते हैं, वहीं इसमें एक अनोखे स्वप्निल सौंदर्य-जगत की रोमांचक साहस-यात्रा का आनंद भी मिलता है। हर क्षण यह उत्सुकता बनी रहती है कि जेर्डा अपने मिशन में सफल होगी या नहीं। वह जब केय से मिलती है और केय उससे अच्छा व्यवहार नहीं करता है, तो भी वह हिम्मत नहीं हारती है। अन्य परीकथाओं की तरह यह कहानी भी यथार्थ से आरंभ होती है और फिर कल्पना-लोक में ले जाती है। इस कहानी में आए सभी चरित्रों को एण्डरसन ने बड़ी सावधानी से निर्मित और चित्रित किया है।

इस खण्ड में कुछ ऐसी कहानियाँ भी हैं, जिन्हें लोककथाओं को आधार बनाकर लिखा गया है— जैसे 'चक़मक़ डिबिया', 'बूढ़ा आदमीः हमेशा सही', 'समुद्र कन्या'। इन कहानियों के पुनर्लेखन में एण्डरसन ने कई मौलिक परिवर्तन करके उनकी संवेदनशीलता, रोचकता, चरित्र की विशेषता और पठनीयता को बढ़ाया है।

एण्डरसन की सभी कहानियाँ, सभी आयुवर्ग के बच्चों के लिए नहीं हैं। कुछ कहानियाँ छोटे बच्चों को आनंद देनेवाली हैं तो कुछ बड़ी उम्र के बच्चों को। कहानी का आनंद हर बच्चे की अपनी रुचि पर भी निर्भर करता है और उसमें आयु बाधक नहीं बनती। इसीलिए ये कहानियाँ अपनी रोचकता, कल्पना-लोक की सशक्त संरचना, फिर भी यथार्थ से निकटता जैसे गुणों के कारण, हर समय में छोटे-बड़े बच्चों के साथ, बालमन वाले वयस्कों-द्वारा भी पढ़ी गयी हैं और पढ़ी जाती रहेंगी।

— हरिकृष्ण देवसरे

क्रम

1

चक़मक़ डिबिया

चौड़े रास्ते पर एक सिपाही मार्च करता जा रहा था—एक-दो...। उसकी पीठ पर उसका थैला और बग़ल में तलवार थी। वह युद्ध से वापस आकर अपने घर जा रहा था। रास्ते में उसे एक डायन मिली। वह बहुत भयावह थी। उसका निचला होंठ उसकी छाती तक लटक रहा था। उसने सिपाही का अभिवादन किया और कहा, "तुम्हारी तलवार कितनी अच्छी है और तुम्हारा थैला कितना बड़ा है। तुम एक अच्छे सिपाही हो ! तुम्हारे पास तो धन भी काफ़ी होगा, क्योंकि तुमने काफ़ी कमाया होगा।"

"धन्यवाद बूढ़ी डायन !" सिपाही ने कहा।

"क्या तुम ये विशाल पेड़ देख रहे हो ?" डायन ने पास के एक पेड़ की ओर इशारा किया। "यह भीतर से खोखला है। तुम इस पर चढ़ोगे तो तुम्हें एक छेद दिखाई देगा। उसमें उतरकर तुम पेड़ के भीतर जा सकते हो। मैं तुम्हारी कमर में एक रस्सी बाँध दूँगी और जब तुम मुझे आवाज़ दोगे, मैं तुम्हें वापस बाहर खींच लूँगी।"

"मैं पेड़ के भीतर जाकर क्या करूँगा ?" सिपाही ने पूछा।

"धन मिलेगा।" डायन ने कहा, "मेरी बात सुनो। जब तुम पेड़ के भीतर उतरोगे तुम्हें एक विशाल कमरा मिलेगा। उसमें बहुत रोशनी होगी, क्योंकि वहाँ तीन सौ से भी अधिक दीपक जल रहे हैं। फिर तुम्हें तीन दरवाज़े दिखाई देंगे। उन्हें तुम खोल सकते हो क्योंकि इनकी चाबियाँ वहीं लटक रही हैं। पहले कमरे में जाने पर तुम्हें ज़मीन पर रखी एक बड़ी तिजोरी दिखाई देगी। इस तिजोरी पर एक कुत्ता बैठा होगा जिसकी आँखें चाय के प्याले जितनी बड़ी होंगी। लेकिन तुम परवाह मत करना। मैं तुम्हें अपना नीला चौखानेदार एप्रन दूँगी जिसे तुम फ़र्श पर बिछा देना। इसके बाद कुत्ते को जल्दी से लाकर उस पर बिठा देना



और तिजोरी खोलकर जितने चाहो उतने सिक्के निकाल लेना। ये सिक्के ताँबे के होंगे। यदि तुम चाँदी के सिक्के चाहते हो तो तुम्हें दूसरे कमरे में जाना होगा। लेकिन वहाँ जो कुत्ता बैठा होगा उसकी आँखें गाड़ी के पहिये जितनी बड़ी होंगी। तुम उसकी भी परवाह मत करना ! उसे मेरे एप्रन पर बिठाकर कुछ पैसे ले लेना। यदि तुम्हें सोना चाहिए तो वह भी तुम्हें मिल सकता है—बल्कि जितना चाहो उतना मिल सकता है। तुम्हें इसके लिए तीसरे कमरे में जाना होगा। लेकिन यहाँ तिजोरी पर बैठे कुत्ते की आँखें बड़े गोल गुम्बद जैसी बड़ी होंगी। वह बहुत

ही ख़ूँख़ार कुत्ता है। लेकिन तुम घबराना नहीं। उसे भी मेरे एप्रन पर बिठा देना। वह तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचाएगा। इसके बाद तिजोरी में से जितना सोना चाहो निकाल लेना।

"यह बुरा नहीं है। लेकिन मुझे तुम्हें बदले में क्या देना होगा क्योंकि मुझे मालूम है तुम यह सब मेरे लिए यूँ ही नहीं कर रहीं।" सिपाही ने कहा।

"नहीं, मुझे एक भी सिक्का नहीं चाहिए। तुम मेरे लिए केवल वह पुरानी चक़मक़ डिबिया ले आना जो मेरी दादी एक बार नीचे भूल आयी थी।" डायन ने कहा।

सिपाही चिल्लाया, "तो फिर मेरी क़मर में रस्सी बाँध दो।"

"यह बाँध दी, और यह रहा मेरा नीला चौख़ानेदार एप्रन", डायन बोली।

इसके बाद सिपाही पेड़ पर चढ़कर छेद में उतर गया और तीन सौ से अधिक दीपों से जगमगाते बड़े कमरे में पहुँच गया।

उसने पहला दरवाज़ा खोला। उफ ! वह चाय के प्याले जैसी बड़ी आँखों वाला कुत्ता तिजोरी पर बैठा उसे घूर रहा था। "तुम बहुत भले हो," सिपाही ने कहा और कुत्ते को डायन के एप्रन पर बिठाकर जेबों में ढेर-से ताँबे के सिक्के भर लिए। उसके बाद उसने तिजोरी को ताला लगाया, कुत्ते को उस पर वापस बिठाया और दूसरे कमरे में चला गया। आहा ! यहाँ गाड़ी के पहियों जितनी बड़ी आँखों वाला कुत्ता बैठा था।

"तुम्हें, मुझे इस बुरी तरह नहीं घूरना चाहिए। तुम्हारी आँखें थक जायेंगी।" सिपाही ने कहा और कुत्ते को डायन के एप्रन पर बिठा दिया। जब उसने तिजोरी में चाँदी के सिक्के देखे तो उसने अपनी जेबों से सारे ताँबे के सिक्के निकाल फेंके और अपनी जेबों और थैले में सारे चाँदी के सिक्के भर लिए। उसके बाद वह तीसरे कमरे में गया। ओह ! वह सचमुच बहुत भयानक था। यहाँ बैठे कुत्ते की आँखें सचमुच बड़े गोल गुम्बद जैसी थीं, जो लगातार गोल-गोल घूम रही थीं।

"नमस्कार !" सिपाही ने कहा और उसे ध्यान से देखा। उसके बाद उसने उसे एप्रन पर बिठा दिया और तिजोरी खोली। बाप रे ! वहाँ तो ढेर-सा सोना था। वह इससे पूरा शहर ख़रीद सकता था। केक बनाने वाली औरत की पूरी दुकान, टीन के सभी सिपाही, कोड़े और घोड़े भी। सचमुच, यह बहुत सारा धन था। अब सिपाही ने अपनी जेबों और थैले से सारे चाँदी के सिक्के निकाल फेंके। और अपनी जेबों, थैले, जूतों और टोपी में सोने के सिक्के भर लिये। अब उसके लिए चलना भी मुश्किल था। अब उसके पास अपार धन था। उसने कुत्ते को वापस तिजोरी पर बिठाया, दरवाज़ा बन्द किया और ऊपर आवाज़ दी, "अब

मुझे ऊपर खींच लो बूढ़ी डायन।"

"क्या तुमने चक़मक़-डिबिया ले ली है?" डायन ने पूछा।

"सत्यानाश !" सिपाही चिल्लाया। "मैं तो बिल्कुल ही भूल गया।" और वह जाकर "चक़मक़ डिबिया" ले आया।

डायन ने उसे ऊपर खींच लिया और वह अपनी जेबों, थैले, जूतों में सोना भरे फिर से चौड़ी सड़क पर खड़ा था।

"तुम चक़मक़ डिबिया का क्या करोगी ?" सिपाही ने पूछा।

"यह तुम्हारे मतलब की बात नहीं है।" डायन ने जवाब दिया। "तुम्हें पैसा मिल गया है—मुझे मेरी चक़मक़ डिबिया दे दो।"

"बेवकूफ़, मुझे सीधे-सीधे बताओ कि तुम इस डिबिया से क्या करोगी ? नहीं तो मैं तलवार से तुम्हारा सिर काट दूँगा।" सिपाही बोला।

"नहीं।" डायन चिल्लाई।

और सिपाही ने उसका सिर काट दिया। वह वहीं गिर गयी। सिपाही ने उसके एप्रन में सारा धन बाँधा और एक पोटली जैसा उसे लटका लिया। चक़मक़ डिबिया को जेब में डाला और सीधा शहर की ओर चल पड़ा।

यह शहर अद्‌भुत था। वह सबसे अच्छी सराय में गया, सबसे अच्छे कमरे में ठहरा और अपना मनपसन्द खाना खाया। अब वह अमीर था, उसके पास बहुत सारा धन था। जो नौकर उसके जूते साफ़ करता था, उसके हिसाब से सिपाही के जूते बहुत पुराने हो चुके थे, लेकिन अभी तक उसने नये जूते नहीं ख़रीदे थे। अगले दिन उसने अच्छे जूते और कपड़े ख़रीदे। अब हमारा सिपाही एक सभ्य आदमी बन गया था। लोगों ने उसे शहर की सभी सुन्दर चीज़ों के बारे में बताया—राजा के बारे में भी और उसकी सुन्दर बेटी के बारे में भी।

"उसे कैसे देखा जा सकता है?" सिपाही ने पूछा।

"उसे नहीं देखा जा सकता।" सबने कहा। "वह एक विशाल ताँबे के महल में रहती है, जिसके आसपास ढेर-सी दीवारें और मीनारें हैं। राजा को छोड़कर वहाँ भीतर कोई भी नहीं जा सकता, क्योंकि उसके बारे में यह भविष्यवाणी की गयी है कि वह किसी साधारण सिपाही से शादी करेगी और राजा यह सहन नहीं कर सकता।"

"मैं उसे देखना चाहूँगा।" सिपाही ने सोचा। लेकिन वह ऐसा कर नहीं पाया।

अब वह बड़े ठाट-बाट से रहने लगा। नाटक देखने जाता। राजा के बाग़ में घूमता और ग़रीबों को बहुत-से पैसे दान में देता। वह इस बात को समझता

था कि पैसों के बिना आज के कठिन समय में जीना कैसा होता है। अब वह अमीर था, उसके पास उत्तम कपड़े थे। वह रोज़ पैसे ख़र्च करता था और कमाता कुछ भी नहीं था इसलिए उसके पास अन्त में केवल दो सिक्के बचे। उसे अपना वह सुन्दर कमरा छोड़कर एक दुछत्ती में रहने आना पड़ा।, अपने जूते खुद साफ़ करने पड़े और उनकी मरम्मत भी ख़ुद ही करनी पड़ी। उसके कोई भी मित्र उससे मिलने नहीं आते क्योंकि उसके घर बहुत-सी सीढ़ियाँ चढ़कर आना पड़ता था।

एक शाम बहुत अँधेरा था और उसके पास मोमबत्ती ख़रीदने के पैसे भी नहीं थे। उसी समय उसे ध्यान आया कि वह जो चक़मक़–डिबिया डायन की सहायता से पेड़ के भीतर से लाया था–उसमें एक मोमबत्ती का टुकड़ा भी है। लेकिन जैसे ही उसने मोमबत्ती जलाई, चक़मक़ डिबिया से चिन्गारियाँ निकलीं और दरवाज़ा खुल गया। दरवाज़े से चाय के प्याले जैसी बड़ी आँखों वाला कुत्ता, जो उसे पेड़ के भीतर मिला था, कमरे में आया और पास खड़ा होकर बोला, "मालिक का क्या आदेश है ?"

"यह क्या है ?" सिपाही ने कहा, "क्या यही प्रसिद्ध चक़मक़-डिबिया है। तो क्या मैं जो चाहूँ वह मुझे मिल सकता है? तो मुझे कुछ धन दो।" उसने कुत्ते से कहा और कुत्ता तुरन्त गया और पैसों से भरा एक बड़ा थैला अपने मुँह में दबाये तुरन्त वापस आ गया।

अब सिपाही को चक़मक़ डिबिया का गुण पता चला। यदि वह इसे एक बार रगड़ता तो ताँबे की तिजोरी के ऊपर बैठा कुत्ता आता। दो बार रगड़ने पर चाँदी की तिजोरी वाला कुत्ता और तीन बार रगड़ने पर सोने की तिजोरी वाला कुत्ता आता है। सिपाही अब वापस अच्छे घर में चला गया और फिर से अच्छे कपड़े पहनने लगा। उसके सभी दोस्त फिर से उससे मिलने आने लगे और उसका ध्यान रखने लगे।

एक बार उसने सोचा, "यह बहुत अजीब है कि कोई भी राजकुमारी को नहीं देख सकता। सभी कहते हैं कि वह बहुत सुंदर है लेकिन यदि वह बहुत सारी मीनारों वाले ताँबे के बड़े क़िले में ही बैठी रहे तो उसका क्या फ़ायदा? क्या मैं उसे कभी नहीं देख सकूँगा? मेरी चक़मक़-डिबिया कहाँ है ?" और उसने चक़मक़-डिबिया को रगड़ा और चाय के प्याले जैसी आँखों वाला कुत्ता सामने आ गया।

"बहुत रात हो गयी है, लेकिन फिर भी मैं एक क्षण के लिए ही सही, राजकुमारी को देखना चाहता हूँ।" सिपाही बोला।

कुत्ता तुरन्त दरवाज़े से बाहर चला गया। इससे पहले कि सिपाही कुछ सोच पाता, वह राजकुमारी को लेकर हाज़िर था। वह कुत्ते के ऊपर बैठी सो रही थी। वह साफ़ देख रहा था कि वह राजकुमारी है क्योंकि वह बहुत सुन्दर थी। सिपाही उसे चूमने से अपने आपको रोक नहीं पाया। तभी कुत्ता राजकुमारी को लेकर वापस लौट गया। लेकिन जब अगली सुबह राजा और रानी चाय पी रहे थे, राजकुमारी ने उन्हें अपने सपने के बारे में बताया जिसमें उसने देखा कि वह कुत्ते पर बैठी है और एक सिपाही उसे चूम रहा है।

"हम इसके बारे में पता करेंगे।" रानी ने कहा। इसके लिए राजदरबार की एक बूढ़ी स्त्री को रात भर राजकुमारी के बिस्तर के पास बिठाया गया, जिससे कि वह पता लगा सके कि वह सपना ही था या कुछ और।

सिपाही को अगली रात फिर राजकुमारी को देखने की तीव्र इच्छा हुई, कुत्ता फिर आया और तेज़ी से दौड़ता हुआ राजकुमारी को ले गया। लेकिन वह बूढ़ी स्त्री भी हवा की तेज़ी से उसके पीछे भागी। जब उसने देखा कि वे दोनों एक बड़े मकान में घुस रहे हैं तो उसने सोचा कि अब मुझे पता चल गया कि वह कहाँ है। और उसने खड़िया के एक टुकड़े से उस घर के दरवाज़े पर एक बड़े क्रॉस का निशान बना दिया। उसके बाद वह घर गयी और लेट गयी। कुत्ता राजकुमारी को लेकर वापस आ गया। लेकिन जब उसने सिपाही के घर के सामने क्रॉस को देखा तो उसने चॉक उठाई और शहर के सारे घरों के आगे वैसे ही क्रॉस बना दिये। यह उसने बहुत सफ़ाई से किया था। इसलिए वह स्त्री अब सिपाही का घर अलग से नहीं पहचान सकती थी।

सुबह-सुबह राजा और रानी बूढ़ी स्त्री और दूसरे राजदरबारियों को लेकर यह देखने आये कि राजकुमारी कहाँ गयी थी। "यही है वह" राजा ने कहा जब उसने क्रॉस लगा पहला दरवाज़ा देखा।" नहीं, वह वहाँ है।" रानी ने एक दूसरा दरवाज़ा दिखाया, जिसपर भी क्रॉस लगा था। लेकिन सभी को कोई न कोई क्रॉस दिखा क्योंकि सभी दरवाज़ों पर क्रॉस लगा था। अब उन्हें लगा कि ढूँढ़ने से कोई फ़ायदा नहीं है। लेकिन रानी बहुत ही चतुर स्त्री थी, जो कि सिर्फ़ बग्घी में बैठकर घूमने के अलावा भी बहुत कुछ कर सकती थी। उसने अपनी पुरानी कैंची निकाली, रेशम का टुकड़ा काटा और उससे एक छोटी-सी थैली बनाई इस थैली में उसने आटा भरा और राजकुमारी की पीठ पर बाँध दिया। इसके बाद उसने थैली में एक छेद कर दिया, जिससे राजकुमारी जहाँ भी जाये आटा गिरता जाये।

रात में कुत्ता फिर आया और राजकुमारी को अपनी पीठ पर बिठाकर सिपाही के पास ले गया, जो उसे बहुत प्यार करता था। उसे राजकुमार होने की इच्छा थी, जिससे वह उसे अपनी पत्नी बना सके। कुत्ते को महल से सिपाही के घर तक राजकुमारी की पीठ पर बँधी थैली से गिरने वाले आटे का पता ही नहीं चला। सुबह उठकर राजा और रानी ने देखा कि उनकी बेटी कहाँ गयी थी। उन्होंने सिपाही को पकड़वाया और जेल में डाल दिया।

उसे जहाँ रखा गया वहाँ अँधेरा और तकलीफ़देह माहौल था। उन्होंने उसे कहा कि कल सुबह उसे फाँसी हो जायेगी। यह सुनकर उसे अच्छा नहीं लगा, लेकिन वह अपनी चक़मक़-डिबिया सराय में ही छोड़ आया था। अगली सुबह उसने खिड़की की जाली से देखा कि लोग उसे फाँसी देते हुए देखने के लिए कितने उतावले थे। उसने नगाड़ा बजते सुना और सिपाहियों को मार्च करते हुए देखा। इन दौड़ते हुए लोगों के बीच में एक मोची का लड़का था। वह चमड़े का कोट और चप्पलें पहने हुए था। वह इतना उछल-उछल कर चल रहा था कि उसकी एक चप्पल आकर सिपाही की खिड़की के ठीक सामने गिरी।

"हलो, बच्चे ! इतनी जल्दी मत करो।" सिपाही उससे बोला। "यह मेरे बिना शुरू नहीं होगा। लेकिन यदि तुम मेरे घर तक दौड़कर जाओ और मेरी चक़मक़-डिबिया लेकर आओ तो मैं तुम्हें चार सिक्के दूँगा। लेकिन तुम्हें बहुत ही तेज़ी से जाना होगा।"

मोची का लड़का चार सिक्के लेना चाहता था इसलिए वह तेज़ी से गया और चक़मक़-डिबिया ले आया। अब हम देखेंगे कि इसके बाद क्या हुआ।

शहर के बाहर एक बड़ा फाँसी का तख़्ता बना था और उसके चारों ओर बहुत-से सिपाही और हज़ारों लोग खड़े थे। राजा और रानी एक भव्य सिंहासन पर न्यायाधीशों और सम्पूर्ण परिषद् के सामने बैठे थे। सिपाही सीढ़ी पर खड़ा था। जैसे ही उसके गले में फँदा डाला जाने वाला था, उसने कहा कि मृत्यु की सज़ा देने से पहले अपराधी की अन्तिम इच्छा हमेशा पूरी की जाती है। उसे मरने से पहले आख़िरी बार तम्बाकू का पाइप पीने की इच्छा थी। राजा इसके लिए इनकार नहीं करेगा यह सोचकर उसने अपनी चक़मक़-डिबिया निकाली और आग जलाई। एक-दो-तीन और अचानक वहाँ तीनों कुत्ते आ गये। पहला—चाय के प्याले जैसी आँखों वाला, दूसरा—गाड़ी के पहिये जैसी आँखों वाला और तीसरा—गोल गुम्बद जैसी बड़ी आँखों वाला।

"मेरी मदद करो और मुझे फाँसी से बचाओ।" सिपाही ने कहा और कुत्ते न्यायाधीशों और पार्षदों पर कूद पड़े—किसी को पैर से पकड़ा तो किसी को

नाक से और हवा में उछाल दिया कि वे हवा में उछले और नीचे गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गये।

"मुझे छोड़ दो।" राजा चिल्लाया। लेकिन सबसे बड़े कुत्ते ने उसे और रानी को भी उठाकर फेंक दिया। सिपाही डर गये और लोग चिल्लाकर बोले, "सिपाही, तुम हमारे राजा होगे और राजकुमारी से शादी करोगे।"

उन्होंने सिपाही को राजा की बग्घी में बिठाया और तीनों कुत्ते आगे-आगे भागते हुए खुशी से चिल्लाने लगे। बच्चों ने सीटियाँ बजायीं। और सिपाहियों ने सलामी दी। राजकुमारी ताँबे के क़िले से बाहर आयी और रानी बनी। उसे यह बहुत अच्छा लगा। शादी का समारोह एक सप्ताह तक चला। तीनों कुत्ते भी टेबल पर बैठे और पहले से भी बड़ी आँखों से यह सब देखने लगे।

2

चाँदी का सिक्का

एक था चाँदी का सिक्का। वह टकसाल से चमचमाता हुआ ढलकर निकला। उछला, कूदा और खनखनाया, "हुर्रे ! अब मैं इस बड़ी दुनिया में आ गया हूँ।" और सचमुच वह एक बड़ी दुनिया में आ गया था।

एक बच्चे ने उसे अपने मुलायम, गर्म हाथों से पकड़ा, तो कंजूस ने अपनी बण्डी में रखा, लालची ने हथेली में और बूढ़े आदमी ने उसे किसी को देने से पहले बहुत बार अपनी हथेली में उलटा-पलटा। लेकिन एक लापरवाह युवा लड़के ने उसे लापरवाही से ख़र्च किया। सिक्का चाँदी का था और उसमें थोड़ा-सा ही ताँबा मिला था। अब उसे दुनियाँ में आये एक साल हो गया था, दुनियाँ यानी कि उस देश में जिसमें उसे ढाला गया था। लेकिन एक दिन उसने अपनी विदेश यात्राएँ शुरू कीं। उस यात्री मालिक के बटुए में बचा हुआ, उसके अपने देश का वह आख़िरी सिक्का था। उस आदमी को खुद भी उस सिक्के के बारे में नहीं मालूम था, जब तक कि उसने अचानक ही उस सिक्के को नहीं देखा।

"वाह ! मेरे छूटे हुए देश का एक सिक्का अभी भी मेरे पास है।" उसने कहा। "ठीक है, यह मेरे साथ यात्रा कर सकता है।"

और अब सिक्के को वापस बटुए में डाला गया तो वह ख़ुशी से उछल पड़ा। वह बटुए में अजनबी साथियों के साथ पड़ा रहा, जो कि आते-जाते रहते थे और अपने बाद आने वालों के लिए जगह बनाते जाते थे। लेकिन यात्री के अपने देश का सिक्का हमेशा बटुए में ही रहा, यह उस सिक्के के लिए बहुत ही ख़ास बात थी।

कई हफ़्ते बीत गये। सिक्का अभी तक बहुत यात्रा कर चुका था। लेकिन उसे यह पता नहीं होता था कि वह कहाँ है ? उसे केवल दूसरे सिक्कों से ही पता चलता कि वे फ़्रांसीसी या इतालवी हैं। एक कहता—वह इस शहर में था,



दूसरा कहता कि वे इस—इस जगह पर आ गये हैं, लेकिन सिक्के को ये बातें कुछ भी समझ में न आतीं। जो भी अपना सिर थैले के भीतर रखता कुछ भी देख न पाता और यही बात सिक्के के साथ भी हुई। लेकिन एक दिन जब वह बटुए में पड़ा था, उसने देखा कि बटुए का मुँह खुला है। वह सरक कर आसपास की दुनिया देखने के लिए बटुए के मुँह की ओर आ गया। उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था, क्योंकि और लोगों को अक्सर इस ग़लती के लिए दण्ड भरना पड़ता है। लेकिन वह बाहर की दुनिया देखने के लिए उत्सुक था। वह बटुए से निकलकर जेब में गिर पड़ा और जब रात में बटुए को निकाला गया तो सिक्का वहीं जेब में रह गया। अगले दिन कपड़ों के साथ उसे बाहर भेज दिया गया। वहाँ वह कपड़ों के रख-रखाव में वह फ़र्श पर गिर पड़ा। किसी ने उसकी आवाज़ नहीं सुनी। किसी ने उसे नहीं देखा।

अगली सुबह कपड़े वापस आने पर उस यात्री ने उन कपड़ों को निकालकर पहना और यात्रा पर आगे निकल पड़ा। लेकिन सिक्का वहीं पड़ा रह गया। बाद में सिक्का किसी और को मिला, जिसने उसे फिर से चला दिया। इस तरह वह तीन और सिक्कों के साथ फिर बाहर आ गया।

सिक्के ने सोचा, "अपने आसपास की दुनिया को देखना, नये लोगों से मिलना और नये तौर-तरीक़े जानना सचमुच बहुत अच्छा होता है।"

और इसके बाद शुरू होती है सिक्के की कहानी—सिक्के की ही ज़ुबानी—

"उससे दूर रहो, वह ख़राब है, बेकार है।" ये शब्द बार-बार मेरे कानों में पड़ते रहे।" सिक्के ने कहा, "मुझे पता था कि मैं अच्छी तरह खनकता था और मेरी ढलाई में भी कोई गड़बड़ नहीं हुई। हाँ, लोगों से सचमुच ग़लती हुई है। वे मुझे समझे ही नहीं, लेकिन फिर भी उन्होंने मुझे नीचा दिखाया है। मेरे ही बारे में उन्होंने कहा—यह बुरा है, यह अच्छा नहीं है—जिस आदमी के पास भी मैं गया उसने कहा—मुझे रात के अँधेरे में इससे छुटकारा पाना ही पड़ेगा—मुझे रात के अँधेरे में चलाया गया और दिन की रोशनी में बुरा-भला कहा गया।—बुरा है, अच्छा नहीं। हमें इससे जल्दी से जल्दी छुटकारा पाना होगा—सब यही कहते थे।

और जब भी मुझे उसी देश का सिक्का बनाकर चालाकी से चलाया जाता, मैं चलाने वालों के हाथों में काँप उठता था।

"मैं कितना बेकार सिक्का हूँ। यदि सारी चीज़ें, इसी तरह बेकार हो जाती हैं—तो मेरी चाँदी, मेरे मूल्य, मेरे सिक्के के रूप का मेरे लिए क्या महत्त्व है—दुनिया की निगाहों में किसी की भी वही क़ीमत होती है, जो दुनिया तय करती है।

जब मेरे एकदम निर्दोष होने पर मुझे ग़लत कहा जाना इतना ख़राब लगता है तो वास्तव में दुर्भावना रखना और बुरी राह पर चलना तो बहुत ही बुरा होता होगा।

हर बार जब मुझे बाहर निकाला जाता, मैं उन नज़रों की बात सोचकर काँप उठता था, जो मुझे देखेंगी। मैं जानता था कि मुझे वापस कर दिया जायेगा और किसी ठग और धोखेबाज़ की तरह ठुकराकर वापस मेज़ पर पटक दिया जायेगा। एक बार मुझे एक ग़रीब बूढ़ी औरत को उसकी दिन भर की मज़दूरी के बदले दिया गया और वह मुझसे किसी तरह भी छुटकारा नहीं पा सकी। कोई मुझे नहीं लेता था और मैं उस बूढ़ी औरत के लिए एक मुसीबत बन गया था।

"मुझे इस सिक्के से किसी को धोखा देना ही पड़ेगा।" उसने कहा "क्योंकि नेकनीयत होकर मैं इस सिक्के को नहीं चला सकती ! अमीर बेकरी वाला ज़रूर इसे ले लेगा। वह यह नुक़सान भी सह सकता है—लेकिन मेरे लिए यह करना ग़लत ही होगा।"

मैंने सोचा, "मुझे उस बूढ़ी औरत के मन पर बोझ बनना ही पड़ेगा।" "क्या इस उमर में मैं इतना बदल गया हूँ।"

बूढ़ी औरत अमीर बेकरीवाले के पास गयी—लेकिन वह बेकरीवाला भी अच्छी तरह जानता था कि उसे कैसा सिक्का लेना है। उसने मुझे वापस औरत के पास फेंक दिया, जिसे मेरे बदले कोई ब्रेड नहीं मिली। मुझे अपने आपको बहुत शर्म से देखना पड़ा क्योंकि मेरी वजह से किसी को बहुत परेशानी उठानी पड़ी थी। मैं, जो अभी अपनी युवावस्था में था, अपने मूल्य और अपनी सही ढलाई को बड़े गर्व से ध्यान में रखता था। मैं उस बेचारे सिक्के की तरह दयनीय हो गया, जिसे कोई स्वीकार नहीं करेगा । लेकिन वह औरत मुझे वापस अपने घर ले गयी और मुझे अपनेपन और दोस्ती के साथ देखकर बोली—

"नहीं, मैं तुमसे किसी को धोखा नहीं दूँगी, मैं तुममें एक छेद कर दूँगी जिससे सब लोग देख सकें कि तुम असली नहीं हो ! फिर भी मुझे लग रहा है कि यह एक भाग्यशाली सिक्का है। यह बात मुझे इतनी मज़बूती से महसूस हो रही है कि यह ज़रूर सच ही है। मैं इस सिक्के में छेद करके एक धागा डाल दूँगी और अपने पड़ोसी के बेटे के गले में भाग्यशाली सिक्के के रूप में पहना दूँगी।"

"इसलिए उसने मुझमें एक छेद बनाया। अपने आप में छेद करवाना निश्चय ही बहुत अच्छा नहीं है। लेकिन अगर उद्देश्य अच्छा हो तो बहुत सारी चीज़ें सहन

की जा सकती हैं। छेद में एक धागा डाला गया और मैं एक मेडल की तरह बन गया। मुझे बच्चे के गले में डाल दिया गया। बच्चा मुझे देखकर मुस्कुराया। उसने मुझे चूमा और मैं रातभर उसकी गर्म, मासूम गर्दन पर सोता रहा।

जब सुबह हुई तो बच्चे की माँ ने मुझे अपने हाथों में लेकर देखा। उसने मेरे बारे में कुछ सोचा। मैं समझ गया कि उसने क्या सोचा है? बस उसने कैंची उठायी और धागे को काट दिया।

"भाग्यशाली सिक्का !" उसने हँसकर कहा, "हम जल्दी ही देखेंगे कि यह कितना भाग्यशाली है।"

और उसने मुझे सिरके में डाल दिया जिससे मैं हरा-सा हो गया। उसके बाद उसने छेद बन्द कर दिया और शाम के धुँधलके में लॉटरी का टिकट बेचने वाले के पास ले गयी, जिससे वह एक टिकट ख़रीद सके और अपना भाग्य आज़मा सके। मुझे बहुत ही बुरा महसूस हुआ और मेरे भीतर एक तीव्र भावना आयी कि मैं चूर-चूर हो जाऊँ। मैं जानता था कि मुझे झूठा कहकर फेंक दिया जायेगा। मैं उन सिक्कों की भीड़ के सामने पड़ा होऊँगा जो कि अपने रूप में अपने ऊपर की ही लिखावट के लिए गर्व कर रहे होंगे। लेकिन मैं उस बेइज़्ज़ती से बच गया क्योंकि लॉटरी का टिकट बेचने वाले के पास उस समय बहुत भीड़ थी और वह बहुत व्यस्त था। इस तरह मैं लुढ़कता हुआ उसके डिब्बे में दूसरे सिक्कों के बीच पहुँच गया। मुझे नहीं मालूम कि उस टिकट पर कुछ इनाम निकला या नहीं, लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि अगली सुबह मुझे पहचान लिया गया। और फिर से लोगों को धोखा देने के लिए चला दिया गया। यह सहन करना किसी के लिए भी बहुत ही मुश्किल होता है, ख़ासकर तब जबकि उसको मालूम हो कि उसका चरित्र अच्छा है। और मैं अपने चरित्र को अच्छी तरह जानता भी हूँ।

एक साल एक दिन तक मैं घर-घर, हाथ-हाथ भटकता रहा। मुझे हमेशा कोसा जाता रहा। हमेशा मेरा निरादर किया जाता रहा। कोई मुझ पर भरोसा नहीं करता था। मेरा विश्वास दुनिया पर से और अपने आप पर से उठ गया। यह बहुत कठिन समय था। आख़िरकार एक दिन एक अजनबी यात्री आया। मुझे उसको दिया गया अैर उसने सज्जनता से मुझे चलने वाले सिक्के की तरह स्वीकार कर लिया। लेकिन जब फिर उसने मुझे किसी को देना चाहा तो मैंने फिर से वही भयानक बात सुनी, "बेकार झूठा !"

"मैंने इसे अच्छे सिक्के की तरह पाया था।" उसने कहा और मुझे ध्यान से देखा, और अचानक ही उसके चेहरे पर मुस्कान आ गयी। मैंने अपने आपको

देखते हुए किसी के चेहरे पर पहली बार यह भाव देखे थे। "अरे यह क्या है !" उसने कहा। "यह तो मेरे अपने देश का सिक्का है, एक सचमुच का सिक्का, जिसमें किसी ने छेद कर दिया है और लोग इसे झूठा कहते हैं। यह बहुत अजीब बात है। मुझे इसे अपने साथ रखना चाहिए और अपने साथ घर ले जाना चाहिए।"

"मैंने जब उसे अपने बारे में एक अच्छा ईमानदार सिक्का कहते हुए सुना तो मेरे भीतर एक खुशी की लहर दौड़ गयी। अब मैं अपने घर वापस जा रहा था, जहाँ हर कोई मुझे जानेगा और यह मानेगा कि मैं असली चाँदी का ठीक तरह से ढाला गया सिक्का हूँ। मैं बेहद खुशी से चमचमा भी सकता था, लेकिन यह तो मेरा स्वभाव नहीं था। यह तो स्टील का गुण हैं, चाँदी का नहीं।

"मैं एक साफ़, सफ़ेद काग़ज़ में लपेटा गया जिससे कि मैं और सिक्कों में मिल न जाऊँ अैर ख़र्च न हो जाऊँ। त्यौहारों के मौक़े पर जबकि उसके देश के साथी मिलते, मुझे उन्हें दिखाया जाता। वे मेरे बारे में बहुत अच्छी बातें करते और कहते कि मैं बहुत रोचक हूँ। किसी के लिए, बिना एक शब्द बोले, रोचक कहलाया जाना वास्तव में बहुत अच्छा है।

और आख़िरकार मैं वापस घर आ गया। मेरी सारी परेशानियाँ ख़त्म हो गयीं। मेरी ख़ुशी मेरे पास वापस आ गयी, क्योंकि मैं अच्छी चाँदी का बना था ! मेरे ऊपर सही छाप थी और मुझे अब कोई अस्वीकार नहीं करने वाला था; हालाँकि मुझमें एक छेद बना दिया गया था—एक झूठे सिक्के की तरह ! लेकिन जब तक कोई वास्तव में झूठा न हो, इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हरेक को अन्त का इन्तज़ार करना चाहिए। क्योंकि अन्त में सबको न्याय मिलता है, यह मेरा विश्वास है।" सिक्के ने कहा।

3

रफ़ू की सुई

एक समय में एक रफ़ू की सुई थी जो अपने आपको इतना बारीक़ समझती थी कि उसे लगता था कि वह कढ़ाई की सुई है।

"ध्यान रखो और मुझे अच्छी तरह से पकड़ो !" उसने उन उँगलियों से कहा जिन्होंने उसे बाहर निकाला था। "मुझे गिराना मत ! यदि मैं ज़मीन पर गिर गयी, तो फिर मिलूँगी नहीं, क्योंकि मैं बहुत बारीक़ जो हूँ।"

"हो सकता है।" उँगलियों ने कहा और उसे चारों ओर से दबाकर पकड़ लिया। "देखो, मैं एक ट्रेन के साथ आ रही हूँ।" सुई ने कहा और अपने पीछे लम्बा धागा लेकर आयी, लेकिन धागे में गाँठ नहीं थी। उँगलियाँ सुई को बावर्चिन की उन चप्पलों के पास लायीं जिनका ऊपर का चमड़ा फट गया था और उसे ठीक से पहले जैसा सिला जाना था। "यह बहुत गन्दा काम है ।" सुई ने कहा। "मैं इसमें से नहीं निकल सकती। मैं टूट रही हूँ ! मैं टूट रही हूँ ! मैं टूट रही हूँ !" और वह सचमुच टूट गयी ! "क्या मैंने ग़लत कहा था ?" सुई बोली, "मैं बहुत बारीक हूँ।"

"अब यह एकदम बेकार हो गई है।" उँगलियों ने कहा। लेकिन उन्हें उसे उसी तरह पकड़े रहना पड़ा क्योंकि बावर्चिन ने उस पर थोड़ी लाख लगा कर उससे अपना रूमाल अपने सामने की तरफ़ टाँक लिया।

"तो अब मैं एक रूमाल लगाने की सजावटी पिन बन गयी हूँ।" सुई बोली, "मुझे मालूम था कि मेरा आदर किया जायेगा। जब कोई किसी लायक़ होता है तभी उसका आदर होता है।" और वह मन ही मन हँसी–क्योंकि किसी को भी नहीं मालूम कि सुई किस तरह हँस सकती है। वह वहाँ बैठी रही जैसे कि शाही बग्घी में बैठी हो और चारों तरफ़ देखने लगी।

"क्या मैं पूछ सकती हूँ कि क्या तुम सोने की हो?" उसने अपनी पड़ोसी पिन से पूछा ! "तुम बहुत सुन्दर हो और तुम्हारा सिर बहुत ख़ास है लेकिन यह काफ़ी छोटा है। तुम्हें बड़ा होना ही पड़ेगा क्योंकि सबके ऊपर लाख नहीं लगाई जाती।"



यह कहते हुए रफ़ू की सुई गर्व से इतने ज़ोर से उछली कि वह रूमाल से बाहर निकलकर उस चिलमची में गिर पड़ी जिसे बावर्चिन साफ़ कर रही थी।

"अब हम एक यात्रा पर जा रहे हैं।" सुई बोली—"यदि मैं खोई नहीं तो !" लेकिन वह सचमुच खो गयी।

जब वह एक नाले में पड़ी थी, उसे लगा कि मैं इस दुनिया के लिए बहुत छोटी हूँ। लेकिन मैं जानती हूँ कि मैं कौन हूँ और यही एक ख़ास बात है !

इस तरह रफ़ू की सुई ने अपना गर्व बनाए रखा और अपनी हँसी-मज़ाक़ की आदत भी नहीं छोड़ी। उसके ऊपर से तरह-तरह की चीज़ें तैरकर निकल गयीं—घास, टुकड़े और पुराने अख़बारों के टुकड़े।

"देखो वे कैसे तैर रहे हैं !" सुई ने अपने आपसे कहा, "उन्हें नहीं मालूम उनके नीचे क्या है। मैं यहाँ हूँ, मैं यहाँ जमी रहूँगी। देखो एक लकड़ी का टुकड़ा

सिर्फ़ अपने बारे में सोचता हुआ जा रहा है कि मैं एक लकड़ी का टुकड़ा हूँ। अब एक घास का टुकड़ा जा रहा है। वह किस तरह पलट रहा है ! वह किस तरह चक्कर खा रहा है। केवल अपने बारे में मत सोचो। तुम पत्थर से टकरा सकते हो। अब एक अख़बार का टुकड़ा जा रहा है। उस पर जो लिखा था वह तो कब काा धुल चुका है लेकिन अभी भी वह अपने आपको बहुत कुछ समझ रहा है। मैं यहाँ चुपचाप धैर्य से बैठी हूँ। मुझे मालूम है कि मैं कौन हूँ और मैं वही रहूँगी जो मैं हूँ।''

एक दिन उसके बिल्कुल पास कुछ आया जो अद्‌भुत रूप से चमक रहा था। सुई को लगा कि वह हीरा है, लेकिन वह टूटी बोतल का एक टुकड़ा था। वह चमक रहा था इसलिए सुई ने उससे बात की और रूमाल लगाने की सजावटी पिन कहकर अपना परिचय दिया।

''मुझे लगता है कि तुम हीरा हो ?'' उसने कहा।

''क्यों ? हाँ करीब-करीब वैसा ही !''

और फिर दोनों ने एक-दूसरे को बेशक़ीमती चीज़ मान लिया और वे दुनिया के बारे में बात करने लगे कि यह कितनी अहंकारपूर्ण है।

''मैं एक औरत के बक्से में थी,'' सुई बोली, ''और वह एक बावर्चिन थी। उसके हर हाथ में पाँच उँगलियाँ थीं और मैंने उसकी उँगलियों जैसी अहंकारी चीज़ें दुनिया में और कहीं नहीं देखीं। वे ही मुझे बक्से में रखने और उससे निकालने का काम करती थीं।''

''क्या वे अच्छे ख़ानदान की थीं ?'' बोतल के टुकड़े ने पूछा।

''नहीं, बिल्कुल नहीं।'' सुई ने जवाब दिया। ''लेकिन बहुत घमण्डी। उस उँगली परिवार में वे पाँच भाई थे। वे बहुत गर्व से साथ रहते थे। हालाँकि उनकी लम्बाई अलग-अलग थी। सबसे बाहर वाला अँगूठा था—छोटा और मोटा—वह सबसे आगे चलता था और उसकी पीठ में केवल एक जोड़ था जिसकी वजह से वह केवल एक जगह से झुक सकता था। लेकिन वह कहता था कि यदि किसी आदमी से उसे छीन लिया जाये तो वह आदमी युद्ध में नहीं भाग ले सकता था। गड्ढेदार मुँह वाली दूसरी उँगली अपने आपको मीठे और खट्टे में डुबोती रहती थी, सूरज और चाँद की तरफ़ इशारा करती थी और लिखते समय काम करती थी। तीसरी लम्बी उँगली अपने कन्धों के ऊपर से सबको देखती थी। सोना पहनने वाली चौथी उँगली अपनी कमर में सोने की पट्टी बाँधे रहती थी और नन्ही खेलने वाली छोटी उँगली कुछ भी नहीं करती थी और उसे इसी बात का घमण्ड था। वह कुछ नहीं सिर्फ़ अपनी तारीफ़ क़रती रहती थी। और इसीलिए मैं वहाँ से आ गयी।''

"और अब हम यहाँ चमकते रहेंगे।" बोतल के टुकड़े ने कहा। इसी समय नाले में और पानी आ गया। "मैं यही रहूँगी, मैं बहुत छोटी हूँ। लेकिन यही मेरा गर्व है और मेरा गर्व सम्मान योग्य है।" और वह सुई वहीं गर्व से बैठी रही। उसे बड़े-बड़े विचार आते रहे। मैं यह मान सकती हूँ कि मैं एक सूरज की किरण से पैदा हुई थी। मैं इतनी बारीक़ हूँ। मुझे सचमुच यह लगता है कि सूरज की किरण हमेशा मुझे नाले के नीचे ढूँढ़ती रहती है। आह ! मैं इतनी बारीक़ हूँ कि मेरी माँ भी मुझे नहीं खोज सकती। यदि मेरे पास मेरी आँख होती जो टूट गयी है, तो मैं रो सकती थी, लेकिन नहीं, मुझे रोना नहीं चाहिए क्योंकि यह भद्र लोगों का काम नहीं है।"

एक दिन उस नाले में गली के कुछ लड़के कुछ खोजते हुए आये। यहाँ उन्हें कई बार पुरानी कीलें, एक-दो पैसे या इसी तरह की चीज़ें मिल जाती थीं। यह गन्दा काम था, लेकिन इसमें उन्हें मज़ा आता था।

"ओह !" एक चिल्लाया, जिसे सुई चुभ गयी थी। "यहाँ 'कुछ' है !"

"मैं 'कुछ' नहीं, बल्कि एक स्त्री हूँ !" सुई बोली।

लेकिन उसकी बात किसी ने नहीं सुनी। उसकी लाख निकल गयी थी और वह काली पड़ गयी थी। लेकिन काले होने से आदमी पतला दिखने लगता है इसलिए वह ख़ुद को और भी बारीक़ मानने लगी थी।

"वो देखो, अण्डे का छिलका तैरता आ रहा है !" लड़कों ने कहा और सुई को अण्डे के छिलके में घुसा दिया !

"सफ़ेद दीवारें और काली मैं ! अच्छा दिखता है", सुई ने कहा, "अब कोई भी मुझे देख सकता है। मुझे यही चिन्ता है कि पानी से मेरी तबीयत ख़राब न हो जाये !" लेकिन वह अच्छी-भली थी। "यदि किसी का लोहे का पेट हो और वह यह ध्यान रखे कि वह आम आदमी से थोड़ा अलग है तो पानी में किसी की तबीयत ख़राब नहीं हो सकती ! मेरी तबीयत ठीक है। जो जितना बारीक़ होता है, उतना ही परेशानियों को सहन कर सकता है।"

"चटाख़ !" अण्डे का छिलका टूट गया क्योंकि उसके ऊपर से एक हाथठेला निकल गया था।

"हे ईश्वर ! कोई किसी को कैसे कुचल देता है !" सुई बोली, "मेरी तबीयत ख़राब हो रही है—मैं बीमार हो रही हूँ।"

लेकिन उसकी तबीयत सचमुच ख़राब नहीं थी, हालाँकि हाथठेला उसके ऊपर से गुज़र गया था। फिर भी वह वहीं लेटी थी, और वहीं लेटी रहेगी।

4

बूढ़ा आदमी : हमेशा सही

मैं तुम्हें वह कहानी सुनाऊँगा जो मैंने बचपन में सुनी थी। जब-जब मैंने इस कहानी के बारे में सोचा, वह मुझे और भी अधिक प्यारी लगने लगी—क्योंकि जैसा लोगों के साथ होता है कि वे जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं—वैसा ही कहानियों के साथ भी होता है—जैसे-जैसे वे पुरानी होती जाती हैं—सुन्दर होती जाती हैं।

मैं यह मान लेता हूँ कि तुमने गाँव देखा है। तो एक गाँव में खेतों के बीच एक छप्पर वाले मकान के छप्पर पर घास और छोटे-पौधे उग रहे हैं। तिकोने छज्जे के जोड़ पर एक बलाक चिड़िया का घोंसला है क्योंकि बलाक के बिना तो हमारा काम यहाँ आगे नहीं सरकता। घर की दीवारें ढलावदार हैं और खिड़कियाँ नीची हैं। खिड़की एक ही है जिससे वह खुल सके। दीवार के बाहर की तरफ़ बनी भट्टी, किसी मोटे आदमी की तरह लगी हुई है। वह बूढ़ा वृक्ष बाड़े के ऊपर लगा हुआ है और उसकी शाख़ों के नीचे पानी का कुण्ड है जिसमें कुछ बतख़ें खेल रही हैं। यहाँ एक कुत्ता भी है जो सभी आने वालों पर भौंकता है।

इसी तरह का मकान गाँव में खेतों के बीच में था, जहाँ एक किसान और उसकी पत्नी रहते थे। उनकी सम्पत्ति बहुत छोटी-सी थी लेकिन एक चीज़ उनके पास बेकार भी थी—एक घोड़ा जो सड़क के किनारे लगी हुई घास खाता था। बूढ़ा किसान इस घोड़े पर बैठकर कभी-कभी शहर जाता था। वरना अक्सर ही उसके पड़ोसी उस घोड़े को उधार माँगकर ले जाते थे और बदले में बूढ़े दम्पति का कुछ काम कर दिया करते थे। लेकिन एक दिन उस दम्पति को लगा कि उन्हें घोड़े को बेच देना चाहिए या उसके बदले कोई काम की चीज़ ले लेनी चाहिए। लेकिन वह काम की चीज़ क्या हो सकती थी ?

"तुम यह अच्छी तरह पता लगा सकते हो" पत्नी ने कहा। "आज मेले

का दिन है। घोड़े पर बैठकर शहर की ओर जाओ और या तो घोड़े को बेच दो या फिर उसके बदले में कुछ ले आओ। तुम जो भी करोगे मुझे मंज़ूर होगा जाओ मेले में जाओ।" पत्नी ने बूढ़े के गले में रूमाल बाँध दिया क्योंकि वह उस बूढ़े के गले में रूमाल अच्छी तरह बाँध सकती थी। उसने रूमाल से एक दोहरा फूल बनाया, क्योंकि वह फूल बनाने में बड़ी कुशल थी। और फिर रूमाल बाँध दिया। उसने फिर उसके हैट को अपनी हथेली से अच्छी तरह साफ़ किया और किसान को चूमा। फिर बूढ़ा किसान उस घोड़े पर बैठ गया जिसे बेचा जाना था या कि किसी चीज़ के बदले दिया जाना था। जी हाँ, बूढ़े आदमी को अच्छी तरह पता था कि उसे क्या करना है।

सूरज गर्मी से चमक रहा था और आसमान में एक भी बादल नहीं था। सड़क बहुत धूलभरी थी, क्योंकि इस पर से होकर बहुत से लोग घोड़ों पर, पैदल और गाड़ियों पर बैठकर मेले में जा रहे थे। सूरज की रोशनी से बचने के लिए रास्ते में कोई छाया नहीं थी।

उन सबके साथ-साथ एक आदमी भी चल रहा था जो अपनी गाय को मेले में ले जा रहा था। उसकी गाय बहुत सुन्दर थी।

"मेरे ख़याल से वह ज़रूर खूब दूध देती होगी।" बूढ़े किसान ने सोचा।

"घोड़े के बदले यह बहुत अच्छी चीज़ हो सकती है।"

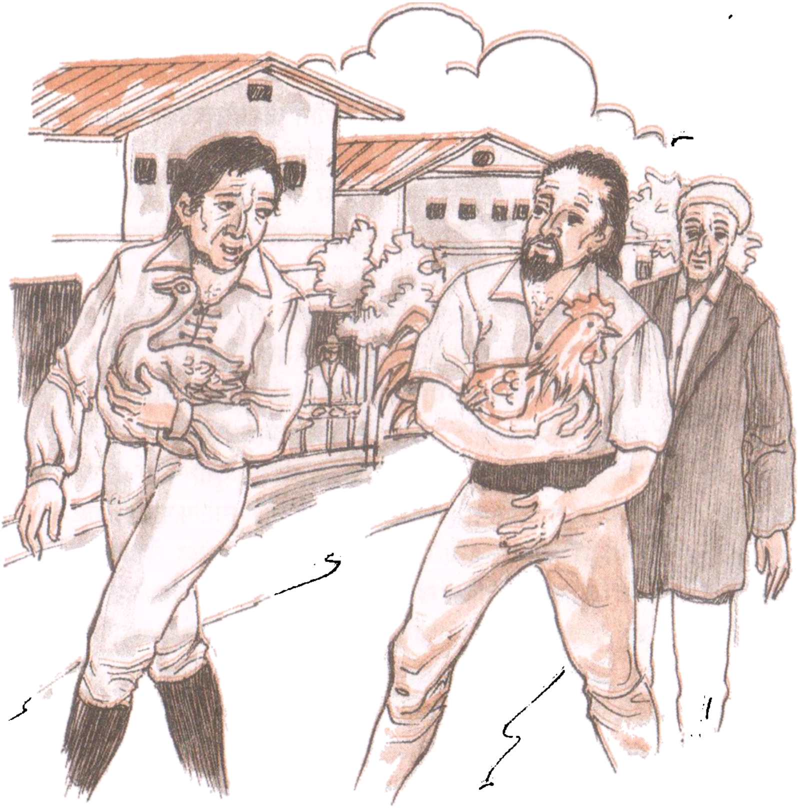
"नमस्ते, गाय वाले भैया !" किसान ने कहा, "मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि एक घोड़ा गाय से क्यों महँगा होता है। लेकिन उस बात को छोड़ो। मेरे लिए तो गाय बहुत उपयोगी होगी। यदि तुम राजी हो तो हम उन्हें बदल सकते हैं।"

"बिल्कुल ठीक है, मैं बदल लूँगा !" उस आदमी ने कहा, और उन्होंने गाय और घोड़ा बदल लिया।

जब यह तय हो गया था तो किसान को घर लौट आना चाहिए था, क्योंकि वह जिस काम से घर से चला था वह काम तो हो गया था। लेकिन वह तो मेले में जाने के विचार से आया था इसलिए उसने केवल मेला देखने के लिए ही वहाँ जाना तय किया। वह अपनी गाय के साथ शहर की ओर चल पड़ा।

गाय को तेज़ी से खींचता हुआ वह चल पड़ा और थोड़े ही समय बाद वह एक आदमी की बग़ल से निकला जो एक भेड़ लेकर जा रहा था। यह एक अच्छी मोटी भेड़ थी जिस पर बढ़िया ऊन थी।

"मुझे वह भेड़ लेनी चाहिए थी।" बूढ़े किसान ने अपने आपसे कहा। "उसे हमारे यहाँ खूब घास खाने को मिलेगी और सर्दियों में हम उसे अपने साथ



कमरे में रख लेंगे। शायद एक गाय को रखने से भेड़ को रखना बेहतर होगा। क्या हम इन्हें बदल सकते हैं ?''

''भेड़ वाला आदमी बदलने के लिए एकदम तैयार था। बात तय हो गयी और बूढ़ा अपनी भेड़ लेकर रास्ते पर चल पड़ा।

जल्दी ही वह एक ऐसे आदमी की बग़ल से गुज़रा जो खेतों से सड़क पर आया था और एक हंसिनी लिए हुए था।

''तुम्हारे पास बहुत बढ़िया चीज़ है। इसके खूब सारे पँख हैं और यह मोटी—ताज़ी है।'' हम इसे डोरी से बाँधकर पानी में तैरने के लिए छोड़ देंगे। यह मेरी बूढ़ी पत्नी के लिए बड़ी मज़ेदार बात होगी। वह इससे थोड़ा-बहुत लाभ कमा सकेगी। कितनी बार उसने कहा था—यदि हमारे पास एक हंसिनी होती ! अब शायद उसके पास हो सकेगी और सम्भव हुआ तो यही हंसिनी उसकी होगी। ''क्या हम इन्हें बदल लें। मैं तुम्हें हंसिनी के बदले अपनी भेड़ दूँगा और साथ-साथ धन्यवाद भी।''

दूसरे आदमी को भला क्या आपत्ति हो सकती थी? और उन्होंने अपनी चीज़ें बदल लीं। बूढ़ा किसान हंसिनी का मालिक बन गया।

अब तक वह शहर के बहुत पास आ चुका था। सड़क पर भीड़ बढ़ती ही जा रही थी। इनमें आदमी और मवेशी सभी थे। मवेशी सड़क पर तो चल रहे थे पर बाड़ों के पास अधिक थे और नाके पर तो वे चुंगी वाले आदमी के आलू के खेतों में भी घुस जाते थे। वहाँ उसकी अपनी मुर्ग़ी फड़फड़ा रही थी, क्योंकि उसने उसके पैर में डोरी बाँध दी थी जिससे कि वह भीड़ से डरकर कहीं उड़कर भाग न जाये। इस मुर्ग़ी के पंख और पूँछ छोटे थे और वह अपनी आँखें झपकाती रहती थी। वह बहुत चालाक लगती थी। ''क्लक, क्लक !'' मुर्ग़ी बोली। ऐसा बोलते समय वह क्या सोच रही थी मैं तुम्हें नहीं बता सकता, लेकिन हमारे बूढ़े किसान ने उसे देखा और सोचा अभी तक जितनी मुर्ग़ियाँ मैंने देखी हैं उनमें सबसे सुन्दर ये मुर्ग़ी है। यह हमारी हंसिनी से भी बेहतर है। मुझे यह मुर्ग़ी लेनी चाहिए। मुर्गी को कहीं न कहीं से अपना पेट भरने के लिए दाना मिल ही जाता है। मुझे लगता है कि हंसिनी के बदले यह मुर्ग़ी लेना बहुत अच्छा होगा।

''क्या हम मुर्ग़ी और हंसिनी आपस में बदल लें ?'' उसने चुंगी वाले आदमी से पूछा, ''बदलना है !''

वह बोला, ''ठीक है, यह बुरा सौदा नहीं होगा।'' और उन्होंने उन्हें बदल लिया। चुँगी नाके के आदमी ने हंसिनी ले ली और बूढ़ा किसान मुर्ग़ी लेकर आगे चल पड़ा।

मेला जांने, के रास्ते में किसान अभी तक बहुत से सौदे कर चुका था और अब वह गर्मी से थक चुका था। उसे भूख लगी थी और पीने को एक गिलास पानी चाहिए था। जल्दी ही वह एक सराय के सामने आया। वह भीतर जा ही रहा था कि सराय का मालिक बाहर आया और वे दोनों दरवाज़े पर मिल गये। सराय-मालिक के पास एक थैला था।

"इस थैले में क्या है ?" बूढ़े किसान ने पूछा।

"सड़े हुए सेब।" सराय मालिक ने कहा, "पूरा थैला भर सुअरों को खिलाने के लिए काफ़ी है।"

"इन्हें बरबाद क्यों कर रहे हो। मैं इन्हें अपनी बूढ़ी पत्नी के लिए घर ले जाना चाहूँगा। पिछले साल घास के मैदान के पास के पुराने पेड़ में केवल एक ही सेब लगा था जिसे हमने अलमारी में सड़ने और एकदम ख़राब होने के लिए रख दिया था। 'यह तो अच्छी ख़ासी सम्पत्ति है' मेरी बूढ़ी पत्नी ने कहा। लेकिन अब तो वह बहुत सारी सम्पति देख सकेगी—एक थैला भरकर। मुझे उसके लिए ये सेब ले जाने में बहुत खुशी होगी।"

"तुम मुझे इस थैले के बदले में क्या दोगे ?" सराय मालिक ने पूछा।

"मैं क्या दूँगा ? मैं बदले में अपनी मुर्ग़ी दूँगा।"

उसने मुर्ग़ी देकर वे सेब ले लिए और मेहमानों के कमरे में चला गया। किसान ने सेब का थैला सावधानी से चूल्हे के पास टिकाकर रख दिया और मेज़ के सामने जाकर बैठ गया। लेकिन चूल्हा गर्म था। उसने यह सोचा ही नहीं था। वहाँ बहुत से मेहमान थे—घोड़ों के व्यापारी, गड़रिये और दो अंग्रेज़ व्यक्ति। वे दो अंग्रेज़ व्यक्ति इतने अमीर थे कि उनकी जेबें सोने के सिक्कों से भरी पड़ी थीं और लगभग फटी जा रही थीं। वे शर्त लगा रहे थे, जैसा कि तुम सुन भी सकते हो।

"हिस्स ! हिस्स !" चूल्हे के पास यह क्या हो रहा था? दरअसल सेब भुनना शुरू हो गये थे।

"वह क्या है ?"

"क्यों, क्या तुम नहीं जानते हो।" किसान ने कहा।

और उसने उन्हें घोड़े से शुरू कर सेबों तक पूरी कहानी सुनाई।

"तुम्हारी बूढ़ी पत्नी घर पहुँचने पर तुम्हारी ख़ूब तारीफ़ करेगी।" एक अंग्रेज़ ने व्यंग्य से कहा, "बहुत ही गड़बड़ होगी।"

"वो क्या? मुझे बताओ ?" किसान ने कहा, "शायद तुम नहीं जानते हो? वह मुझे चूमकर कहेगी—"बूढ़ा आदमी जो भी करता है हमेशा ठीक ही करता है।"

"तो क्या हम इस बात की शर्त लगाएँ ?" अंग्रेज़ बोला, "हम सौ किलो सोने की शर्त लगाएँगे।"

"मैं समझता हूँ इसके लिए सेबों के एक ढेर की शर्त लगाना काफ़ी होगा। मैं तुम्हें सेबों का एक ढेर दूँगा। इसके साथ मैं और मेरी बूढ़ी पत्नी भी तुम्हें साथ में मिलेंगे। इससे तो शर्त ज़रूर भारी हो जायेगी।"

"ठीक है—तय हुआ !"

और शर्त लग गयी। सराय की गाड़ी आयी और अंग्रेज़ व्यक्ति उसमें चढ़ गये। बूढ़ा किसान भी चढ़ा और कुछ ही देर बाद वे किसान की झोंपड़ी के सामने जा पहुँचे।

"नमस्कार !" बूढ़ी औरत से बूढ़े आदमी से कहा।

"नमस्कार !" बूढ़े आदमी से उसने कहा।

"मैं बदले में कुछ लाया हूँ।"

"हाँ तुम्हें मालूम था कि तुम्हें क्या लाना है।" औरत ने कहा। उसने उसे गले लगाया और न तो अजनबी मेहमानों की ओर और न ही थैले की तरफ़ ज़रा भी ध्यान दिया।

"मुझे घोड़े के बदले एक गाय मिली।" उसने कहा।

"ईश्वर का धन्यवाद !" उसने कहा, "हम अब कितना बढ़िया दूध पिएँगे। और हमारे घर मेज़ पर मक्खन और पनीर होगा। बदले में क्या बढ़िया चीज़ मिली !"

"हाँ, लेकिन गाय देकर मैंने भेड़ ले ली।"

"ओह, वह तो और भी बढ़िया है।" पत्नी चिल्लाई। "तुम हमेशा सभी बातों के बारे में सोचते हो। हमारे पास केवल भेड़ को रखने की ही जगह थी। दूध और पनीर, ऊन की जैकेट और मोज़े ! गाय से यह सब नहीं मिल सकता था। उसके बाल सिर्फ़ झड़ जायेंगे। तुम कैसे सारी चीज़ों के बारे में सोचते हो।"

"लेकिन मैंने भेड़ को हंसिनी से बदल लिया।"

"तब इस साल हम भुना हुआ हंस सचमुच खा सकेंगे। मेरे प्यारे बूढ़े पति ! तुम हमेशा मुझे ख़ुश देखना चाहते हो। यह कितना सुन्दर है। हम हंसिनी के पैरों में एक डोरी डालकर उसे घूमने देंगे और जब हम उसे भूनेंगे उसके पहले वह और भी मोटी हो जायेगी।"

"लेकिन वह हंसिनी देकर मैंने एक मुर्ग़ी ले ली!" आदमी ने कहा।

"मुर्ग़ी ? यह भी अच्छा हुआ !" औरत बोली, "मुर्ग़ी अण्डे देगी और उनमें से चूज़े निकलेंगे। हमारे पास एक पूरा मुर्ग़ीख़ाना होगा ! ओह ऐसा ही तो मैं

चाह रही थी।"

"हाँ लेकिन मैंने मुर्गी के बदले, बासी सेबों का एक थैला ले लिया।"

"क्या !—मुझे तुम्हें इसके लिए चूमना ही चाहिए।" पत्नी ने कहा, "मेरे प्यारे, अच्छे पति ! मैं तुम्हें कुछ बताती हूँ। तुम्हें पता है जब तुम मुझे आज सुबह छोड़कर निकले ही थे कि मैंने सोचना शुरू कर दिया कि आज शाम को मैं तुम्हें क्या बढ़िया चीज़ बनाकर खिलाऊँगी। मैंने सोचा कि मैं बढ़िया जड़ी-बूटियाँ डालकर चीले बनाऊँगी। मेरे पास अण्डे और सुअर का मांस तो था लेकिन जड़ी-बूटियाँ नहीं थीं। इसलिए मैं स्कूल मास्टर के घर गयी—उनके घर जड़ी-बूटियाँ लगी हैं। मुझे यह पता था। लेकिन उसकी पत्नी बहुत छोटे दिल की औरत है, हालाँकि वह दिखती बहुत अच्छी है। मैंने उससे थोड़ी-सी जड़ी-बूटियाँ उधार देने को कहा। 'उधार !' उसने मुझे कहा, "हमारे बगीचे में कुछ भी नहीं उगता, एक बासी सेब भी नहीं' लेकिन अब मैं उसे दस सेब उधार दे सकती हूँ, पूरा थैला भर भी। मैं बहुत खुश हूँ।" और यह कहते हुए उसने किसान को ज़ोर से चूमा।

"क्या बढ़िया बात है !" दोनों अंग्रेज़ व्यक्तियों ने कहा, "हमेशा नुकसान उठा कर भी हमेशा खुश। इसके तो पैसे देने ही होंगे।"

इसलिए उन्होंने बूढ़े किसान को सौ किलो सोना दिया जिसे डाँट नहीं पड़ी थी, बल्कि चूमा गया था।

हाँ, इसका हमेशा लाभ होता है, जबकि पत्नी यह मानती है कि उसका पति बिलकुल सही जानता है और वह जो भी करता है, सही करता है।

तो यह थी मेरी वह कहानी। मैंने इसे बचपन में सुना था और अब तुमने भी इसे सुन लिया है और जान लिया है कि "बूढ़ा आदमी हमेशा सही करता है।"

5

दुनिया का सबसे सुन्दर गुलाब

एक रानी थी, जिसके बगीचे में दुनिया के सभी हिस्सों के, सभी मौसमों के सबसे सुन्दर फूल थे। लेकिन उसे ख़ास तौर पर गुलाबों से प्यार था। इसीलिए उसके पास हर तरह के गुलाब थे—जंगली गुलाब, हरी पंखुड़ियों और सेब की खुशबू वाले गुलाबों से लेकर—सबसे सुन्दर प्रोवेन्स गुलाब तक। वे मिट्टी की दीवारों के पास उगते थे और बड़े-बड़े हॉलों के गोल खम्भों, खिड़कियों पर लिपटे थे। ये गुलाब हर रंग, रूप और खुशबू के थे।

लेकिन इन हॉलों में दुख और परेशानी की छाया थी। रानी बीमार थी और डॉक्टरों ने कह दिया था कि वह अब नहीं बचेगी।

"अभी भी एक चीज़ है जो इसे बचा सकती है।" उनमें से सबसे होशियार डॉक्टर ने कहा। " इसे दुनिया का सबसे सुन्दर गुलाब लाकर दिया जाये, जो कि पवित्र और सुन्दर प्रेम का प्रतीक हो, क्योंकि इसकी आँखें बन्द होने से पहले यदि यह गुलाब यहाँ ला दिया गया तो यह बच जायेगी।"

सभी जगहों से बच्चे और बूढ़े अपने-अपने बगीचों के सबसे सुन्दर गुलाब लेकर आये, लेकिन वे सही गुलाब नहीं थे। वह फूल प्रेम के बग़ीचे से लाया जाना था। लेकिन वह गुलाब कैसा होगा, जो पवित्र और सुन्दर प्रेम का प्रतीक है ?

कवियों ने दुनिया के सबसे सुन्दर गुलाब के लिए गीत गाये और सबने अपने-अपने गुलाब को सबसे सुन्दर बताया। सारी पृथ्वी पर, प्रेम से भरे दिलों के पास हर वर्ग, स्थिति और आयु के लोगों के पास, इस गुलाब का पता लगाने के लिए सेवक भेजे गये।

"किसी ने भी अभी तक उस गुलाब के बारे में नहीं बताया।" एक चतुर आदमी ने कहा। "किसी ने भी उस जगह के बारे में नहीं बताया, जहाँ वह सुन्दर गुलाब खिला है। ये रोमियो और जूलियट के ताबूत पर के गुलाब नहीं

हैं और न ही वॉलबर्ग की क़ब्र के गुलाब हैं—हालाँकि ये गुलाब गीतों में हमेशा खुशबू बिखेरेंगे। वे विंकलरीड के खून से रँगे भालों से उगे हुए गुलाब नहीं है। अपने देश के लिए मरने वाले वीर नायक की छाती से बहने वाले ख़ून से उगे गुलाब भी नहीं हैं, हालाँकि ये सच है कि कोई भी मृत्यु इससे सुन्दर नहीं हो सकती और कोई भी गुलाब ख़ून-सा लाल नहीं होता। यह अद्भुत फूल मानव के समर्पित भाव से, एक शान्त कमरे में अनेक रातों के जागने से और जीवन के कई सुन्दर दिनों की क़ीमत पर खिलता है—विज्ञान का जादुई फूल।''

''मैं जानती हूँ यह कहाँ खिलता है !'' एक हँसमुख माँ बोली जो अपने सुन्दर बच्चे को लेकर रानी के पास आयी थी। ''मैं जानती हूँ कि दुनिया का सबसे सुन्दर गुलाब कहाँ खिलता है। पवित्र और सुन्दर प्रेम का प्रतीक गुलाब मेरे प्यारे बच्चे के खिले गालों में तब खिलता है जब आराम की नींद के बाद यह अपनी आँखें खोलकर मेरी तरफ़ देखकर प्यार से मुस्कराता है !''



"यह गुलाब सुन्दर है लेकिन इससे भी सुन्दर एक और है।" वह चतुर आदमी बोला।

"हाँ, उससे बहुत सुन्दर !" एक औरत बोली। "मैंने उसे देखा है। उससे बड़ा और सुन्दर गुलाब कहीं नहीं खिलता। मैंने उसे रानी के गालों में देखा है। उसने अपना सोने का मुकुट उतार दिया था और लम्बी डरावनी रात में वह अपने बीमार बच्चे को बाँहों में लेकर बैठी थी। वह रो रही थी और बच्चे को चूमते हुए अपने बच्चे के लिए प्रार्थना कर रही थी जैसे एक माँ अपने बच्चे के लिए चिन्ता करती है।"

"दुख का सफ़ेद गुलाब अपने आप में पवित्र और सुन्दर है लेकिन हम उसे नहीं तलाश रहे हैं।।"

"नहीं दुनिया के सबसे सुन्दर गुलाब को मैंने ईश्वर की वेदी पर देखा है।" एक बूढ़ा पादरी बोला। "वह ऐसे चमक रहा था जैसे कोई देवदूत का चेहरा हो।" नन्ही लड़कियाँ ईश्वर के पास गयीं और अपने नामकरण के समय किये गये वादे दोहराए। गुलाब शरमा रहे थे और उनके गालों पर पीले गुलाब खिल रहे थे। एक छोटी लड़की वहीं खड़ी रही। उसने अपनी आत्मा की पवित्रता और प्रेम से ऊपर स्वर्ग की ओर देखा : यही पवित्र और सुन्दर प्रेम का प्रतीक था।"

"वह हमेशा खुश रहे !" चतुर आदमी बोला, "लेकिन तुममें से एक ने भी अभी तक मुझे दुनिया के सबसे सुन्दर गुलाब के बारे में नहीं बताया है।"

तभी कमरे में रानी का बेटा आया। उसकी आँखों के आँसू उसके गालों पर बहकर चमक रहे थे। उसके हाथ में एक बड़ी-सी खुली हुई किताब थी जिसकी मख़मली जिल्द चाँदी के तारों से बँधी थी।

"माँ !" छोटा बच्चा चिल्लाया, "सुनो मैंने क्या पढ़ा है।" और बच्चा बिस्तर के पास बैठ गया। वह उस प्रभु की किताब से पढ़ने लगा, जो मानव-जाति और भावी समाज को बचाने के लिए सलीब पर चढ़ गया था।

"प्रेम ही सबसे बड़ा है..."

और रानी के गालों पर एक गुलाबी छाया आयी और उसकी आँखें चमकीं क्योंकि उसे किताब के पन्नों में दुनिया का सबसे सुन्दर गुलाब दिखाई दिया जो सलीब पर बहाए गये ईसा मसीह के खून से उगा था।

"मैं उसे देख रही हूँ।" वह बोली, "जिसके पास भी दुनिया का यह सबसे सुन्दर गुलाब है, वह कभी नहीं मरेगा।"

6

लाल जूते

एक नन्ही बच्ची थी, एक बहुत प्यारी नन्ही बच्ची। लेकिन गर्मियों में उसे नंगे पैर चलना पड़ता था क्योंकि वह ग़रीब थी। सर्दियों में वह लकड़ी के मोटे-से जूते पहनती थी जिससे उसकी छोटी उँगली लाल हो जाती थी, एकदम लाल।

गाँव के बीचों-बीच एक बूढ़े मोची की पत्नी रहती थी। उसने अपनी पूरी कोशिश करके पुराने लाल कपड़े की कतरनों को सिलकर एक जोड़ी जूते बनाए। ये जूते बहुत अजीब-से थे लेकिन उनसे काम अच्छी तरह चल जाने वाला था। वे जूते उसने उस नन्ही बच्ची को दे दिए जिसका नाम कॉरेन था।

संयोग से ये जूते उसे उस दिन मिले जिस दिन उसकी माँ को दफ़नाया गया था। उसने उन्हें उसी दिन पहली बार पहना। हालाँकि उस शोक के मौक़े पर पहनने के लिए वे जूते ठीक नहीं थे, लेकिन उस बच्ची के पास दूसरे जूते भी तो नहीं थे। उसने उन्हें अपने नन्हें पैरों में पहना और साधारण से ताबूत के पीछे-पीछे चलती रही।

अचानक एक बड़ी गाड़ी पास में आयी जिस पर एक बूढ़ी औरत बैठी थी। उसने उस नन्ही बच्ची को देखा और उसे उस पर दया आ गयी। उसने पादरी से कहा--

"मुझे यह नन्ही बच्ची दे दो मैं इसकी देख-भाल करूँगी। कॉरेन को लगा कि वह जूतों के कारण कह रही है। कॉरेन उस बूढ़ी औरत के साथ आ गयी। लेकिन बूढ़ी औरत को वे जूते बहुत बदसूरत लग रहे थे इसलिए उसने उन्हें जला दिया। कॉरेन को साफ़-सुथरे अच्छे कपड़े पहनाए गये। उसे लिखना-पढ़ना और सिलाई करना सिखाया गया। लोग कहते थे कि अब वह ठीक हो गयी थी। लेकिन उसका आईना उससे कहता था, "तुम सिर्फ़ ठीक ही नहीं, उससे कहीं ज़्यादा हो, तुम सुन्दर हो !"



एक बार वहाँ की महारानी गाँवों की यात्रा कर रही थी। उसके साथ उसकी बेटी राजकुमारी भी थी। लोग महारानी की शाही सवारी की तरफ़ देख रहे थे। कॉरेन भी उन लोगों के साथ खड़ी थी। नन्ही राजकुमारी सवारी की खिड़की पर सफ़ेद कपड़े पहनकर खड़ी थी और सब उसे देख रहे थे। उसका न तो लम्बा चोग़ा था और न ही उसके सिर पर सोने का ताज लेकिन उसने भेड़ के चमड़े से बने सुन्दरलाल जूते पहने थे। उनका कॉरेन के लाल जूतों से कोई मुक़ाबला नहीं था।

अब कॉरेन बड़ी हो गयी थी। उसके लिए नये कपड़े बने और नये जूते ख़रीदे गये। शहर के प्रसिद्ध जूते बनाने वाले ने उसके नन्हे पैरों का नाप लिया। नाप उसने अपनी दुकान पर ही लिया, अपने छोटे कमरे में जहाँ एक काँच का बड़ा-सा शो केस रखा था। उसमें अच्छी तरह से बढ़िया चमचमाते जूते सजे हुए थे। वह बहुत सुन्दर लग रहा था। लेकिन बूढ़ी स्त्री अच्छी तरह से देख नहीं पाती थी, इसलिए उसे उसका कोई आनन्द नहीं मिला। उन जूतों के बीच एक लाल जूतों की जोड़ी भी थी, एकदम राजकुमारी के जूतों की तरह। वह कितने सुन्दर थे ! जूते बनाने वाले ने बताया कि वे एक ज़मीदार के बच्चे के लिए बनाए गये थे लेकिन वे उसे ठीक नहीं बैठे थे।

"ये बहुत बढ़िया चमड़े के होंगे !" बूढ़ी औरत बोली, "कैसे चमकदार हैं।"

"हाँ, वे चमकदार हैं !" कॉरन बोली। वे जूते कॉरेन के पैर में ठीक आ गये और उन्होंने उसे ख़रीद लिया। लेकिन बूढ़ी औरत को पता नहीं था कि वे लाल हैं। वरना वह कभी भी कॉरेन को ईसाई बनाने के समारोह में लाल जूते पहनकर नहीं जाने देती। लेकिन कॉरेन उस समारोह में लाल जूते पहनकर ही गयी।

सब उसके जूते देख रहे थे। जब वह चर्च के द्वार-मण्डप से होकर समूह गान वाले हॉल की ओर गयी तो उसे लगा कि वहाँ दीवारों पर लगे पुराने चित्र, खड़े-कॉलर और लम्बे, काले चोग़े पहने पादरी और उनकी पत्नियों के चित्र उसके लाल जूतों को देख रहे हैं। फिर जब पादरी ने उसके सिर पर हाथ रखा और पवित्र उपदेश दिये तब भी वह अपने लाल जूतों के बारे में ही सोच रही थी। मधुर संगीत बजा, बच्चे और बूढ़े व्यक्तियों ने उसके साथ गाया लेकिन कॉरेन अपने लाल जूतों के बारे में ही सोचती रही।

दोपहर में बूढ़ी औरत को सबने बताया कि जूते लाल थे। उसने कहा कि यह शरारत थी और ठीक नहीं था। अब जब भी कॉरेन चर्च जायेगी वह काले जूते ही पहनेगी, भले ही वह पुराने जूते ही क्यों न हों।

अगला रविवार संस्कार देने का रविवार था। कॉरेन ने लाल जूतों को देखा, फिर काले जूतों को देखा। दोबारा उन्हें देखा और लाल जूते पहन लिये। सूरज अच्छी तरह से चमक रहा था। कॉरेन और बूढ़ी औरत खेतों की पगडण्डी से जा रही थीं। वहाँ बहुत धूल थी।

चर्च के दरवाज़े के पास एक बूढ़ा कमज़ोर सिपाही खड़ा था जिसके हाथ में बैसाखी थी। उसकी दाढ़ी लम्बी थी, और सफ़ेद की बजाय लाल रंग की थी। वह लगभग ज़मीन तक झुका और बूढ़ी औरत से पूछा कि क्या वह उसके जूते साफ़ कर सकता है। और कॉरेन ने भी अपना नन्हा पैर आगे बढ़ा दिया।

"वाह ! कितने सुन्दर नाचने वाले जूते हैं !" बूढ़े सिपाही ने कहा। "नाचते समय तुम्हें एकदम ठीक बैठेंगे !"

और उसने जूतों की तली को अपने हाथों से ठोंका। बूढ़ी औरत ने सिपाही को कुछ इनाम दिया और कॉरेन के साथ चर्च के भीतर चली गयी।

चर्च में सभी ने कॉरेन के लाल जूतों को देखा। वहाँ लगे सभी चित्र भी उसे देख रहे थे। जब कॉरेन चर्च में घुटनों के बल झुकी तब भी वह अपने जूतों के बारे में ही सोच रही थी। वह गीत गाना और प्रार्थना करना भी भूल गयी।

सभी चर्च से बाहर चले गये और बूढ़ी औरत अपनी गाड़ी में बैठी। कॉरेन ने गाड़ी में चढ़ने के लिए अपना पैर ऊपर उठाया ही था कि बूढ़ा सिपाही बोला,

"वाह कितने सुन्दर नाचने वाले जूते हैं।"

और कॉरेन अपने आपको रोक नहीं सकी। वह शुरू में कुछ क़दम नाची लेकिन जब उसने नाचना शुरू किया तो वह रुक ही नहीं पायी। ऐसा लग रहा था जैसे जूतों ने उसे अपने वश में कर लिया हो। वह चर्च के कोने में नाची—वह रुक ही नहीं सकती थी, गाड़ीवान ने उसके पीछे दौड़कर उसे पकड़ा। उसने उसे गाड़ी में बिठाया लेकिन उसके पैर नाचते ही रहे और इसी बीच उसने अपना पैर बूढ़ी औरत को ज़ोर से मार दिया। आख़िरकार उन्होंने उसके वे जूते उतार दिये और तब उसके थिरकते पैर शान्त हो गये। घर आने के बाद जूतों को अलमारी में रख दिया गया लेकिन कॉरेन उन्हें देखती ही रही।

बूढ़ी औरत बहुत बीमार पड़ गयी और यह कहा गया कि वह बच नहीं सकती। उसे सेवा की ज़रूरत थी और यह कॉरेन की ही ज़िम्मेदारी थी। शहर में एक बड़ा नाच होने वाला था और कॉरेन को वहाँ बुलाया गया था। उसने बीमार बूढ़ी औरत को देखा जो कि अब ज़िन्दा नहीं रहने वाली थी। फिर अपने लाल जूतों की ओर देखा। फिर सोचा कि यदि वह बूढ़ी औरत को छोड़कर नाचने चली जाय तो इसमें हर्ज़ ही क्या है। उसने जूते पहने और सोचा कि वह अच्छी

तरह नाच सकती है। वह नाच में गयी और नाचना शुरू कर दिया।

लेकिन जब वह दायीं ओर जाना चाहती तो जूते बायीं ओर जाते, जब वह ऊपर जाना चाहती तो जूते नीचे जाते—सड़क पर और बाहर शहर के द्वार तक। वह नाचती गयी, रुक नहीं पायी और नाचते-नाचते सीधे घने जंगल में चली गयी।

पेड़ों के बीच कुछ चमक रहा था। उसे लगा कि वह चाँद है क्योंकि उसे एक चेहरा दिखाई दिया। लेकिन वह लाल दाढ़ी वाला बूढ़ा सिपाही था। उसने बैठे-बैठे अपना सिर हिलाते हुए कहा,

"वाह ! कितने सुन्दर हैं नाचने के जूते हैं !"

वह डर गयी और उसे लाल जूते फेंकने की इच्छा हुई लेकिन वे उसके पैरों से चिपक गये थे। वह नाच रही थी और उसे खेतों और घास के मैदानों में, बरसात और धूप में, दिन और रात में नाचना पड़ रहा था लेकिन रात में नाचना सबसे भयानक था।

वह खुले क़ब्रिस्तान में नाच रही थी। लेकिन वहाँ के मृत व्यक्ति नहीं नाचे क्योंकि उनके पास करने के लिए बेहतर काम थे। उसे एक ग़रीब आदमी की कब्र पर बैठने की इच्छा हुई जहाँ 'फ़र्न' के पौधे उगते हैं, लेकिन उसे शान्ति नहीं थी। जब वह नाचते हुए चर्च के खुले दरवाज़े की ओर जाने लगी, उसने वहाँ लम्बे सफ़ेद चोग़े में एक देवदूत को देखा जिसके पंख पैरों तक लम्बे थे, उसके मुख के भाव गम्भीर थे और उसने अपने हाथ में एक चौड़ी, चमकती हुई तलवार पकड़ी हुई थी।

"तुम नाचोगी !" उसने कहा, "अपने लाल जूते पहनकर नाचो, जब तक कि तुम पीली और ठण्डी न पड़ जाओ और जब तक कि तुम्हारा शरीर सिकुड़कर हड्डियों का ढाँचा न रह जाये। तुम घर-घर नाचो, वहाँ जहाँ घमण्डी बच्चे रहते हैं। दरवाज़ा खटखटाओं जिससे कि वे उस आवाज़ को सुनकर डर जायें। तुम्हें नाचना होगा, नाचना होगा !"

"बचाओ !" कॅरिन चिल्लाई।

इसके बाद वह सुन नहीं पायी कि देवदूत ने क्या-क्या कहा, क्योंकि उसके जूते उसे आगे ले गये—दरवाज़े से बाहर खेतों में, फ़सलों और चट्टानों पर, हर जगह उसे नाचना पड़ा।

एक सुबह उसने नाचते हुए एक दरवाज़ा पार किया जिसे वह अच्छी तरह पहचानती थी। भीतर से भजन गाने की आवाज़ आ रही थी और एक फूलों से सज़ा हुआ ताबूत ले जाया जा रहा था। तब उसे पता चला कि बूढ़ी औरत

की मृत्यु हो गयी है। उसे लगा कि सब उसे छोड़ गये हैं और स्वर्ग के देवदूत ने भी उसे ठुकरा दिया है।

वह नाच रही थी—नाचने के लिए मजबूर थी—अँधेरी रात में भी नाचने के लिए मजबूर थी। जूते उसे काँटों और झाड़ियों के बीच ले गये थे और उसके खरोंचे लग-लगकर खून बह रहा था। वह बंजर भूमि के पास से नाचती हुई एक अकेले घर के पास पहुँची। उसे पता था कि यहाँ एक जल्लाद रहता है। उसने अपनी उँगलियों से दरवाज़ा खटखटाया और बोली, "बाहर आओ, बाहर आओ ! मैं अन्दर नहीं आ सकती क्योंकि मुझे नाचते ही रहना है।"

जल्लाद बोला, "तुम्हें शायद पता नहीं कि मैं कौन हूँ? मैं अपनी कुल्हाड़ी से बुरे लोगों के सिर काटता हूँ। देखो मेरी कुल्हाड़ी कितनी तेज़ है।"

"मेरा सिर मत काटना!" कॅरेन बोली, "क्योंकि यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं अपने पाप का प्रायश्चित्त नहीं कर पाऊँगी लेकिन कुल्हाड़ी से इन लाल जूतों सहित मेरे पैर काट दो !"

उसने अपने सभी पापों को स्वीकार किया और जल्लाद ने जूतों सहित उसके पैर काट दिये लेकिन नन्हें पैरों सहित जूते नाचते हुए खेतों से होते हुए घने जंगलों में चले गये। उसने एक जोड़ी लकड़ी के पैर काटे, बैसाखियाँ बनायीं और उसे एक भजन सिखाया जिन्हें अपराधी हमेशा गाते थे। कॅरेन ने कुल्हाड़ी वाले हाथ को चूमा और बंज़र भूमि को पार कर चली गयी।

"मैंने अब तक लाल जूतों से बहुत तकलीफ़ झेल ली है।" उसने कहा। "अब मैं चर्च में जाऊँगी, जिससे वे मुझे देख सकें।"

वह तेज़ी से चर्च के दरवाज़े की ओर गयी लेकिन जैसे ही वह आगे बढ़ी कि लाल जूते उसके आगे-आगे नाचने लगे जिससे वह डर गयी और वापस मुड़ गयी।

"अब तक मैंने बहुत तकलीफ़ झेली है और संघर्ष किया है! मुझे लगता है कि मैं भी उतनी ही अच्छी हूँ जितने कि वे लोग हैं जो चर्च में अपना सिर ऊँचा करके बैठे हैं।"

वह निडर होकर आगे बढ़ी लेकिन वह क़ब्रिस्तान के दरवाज़े तक आयी ही थी कि उसने अपने सामने लाल जूते नाचते हुए देखे। वह डरकर रुक गयी और वापस मुड़ी और अपने पाप का सच्चे दिल से प्रायश्चित्त किया।

वह पादरी के पास उसके निवास पर गयी और उससे प्रार्थना की कि वह उसे नौकरी पर रख ले। उसने वादा किया कि वह खूब मेहनत करेगी और जो कुछ बन पड़ेगा करेगी। उसे पैसों की परवाह नहीं थी। वह तो केवल एक ठिकाने पर भले लोगों के साथ रहना चाहती थी। पादरी की पत्नी को उस पर दया आ

गयी और उसे नौकरी पर रख लिया। वह मेहनती और समझदार थी। जब शाम को पादरी ज़ोर-ज़ोर से बोलकर बाइबिल पढ़ते थे तो वह चुपचाप बैठकर बहुत ध्यान से सुनती थी। सभी बच्चे उसे बहुत प्यार करते थे लेकिन जब वे कपड़ों सुन्दरता और वैभव की बात करते थे तो वह अपना सिर झटक देती थी।

अगले रविवार वे सब चर्च गये और उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह भी साथ जाना चाहेगी। लेकिन उसने आँखों में आँसू भरकर दुख से देखा और अपनी बैसाखियों को देखा। बाक़ी लोग ईश्वर के उपदेश सुनने चले गये लेकिन वह अपने छोटे-से कमरे में अकेली चली गयी जिसमें एक पलंग और एक कुर्सी रखे जा सकत थे। वह वहाँ अपनी प्रार्थना की किताब लेकर बैठी और जब उसने शान्त मन से उसे पढ़ना शुरू किया तभी चर्च से मधुर संगीत उसे सुनाई देने लगा। उसने आँसुओं से भीगा अपना चेहरा उठाया और बोली—

"हे ईश्वर, मेरी मदद करो।"

सूरज तेज चमकने लगा और उसके सामने सफ़ेद चोग़े में वही देवदूत आकर खड़ा हो गया, जो उसे उस रात चर्च के दरवाज़े पर दिखा था। लेकिन अब उसके हाथ में तेज़ तलवार नहीं थी बल्कि गुलाब की एक हरी शाख़ थी। उसने छत को छुआ ओर छत ऊपर उठ गई। जहाँ-जहाँ वह छूता, एक सुनहरा सितारा चमकता। उसने दीवारों को छुआ और दीवारें चारों ओर फैल गयी। उसे वह वाद्य दिखाई दिया जिससे मधुर संगीत बज रहा था। उसने पादरियों और उनकी पत्नियों की पुरानी तस्वीरें देखीं। धर्म-मण्डली सजी हुई कुर्सियों पर बैठकर अपनी प्रार्थना की किताबों में से गा रही थी। चर्च बेचारी ग़रीब बच्ची के छोटे-से कमरे में आ गया था। या उसका कमरा चर्च बन गया था। वह कुर्सी पर पादरी के साथियों के साथ बैठी थी। जब उन्होंने भजन समाप्त किया तो उन्होंने सिर हिलाया और बोले,

"यह ठीक हुआ कि तुम यहाँ आ गयी कॉरेन !"

"यह आपकी दया थी !" वह बोली

मधुर संगीत बजता रहा और साथ में एक-साथ गाते बच्चों की मधुर और प्यारी आवाज़ सुनाई देती रही। सूरज की साफ़ चमकीली रोशनी खिड़की से कॉरेन की कुर्सी पर पड़ रही थी और उसका दिल सूरज की रोशनी, शान्ति और ख़ुशी से इतना भर गया कि वह टूट गया। उसकी आत्मा सूरज की किरणों पर सवार होकर स्वयं उड़ गयी और उसके बाद फिर कभी किसी ने लाल जूते नहीं माँगे।

7

गूँगी किताब

जंगल में बड़ी सड़क के पास एक किसान की झोंपड़ी थी। सड़क उसके खेत से होकर ही गुज़रती थी। सूरज चमक रहा था और सारी खिड़कियाँ खुली थीं। घर के भीतर चहल-पहल थी, लेकिन बगीचे में फूली हुई बेर की झाड़ी के बीच एक खुला ताबूत रखा था। इसमें एक मृत व्यक्ति था जिसे आज सुबह दफ़नाया जाना था। कोई भी ताबूत के पास खड़े होकर मृत व्यक्ति को दुख से नहीं देख रहा था। कोई भी उसके लिए आँसू नहीं बहा रहा था। उसका मुँह एक सफ़ेद कपड़े से ढका था और उसके सिर के नीचे एक बड़ी मोटी किताब रखी थी जिसके पन्ने स्याही-सोख़ काग़ज़ के थे और हर पन्ने पर एक सूखा फूल लगा हुआ था। यह फूल-पौधों का एलबम था, जिसके फूलों को उसने जगह-जगह से इकट्ठा किया था। इसे उसके साथ दफ़नाया जाना था क्योंकि उसकी ऐसी ही इच्छा थी। हर फूल के साथ उसके जीवन का एक हिस्सा जुड़ा हुआ था।

"यह मरने वाला कौन है ?" उसने पूछा और जवाब था, "बूढ़ा विद्यार्थी।" कहते हैं कि एक समय में वह एक तेज़ और फुर्तीला युवक था जो पुरानी भाषाएँ पढ़ता था, गाता था और यहाँ तक कि कविताएँ भी लिखता था। लेकिन अचानक उसे कुछ हुआ और वह खूब शराब पीने लगा। और जब आख़िर में उसकी सेहत ख़राब हो गयी तो वह यहाँ गाँव में आ गया जहाँ पता नहीं कौन उसके रहने और खाने-पीने का ख़र्च उठाता था। उसका स्वभाव बच्चों जैसा सरल था। लेकिन कभी-कभी उसकी तबीयत ख़राब हो जाती थी और वह राक्षस जैसा हो उठता था। वह जंगलों में शिकार किये जाने वाले हिरण की तरह दौड़ता रहता था। लेकिन फिर जब वह घर वापस आ जाता तो अपनी यह सूखे पौधों वाली किताब खोलकर अक्सर पूरे दिन भर बैठा रहता। कभी किसी फूल तो कभी किसी पौधे को देखता रहता था। कभी-कभी उसके गालों पर आँसू भी बहते थे। भगवान



ही जानता था कि वह क्या सोचता था। लेकिन उसने हमसे किताब को ताबूत में रखने की प्रार्थना की थी। थोड़ी देर में ढक्कन बन्द करके कीलें ठोंक दी जायेंगी और वह शान्ति से अपनी क़ब्र में आराम करेगा।

मुँह का कपड़ा उठाया गया तो देखा उसके चेहरे पर शान्ति है। वहाँ एक सूरज की किरण खेल रही थी। एक चिड़िया तीर की तरह पेड़ों की ओर उड़ी और तेज़ी से वापस आकर मृत व्यक्ति के सिर के ऊपर आकर चहचहाने लगी।

यह कितना अजीब अनुभव था—और हम सभी ने इसे महसूस किया था कि कैसे हमारी युवावस्था के दिन अन्त में बुढ़ापे में बदल जाते हैं। फिर एक नया जीवन अपनी सभी उम्मीदें और सुख-दुख लेकर आता है। कितने ही व्यक्ति जिनके साथ उन दिनों हमारे बहुत अच्छे सम्बन्ध थे, आज हमारे लिए मृत जैसे हैं। और यदि वे जीवित भी हों तो क्या ? हमने तो एक लम्बे समय से उनके बारे में नहीं सोचा जिनके साथ हमने उम्र भर रहने का वादा किया था। उनके साथ, जिनके साथ हमने दुख सुख बाँटने की क़समें खाई थीं।

यहाँ मुरझायी हुई शाहबलूत की पत्ती उसे एक दोस्त की याद दिलाती थी—उसके स्कूल के दोस्त की, जो उसके जीवन भर का साथी होने वाला था हरे जंगल में उसने यह पत्ती अपने साथी की टोपी में बाँध दी थी। तब 'जीवन भर' साथ निभाने का वादा किया गया था। अब वह कहाँ रहता है ? पत्ती अभी तक सुरक्षित है लेकिन दोस्ती ख़त्म हो गयी ! यह एक विदेशी गर्म क्षेत्र का पेड़ है जो कि उत्तरी क्षेत्र के बग़ीचों के लिए बहुत नाज़ुक है। इसकी पत्तियों की खुशबू अभी तक है। इसे भद्र व्यक्ति के बग़ीचे में रहने वाली एक लड़की ने दिया था। यह कमलिनी है जिसे उसने ख़ुद तोड़ा था और खारे आँसुओं में भिगो दिया था—उस मीठे पानी की कमलिनी को। और यह नेटल का वृक्ष है—इसकी पत्तियाँ क्या कहानी कहती हैं ? जब उसने इसे तोड़ा और रखा था तो वह क्या सोच रहा था ? यह घने एकान्त जंगल की तितली है। यह शराबख़ाने के गुलदस्ते का सदाबहार फूल है और यह घास की एक धारदार पत्ती है।

फूले हुए बेर ने अपने ताज़े खुशबूदार फूल मृत व्यक्ति के सिर पर गिराए और चिड़िया उड़ गयी वापस उड़ी। "पी-विट ! पी-विट !" और तभी लोग कीलें और हथौड़े लेकर आ गये और ताबूत का ढक्कन बन्द कर दिया गया। उसका सिर उस गूँगी किताब पर रखा था जो अन्त में नष्ट होकर बिखर जाने वाली थी।

8

दड़बे का मुर्ग़ा और हवाई-मुर्ग़ा

एक बार दो मुर्ग़े थे—एक की जगह गोबर का ढेर थी और दूसरा मुर्ग़ा लकड़ी के बने घर और छत पर लगी उस हवाई चरखी पर बैठा था जो हवा चलने पर घूमती थी और हवा की दिशा बताती थी। दोनों घमण्डी थे। लेकिन दोनों में किसे अधिक घमण्ड था ? आप अपनी राय बताइए। लेकिन फ़िलहाल हम अपनी राय ही बताते हैं।

मुर्ग़ियों के दड़बे को दूसरे दड़बे के बीच एक तख़्ता लगाकर अलग किया गया था क्योंकि दूसरे दड़बे में खाद का ढेर पड़ा था जिस पर एक बड़ी ककड़ी उगी हुई थी। उस ककड़ी को अच्छी तरह मालूम था कि उसका पौधा आसानी से नहीं उगता।

''ऐसा जन्म भाग्य से ही होता है।'' ककड़ी ने अपने आपसे कहा। ''सभी ककड़ी जैसे नहीं पैदा हो सकते। दूसरी तरह के भी लोग होते हैं। मुर्ग़ियाँ, बतख़ें और पास के बाड़े के सभी जानवर भी जीव हैं। मैं दड़बे के मुर्ग़े को देखती हूँ। निश्चय ही उसका भविष्य, ऊपर बैठे हुए हवा की दिशा बताने वाले मुर्ग़े से बेहतर है जो बाँग देने की बात तो अलग, कुट-कुट भी नहीं कर सकता। उसके पत्नी और बच्चे भी नहीं हैं और वह केवल अपने बारे में ही सोचता है। लेकिन दड़बे का मुर्ग़ा—वह एक मुर्ग़े जैसा है। उसकी चाल में थिरकन है, उसकी बाँग में संगीत है और जहाँ भी वह जाता है, सब उसे पहचानते हैं। वह कितना अच्छा बिगुलवादक है। अगर यहाँ आ जाये और मुझे पूरा खा भी जाये तो वह कितनी आनन्ददायक मृत्यु होगी।'' ककड़ी बोली।

रात में मौसम बहुत ख़राब हो गया। मुर्ग़ी, चूज़े और यहाँ तक कि मुर्ग़ा भी छिपने की जगह ढूँढ़ने लगा। हवा इतनी तेज़ी से बह रही थी कि दोनों दड़बों के बीच खड़ी तख़्ते की दीवार ज़ोर से गिर पड़ी। हवाई मुर्ग़ा वैसा का वैसा ही



खड़ा रहा। वह मुड़ा भी नहीं, वह मुड़ ही नहीं सकता था जबकि वह जवान और नया-नया ही बनकर आया था। वह चुपचाप और गम्भीर खड़ा रहा। वह जितना बड़ा दिख रहा था उतना ही बड़ा पैदा हुआ था। वह आकाश में उड़ने वाले किसी भी पक्षी जैसा नहीं दिखता था—जैसेकि गौरैया और अबाबील दिखते थे। वह उनका तिरस्कार करता था—उन्हें बहुत तुच्छ-से सीटी बजाने वाले पक्षी मानता था—एकदम साधारण गाने वाले पक्षी। हालाँकि कबूतर उसकी नज़र में बड़े, चमकीले, सच्चे मोती की आभा वाले और हवाई मुर्ग़े जैसे दिखनेवाले पक्षी थे। लेकिन दूसरी ओर वे मोटे और बेवकूफ़ भी थे। उनका पूरा जीवन अपना पेट भरने में बीत जाता था।

"साथ ही उनसे बातें करना उबाऊ भी होता है।" हवाई मुर्ग़ा बोला।

यात्री पक्षी भी आकर हवाई मुर्ग़े से मिले और उसे विदेशी धरती की हवा की और लुटेरों की कहानियाँ सुनायीं और दूसरे पक्षियों के शिकार की बातें बतायीं। पहली बार सुनने में तो यह सब बहुत रोचक लगा था लेकिन बाद में हवाई मुर्ग़ा जान गया था कि वे फिर अपनी इन्हीं बातों को दोहरायेंगे और वह ऊबने लगेगा।

"वे सब उबाऊ हैं। मैं तो कहता हूँ सभी चीज़ें उबाऊ हैं।" हवाई मुर्ग़ा बोला। "कोई भी मिलने-जुलने के लायक़ नहीं है और उनमें से सभी थका देने वाले और बेवकूफ़ हैं। इस दुनिया में कुछ नहीं है।" वह चिल्लाया। "यह सब बेवकूफ़ी है।"

हवाई मुर्ग़ा एक तरह से बेकार हो गया था। उसके इस गुण की जानकारी यदि ककड़ी को मालूम हो जाती तो उसे बहुत मज़ा आता। लेकिन उसकी नज़र तो सिर्फ़ दड़बे के मुर्ग़े पर थी जो कि वास्तव में अभी तक इस तरफ़ के अहाते में नहीं आया था।

हवा से तख़्ता उड़ गया था, लेकिन अब तूफ़ान थम गया था। "तुम लोगों का तूफ़ान की उस "बाँग" के बारे में क्या विचार है ?" दड़बे के मुर्ग़े ने अपनी मुर्ग़ी और चूज़ों से पूछा। "मेरे ख़याल से वह कुछ ज़्यादा ही गँवारू-शोर था। उसमें ज़रा भी गरिमा नहीं थी।" मुर्ग़े ने कहा और वे घूमने निकल पड़े।

मुर्ग़ा और चूज़े गोबर के ढेर पर चढ़ गये और मुर्ग़ा अपने पंख फड़फड़ाते हुए सामन्तों जैसा आगे-पीछे चलता रहा।

"वाह बगीचे का पौधा !" ककड़ी को देखकर अचानक मुर्ग़ा चिल्लाया। इन शब्दों में ककड़ी को मुर्ग़े की भावनाओं की गहराई समझ में आयी और वह भूल गयी कि वह उसे चोंच से नोचकर खा रहा है। पर उसके लिए यह एक

आनन्ददायी मृत्यु थी।

मुर्ग़ियाँ और चूज़े भी आये। जब एक चूज़ा दौड़ता तो बाक़ी भी उसक पीछे दौड़ते। वे कुड़कुड़ा रहे थे और खुश होकर मुर्ग़े को देख रहे थे और गर्व कर रहे थे कि वह उनके जैसा ही है।

"कुकड़ूँ-कूँ !" वह बोला, "यदि मैं दुनिया के मुर्गी पालन केन्द्र में शोर मचाऊँ तो ये चूज़े बड़े मुर्ग़े बन जायेंगे।"

मुर्ग़ियाँ ओर चूज़े कुड़कुड़ाते और खुश होते रहे और मुर्ग़े ने उन्हें एक ख़ास ख़बर सुनाई,

"एक मुर्ग़ा भी अण्डा दे सकता है, और तुम्हें पता है कि उस अण्डे में क्या होता है ? उसमें एक छिपकली होती है। कोई भी उस छिपकली को नहीं देख सकता। आदमी यह जानते हैं और अब यह तुम्हें बता रहा हूँ। क्या तुम्हें मालूम है मेरे भीतर क्या है और मैं किस तरह का मुर्ग़ा हूँ ?"

यह कहकर दड़बे के मुर्ग़े ने अपने पंख फड़फड़ाये और अपनी कलग़ी फुलायी और फिर ऐसी बाँग दी कि सभी मुर्ग़ियाँ और चूज़े काँप गये। लेकिन उन्हें इस बात का गर्व था कि उनके साथ का एक मुर्ग़ा इतना महत्त्वपूर्ण है। वे कुड़कुड़ाये और खुश हुए और हवाई मुर्ग़े ने इसे सुना लेकिन सुनकर भी वह हिला तक नहीं।

"यह सब बेवकूफ़ी है !" हवाई मुर्ग़े के भीतर से आवाज़ आयी। "दड़बे का मुर्गा अण्डे नहीं देता और मुझे भी अण्डे देने में आलस आता है। यदि मैंने चाहा तो मैं एक हवाई अण्डा दूँगा, लेकिन यह दुनिया हवाई अण्डे के लायक़ नहीं है। अब मुझे यहाँ और बैठना भी पसन्द नहीं है।"

यह कहकर हवाई मुर्ग़ा टूट गया लेकिन उसने दड़बे के मुर्ग़े की हत्या नहीं की, जबकि मुर्ग़ियों के कहे अनुसार उसकी ऐसी इच्छा थी। इस बारे में नीति क्या कहती है ?—"चुक जाने" और "टूट जाने" से बेहतर तो बाँग देना ही है।"

9

जैक द ड्यूलार

बहुत दूर के किसी देश के भीतरी भाग में एक पुराना मकान था, जिसके बूढ़े मालिक के दो बेटे थे। वे अपने आपको ज़रूरत से ज़्यादा चालाक समझते थे। वे राजकुमारी से शादी करना चाहते थे क्योंकि राजकुमारी ने जनता के बीच यह घोषणा करवा रखी थी कि जो अपनी अपनी "बात" को सबसे सुन्दर ढंग से पेश करेगा उसी से वह शादी करेगी।

इन दोनों लड़कों ने इसके लिए एक सप्ताह तक तैयारी की। उन्हें तैयारी के लिए ज़्यादा से ज़्यादा इतना ही समय दिया जा सकता था। लेकिन यह भी उनके लिए काफ़ी था, क्योंकि उन्हें कई बुनियादी बातें पहले से ही पता थीं। उनमें से एक भाई को लैटिन का पूरा शब्दकोश ज़बानी याद था और साथ ही तीन साल तक उसने शहर का अख़बार भी नियम से पढ़ा था। दूसरा भाई राज्य के काम-काज की बहुत जानकारी रखता था। उसे सारे नियम पूरी तरह याद थे और इसीलिए उसने सोचा कि वह राज्य के नियमों के बारे में बात करके परिषद में विजय पाएगा। वह एक हुनर और जानता था। वह कढ़ाई में कुशल था। वह अरबी शैली के गुलाब और दूसरे फूल काढ़ सकता था, क्योंकि वह एक सुरुचिपूर्ण और कलाप्रिय व्यक्ति था।

"मैं राजकुमारी को जीतूँगा !" दोनों एक साथ चिल्लाये। इसलिए उनके बूढ़े पिता ने दोनों को एक-एक घोड़ा दे दिया। जिस लड़के को शब्दकोश और अख़बार ज़बानी याद थे उसे काला घोड़ा मिला। जिसे सारे नियम मालूम थे, उसे दूध जैसी सफ़ेद घोड़ी मिली। फिर उन्होंने अपने मुँह के कोनों पर मछली का तेल मला जिससे कि वे मुलायम और चमकदार हो जायें। सारे नौकरों ने नीचे आँगन में खड़े होकर उन्हें देखा कि वह किस तरह घोड़ों पर बैठे। तभी किस्मत से तीसरा बेटा भी आ गया। दरअसल घर के मालिक का तीसरा बेटा

भी था लेकिन वह ज़रा भी पढ़ा-लिखा नहीं था इसीलिए उसे कोई नहीं जानता था और उसे "जैक द ड्यूलार" कहा जाता था।

"हलो !" जैक द ड्यूलार ने कहा, "तुम कहाँ जा रहे हो ? तुमने अपने रविवार वाले छुट्टी के कपड़े भी नहीं पहन रखे हैं !"

"हम राजकुमारी से शादी के लिए उम्मीदवार बनकर राजदरबार जा रहे हैं। क्या तुमने राजकुमारी की घोषणा नहीं सुनी ?" और दोनों ने उसे घोषणा के बारे में बताया।

"मेरी बातें भी रोचक होंगी। मैं भी साथ जाऊँगा।" जैक द ड्यूलार चिल्लाया। दोनों भाई ठहाका लगाकर उस पर हँसने लगे और घोड़ों पर बैठकर चले गये।



"प्यारे पिता !" जैक ने कहा, "मुझे भी एक घोड़ा चाहिए। मैं भी शादी करना चाहता हूँ। यदि वह मुझे स्वीकार करेगी तो ठीक है नहीं तो मैं उसे ज़बरदस्ती प्राप्त करूँगा। लेकिन वह मेरी ही होगी !"

"बकवास मत करो।" बूढ़े पिता ने कहा, "मैं तुम्हें कोई घोड़ा नहीं दूँगा। तुम्हें बात करने की तमीज़ नहीं है—तुम्हें सही शब्द इस्तेमाल करने भी नहीं आते। तुम्हारे भाई तुमसे कहीं ज़्यादा बेहतर हैं।"

"ठीक।" जैक द ड्यूलार बोला, "यदि मुझे घोड़ा नहीं मिलता है, तो मैं अपना बकरा ले लूँगा जो मुझे अच्छी तरह ले जा सकता है।"

और उसने ऐसा ही किया। वह बकरे पर चढ़ा, उसे एड़ लगायी और राजमार्ग पर चला गया।

"हे, हुप ! क्या सवारी थी ? मैं आ गया।" जैक चिल्लाया और वह ख़ुशी से तब तक गाता रहा जब तक कि उसका गला नहीं बैठ गया।

लेकिन उसके भाई धीरे-धीरे आये। वे कुछ भी नहीं बोल रहे थे और दरबार में की जाने वाली बातचीत के बारे में ही सोच रहे थे, क्योंकि उसके लिए उन्हें चतुराई से तैयारी करनी थी।

"हैलो !" जैक चिल्लाया, "मैं आ गया ! देखो मुझे रास्ते में क्या मिला।" और उसने उन्हें एक मरा कौआ दिखाया।

"ड्यूलार !" एक भाई ने आश्चर्य किया, "तुम इससे क्या करोगे ?"

"इस कौए से ? क्यों ? मैं इसे राजकुमारी को दूँगा।"

"ठीक ! ऐसा ही करना।" उन्होंने कहा और हँसते हुए अपने घोड़े पर बैठकर आगे निकल गये।

"हलो, मैं फिर आ गया ! देखो मुझे अब क्या मिला।" राजमार्ग पर ऐसी चीज़ रोज़ नहीं मिलती !"

और भाइयों ने मुड़कर देखा कि उसे अब क्या मिला है।

"ड्यूलार !" वे चिल्लाए, "यह पुराना लकड़ी का जूता है जिसका आगे का हिस्सा भी ग़ायब है। क्या तुम इसे भी राजकुमारी को दोगे ?"

"बिल्कुल।" जैक ने जवाब दिया और भाई फिर हँसते हुए घोड़े पर बैठकर चले गये और इस तरह वे उससे आगे रहे।

"हलो—देखो !" जैक द ड्यूलार फिर आ गया, "मुझे अच्छी चीज़ें मिलती ही जा रही हैं।" वह चिल्लाया, "हुर्रा ! यह बहुत जानी-मानी चीज़ है।"

"क्यों अब इस बार तुम्हें क्या मिल गया ?" भाइयों ने पूछा।

"ओह !" जैक ने कहा, "यह बताना मुश्किल है। लेकिन राजकुमारी

कितनी ख़ुश होगी !"

"वाह !" भाई बोले, "यह तो कुछ भी नहीं बस गड्ढे का कीचड़ है।"

"हाँ, वह तो है।" जैक बोला, "लेकिन सबसे अच्छा कीचड़ है।" देखो यह कितना गीला है कि हथेली से बह जाता है।" और उसने अपनी जेब में वह कीचड़ भर लिया।

लेकिन उसके भाई फिर घोड़ों पर बैठकर चले गये और शहर के दरवाज़े पर एक घंटा पहले ही पहुँच गये। दरवाज़े पर पहुँचने वाले हर उम्मीदवार को एक नम्बर दिया गया था और सबको आते ही छह-छह की क़तार में खड़ा किया गया था। वे इतने पास-पास खड़े थे कि उनके लिए अपने हाथ तक हिलाना मुश्किल था। यह व्यवस्था बहुत समझदारी से की गयी थी क्योंकि यदि वे ऐसे नहीं खड़े होते तो वहाँ धक्का-मुक्की शुरू हो जाती।

सारे देशवासी महल के आसपास लगभग खिड़की के नीचे ही खड़े थे जिससे कि वे राजकुमारी को उम्मीदवारों का स्वागत करते हुए देख सकें। लेकिन जैसे ही कोई उम्मीदवार सभागृह में पहुँचता, उसकी बात करने की क्षमता वैसे ही ख़त्म हो जाती जैसे कोई मोमबत्ती बुझ गयी हो। तब राजकुमारी कहतीं, "यह काम का नहीं है ! इसे सभागृह से बाहर जाना चाहिए !"

आख़िरकार उस भाई की बारी आयी जिसे शब्दकोश याद था। लेकिन अब वह अचानक ही सब भूल गया था। उसे कुछ भी याद नहीं था। ज़मीन उसके पैरों तले काँप रही थी। छत पर शीशे लगे थे, जिसमें देखकर उसे लग रहा था कि वह सिर के बल खड़ा है। खिड़की के पास तीन क्लर्क और एक हेड-क्लर्क खड़े थे और सभी उम्मीदवारों का बोला एक-एक शब्द लिखते जा रहे थे जिससे कि उसे अख़बारों में छापकर सड़कों पर बेंचा जा सके। यह बहुत कठिन परीक्षा थी। वहाँ पर इतने बड़े-बड़े लैम्प जल रहे थे कि कमरा बेहद गर्म हो रहा था।

"यहाँ भयानक गर्मी है।" पहले भाई ने कहा।

"हाँ, राजकुमारी ने जवाब दिया, "मेरे पिता आज मुर्ग़े भूनने वाले हैं।"

"क्या !" वह भेड़ की तरह खड़ा रहा। उसने इस तरह की बातचीत की कोई तैयारी नहीं की थी। हालाँकि उसे बहुत कुछ रोचक कहने का मन था लेकिन उसके पास शब्द नहीं थे।

"इसका यहाँ कोई काम नहीं।" राजकुमारी ने कहा, "इसे ले जाओ।" और उसे वहाँ से जाना पड़ा। अब दूसरा भाई आया।

"यहाँ बहुत गर्मी है ?" उसने कहा।

"हाँ, आज हम मुर्ग़े भूनेंगे।" राजकुमारी ने जवाब दिया।

"क्या-क्या आप...क...क्या आप कृपा करें—" वह हकलाया और सभी क्लर्कों ने लिखा, "क-क...क्या आप कृपा करें—"

"यह किसी काम का नहीं।" राजकुमारी बोली, "इसे ले जाओ !" अब जैक द ड्यूलार की बारी आयी। वह सभागृह में अपने बकरे पर बैठे हुए आया।

"यहाँ एकदम सड़ी गर्मी है।"

"हाँ, क्योंकि मैं आज मुर्ग़े भूनूँगी।" राजकुमारी ने जवाब दिया।

"आह, मैं खुशकिस्मत हूँ !" जैक ने कहा, "क्योंकि मुझे लगता है कि उसके साथ ही आप मुझे अपना कौआ भूनने की अनुमति भी देंगी ?"

"बिलकुल, बहुत खुशी से।" राजकुमारी बोली, "लेकिन क्या इसके लिए तुम्हारे पास कुछ है। मेरे पास तो कोई बर्तन नहीं है।"

"ज़रूर।" जैक बोला, "यह टिन के हैंडल वाला बर्तन है।"

और उसने पुराना लकड़ी का जूता निकालकर कौए को उसमें रख दिया। "वाह, यह बहुत अच्छा भोजन होगा लेकिन इसके शोरबे के लिए हम क्या करेंगे ?" राजकुमारी ने पूछा।

"ओह, वह मेरी जेब में है।" जैक ने कहा, "मेरे पास यह इतना है कि इसमें से थोड़ा फेंक भी सकता हूँ।" उसने अपनी जेब से थोड़ा कीचड़ उँड़ेल दिया।

"मुझे यह पसन्द आया। तुम्हें मुझे एक जवाब देना होगा और अपने बारे में कुछ कहना होगा। तब तुम मेरे पति हो सकोगे। लेकिन ध्यान रखो कि जो कुछ भी तुम बोल रहे हो वह लिखा जा रहा है और कल अख़बार में छपेगा। वहाँ देखो। तुम्हें तीन क्लर्क और एक हेड-क्लर्क दिखाई देंगे और वह बूढ़ा हेड-क्लर्क सबसे बुरा है, क्योंकि वह कुछ नहीं समझता।

लेकिन यह सब उसने केवल जैक को डराने के लिए कहा था और क्लर्क इस बात पर इतने खुश हुए कि उनके पेनों से स्याही छलक कर फ़र्श पर बिखर गयी।

"ओह, वे तो सज्जन हैं ?" जैक ने कहा, "तब मैं अपने पास की सबसे अच्छी चीज़ हेड-क्लर्क को दूँगा ?" और उसने अपनी जेबें उलटी और हेड-क्लर्क के चेहरे पर कीचड़ फेंक दिया।

"यह बहुत चतुराई का काम था।" राजकुमारी ने सोचा, "मैं ऐसा नहीं कर सकती थी लेकिन मैं धीरे-धीरे सीख जाऊँगी।"

और इस तरह जैक द ड्यूलार राजा बन गया। उसकी शादी राजकुमारी से करके उसे सिंहासन पर बिठा दिया गया। यह रिपोर्ट हमें हेड-क्लर्क और अख़बारों से मिली है—लेकिन उन पर बहुत भरोसा नहीं करना चाहिए।

10

एक माँ की कहानी

एक माँ अपने छोटे बच्चे के पास बैठी थी। वह बहुत दुखी थी और डर रही थी कि कहीं बच्चा मर न जाये। बच्चे का छोटा-सा चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी आँखें बन्द थीं। बच्चा बहुत कठिनाई से साँस ले पा रहा था और कभी-कभी तो कराहने लगता था। यह देखकर माँ और भी दुख से उसकी ओर देखती थी।

तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई और एक बूढ़ा आदमी अन्दर आया। उसने एक घोड़े की झूल ओढ़ी हुई थी और उसे उसकी ज़रूरत भी थी, क्योंकि बाहर बहुत ठण्ड पड़ रही थी। बाहर बर्फ़ पड़ रही थी और हवा इतनी तेज़ चल रही थी कि मानो वह चेहरे को काट देगी।

बूढ़ा आदमी ठण्ड से बहुत ठिठुर रहा था, इसलिए बच्चे के कुछ क्षण शान्त होने पर माँ ने रसोई में जाकर एक छोटे-से बर्तन में उस बूढ़े के लिए थोड़ी चाय गर्म की। बूढ़ा आदमी नीचे बैठकर पालना झुला रहा था और माँ उसकी बग़ल में एक पुरानी कुर्सी पर बैठकर अपने बच्चे को देख रही थी जिसे साँस लेने में बहुत तकलीफ़ हो रही थी।

"क्या तुम्हें लगता है यह बच जायेगा ?" उसने पूछा, "भगवान इसे मुझसे नहीं छीनेगा।"

और उस बूढ़े आदमी ने—जो कि मृत्यु था—अपना सिर इस तरीक़े से हिलाया कि उसकी 'हाँ' भी 'नहीं' जैसी लगती थी। माँ ने अपनी नज़रें नीची कर लीं और उसकी आँखों से आँसू बह निकले। उसका सिर भारी हो रहा था क्योंकि उसने तीन दिन और तीन रातों से अपनी आँखें बन्द तक नहीं की थी। अब वह केवल एक क्षण के लिए सोई लेकिन अचानक उठी और ठण्ड से काँपने लगी।

"यह सब क्या है ?" उसने पूछा और चारों ओर देखा, लेकिन बूढ़ा आदमी चला गया था और उसका बच्चा भी चला गया था। वह उसे अपने साथ ले

गया था। कोने में पुरानी घड़ी आवाज़ कर रही थी कि अचानक उसका भारी घंटा धडाक से ज़मीन पर गिर पड़ा और घड़ी बन्द हो गयी।



लेकिन बेचारी माँ बच्चे के लिए रोती हुई घर के बाहर दौड़ी। बाहर बर्फ़ में एक औरत काले कपड़े पहनकर बैठी थी। वह बोली, "मृत्यु तुम्हारे साथ तुम्हारे कमरे में आकर बैठी थी। वह तुम्हारे बच्चे को अपने साथ लेकर गयी। वह हवा से भी तेज़ चलती है और एक बार जिसको ले जाती है, वापस नहीं लाती।"

"मुझे केवल यह बताओ वह किस रास्ते गयी है ?" माँ ने पूछा। "तुम केवल इतना बता दो, मैं उसे खुद ही ढूँढ़ लूँगी।"

"मैं उसे जानती हूँ।" काले कपड़े वाली औरत ने कहा। "लेकिन मैं तुम्हें उसके बारे में तभी बताऊँगी जब तुम मुझे वे सारे गीत सुनाओगी, जो तुम अपने

बच्चे को सुनाती थीं। मुझे वे गीत बहुत पसन्द हैं। मैंने उन्हें पहले भी सुना है। मैं रात हूँ और मैंने वे गीत गाते समय तुम्हारे आँसू देखे हैं।''

''मैं वे सभी गीत गाऊँगी।'' माँ ने कहा, ''लेकिन मुझे रोको मत मैं उसका पीछा करके अपने बच्चे को पाना चाहती हूँ।''

लेकिन रात चुपचाप बैठी रही। माँ ने मजबूरी से अपने हाथ मरोड़े और रोते हुए गाने लगी। लेकिन गीत बहुत सारे थे और आँसू उनसे भी अधिक थे। तब रात बोली, ''दायें जाकर, घने अँधेरे देवदार के जंगल में जाओ। वहीं मैंने मौत को तुम्हारे बच्चे के साथ जाते हुए देखा है।''

घने जंगल के बीचोबीच एक और भी रास्ता था और उसे समझ में नहीं आया कि किस रास्ते से जाये। वहाँ एक काली कँटीली झाड़ी थी, जिसमें न तो एक भी पत्ती थी और न ही एक भी फूल था। वहाँ बेहद ठण्ड थी और उसकी टहनियों से बर्फ़ लटक रही थी।

''क्या तुमने मृत्यु को मेरे बच्चे के साथ यहाँ से जाते हुए देखा है ?'' औरत ने पूछा।

झाड़ी ने कहा, ''हाँ, लेकिन मैं तब तक नहीं बताऊँगी जब तक तुम अपनी छाती से मुझे गर्मी न दोगी। मैं जमकर बर्फ़ बनी जा रही हूँ।''

और औरत ने काली कँटीली झाड़ी को अपनी छाती से कसकर लगाया, जिससे उसमें गर्मी आ जाये।·काँटे उसकी छाती में गड़ गये और उनमें से ख़ून बहने लगा। लेकिन झाड़ी में तभी हरी पत्तियाँ उग गयीं और सर्द रात में भी उसमें फूल खिलने लगे। एक दुखी माँ के हृदय की गर्मी इतनी महान थी। इसके बाद झाड़ी ने उसे रास्ता बता दिया। वह एक बड़ी झील के पास आयी जिसमें न तो जहाज़ थे और न ही कोई नाव तैर रही थी। झील एकदम जमी भी नहीं थी, जिससे कि वह उस पर चलकर जा सकती और न ही वह पूरी तरह पिघली थी, जिससे वह उसमें से तैरकर जा पाती। लेकिन उसे अपने बच्चे को पाने के लिए उसके पार जाना ही था। तब उसने झील को पीना शुरू किया लेकिन झील को पीकर ख़त्म करना किसी के लिए भी असम्भव था। लेकिन दुखी माँ को लगा कि शायद कोई चमत्कार हो जायेगा।

''नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।'' झील ने कहा, ''इसकी बजाय हम देखें कि इसका उपाय क्या हो सकता है। मुझे मोती जमा करने का शौक़ है और तुम्हारी आँखों जैसे सुन्दर मोती मैंने अभी तक नहीं देखे। यदि तुम रो-रोकर उन्हें मुझमें बहा दोगी तो मैं तुम्हें उस हरे घर की ओर ले जाऊँगी, जहाँ मृत्यु रहती है। और वहाँ पेड़ और फूल उगाती है। वे सब मानव-जीवन ही तो हैं।''

"ओह, मैं अपने बच्चे के लिए भला क्या नहीं दे सकती ?" परेशान माँ ने कहा और वह लगातार रोने लगी और उसकी आँखें झील की गहराइयों में गिरकर अमूल्य मोती बन गयीं। झील ने उसे अपने ऊपर उठा लिया जैसे कि वह झूले पर बैठी हो। वह दूसरे किनारे पर पहुँच गयी जहाँ मीलों लम्बा एक अद्‌भुत घर था। किसी के लिए यह बताना कठिन था कि वह जंगलों और गुफ़ाओं से भरा एक पहाड़ था या कि एक बनाया हुआ घर था। लेकिन बेचारी माँ यह नहीं देख सकी क्योंकि उसकी आँखें रो-रोकर बह गयी थीं।

"मैं मृत्यु को कहाँ पा सकती हूँ, जो मेरे छोटे बच्चे को अपने साथ ले गयी है ?" उसने पूछा।

"वह अभी तक यहाँ नहीं आयी है।" सफ़ेद बालों वाली एक बुढ़िया ने कहा जो कि वहाँ से गुज़र रही थी। वह मृत्यु के उस बड़े पेड़ों वाले कमरे की देख-रेख करती थी। "तुम यहाँ तक कैसे आयीं और तुम्हारी मदद किसने की ?"

"ईश्वर ने मेरी मदद की।" उसने उत्तर दिया। "वह दयावान है और तुम भी दयावान होगी। मैं अपने बच्चे को कहाँ पा सकती हूँ ?"

बूढ़ी औरत ने कहा, "मैं नहीं जानती। और तुम भी नहीं देख सकतीं। आज रात बहुत से फूल और पेड़ मुरझा गये हैं । मृत्यु जल्दी ही आयेगी और उन्हें बदल देगी। तुम जानती होगी कि प्रत्येक मानव का एक पेड़ या एक फूल होता है उसी तरह, जिस तरह से ये यहाँ पर लगे हैं। ये दूसरे पेड़ों जैसे ही दिखते हैं लेकिन इनमें दिल धड़कते हैं। बच्चों के दिल भी धड़क सकते हैं। ध्यान से सोचो। शायद तुम अपने बच्चे के दिल की धड़कनें पहचान सकती हो। लेकिन मैं तुम्हें आगे के उपाय बताऊँ तो तुम मुझे क्या दोगी ?'

"मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं है।" दुखी माँ ने कहा। "लेकिन मैं तुम्हारे लिए पृथ्वी के दूसरे कोने तक जा सकती हूँ।"

"तुम वहाँ जाकर मेरे लिए क्या करोगी ?" बूढ़ी औरत ने कहा, "पर हाँ, तुम मुझे अपने लम्बे काले बाल दे सकती हो। तुम जानती हो कि ये बहुत सुन्दर हैं और मुझे भी ये बहुत पसन्द हैं। तुम बदले में मेरे सफ़ेद बाल ले सकती हो। कुछ न होने से तो ये बेहतर ही हैं।"

"तुम कितनी छोटी-सी चीज़ माँग रही हो।" उसने कहा, "ये तो मैं तुम्हें खुशी-खुशी दे दूँगी।" और उसने अपने सुन्दर बाल देकर बदले में उस बूढ़ी औरत के सफ़ेद बाल ले लिए।

इसके बाद वे मृत्यु के उस बड़े गर्म कमरे में गयीं जहाँ फूल और पेड़ सुन्दरता से एक साथ मिले हुए से उगे थे। काँच की घण्टियों के नीचे सुन्दर

जलकुम्भियाँ लगी थीं जिनमें से कुछ ताज़ी थीं और कुछ मुरझाई-सी थीं। उनमें पानी के साँप लिपटे हुए थे और उनके तनों से काले केकड़े ज़ोर से चिपके हुए थे। वहाँ ताड़, ओक, केले, धनिया और फूलदार पौधे लगे थे। प्रत्येक फूल और पेड़ का एक नाम था, उनमें से सबके पास एक मनुष्य का जीवन था। ये व्यक्ति अभी भी जीवित थे—समूचे विश्व में—कोई चीन में, तो कोई ग्रीनलैण्ड में। कई बड़े-बड़े पेड़ छोटे गमलों में ठूँस-ठूँसकर लगे हुए थे। वे गमलों से बाहर निकले जा रहे थे। वहाँ बहुत से छोटे कमज़ोर पौधे भी थे जो पोषक मिट्टी में लगे थे। उनके आसपास घास लगी थी और उनकी बहुत देख-रेख की जा रही थी। दुखी माँ ने झुककर छोटे-छोटे पौधों के दिल की धड़कन सुनी और हज़ारों में भी उसने अपने बच्चे के दिल की धड़कन पहचान ली।

"यहाँ है वह।" वह चिल्लाई और अपने हाथ उस क्रॉकस के नन्हें फूल की ओर बढ़ा दिये जो बहुत बीमार और पीला था।

"फूल को मत छुओ।" बूढ़ी औरत ने कहा, "यहीं रुको और मृत्यु की राह देखो। वह किसी भी समय आती ही होगी। जब वह आये तो तुम उसे यह पौधा नहीं उखाड़ने देना और उसे धमकाना कि यदि उसने इसे उखाड़ा तो तुम बाक़ी पौधे उखाड़ दोगी। यहाँ स्वर्ग के आदेश के बिना कोई भी पौधा नहीं उखाड़ा जा सकता।

और अचानक उस कमरे में बर्फ़ीली ठण्ड पड़ने लगी और अन्धी माँ समझ गयी कि मृत्यु आ रही है।

"तुम यहाँ कैसे आयीं ?" मृत्यु, जिसने बूढ़े का रूप धर रखा था, बोली, "तुम मुझसे भी पहले यहाँ पहुँच गयीं ?"

"मैं एक माँ हूँ।" उसने कहा।

और मृत्यु ने अपने लम्बे हाथ उस नन्हे, नाजुक फूल की ओर बढ़ाए। लेकिन माँ अपने हाथ मज़बूती से उसके चारों ओर रखकर उसे पकड़े रही। वह उसे उसकी एक भी पंखुड़ी नहीं छूने देना चाहती थी। मृत्यु ने अपनी साँस उसके हाथों पर छोड़ी। वह साँस इतनी बर्फ़ीली ठण्डी थी कि उसके हाथ अपनी ताक़त खोकर नीचे लटक गये।

"तुम मेरे ख़िलाफ़ कुछ नहीं कर सकतीं।" मृत्यु ने कहा।

"लेकिन दयावान ईश्वर कर सकता है।" मां ने कहा।

मृत्यु ने कहा, "मैं केवल वही करती हूँ, जो ईश्वर मुझे करने की आज्ञा देता है। मैं उसकी माली हूँ। मैं उसके सभी फूल और पेड़ लेकर उन्हें स्वर्ग के बग़ीचे की अनजान धरती पर लगाती हूँ। लेकिन वे कैसे जीते और कैसे बढ़ते

हैं, मैं तुम्हें नहीं बता सकती।''

''मुझे मेरा बच्चा वापस दे दो।'' माँ ने कहा और रोने लगी। अचानक उसने अपने हाथ से दो सुन्दर फूल पकड़ लिए और बोली, ''मैं तुम्हारे सभी फूल तोड़ दूँगी क्योंकि मैं बहुत परेशान हूँ।''

''उन्हें मत छुओ।'' मृत्यु ने कहा, ''तुम कहती हो तुम बहुत दुखी हो लेकिन फिर क्यों तुम किसी और माँ को भी दुखी करना चाहती हो !''

''दूसरी माँ ?'' दुखी औरत बोली और फूलों को छोड़ दिया।

''मैं तुम्हारी आँखें लायी हूँ।'' मृत्यु ने कहा, ''मैंने उन्हें झील से निकाला है। वे वहाँ बहुत चमक रही थीं। मुझे नहीं मालूम था कि वे तुम्हारी आँखें हैं। उन्हें ले लो—वे अब पहले से भी साफ़ हैं—और पास के कुएँ में झाँककर देखो। जिन फूलों को तुम तोड़ना चाहती थीं, मैं तुम्हें उनके नाम बताऊँगी, और तुम्हें पता चलेगा कि तुम क्या करने जा रही थीं।''

उसने कुएँ में झाँका और उसे यह देखकर ख़ुशी हुई कि उनमें से एक तो दुनिया भर में ख़ुशियाँ फैला रहा था और दूसरा ग़रीब और बेचारा था।

''दोनों ही ईश्वर की इच्छाएँ हैं।'' मृत्यु ने कहा।

''इसमें से कौन-सा फूल अभागे बच्चे का है और कौन-सा ख़ुश बच्चे का ?'' औरत ने पूछा।

मृत्यु ने कहा, ''मैं यह तुम्हें नहीं बता सकती, लेकिन इतना जान लो कि इनमें से एक फूल तुम्हारे बच्चे का है। तुमने जो देखा वह तुम्हारे बच्चे का भविष्य था।''

माँ डरकर ज़ोर से चिल्लाई, ''इनमें से मेरे बच्चे का कौन-सा फूल है। मुझे बताओ ! मासूम बच्चे को बख़्श दो ! मेरे बच्चे को सारी तक़लीफ़ों से छुटकारा दो। उसे स्वर्ग ले जाओ। मेरे आँसुओं को भूल जाओ, मेरी सारी बिनतियों को भूल जाओ—मुझे माफ़ कर दो—लेकिन मेरे बच्चे को इन तक़लीफ़ों से मुक्त कर दो।''

''मैं तुम्हें नहीं समझ पा रही हूँ।'' मृत्यु ने कहा, ''तुम्हें अपना बच्चा वापस चाहिए या मैं उसे अनजानी जगह पर ले जाऊँ ?''

इस पर माँ ने अपने हाथ जोड़े और घुटनों पर गिरकर भगवान से प्रार्थना करने लगी—''मेरी बात तब मत सुनो प्रभु ! जब मैं तुम्हारी इच्छा के ख़िलाफ़ बोलूँ। क्योंकि तुम्हारी इच्छा ही सबसे बड़ी है। मेरी बात मत सुनो, मत सुनो !'' और उसने अपना सिर अपने सीने में छुपा लिया।

और मृत्यु बच्चे को लेकर अनजान देश में चली गयी।

11

देवदार का पेड़

जंगल में एक छोटा, सुन्दर-सा देवदार का पेड़ था। वह अच्छी जगह पर खड़ा था। उसे सूरज की रोशनी मिलती थी, बहुत-सी हवा उसके पास आती थी और आसपास दूसरे बहुत सारे साथी थे चीड़ और देवदार के अन्य पेड़। लेकिन अचानक छोटे देवदार के पेड़ की इच्छा हुई कि वह बड़ा हो जाय। उसने गुनगुनी धूप और ताज़ी हवा की परवाह नहीं की, उसने किसानों के बच्चों की परवाह नहीं की जो स्ट्रॉबेरी और रसभरी देखने आते थे और उसके पास से बातें करते हुए गुजरते थे। अक्सर वे बर्तन भरकर या एक रस्सी पर लटकाकर ये फल खाते थे और छोटे देवदार के पेड़ के पास बैठकर कहते थे, ''यह कितना छोटा-सा सुन्दर पेड़ है।'' लेकिन पेड़ को यह बात पसन्द नहीं आती थी।

अगले साल उसमें एक बड़ी शाख़ फूटी और उसके अगले साल वह और बढ़ा। देवदार के पेड़ में तो उसके तने के गड्ढे गिनकर पेड़ की उम्र पता लगायी जा सकती है कि कितने सालों से वह बढ़ रहा है।

''ओह, मैं भी दूसरे पेड़ों जैसा बड़ा होता !'' छोटे देवदार के पेड़ ने आह भरी, ''तब मैं अपनी शाख़ें चारों ओर फैला सकता और अपने ताज में से झाँककर दुनिया को देख सकता। चिड़ियाँ अपने घोंसले मुझमें बनातीं और हवा बहने पर मैं भी इन दूसरे पेड़ों की तरह शान से झूम सकता।''

उसे सूरज की रोशनी में, पक्षियों में और अपने ऊपर से सुबह-शाम गुजरते बादलों में कोई आनन्द न आता।

सर्दियों में जब चारों तरफ़ सफ़ेद चमकीली बर्फ़ पड़ी होती तब एक ख़रगोश अक्सर उछलता-कूदता आता और उस छोटे देवदार के पेड़ के ठीक ऊपर भी उछलता। ओह, इससे तो वह बहुत ही गुस्सा हो जाता। लेकिन दो सर्दियाँ बीतने के बाद तीसरी सर्दी में वह पेड़ इतना बड़ा तो हो ही गया कि ख़रगोश उसके

ऊपर नहीं चढ़ सकता था और उसके आसपास घूमकर ही रह जाता था।

"ओह, बढ़ना, बढ़ना और बड़ा होना—दुनिया में केवल यही एक सुन्दर चीज है।" पेड़ ने सोचा।

शरद ऋतु में अक्सर लकड़हारे जंगल आते और कुछ बड़े पेड़ काट ले जाते। इस साल भी ऐसा ही हुआ और छोटा देवदार का पेड़, जो अभी ज़्यादा बड़ा नहीं हुआ था, डरकर काँप गया क्योंकि बड़े-बड़े पेड़ ज़मीन पर गिर चुके थे और उनकी शाख़ें काटीं जा चुकीं थीं, जिससे वे पेड़ एकदम नंगे लम्बे और पतले लग रहे थे—उन्हें मुश्किल से पहचाना जा सकता था। उसके बाद उन्हें गाड़ियों में लादा गया और घोड़े उन्हें खींचते हुए जंगल से बाहर ले गये। वे कहाँ जा रहे थे ? उनकी क़िस्मत उन्हें कहाँ ले जा रही है !

बसन्त ऋतु में जब बलाक और अबाबील पक्षी आये, पेड़ ने उनसे पूछा, "क्या तुम्हें पता है कि उन्हें कहाँ ले जाया गया है ? क्या तुम उनसे नहीं मिले ?"

अबाबील को उनके बारे में कुछ नहीं मालूम था लेकिन बलाक ने कुछ सोचा, अपना सिर हिलाया और कहा—"हाँ, मुझे लगता है। जब मैं मिस्र के बाहर उड़कर जा रहा था तो मुझे बहुत से नये जहाज़ दिखे। उन पर बड़ी-बड़ी पालें लगी हुई थीं। मुझे लगता है कि वे वही पेड़ थे। उनसे देवदार जैसी महक आ रही थी। मैं विश्वास से कह सकता हूँ कि वे बहुत ही बड़े थे—एकदम भव्य।"

"ओह, काश मैं इतना बड़ा होता कि समुद्र तक पहुँच सकता ! समुद्र कैसा होता है ? वह कैसा दिखाई देता है ?"

"यह सब समझाने में तो बहुत समय लग जायेगा।" अबाबील बोला और उड़ गया।

"अपनी युवावस्था का आनन्द उठाओ।" सूरज की किरणें बोली, "बढ़ते हुए आनन्द उठाओ और अपनी उमंग को पहचानो।"

हवा ने पेड़ को चूमा और ओस ने उस पर अपने आँसू बहाए लेकिन देवदार का पेड़ यह सब नहीं समझ सका।

जब क्रिसमस का समय आया तो बहुत-से छोटे पेड़ भी काटे गये। उनमें से कुछ पेड़ ऐसे भी थे जो उस देवदार के पेड़ से छोटे और कम आयु के थे, जो कभी आराम से नहीं रहते थे, बस बढ़ना ही चाहते थे। इन छोटे पेड़ों को भी जो सबसे सुन्दर थे, काटकर गाड़ी पर लादा गया और घोड़े उन्हें खींचकर जंगल से बाहर ले गये।

"ये सब कहाँ जा रहे हैं ?" देवदार के पेड़ ने पूछा, "ये मुझसे बड़े नहीं

हैं—और उनमें से एक तो बहुत ही छोटा है। उन्होंने उनकी शाख़ें क्यों रख ली हैं ? उन्हें कहाँ ले जा रहे हैं ?''

''हमें मालूम है। हमें मालूम है !'' गौरया चिल्लाई, ''वहाँ शहर में हमने खिड़कियों के भीतर देखा था। हमें मालूम है कि वे कहाँ गये हैं। ओह, वे तो बहुत ही सजे-धजे थे। हमने खिड़की के भीतर देखा था और देखा कि वे कमरे के बीचोंबीच खड़े हैं और उन्हें सुन्दर चीज़ों से सजाया गया है। जैसे सुनहरे सेब, शहद के केक, खिलौने और बहुत-सी मोमबत्तियाँ।''

''तब ?'' ''देवदार के पेड़ ने पूछा और उसकी शाख़ें काँप उठीं। ''तब ? फिर क्या होता है ?''

''हमने और कुछ नहीं देखा। लेकिन यह सब अनोखा था।''

''शायद एक दिन मुझे भी इसी भव्य रास्ते पर जाना है !'' देवदार का पेड़ ख़ुश होकर चिल्लाया, ''यह तो समुद्र को पार करने से भी बेहतर होगा। मुझे इसकी कितनी तीव्र इच्छा है ! काश ! अभी क्रिसमस होता ! अब मैं उन पेड़ों की तरह बढ़ गया हूँ, जिन्हें पिछले साल ले जाया गया था। ओह, यदि मैं गाड़ी पर चढ़ा होता ! यदि मैं कमरे में सजी-धजी चीज़ों के बीच होता ! और फिर ? तब शायद कुछ बेहतर होता, और सुन्दर ! नहीं तो वे मुझे क्यों सजायेंगे ? इसके बाद ज़रूर कुछ बड़ा, कुछ भव्य होगा, लेकिन क्या ? ओह, मैं परेशान हो रहा हूँ, मैं इन्तज़ार कर रहा हूँ ! मुझे खुद ही नहीं मालूम कि मुझे क्या हो रहा है ?''

''हमारे साथ ख़ुशी मनाओ।'' हवा और सूरज की रोशनी ने कहा, ''जंगल में अपनी युवावस्था का आनन्द उठाओ।''

लेकिन देवदार का पेड़ ज़रा भी खुश नहीं हुआ। और वह बढ़ता गया, बढ़ता गया। सर्दी और गर्मी में वह खड़ा रहा—हरा भरा, गहरा हरा, जिन लोगों ने उसे देखा वे बोले, ''यह बहुत सुन्दर पेड़ है !'' और क्रिसमस के समय उसे सब पेड़ों से पहले ही काट दिया गया। कुल्हाड़ी ने उसकी नसें गहराई तक काट दीं और वह आह भरकर ज़मीन पर गिर पड़ा। उसे दर्द महसूस हुआ, उसका सिर घूमा और वह खुश होने के बारे में सोच भी नहीं सका, क्योंकि घर से बिछुड़ने पर वह दुखी था—उस घर से जहाँ वह बड़ा हुआ था। उसे मालूम था कि वह अपने पुराने साथियों को नन्हीं झाड़ियों और सुन्दर फूलों को कभी नहीं देख सकेगा—शायद पक्षियों को भी नहीं। यह विदाई उसे एकदम सहन नहीं हो रही थी

पेड़ तभी होश में आया जब उसे गाड़ी से दूसरे पेड़ों के साथ एक आँगन



में उतारा गया और उसने एक आदमी को कहते हुए सुना—

"यह अच्छा है, हमें यही चाहिए !"

दो नौकर अच्छी वर्दी पहने हुए आये और देवदार के उस पेड़ को उठाकर एक सुन्दर कमरे में ले गये। सभी दीवारों पर तस्वीरें टँगी थीं और बड़े चूल्हे के पास बड़े चीनी बर्तन रखे थे जिनके ढक्कन शेरों जैसे बने थे। वहाँ आराम कुर्सियाँ थीं, रेशमी सोफ़े थे, बड़ी मेज़ें थीं, जिन पर चित्रों वाली किताबें रखी थीं। और सौ रुपये के भी सौगुने दाम के खिलौने रखे थे—कम-से-कम बच्चे तो ऐसा ही कहते थे। देवदार के पेड़ को वहाँ रेत से भरे एक टब में रखा गया लेकिन किसी को पता नहीं लग रहा था कि वह टब था क्योंकि उसके ऊपर एक हरा कपड़ा लगाया गया था और एक बड़े से रंग-बिरंगे क़ालीन पर उसे रखा गया था। ओह, पेड़ कैसे काँप रहा था। अब क्या होने वाला है ? नौकरों और लड़कियों ने उसे सजाया। एक शाख़ पर उन्होंने रंगीन काग़ज़ से काटकर बनायी गयी छोटी जालियाँ लगायीं। हर जाली में मिठाइयाँ, सुनहरे सेब और अख़रोट इस तरह लटके थे जैसे कि वे वहीं लगे हुए हों। अलग-अलग जगहों पर सौ से भी ज़्यादा छोटी लाल सफ़ेद और नीली मोमबत्तियाँ लगी हुई थी। गुड़ियां ठीक असली लोगों जैसी लग रही थीं—पेड़ ने यह सब कुछ पहले कभी नहीं देखा था। पेड़ के ऊपर पत्तियों के बीच एक चमकीला सितारा लटका था। वह बहुत सुन्दर था, बहुत ही सुन्दर।

"आज शाम यह चमकेगा।" सबने कहा।

"ओह !" पेड़ ने सोचा, "अब शाम हो ही गयी है ! जल्दी से बत्तियाँ जला देनी चाहिए। ऐसा कब होगा ? काश, जंगल से सभी पेड़ मुझे देखने आ पाते। क्या गौरैया खिड़की के भीतर आ सकती हैं। क्या मैं यहाँ जल्दी बढ़ जाऊँगा और गर्मी और सर्दी में सजा-धजा खड़ा रहूँगा ?"

सचमुच, उसने ग़लत अन्दाज़ नहीं लगाया था। लेकिन इन्तज़ार करते-करते उसकी पीठ दुख गयी और किसी पेड़ के लिए पीठ का दर्द उतना ही ख़राब होता है जितना आदमी के लिए सिरदर्द।

आख़िरकार मोमबत्तियाँ जल गयीं। कितना सुन्दर था, कितना भव्य। पेड़ ऐसे काँपा कि एक मोमबत्ती से एक हरी शाख़ में आग लग गयी और वह झुलस गयी।

"हे ईश्वर हमारी रक्षा करो !" लड़कियाँ चिल्लाईं और उन्होंने जल्दी से आग को बाहर निकाल दिया।

अब पेड़ काँप भी नहीं सकता था। यह स्थिति बड़ी मुसीबत वाली थी।

उसे अपने ऊपर लगी सजावटी चीज़ों में आग लगने का इतना डर हुआ कि घबराहट में उसे कुछ सूझ ही नहीं रहा था। मुड़ने वाले दरवाज़ों को खोल दिया गया और बहुत-से बच्चे इतनी तेज़ी से भीतर आये जैसे कि वे पूरे पेड़ को उलट-पुलट देंगे। उनके पीछे बड़े लोग इसी काम के लिए आये। बच्चे थोड़ी चुपचाप खड़े रहे, लेकिन केवल एक मिनट के लिए, फिर वे इतने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे कि छोटा-सा कमरा गूँजने लगा। वे पेड़ के आसपास खुशी से नाचने लगे और उस पर से सजावटी उपहार निकालने लगे।

"ये क्या करने जा रहे हैं ?" पेड़ ने सोचा, "क्या होने वाला है ?" मोमबत्तियाँ शाख़ों को जलाने लगीं। लेकिन जैसे ही उनमें आग बढ़ी, आग बुझा दी गयी। इसके बाद बच्चों को पेड़ की लूटपाट करने की इजाज़त दे दी गयी, वे उस पर टूट पड़े कि हर शाख़ दोबारा टूट पड़ने को हुई। यदि उसे ऊपर से और छत से सुनहरे सितारे से नहीं बाँधा गया होता तो वह गिर ही पड़ता।

बच्चे अपने सुन्दर खिलौने लेकर नाचने लगे। एक बूढ़े के सिवाय किसी ने पेड़ को नहीं देखा, जिसने पास आकर पेड़ की शाख़ों के बीच झाँककर देखा तो, लेकिन सिर्फ़ यह देखने के लिए कि कहीं कोई अंजीर या सेब छूट तो नहीं गया है।

"कहानी ! कहानी !" बच्चे चिल्लाये और चिल्लाते हुए एक मोटे आदमी को खींचकर पेड़ के पास लाकर बिठा दिया, "इस तरह तो हम हरे-भरे जंगल में बैठे हैं।" वह बोला, "पेड़ को भी मेरी कहानी सुनने का लाभ मिलेगा। लेकिन मैं केवल एक कहानी सुना सकता हूँ। तुम लोग इवेद-अवेद की कहानी सुनना पसन्द करोगे या बहादुर विजय की, जो सीढ़ियों से गिर गया था लेकिन फिर भी उठा और बड़े सम्मान के साथ राजकुमारी से उसकी शादी हुई ?"

"इवेद-अवेद !" कुछ चिल्लाये, "बहादुर विजय !" दूसरे चिल्लाये, और फिर तो सब तरफ़ चिल्ल-पों ही मच गयी। केवल पेड़ चुपचाप था। उसने सोचा, "क्या मुझे इसके बीच में नहीं जाना चाहिए ? क्या मुझे इससे कुछ लेना-देना नहीं है ?" लेकिन वह शाम के मनोरंजन में शामिल हो चुका था और जो उसे करना चाहिए था उसने किया था।

फिर मोटे आदमी ने बहादुर विजय की कहानी सुनायी जो सीढ़ियों से गिर गया था लेकिन बाद में जिसकी सम्मान के साथ राजकुमारी से शादी हुई थी। बच्चों ने तालियाँ बजायीं और चिल्लाये, "एक और ! एक और !" वे अब इवेद-अवेद की कहानी भी सुनना चाहते थे। पेड़ चुपचाप कुछ सोचता हुआ खड़ा रहा। जंगल में चिड़ियाँ कभी ऐसी कहानियाँ नहीं सुनाती थीं। बहादुर विजय

सीढ़ियों से गिर गया लेकिन फिर राजकुमारी के साथ सम्मान से उसकी शादी हुई।

"तो दुनिया में ऐसा होता है !" पेड़ ने सोचा और मान लिया कि यह सच ही होगा क्योंकि सुनाने वाला आदमी भी तो अच्छा था। "देखो कौन जान सकता है ? शायद मैं भी सीढ़ियों से गिर जाऊँ और मेरी भी किसी राजकुमारी से शादी हो जाये !" और वह अगली शाम फिर से मोमबत्तियों, खिलौनों, सोने और फलों से सजाये जाने की राह देखने लगा। "कल मैं नहीं काँपूँगा।" उसने सोचा, "मैं ख़ूब ख़ुश होऊँगा। कल मैं बहादुर विजय की कहानी फिर से सुनूँगा और शायद इवेद-अवेद की भी।"

और पेड़ पूरी रात चुपचाप खड़ा सोचता रहा। सुबह नौकर-नौकरानियाँ आये। "अब मेरी सुन्दरता फिर से वापस आयेगी।" पेड़ ने सोचा। लेकिन ये उसे खींचकर कमरे से बाहर सीढ़ियों से ऊपर दुछत्ती तक ले गये और वहाँ उसे एक अँधेरे कोने में रख दिया जहाँ सूरज की रोशनी तक नहीं पहुँचती थी।

"इसका क्या मतलब है ?" पेड़ ने सोचा, "मैं यहाँ क्या करने वाला हूँ ? अब क्या होने वाला है ?"

और वह दीवार से टिक गया और सोचता रहा, सोचता रहा। बहुत समय बीत गया—कई दिन और रातें—लेकिन कोई नहीं आया। कभी कोई आया भी तो थोड़ी देर के लिए उस कोने में कोई बड़ा बक्सा रखने के लिए ही आया। अब पेड़ काफ़ी पीछे छिप गया था और लगता था कि लोग उसे भूल गये हैं।

"अब बाहर सर्दी है।" पेड़ ने सोचा, "ज़मीन कड़ी हो गयी है और बर्फ़ से ढक गयी है। लोग मुझे नहीं रोप सकते इसलिए मुझे लगता है कि बसन्त ऋतु आने तक मुझे यहीं शरण लेनी होगी। यह कितना अच्छा है ! लोग कितने भले हैं ! काश यहाँ इतना अँधेरा और इतना भयानक अकेलापन नहीं होता ! एक ख़रगोश तक नहीं। वहाँ जंगल में मोटी बर्फ़ जमने पर बहुत अच्छा लगता था जब खरगोश पास से गुज़रते थे। भले ही वे मेरे ऊपर कूदते थे लेकिन मुझे उस समय वह अच्छा लगता था। यहाँ कितना अकेलापन है !"

"चीं-चीं !" छोटे चूहे ने पास आते हुए कहा और साथ में दूसरा चूहा आया। उन्होंने देवदार के पेड़ को सूँघा और उसकी शाख़ों के बीच घुस गये।

"यहाँ भीषण ठण्ड है।" दोनों नन्हे चूहों ने कहा, "नहीं तो यहाँ आरामदायक लगता। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता बूढ़े देवदार के पेड़ ?"

"मैं बूढ़ा नहीं हूँ।" पेड़ ने कहा, "मुझसे भी बूढ़े और भी बहुत पेड़ हैं।"

"तुम कहाँ से आये हो ?" चूहों ने कहा, "और तुम क्या जानते हो ?"

वे बुरी तरह से पूछताछ कर रहे थे। "हमें धरती की सबसे सुन्दर जगह के बारे में बताओ ? क्या तुम वहाँ गये हो ? क्या तुम भण्डारघर में गये हो जहाँ अलमारियों में पनीर रखा होता है, मांस छत से लटका होता है, हम चर्बी की मोमबत्तियों पर नाचते हैं और जहाँ हम भीतर तो पतले होकर जाते और बाहर निकलते समय मोटे होते हैं ?"

"मैं यह नहीं जानता।" पेड़ बोला, "लेकिन मैं इस दुनिया के बारे में ज़रूर जानता हूँ जहाँ सूरज चमकता है और चिड़िया गाना गाती है।"

फिर उसने उन्हें अपनी युवावस्था के बारे में बताया। उन चूहों ने पहले उस तरह की बातें कभी नहीं सुनी थीं। उन्होंने सुना और बोले,

"तुमने कितनी सारी चीज़ें देखी हैं ! तुम कितने खुश रहे होंगे।"

"मैं ?" पेड़ बोला और उसने अपनी कही बातों के बारे में सोचा।

"सचमुच, वे बहुत खुशी के दिन थे।" तब उसने क्रिसमस के समय की बात बतायी, जब उस पर मिठाइयाँ और मोमबत्तियाँ लटकायी गयी थीं।

"तुम कितने खुश थे, बूढ़े देवदार के पेड़।"

"मैं बूढ़ा नहीं हूँ।" देवदार के पेड़ ने कहा, "मैं इसी सर्दी में जंगल से बाहर आया हूँ। बल्कि अपनी उम्र के हिसाब से मैं उतना बढ़ा भी नहीं हूँ।"

"तुम कौन-सी सुन्दर कहानियाँ सुना सकते हो ?" चूहों ने पूछा।

अगली रात वे चार चूहे दूसरे नन्हें चूहों के साथ उसकी बातें सुनने के लिए आये। जैसे-जैसे वह बताता गया उसे और भी बातें याद आती गयीं। उसने सोचा, "वे बहुत अच्छे दिन थे ! लेकिन वे फिर लौट सकते हैं ? बहादुर विजय सीढ़ियों से गिर गया फिर भी उसकी शादी राजकुमारी से हुई। शायद मेरी शादी भी राजकुमारी से हो जाये !" उसने सुन्दर छोटे-से भोजवृक्ष के बारे में सोचा जो जंगल में लगा था। देवदार के लिए वह भोजवृक्ष भी राजकुमारी जैसा सुन्दर था।

"बहादुर विजय कौन है ?" चूहों ने पूछा।

फिर पेड़ ने पूरी कहानी सुनायी। उसे इस कहानी का एक-एक शब्द अच्छी तरह याद था और चूहे उसे सुनकर इतना खुश हुए कि उन्हें लगा कि पेड़ पर ऊपर तक चढ़ कर कूदें। अगली रात और भी बहुत से नन्हें चूहे आये और रविवार को दो बड़े चूहे भी आये लेकिन उन्हें लगा कि कहानी उतनी मज़ेदार नहीं है। नन्हें चूहों को भी कहानी में पहले जैसा मज़ा नहीं आ रहा था।

"क्या तुम्हें बस यही एक कहानी मालूम है ?" बड़े चूहे ने पूछा।

"हाँ ! केवल यही।" पेड़ ने कहा, "मैंने इसे अपनी ज़िन्दगी की सबसे

सुन्दर शाम को सुना था, तब मुझे यही लगा था कि मैं कितना खुश हूँ।"

"यह बहुत दुखभरी कहानी है। क्या तुम्हें चरबी वाली मोमबत्तियों के बारे में कुछ पता है—भण्डारघर की कोई कहानी ?"

"नहीं।" पेड़ ने कहा।

"तब हम तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे।" बड़े चूहों ने कहा।

और वे वापस अपने साथियों के पास चले गये। नन्हें चूहे भी चले गये। पेड़ गहरी साँस लेकर बोला,

"बहुत अच्छा था कि वे नन्हें चूहे मेरे आसपास बैठे और उन्होंने मेरी बातें सुनीं। अब यह भी बीती हुई बात है। लेकिन जब वे मुझे बाहर ले जायें तो मुझे खुश होना चाहिए।"

लेकिन ऐसा कब हुआ ? एक सुबह लोग आये और दुछत्ती में भर गये, बक्सों को हटाकर पेड़ को बाहर निकाला गया। उन्होंने उसे ज़ोर-से ज़मीन पर फेंक दिया लेकिन एक नौकर उसे सीढ़ियों तक खींचकर ले आया जहाँ सूरज की रोशनी आ रही थी।

"अब ज़िन्दगी फिर से शुरू हो रही है !" पेड़ ने सोचा। उसने ताज़ी हवा और सूरज की पहली किरण को महसूस किया। अब वह बाहर आँगन में था। सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि पेड़ को अपनी तरफ़ देखने का मौक़ा ही नहीं मिला। उसके आसपास देखने के लिए बहुत कुछ था। आँगन बगीचे के पास में था जहाँ फूल खिल रहे थे। नन्हीं बाड़ के ऊपर ताज़े और सुगन्धित गुलाब खिले थे। नीबू के पेड़ों में भी फूल खिल रहे थे। अबाबील बोल रहे थे, "कैंज-विट ! कैंज-विट ! मेरा पति आ गया !" लेकिन यह वे देवदार के पेड़ के लिए नहीं कह रहे थे।

"अब मैं ज़िन्दा रहूँगा !" पेड़ खुशी से बोला और उसने अपनी शाखें फैलाईं। लेकिन आह ! वे सभी मुरझा गयी थीं और पीली पड़ गयी थीं और वह कोने में बोरियों और कचरे के बीच पड़ा था। उस पर लगा चमकीला सितारा सूरज की रोशनी में चमक रहा था।

आँगन में कई बच्चे ख़ुशी से खेल रहे थे जो क्रिसमस में उस पेड़ के पास नाचे थे और आनन्द उठाया था। उनमें से एक दौड़कर आया और उसने सुनहरा सितारा तोड़ लिया।

"देखो इस बदसूरत बूढ़े देवदार के पेड़ में क्या लगा है।" एक बच्चे ने कहा और वह शाख़ों पर कूदने लगा जिससे वे उसके जूतों के नीचे आकर चटक गयीं।

पेड़ ने सुन्दर बगीचे के सभी फूलों को देखा और फिर अपनी ओर देखा।

उसकी इच्छा हुई कि वह दुछत्ती के अँधेरे कोने में ही रहे। उसने जंगल में अपनी युवावस्था के दिनों के बारे में सोचा, उस ख़ुशनुमा क्रिसमस की शाम के बारे में सोचा और उन नन्हें चूहों के बारे में सोचा जिन्होंने ख़ुशी से बहादुर विजय की कहानी सुनी थी।

"ख़तम ! ख़तम !" बूढ़े पेड़ ने कहा, "यह सब न होता तो मुझे आनन्द कैसे मिलता ! ख़तम ! ख़तम !"

नौकर आया और उसने पेड़ को टुकड़ों में काट दिया। एक पूरा गट्ठर वहाँ पड़ा था। उबलते हुए बड़े ताँबे के बर्तन के नीचे वह लकड़ियाँ चमक रही थीं। पेड़ ने गहरी आह भरी और हर आह एक छोटे धमाके के समान थी। जो बच्चे वहाँ खेल रहे थे, आकर आग के पास बैठ गये और चिल्लाए, "पफ़ ! पफ़ !" लेकिन हर धमाके के साथ उसकी आह थी। पेड़, गर्मियों में या सर्दियों की शामों में जंगल के अपने दिनों के बारे में सोचता—जब सितारे चमकते थे। क्रिसमस की शाम के बारे में सोचता और बहादुर विजय की कहानी के बारे में सोचता—एक कहानी जो उसने सुनी और सुनाई थी—और फिर पेड़ जल गया।

बच्चे बगीचे में खेल रहे थे। उनमें से सबसे छोटे बच्चे ने अपने सीने पर वह सितारा लगाया जो पेड़ पर उसकी ज़िंदगी की सबसे खुशनुमा शाम को लगा था। अब सब बीत गया था, पेड़ का जीवन भीं कहानी भी ख़तम ! ख़तम !"

और ऐसा सभी कहानियों के साथ होता है।

12

दौड़ प्रतियोगिता

एक इनाम नहीं बल्कि दो इनाम रखे गये—एक बड़ा और दूसरा छोटा—बड़ा इनाम सबसे तेज़ दौड़ने वाले के लिए था यानी किसी एक दौड़ के लिए नहीं, बल्कि साल भर सबसे तेज़ दौड़ने वाले के लिए।

"मुझे पहला इनाम मिला ?" ख़रगोश बोला, "अब रिश्तेदार और अच्छे दोस्त इनाम तय करने वाली कमेटी में हों तो न्याय होना ही चाहिए। लेकिन घोंघे को दूसरा इनाम मिलना चाहिए इस बात को मैं एक तरह से अपना अपमान समझता हूँ।"

"नहीं !" बग़ीचे की बाड़ ने कहा जो कि पुरस्कार-वितरण की गवाह थी। "मेहनत और धैर्य को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। बहुत-से सम्माननीय लोग यह बात कहते हैं और मैं भी उसे अच्छी तरह समझती हूँ। घोंघे को निश्चय ही दरवाज़े तक आने में आधा साल लग गया लेकिन वह जल्दी-जल्दी इस काम के लिए आया, भले ही उसे चोट भी लग गयी और जल्दी करने से उसके कन्धे की हड्डी भी टूट गयी। उसने पूरा ध्यान अपने काम में लगाया और वह अपनी पीठ पर अपना घर लेकर दौड़ता रहा। यह सब बड़ा आकर्षक था और इसी वजह से उसे दूसरा इनाम मिला।"

"मुझे भी इस इनाम के लिए ज़रूर शामिल किया जाता।" अबाबील बोला, "मुझे लगता है कि मुझसे तेज़ कोई भी नहीं उड़ सकता और मैं कितनी दूर-दूर तक उड़कर गया हूँ। दूर-दूर-दूर !"

"हाँ, यह तुम्हारा दुर्भाग्य ही है।" बाड़ बोली, "तुम्हें फड़फड़ाना बहुत पसन्द है। जब यहाँ सर्दी शुरू होती है, तुम्हें दूर के देशों में उड़कर जाना बहुत अच्छा लगता है। तुम्हें अपने देश के लिए ज़रा-सा भी प्यार नहीं है। तुम्हारे

बारे में विचार नहीं किया जा सकता था।"

"लेकिन यदि मैं सारी सर्दियों में बंजर भूमि में ही पड़ा रहा तो ?" अबाबील बोला, "मान लो मैं पूरे समय सोता रहा, तब भी क्या मुझे इनाम के लिए ध्यान में नहीं रखा जायेगा ?"

"बंजर भूमि की एक बूढ़ी मुर्ग़ी से प्रमाण-पत्र लेकर आओ कि तुम आधे समय अपने देश में ही सोते रहे थे तभी तुम्हारे बारे में विचार किया जायेगा।"

"मुझे पहला इनाम मिलना चाहिए था दूसरा नहीं।" घोंघा बोला, "मुझे कम-से-कम इतना तो मालूम है कि ख़रगोश केवल डर के कारण दौड़ा था, क्योंकि हर बार उसे लगता था कि देर करने में ख़तरा है। दूसरी तरफ़ मैंने दौड़ने को ही अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य बनाया और इस कोशिश में लँगड़ा भी हो गया। यदि किसी को पहला इनाम मिलना चाहिए था तो वो मुझे ही मिलना था लेकिन चूँकि मुझे बकबक करना और डींग हाँकना नहीं आता—बल्कि इसके विपरीत मैं इन बातों से नफ़रत करता हूँ, इसलिए इनाम नहीं मिला।"

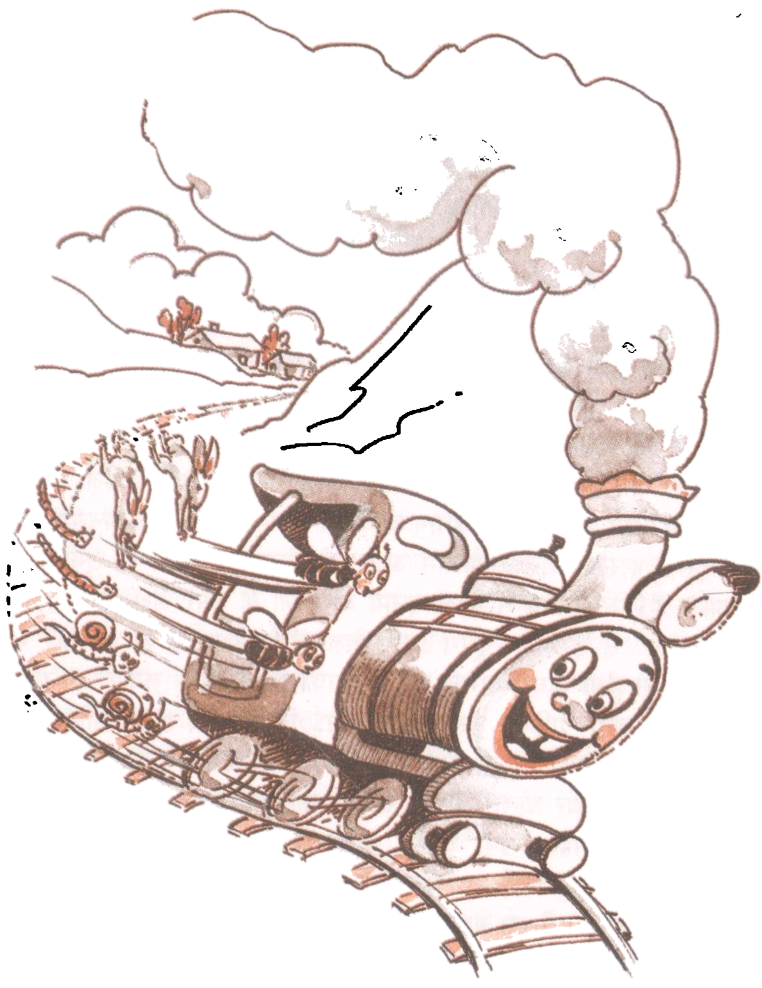
और घोंघा काफ़ी चिढ़ गया।

"मैं शपथ ले कर कह सकता हूँ कि हर इनाम और कम से कम मेरे इनाम के लिए मेरा वोट तो ठीक तरीके से विचार के बाद ही दिया गया था।" जंगल की सीमा के पुराने खम्भे ने कहा जो कि निर्णायकों की समिति का एक सदस्य था। "मैं हमेशा ध्यान से, तरीक़े से और हिसाब से काम करता हूँ। इसके पहले सात बार मुझे पुरस्कार-वितरण के समय उपस्थित रहने का और अपना वोट देने का सम्मान प्राप्त हो चुका है, लेकिन आज तक मैंने अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं किया। मैंने हमेशा पहला इनाम वर्णमाला के प्रथम अक्षर के अनुसार दिया और दूसरा पुरस्कार उसके अन्तिम अक्षर को दिया है। ध्यान से सुनो तो मैं समझाता हूँ। मेरे हिसाब से पहला इनाम वर्णमाला के दूसरे अक्षर का था और वह था "ख" से ख़रगोश। दूसरा इनाम मिला चौथे अक्षर को तो वह था "घ" और "घ" से हुआ घोंघा। अगली बार मैं इसका उल्टा गणित लगाऊँगा। गणित हमेशा सही रहना चाहिए। शुरूआत का कोई बिन्दु ज़रूर होना चाहिए।"

"यदि मैं निर्णायकों में नहीं होता तो मैंने ज़रूर अपने आपको ही वोट दिया होता।" खच्चर बोला, जो कि समिति का एक सदस्य था। "किसी को केवल तेज़ी ही नहीं देखनी चाहिए बल्कि दूसरे गुणों पर भी ध्यान देना चाहिए—उदाहरण के लिए यह कि कोई उम्मीदवार दूसरों का कितना ध्यान आकर्षित करता है। मैं इस बार उसकी दौड़ते समय की बुद्धिमत्ता पर बात नहीं करूँगा और न ही इस बारे में बोलूँगा कि वह इस चालाकी से छलाँग लगाकर

छिप जाता है कि किसी को पता भी नहीं चलता कि वह कहाँ है। नहीं ! कुछ दूसरी चीज़ें भी हैं जिस पर लोग बल देते हैं और जिसे एकदम अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। मेरा मतलब है सुन्दरता से। सुन्दर चीज़ों पर मेरा ध्यान जाता है। मैंने ख़रगोश के सुन्दर बड़े कानों को देखा। उन लम्बे कानों को देखना सचमुच बहुत सुन्दर लगता है। मुझे ऐसा लगा जैसे कि मैं अपने बचपन का रूप देख रहा हूँ। और इसलिए मैंने ख़रगोश को वोट दिया।''

''लेकिन।'' मक्खी बोली, ''मैं बातें नहीं बनाने वाली। मुझे केवल इतना



ही कहना है कि मैंने कई ख़रगोशों को पीछे छोड़ दिया है। बाढ़ में तो मैंने एक खरगोश का पैर ही कुचल दिया था। मैं एक बार एक ट्रेन के इंजन के आगे बैठी थी—मैं अक्सर ऐसा करती हूँ क्योंकि उससे हमें हमारी गति पता चलती है। एक छोटा ख़रगोश बहुत देर से इंजन के सामने दौड़ रहा था। उसे मालूम नहीं था कि मैं भी वहाँ पर हूँ लेकिन आख़िरकार उसने दौड़ना छोड़ दिया और एक तरफ़ कूद गया—फिर इंजन ने उसके पैरों को कुचल दिया क्योंकि मैं इंजन के ऊपर थी। ख़रगोश वहीं पड़ा रहा लेकिन मैं आगे चली गयी। यह निश्चय ही मेरी विजय थी। लेकिन मैं इनाम की उम्मीदवार नहीं बनना चाहती !''

''मुझे ऐसा लगता है।'' जंगली गुलाब ने सोचा—लेकिन उसने यह बात कही नहीं क्योंकि अपनी राय ज़ाहिर करना उसका स्वभाव नहीं था। हालाँकि यदि वह ऐसा करता तो अच्छा ही होता। ''मुझे लगता है कि सूरज की किरण को पहला और दूसरा दोनों इनाम मिलने चाहिए। सूरज की किरण बहुत तेज़ी से, सूरज से लेकर हम लोगों तक का इतना लम्बा रास्ता तय करती है और इतनी शक्ति से आती है कि पूरी प्रकृति उससे जाग जाती है। यह इतनी सुन्दर होती है कि इससे सारे गुलाब शरमाते हैं और ख़ुशबू देते हैं। हमारे माननीय निर्णायकों ने शायद इस बात पर ज़रा-सा भी ध्यान नहीं दिया है। अगर मैं सूरज की किरण होता तो उन सबको ज़रूर एक बार लू लगा देता—लेकिन उससे तो केवल वे पागल हो जायेंगे। मैं कुछ नहीं बोलता, ''जंगली गुलाब ने सोचा।'' ''जंगल में शान्ति फैले ! फूल खिलाना, महकना और रहना—गीतों और किंवदन्तियों में रहना सचमुच बहुत सुन्दर है। सूरज की किरण हम सबसे भी ज़्यादा दिन रहेगी।''

''पहला इनाम क्या है ?'' केंचुए ने पूछा जो कि ज़्यादा ही सो गया था और अभी-अभी आया था।

''पहला इनाम बन्दगोभी के बगीचे में मुफ़्त प्रवेश है।'' खच्चर बोला। ''मैंने ही इस इनाम का प्रस्ताव रखा था। यह निर्णय लिया गया कि यह इनाम ख़रगोश को दिया जायेगा तो मैंने एक सक्रिय सदस्य की हैसियत से इनाम जीतने वाले के फ़ायदे की दृष्टि से इनाम के बारे में सोचा। अब यह ख़रगोश को मिलना है। घोंघा दूसरे इनाम के रूप में बाड़ पर बैठकर मांस कुरेद सकता है और धूप सेंक सकता है। उसे आगे की दौड़ के लिए पहले निर्णायकों में से एक निर्णायक भी बनाया गया है। यह बड़ी बात है कि हमारे बीच एक प्रतिभा ऐसी भी है जिसे मनुष्य 'समिति' कहते हैं। मैं यह ज़रूर कहना चाहूँगा कि हमें भविष्य में और भी उम्मीदें हैं—हमनें बहुत अच्छी शुरुआत की है।''

13

डाकगाड़ी के बारह यात्री

बहुत भीषण सर्दी थी, आसमान में सितारे चमक रहे थे और थोड़ी-सी भी हवा नहीं चल रही थी।

"शमाक !" पड़ोसी के घर के दरवाज़े पर एक पुराना बर्तन फेंका गया। "धाँय ! धाँय !" बन्दूक़ चली। वे लोग नये साल का स्वागत कर रहे थे। आज नये साल की पूर्व सन्ध्या थी ! चर्च की घड़ी बारह बजा रही थी !

तन-ता-रा-रा ! डाकगाड़ी घिसटती हुई आयी। बड़ी-सी गाड़ी शहर के दरवाज़े पर रुकी। इसमें बारह लोग थे, सभी जगहें भरी हुई थीं।

"हुर्रा ! हुर्रा !" शहर के घरों में लोग गा रहे थे और नये साल का स्वागत कर रहे थे। जैसे ही घड़ी के घण्टे बजे वे भरे हुए गिलास हाथ में लेकर खड़े हो गये और एक-दूसरे को नये वर्ष की शुभकामनाएँ देने लगे।

"नया साल मुबारक हो !" सभी चिल्ला रहे थे। "सुन्दर पत्नी !" "खूब सारे पैसे।" और "कोई चिन्ता या परेशानी नहीं !" जैसी शुभकामनाएँ दे रहे थे।

इन शुभकामनाओं के बाद सभी ने जाम टकराए। उधर शहर के दरवाज़े के बाहर—डाकगाड़ी रुकी जिसमें अजनबी मेहमान थे—बारह यात्री।

ये अजनबी कौन थे ? इनमें हरेक के पास अपना पासपोर्ट और अपना सामान था। यहाँ तक कि वे मेरे—तुम्हारे और इस छोटे-से शहर के हर व्यक्ति के लिए उपहार भी लाये थे। ये कौन हैं ? ये क्या चाहते हैं ? और ये अपने साथ क्या लाये हैं ?

"नमस्ते !" वे चिल्लाकर शहर के दरवाज़े पर खड़े सिपाही से बोले।

"नमस्ते !" सिपाही ने जवाब दिया।

"आपका नाम क्या है और आप क्या करते हैं ?" डाकगाड़ी से जो पहला आदमी उतरा उससे सिपाही ने पूछा।

"पासपोर्ट में अपने आप देख लो।" उस आदमी ने जवाब दिया। "मैं, मैं हूँ !" वह भालू की ख़ाल में लिपटा और फ़र के जूते पहने हुए एक प्रभावशाली आदमी लगता था। "मैं वह हूँ जिस पर सब लोग बहुत सारी आशाएँ लगाए रहते हैं। कल मेरे पास आना, मैं तुम्हें नये साल का उपहार दूँगा। मैं लोगों के बीच रुपये-पैसे फेंकता हूँ। मैं बाल भी देता हूँ—इकतीस बाल—लेकिन मैं इसके लिए इकतीस रातों से ज़्यादा वक़्त नहीं गुज़ार सकता। मेरे जहाज़ जम गये हैं लेकिन मेरी काम करने की जगह गर्म और आरामदायक है। मैं एक व्यापारी हूँ। मेरा नाम जनवरी है। मैं अपने साथ केवल बही खाते लेकर चलता हूँ।"

अब दूसरा उतरा। वह बहुत हँसमुख था। वह एक थियेटर का निर्देशक, नाचघर का प्रबन्धक और सभी तरह के मनोरंजक साधनों का भी प्रबन्धक था। उसका सामान एक बहुत बड़ा टब था।

"हम कार्निवल के समय नाचेंगे।" उसने कहा, "मैं तुम्हारे और अपने लिए एक सुन्दर धुन बनाऊँगा। मैं अधिक दिन नहीं ज़िन्दा रहूँगा—अपने पूरे परिवार में सबसे कम उमर का जो हूँ; क्योंकि मैं केवल अट्ठाईस दिन तक रहता हूँ। कभी-कभी वे मुझे एक दिन अधिक दे देते हैं लेकिन मैं इसके लिए ज़्यादा परेशान नहीं होता। हुर्रा !"

"आपको इस तरह चिल्लाना नहीं चाहिए।" सिपाही ने कहा।

"मैं ज़रूर चिल्लाऊँगा।" उस आदमी ने विरोध किया। "मैं कार्निवल का राजकुमार हूँ और मेरा नाम फ़रवरी है।"

अब तीसरा बाहर आया। वह तेज़ चल रहा था लेकिन उसकी नाक बहुत ऊँची थी क्योंकि वह 'चालीस सामन्तों' का सम्बन्धी था और मौसम की भविष्यवाणी करता था। यह फ़ायदे का काम नहीं था और इसीलिए वह तेज़ी में रहता था। उसके कोट के बटन-होल में वॉयलेट के फूलों का एक छोटा गुच्छा लगा हुआ था लेकिन वे फूल बहुत ही छोटे थे।

"मार्च ! मार्च !" चौथे ने उसे पीछे से आवाज़ दी और उसकी पीठ पर हाथ मारा। "क्या तुम्हें कोई खुशबू नहीं आती ? पहरेदारों के कमरे में जल्दी जाओ क्योंकि वे फलों का शरबत पी रहे हैं, जो तुम्हारा प्रिय पेय है। मुझे उसकी खुशबू पहले से ही आ रही है। जल्दी जाइए मार्च साहब !" लेकिन यह सही नहीं था। बोलने वाला व्यक्ति केवल उसके नाम का प्रभाव देखना चाहता था और उसे अप्रैल फ़ूल बनाना चाहता था क्योंकि इसी के साथ उस चौथे व्यक्ति ने शहर में अपना काम-काज शुरू किया था। वह बहुत ही हँसमुख लगता था, कम काम करता था लेकिन छुट्टियाँ बहुत मनाता था।

"यदि दुनिया में थोड़ी और स्थिरता होती।" उसने कहा, "लेकिन कई बार कोई प्रसन्न होता है, तो कभी दुखी—परिस्थितियों के अनुसार कभी बरसात होती है तो कभी धूप चमकती है। मैं घर और दफ़्तर किराए पर दिलाने वाला एजेंट हूँ और दाह-संस्कारों का प्रबन्धक भी हूँ। मैं परिस्थितियों के अनुसार हँस और रो सकता हूँ। यहाँ इस बक्से में मेरी गर्मी की पोशाकें हैं, लेकिन इन्हें पहनना बेवकूफ़ी का काम होगा। मैं आ गया ! रविवार को मैं जूते और रेशमी मोज़े पहनकर गले में मफ़लर पहनकर घूमने निकलता हूँ।"

उसके बाद गाड़ी से एक स्त्री उतरी। उसने अपना नाम कुमारी मई बताया। उसने गर्मी की पोशाक और जूते पहने थे—हल्के हरे रंग की पोशाक और बालों में एनीमोन के फूल लगाये थे और उसके पास से जंगली फूलों की इतनी तेज़ महक आ रही थी कि सिपाही को छींक आ गयी।

"ईश्वर तुम्हें खुश रखे !" उसने कहा। यह उसके अभिवादन करने का तरीक़ा था।

वह कितनी सुन्दर थी ! वह एक गायिका थी—थियेटर की या बैले की गायिका नहीं बल्कि जंगलों की गायिका। वह हरे-भरे जंगलों में घूमती रहती थी और अपने मन की ख़ुशी के लिए ही गाती थी।

"अब हमारी युवा साथी आयी हैं।" गाड़ी में बैठे लोग बोले। युवा स्त्री नज़ाक़त से, गर्व के साथ सुन्दरता से गाड़ी से बाहर आयी। आसानी से समझा जा सकता था कि वह मिस्ट्रेस जून थी जिसे सुस्त पहाड़ी चूहों द्वारा सेवा कराने की आदत थी। उसने साल के सबसे लम्बे दिन पर एक पार्टी दी थी जिससे मेहमान मेज़ पर सजी सभी खाने-पीने की चीज़ों का स्वाद ले सकें। उसकी अपनी गाड़ी थी लेकिन फिर भी वह बाक़ी लोगों के साथ सफ़र करती थी क्योंकि वह बताना चाहती थी कि वह घमण्डी नहीं है। लेकिन वह सुरक्षा के बिना नहीं चलती थी। उसका बड़ा भाई जुलाई उसके साथ रहता था।

वह मोटा-सा युवा लड़का था जिसने गर्मियों की पोशाक और पनामा हैट पहना था, उसके पास बहुत थोड़ा-सा सामान था क्योंकि गर्मी में ज़्यादा सामान लेकर चलना कठिन था। और उसने इसीलिए अपने साथ केवल तैरने की पोशाकें रखी थी और जो कि बहुत ज़्यादा नहीं थीं।

अब उनकी माँ आयी। मैडम अगस्त, जो फलों की थोक व्यापारी, अनेक मछली के तालाबों और खेतों की मालकिन थी वह एक बड़ा-सा चोग़ा पहने थी। वह मोटी और गर्म मिज़ाज वाली थी और अपने हाथों का अच्छी तरह उपयोग कर सकती थी। वह खेत में काम कर रहे लोगों के लिए ख़ुद ही बियर ले जाती थी।



"अपने माथे के पसीने से ही तुम रोटी खाओगे।" उसने कहा, "यही भाग्य की किताब में लिखा है। इसके बाद ही घूमना-फिरना, नाच-गाना, जंगलों में खेल-कूद और फ़सल के बाद की दावत होती है।"

वह एक कुशल गृहणी थी।

उसके बाद गाड़ी से एक आदमी उतरा। वह एक चित्रकार था—श्रीमान वरिष्ठ चित्रकार सितम्बर। जंगल उसका स्वागत करता, पत्ते अपने रंग बदल लेते, लेकिन कितने सुन्दर तरीक़े से ! जब उसकी इच्छा होती जंगली लाल, पीले और भूरे रंगों में दमकने लगता। वह काले मैंगपाई कीड़े की तरह सीटी बजाता, जल्दी-जल्दी काम करता। उसके बियर के मग के चारों तरफ़ भूरे और हरे पौधे लगे थे। यह जाम के आभूषण थे और उसे सजावट के अच्छे तरीक़े मालूम थे। वह अपने रंगों के बर्तनों के साथ खड़ा था और यही उसका पूरा सामान था।

उसके बाद एक ज़मींदार आया। वह खेतों में हल चलवाने और ज़मीन तैयार करवाने का ध्यान रखता था और मैदानी खेलों का भी प्रबन्ध करता था। ज़मींदार अक्तूबर अपने साथ अपना कुत्ता और बन्दूक़ लाया था और उसके खेल के थैले में अख़रोट भरे थे। "क्रैक ! क्रैक !" उसके पास बहुत-सा सामान था। यहाँ तक कि एक इंग्लिश हल भी। वह खेती के बारे में ही बातें कर रहा था, लेकिन उसके पड़ोसी के खाँसने और हाँफने के कारण उसकी बात किसी को भी सुनाई नहीं दे रही थी।

यह नवम्बर था जो बाहर आने पर बहुत ज़ोर से खाँस रहा था। उसे बुरी तरह ठण्ड लग गयी थी। वह लगातार अपने रूमाल की मदद ले रहा था लेकिन फिर भी, उसने कहा कि उसे नौकरानियों से उनसे सर्दी का नया काम शुरू करवाने आना पड़ा है। उसने कहा कि अब वह जंगल में लकड़ी काटने जायेगा क्योंकि वह जलाऊ लकड़ी-संघ का आरा-मास्टर था। उसने अपनी शामें, स्केट के लिए लकड़ी के तले तैयार करने में बिताईं क्योंकि वह जानता था कि कुछ हफ़्तों बाद इन जूतों को इस्तेमाल करने का समय आ ही जायेगा।

आख़िरकार आख़िरी यात्री उतरा, आग की कुर्सी के साथ बूढ़ी दिसम्बर—माँ। यह बूढ़ी औरत ठण्डी थी लेकिन उसकी आँखें दो चमकदार सितारों जैसी चमक रही थीं। उसके हाथ में एक गमला था जिसमें एक नन्हा देवदार का पेड़ उग रहा था।

इस पेड़ की मैं रक्षा करूँगी जिससे कि यह क्रिसमस तक बढ़ जाये और ज़मीन से छत तक पहुँच जाये। इसे तब जलती हुई मोमबत्तियों, सुनहरे सेबों और छोटे खिलौनों से सजाया जाये। यह आग की कुर्सी, एकदम स्टोव जैसा

गर्म करती है। मैं अपनी जेब से कहानियों की किताब निकालूँगी और ज़ोर से पढ़ूँगी जिससे कि कमरे में बैठे बच्चे शान्त हो जायें, लेकिन पेड़ पर सजे खिलौने ज़िन्दा हो जायें। सबसे ऊपर लगा मोम का देवदूत अपने सुनहरे पंख फैलाये, अपने हरे-भरे आसन से उड़कर नीचे आये और कमरे में बैठे बड़ों और बच्चों को चूमे। हाँ, गलियारे में खड़े और सड़कों पर बेथलहेम के सितारे के बारे में गीत गाते बच्चों को भी वह चूमे।

"ठीक, अब गाड़ी जायेगी !" सिपाही बोला, "हमारे पास सभी बारह हैं। गाड़ी को जाने दो।"

"पहले सभी बारहों को मेरे पास आने दो।" ड्यूटी पर तैनात कैप्टेन बोला, "एक के बाद एक। उनके पासपोर्ट मैं यहीं रखूँगा। हरेक पासपोर्ट एक महीने की अवधि के लिए स्वीकृत है। जब महीना बीत जायगा तो मैं उस पासपोर्ट पर उनके व्यवहार के बारे में लिख दूँगा। सबसे पहले श्रीमान जनवरी आयें।"

और श्रीमान जनवरी आगे आये।

"मुझे लगता है जब एक साल बीत जायेगा, तब मैं आपको बता सकूँगा कि बारह लोग मेरे लिए, आपके लिए और सबके लिए क्या उपहार लाए ? लेकिन अभी मुझे इसके बारे में कुछ नहीं मालूम और शायद वे खुद भी इस बारे में कुछ नहीं जानते क्योंकि हम बड़े अजीब समय में रह रहे हैं।"

14

क़लम और दावात

एक कवि के कमरे में मेज़ पर उसका क़लमदान रखा था। उसके बारे में कहा जाता था, "इस स्याही की दावात से जो निकलेगा वह देखना बड़ा मज़ेदार होता है। चलो देखते हैं। अगली चीज़ क्या निकलेगी ? वह सचमुच मज़ेदार होगी !"

"निश्चय ही।" स्याही की दावात बोली।" यह क़लमदान अद्भुत है—यह मैं हमेशा से कहती आयी हूँ।" उसने पेन और मेज़ पर पड़ी आसपास की दूसरी चीज़ों से कहा जो सुन सकती थीं। "मेरे भीतर से कितनी सारी चीज़ें आ सकती हैं। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। और जब यह आदमी मुझसे बात करता है तो मुझे खुद ही नहीं मालूम होता कि अगली चीज़ क्या आने वाली है। मेरी एक बूँद आधे पन्ने के लिए काफ़ी होती है। और आधे पन्ने में क्या नहीं आ सकता ? मुझसे ही कवि के सारे सृजन होते हैं—ये सभी जीवित चरित्र, जिनके बारे में पढ़कर लोगों को लगता है कि वे उनसे मिल चुके हैं—सारी गहरी भावनाएँ, हास-परिहास, प्रकृति के जीवन्त चित्र। मुझे खुद समझ में नहीं आता कि ऐसा कैसे होता है, क्योंकि प्रकृति से मेरा परिचय नहीं है लेकिन निश्चय ही यह मेरे भीतर है। मुझसे ही ये सब चीज़ें निकली हैं, मुझसे ही न जाने कितनी सुन्दर युवतियाँ, कुलाँचे भरती घोड़ियों पर बहादुर सरदारों, अंधों और लंगड़ों और न जाने किन-किन के झुण्ड बाहर आये हैं—और तय मानो, मैं किसी चीज़ के बारे में भी नहीं सोचती।

"तुम ठीक कहती हो।" क़लम बोली, "तुम बिल्कुल भी नहीं सोचतीं; क्योंकि यदि तुम सोचतीं तो तुम यह समझ जातीं कि तुम केवल स्याही देती हो। तुम स्याही देती हो जिससे मैं अपने भीतर की चीज़ें काग़ज़ पर निकालती हूँ क़लम ही लिखती है। इसमें कोई शक नहीं और वास्तव में बहुत से लोगों की कविता की समझ उतनी ही होती है जितनी कि एक पुरानी स्याही की दावात की।"



"तुम्हें अनुभव तो है लेकिन बहुत ही कम।" दावात बोली, "तुमने अभी मुश्किल से एक हफ़्ते काम किया है और तुम अभी से टूटने लगी हो। क्या तुम्हें लगता है कि तुम कवि हो ? तुम केवल नौकरानी हो और तुमसे पहले मैं तुम्हारे जैसी बहुत-सी क़लमों को जानती हूँ। उनमें से कुछ हंस परिवार की थीं और कुछ इंग्लैण्ड की बनी हुई। मैंने पंख की क़लम भी देखी है और स्टील की भी। बहुत-सी क़लमों ने मेरी सेवा की है और आगे भी करेंगी जब "वह" आयेगा—वह व्यक्ति जो मुझसे लिखता है और मेरी जानी हुई चीज़ों को लिखता जाता है। मुझे यह जानने की इच्छा है कि अब वह मुझसे अगली चीज़ कौन-सी लिखेगा।"

"दावात !" क़लम बोली।

देर शाम को कवि घर लौटा। वह एक संगीत-समारोह में गया था जहाँ उसने एक प्रसिद्ध वायलिन वादक को बजाते हुए सुना था और उसकी सुन्दर प्रस्तुति से वह बहुत ही प्रभावित हो गया था। संगीतकार ने वायलिन पर बहुत ही सुन्दर धुन बजायी थी। कभी वह टपकती हुई पानी की बूँदों जैसी सुनाई पड़ती थी, कभी लुढ़कते हुए मोतियों जैसी, कभी चिड़ियों की चहचहाहट जैसी और कभी देवदार के पेड़ों के बीच बहती हुई हवा की सरसराहट जैसी सुनायी देती। कवि को लगा कि उसका दिल रो रहा है। लेकिन संगीतमय तरीक़े से—एक स्त्री की आवाज़ की तरह। ऐसा लग रहा था कि न केवल तार, बल्कि वायलिन का हर हिस्सा बज रहा है। यह बहुत ही सुन्दर प्रदर्शन था। संगीत का वह टुकड़ा बहुत ही कठिन था लेकिन उसका गज़ वायलिन के तारों के ऊपर आगे-पीछे बहुत ही सरलता से चल रहा था और यों लग रहा था, जैसे कि इस तरह तो कोई भी आसानी से कर सकता है। लगता था वायलिन में से अपनी आवाज़ आ रही है और गज़ में से अपनी—वे दोनों ही सब कुछ करते हुए लग रहे थे। श्रोता संगीतवादक को तो भूल ही गये थे, जो उनमें प्राण फूँक रहा था। संगीतवादक को लोग भूल गये थे लेकिन कवि को वह याद था, उसने उसे नाम दिया और इस विषय पर अपने विचारों को लिखा।

"वायलिन और ग़ज का अपनी उपलब्धियों पर गर्व करना कितनी बेवक़ूफ़ी की बात है। फिर भी हम आदमी इस तरह की ग़लती कर जाते हैं—कवि, कलाकार, विज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाले और आम आदमी, हम सभी यही ग़लती करते हैं। हम केवल माध्यम हैं जिन्हें ईश्वर चुनता है। केवल "उसे" ही यह सम्मान मिलना चाहिए। हम ऐसा कुछ नहीं करते जिसके लिए हम गर्व महसूस करें।"

और हाँ, यही बात कवि ने लिखी। उसने इसे एक कथा के रूप में लिखा और शीर्षक दिया ''वादक और उसके वाद्य।''

''आपको यही मिलता है मैडम !'' जब दोनों अकेले हुए तो क़लम ने दावात से कहा, ''क्या तुमने उसे वह पढ़ते हुए नहीं सुना जो मैंने लिखा है ?''

''हाँ, मैंने जो तुमसे कहा वही तुमने लिखा था।'' दावात चिढ़कर बोली, ''वह तुम्हारे ऊपर आरोप था, तुम्हारे अहंकार के कारण। तुम्हें तो पता भी नहीं है कि तुम्हें निशाना बनाया जा रहा था। मैंने तुम्हें अपना एक अंश दिया था क्योंकि निश्चय ही मुझे तो अपना व्यंग्य पता था !''

''दावात-फावात !'' क़लम चिल्लाई

''क़लम-फलम !'' दावात चिल्लाई।

और दोनों ने यह मान लिया कि उसने सही जवाब दिया था और सचमुच किसी का यह सोचना कितना अच्छा है कि उसने सही जवाब दे दिया है—यह सोचकर कोई आराम से सो सकता है और वे यह सोचकर सो गयीं। लेकिन कवि नहीं सोया। उसके भीतर वायलिन के सुर मोतियों की तरह झरते रहे और जंगल में बहते तूफ़ान की तरह विचार पैदा होते रहे। इन विचारों में उसे अपना अन्तर्मन समझ में आया और तब उस पर परम सत्ता के अलौकिक प्रकाश की किरण पड़ी।

सच है, उस परम सत्ता को ही सारा सम्मान मिलना चाहिए।

15

पुराना घर

वहाँ नीचे गली में एक पुराना, बहुत पुराना घर है। जैसा कि इसके ट्यूलिप से सजे खम्भे पर लिखी इबारत से जान पड़ता है, जिसमें इसके निर्माण की तारीख़ खुदी है कि यह लगभग तीन सौ साल पुराना है। इसमें बने चित्रों को देखकर पुराने समय की कविता को पढ़ा जा सकता है। हर खिड़की के ऊपर खम्भे पर एक-एक चेहरा बना हुआ है और ये सभी चेहरे अलग-अलग भावों वाले थे। हर कहानी दूसरी से बढ़कर है और छत के पास एक सीसे की नाली है जिसमें ड्रैगन का सिर बना हुआ है। बरसात के पानी को ड्रेगन के मुँह से बहना चाहिए था लेकन इसकी बजाय वह उसके शरीर से बहता था क्योंकि पाइप में छेद था।

गली के बाक़ी घर अभी भी एकदम साफ़ और नए थे जिनकी खिड़कियाँ बड़ी थीं और दीवारें चिकनी। यह एकदम साफ़ दिखाई देता था कि उनका उस पुराने घर से कोई लेना-देना नहीं था। शायद वे सोचते थे, "पूरी गली की बदनामी का कारण यह पुराना कचरे का ढेर कब तक यहाँ बना रहेगा ? इसकी मुँडेर इतनी बाहर निकली हुई है कि हमारी खिड़कियों में से कोई भी उस दिशा में नहीं जान सकता कि वहाँ क्या हो रहा है। सीढ़ियाँ, किसी महल की सीढ़ियों जैसी चौड़ी हैं और इतनी सीधी हैं कि जैसे चर्च की मीनार हों। लोहे की रेलिंग ख़ानदानी तिजोरी के दरवाज़े जैसी लगती है और उस पर पीतल की नक्काशी है।" लोगों के लिए ये सब एकदम बकवास था।

इसके ठीक सामने कुछ और अच्छे घर थे जो बिल्कुल वैसा ही सोचते थे जैसा कि दूसरे घर सोच रहे थे। लेकिन उनमें से एक खिड़की पर लाल गालों और चमकीली आँखों वाला एक छोटा लड़का बैठा था जिसे सूरज की रोशनी और चाँद की चाँदनी में भी यह पुराना घर बहुत पसन्द था। जब वह उस घर की दीवार की तरफ़ देखता जिसका प्लास्टर गिर चुका था, तो वह बैठकर पुराने



समय के बारे में तरह-तरह की कल्पनाएँ करता रहता—पुराने समय में वह गली कैसी दिखती होगी, इसकी मुँडेरें, चौड़ी सीढ़ियाँ और नुकीली मीनारें—उसे भाले लिए सिपाही भी दिखाई देने लगते और छत की नालियाँ ड्रेगन और टट्टू की शक्ल में बहने लगतीं। यह बहुत सुन्दर घर था, इसमें एक बूढ़ा आदमी रहता था जो चमड़े से बनी घुटनों तक लम्बी पैंट और बड़े-बड़े पीतल के बटनों वाला कोट पहनकर बाहर निकलता था। वह बालों की एक विग लगाता था जिसे देखकर कोई भी समझ सकता था कि वह असली है। रोज़ सुबह एक बूढ़ा आदमी उसके घर के कमरे साफ़ करने और उसके छोटे-मोटे काम करने आता था। बस इसी एक बात के अलावा चमड़े की घुटनों तक लम्बी पैंट पहनने वाला बूढ़ा आदमी उस पुराने घर में अकेला ही रहता था। कभी-कभी वह खिड़की पर आकर बाहर झाँकता तो छोटा बच्चा उसे देखकर सिर हिलाता। बदले में वह भी सिर हिलाता और इस तरह उनकी जान-पहचान हो गयी थी। वे दोस्त बन गये थे। हालाँकि उन्होंने कभी आपस में बात नहीं की, लेकिन यह उतना ज़रूरी भी नहीं था।

छोटे लड़के ने अपने माता-पिता को कहते सुना, "सामने वाला बूढ़ा आदमी अच्छे घर का है लेकिन वह एकदम अकेला है।"

अगले रविवार को छोटे लड़के ने काग़ज़ के टुकड़े में कुछ लपेटा, उसे लेकर दरवाज़े तक गया और उस आदमी से बोला जो बूढ़े व्यक्ति के लिए छोटे-मोटे काम करता था।

"क्या तुम यह मेरी तरफ़ से इन बूढ़े सज्जन को दे दोगे ? मेरे पास दो टिन के सिपाही हैं और यह उनमें से एक है। वह इसे ले लेगा क्योंकि वह बिल्कुल अकेला है।"

बूढ़ा नौकर बहुत खुश हुआ, उसने सिर हिलाया और टिन के सिपाही को घर में ले गया। बाद में वह वापस आया और उसने पूछा कि क्या छोटा लड़का ख़ुद मिलने आ सकता है ? उसके माता-पिता ने उसे अनुमति दे दी और इस तरह वह लड़का उस पुराने घर में पहुँच गया।

सीढ़ियों पर की गयी पीतल की नक्काशी पहले से ज़्यादा चमक रही थी और वह यह सोच सकता था कि उसके सम्मान में उन पर पॉलिश की गयी है। ऐसा लग रहा था कि दीवार पर खुदे हुए तुरहीवादक—हाँ, दरवाज़े के सामने दीवार पर फूलों के बीच तुरहीवादक खुदे हुए थे—अपनी पूरी शक्ति से तुरही बजा रहे हैं, उनके गाल पहले से भी ज़्यादा फूले दिखाई दे रहे थे। हाँ, वे बजा रहे थे, "तान-ता-रा-रा ! छोटा लड़का आ रहा है। तान-ता-रा-रा !" और फिर दरवाज़ा खुला। पूरे बड़े कमरे में योद्धा की पोशाकों में राज दरबार के पुरुषों

और रेशमी कपड़ों में राज दरबार की स्त्रियों की तस्वीरें टँगी थीं। युद्ध की पोशाकें खड़खड़ायीं और रेशम सरसराया। इसके बाद सीढ़ियाँ थीं। जो ऊपर चौड़ी और नीचे सँकरी थीं और उसके बाद छज्जा था जो बहुत ही जीर्ण-शीर्ण हालत में था। उसमें दरारें और बड़े-बड़े छेद थे लेकिन उन सभी में घास और पौधे उग आये थे क्योंकि पूरे छज्जे, आँगन और दीवार पर बहुत-सी हरियाली थी और यह जगह एकदम बगीचे जैसी लगती थी, लेकिन यह छज्जा ही था। यहाँ फूलों के पुराने गमले रखे थे जिनकी शक्लों में गधों जैसे कान बने थे। लेकिन उनमें फूल बेतरतीबी से खिले थे। एक गमले में चारों ओर से गुलाबी फूलों के पेड़ लगे थे यानी हरी शाख़ें-शाख़ों पर शाख़ें, उन पर शाख़ें; और वे साफ़-साफ़ कह रही थीं, "हवा ने हमें सहलाया है, सूरज ने हमें चूमा है और अगले रविवार एक नन्हा फूल देने का वादा किया है, अगले रविवार एक नन्हा फूल !"

इसके बाद वे एक कमरे में आये जहाँ दीवार सुअर के चमड़े से ढकी थी और चमड़े पर सुनहरे फूल छपे हुए थे।

"फूल मुरझा जाते हैं जल्दी लेकिन सुअर की ख़ाल नहीं बदलती।" दीवारों ने कहा। वहाँ ऊँची पीठ और हाथ रखने के हत्थे वाली कुर्सियाँ भी रखी थीं जिन पर नक्काशी का काम किया गया था।

"बैठ जाओ !" उन्होंने कहा "ओह, मेरे भीतर सब कैसे चटख़ रहा है। मुझे लगता है, मुझे कूबड़ निकल आयेगा, उस पुरानी अलमारी की तरह। मेरी पीठ पर कूबड़, उफ !"

अब छोटा लड़का उस कमरे में आ गया जहाँ बूढ़ा आदमी बैठा था।

"टिन के सिपाही के लिए धन्यवाद मेरे नन्हें दोस्त," बूढ़े आदमी ने कहा, "और मेरे पास आने के लिए भी धन्यवाद।"

"धन्यवाद। धन्यवाद ! या "चर्र-चूँ ! चर्र-चूँ !" सारी कुर्सी-मेज़ें बोलीं। वहाँ इतनी सारी कुर्सी-मेज़ें थीं कि वे सभी छोटे लड़के को देखने के लिए एक-दूसरे की राह में आ गयीं।

बीच में दीवार पर एक चित्र टँगा था जिसमें एक सुन्दर स्त्री थी जो युवा और खुशमिजाज़ दिखायी देती थी लेकिन उसने पुराने समय के लोगों जैसे कपड़े पहने थे। उसके बालों में पाउडर था और उसका लहँगा चिपका हुआ-सा था। उसने न तो धन्यवाद कहा, न ही चर्र-चूँ की लेकिन वह छोटे लड़के को अपनी मासूम आँखों से देखती रही। उस लड़के ने एकदम ही बूढ़े आदमी से पूछा।

"आप इसे कहाँ से लाए ?"

"सामने वाले दुकानदार से।" बूढ़े आदमी ने जवाब दिया, "वहाँ बहुत-सी

तस्वीरें हमेशा टँगी रहती हैं। कोई उन्हें नहीं जानता और न ही उनके लिए परेशान होता है क्योंकि वे सभी अब पुरानी हो गयी हैं। लेकिन बहुत सालों पहले मैं इस स्त्री को जानता था। यह पचास साल पहले मर चुकी है।''

इस चित्र के नीचे काँच के पीछे मुरझाये फूलों का गुलदस्ता रखा था। ये भी निश्चय ही पचास साल पुराने होंगे—कम से कम उन्हें देखकर तो ऐसा ही लगता था। बड़ी घड़ी का पेंडुलम आगे-पीछे जा रहा था और सुइयाँ घूम रही थीं। इस कमरे में सब कुछ पुराना हो गया था लेकिन किसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया था।

''घर पर सारे लोग बातें करते हैं।'' छोटे लड़के ने कहा, ''कि आप हमेशा एकदम अकेले रहते हैं।''

''ओह।'' बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया, ''मुझसे मिलने पुराने ख़याल बहुत-सी चीज़ें लेकर आते हैं। अब तुम भी आये हो, मैं तो एकदम मज़े में हूँ।''

उसने आलमारी से चित्रों वाली एक किताब निकाली। उसमें सुन्दर गाड़ियों की शोभायात्रा थी जैसी कि आजकल बिल्कुल भी नहीं दिखायी देती। उनमें ताश के गुलाम जैसे सिपाही थे और जनता झण्डे लहरा रही थी। दर्ज़ियों के हाथों में जो झण्डे थे, उन पर दो शेर, हाथ में कैंचियाँ लिए हुए बने थे और मोचियों के झण्डों पर जूते नहीं बल्कि दो सिरों वाला गिद्ध बना था क्योंकि मोचियों के यहाँ सब चीज़ें इस तरह चाहिए कि कहा जा सके, ''यह जोड़ी है।'' हाँ, वह एक चित्रों वाली किताब थी। बूढ़ा आदमी दूसरे कमरे में खाने की चीज़ें, सेब और मेवे लेने गया। इस पुराने घर में सब सचमुच बहुत सुन्दर था।

''मैं यह नहीं सह सकता।'' टिन के सिपाही ने कहा जो अलमारी में खड़ा था। ''यहाँ बहुत अकेलापन और उदासी है। जब कोई व्यक्ति परिवार में रहने का आदी हो जाता है तो वह यहाँ नहीं रह सकता। मैं यह नहीं सह सकता। दिन बहुत लम्बा है और शाम तो उससे भी लम्बी ! यहाँ तुम्हारे घर जैसा बिल्कुल भी नहीं लगता, जहाँ कि तुम्हारे माता-पिता हँसी खुशी बात करते रहते हैं और तुम और बाक़ी दूसरे बच्चे किलकारियाँ भरते हैं। इस बूढ़े आदमी के यहाँ कितना अकेलापन है ? क्या तुम्हें लगता है उसे कोई चूमता होगा ? तुम्हें क्या लगता है उसे कोई दोस्ती की नज़र से देखता होगा या कभी कोई क्रिसमस-ट्री देता होगा ? उसे क़ब्र के सिवाय कुछ नहीं मिलेगा। मैं यह नहीं सह सकता !''

''तुम्हें इस चीज़ को निराशावादी तरीक़े से नहीं देखना चाहिए।'' छोटे लड़के ने कहा, ''मुझे सब कुछ बहुत सुन्दर लगता है और सारे पुराने ख़याल भी जो अपने साथ बहुत कुछ लेकर मुझसे मिलने आते हैं।''

''लेकिन मुझे वे नहीं दिखाई देते, मैं उन्हें नहीं जानता।'' टिन के सिपाही ने आपत्ति की। ''मैं यह नहीं सह सकता।''

''तुम्हें यह सहना ही होगा।'' छोटे लड़के ने कहा। बूढ़ा आदमी बेहद खुश नज़र आ रहा था। वह बढ़िया मेवे और सेब लेकर आया। फिर छोटे लड़के ने टिन के सिपाही के बारे में नहीं सोचा। छोटा लड़का ख़ुश-ख़ुश अपने घर चला गया। कई दिन बीत गये। कई हफ़्ते बीत गये और उस बीच बच्चा और बूढ़ा आदमी एक-दूसरे को देखकर अक्सर सिर हिलाते रहे। फिर एक दिन छोटा लड़का फिर वहाँ गया।

नक़्क़ाशीदार तुरहीवादकों ने तुरही बजायी, ''तान-ता-रा-रा ! तान-ता-रा-रा ! एक छोटा लड़का आया है, तान-ता-रा-रा !'' पुराने चित्रों की तलवारें और कवच खड़खड़ाये और रेशमी कपड़े सरसराये, चमड़े ने कहानियाँ सुनाईं और पुरानी कुर्सियों की पीठ में कूबड़ निकल आया। उफ़ ! यह सब बिल्कुल पहली बार जैसा ही था क्योंकि वहाँ हर घण्टा या हर दिन एक ही जैसा था।

''मैं अब और नहीं सह सकता।'' टिन के सिपाही ने कहा, ''मैं टिन के आँसू रोया हूँ। यहाँ कुछ ज़्यादा ही सपने जैसा लगता है। इससे तो बेहतर होता कि मैं युद्ध में चला जाता और मेरे हाथ-पैर कट जाते, कम-से-कम कुछ बदलाव तो आता। मैं अब और नहीं सह सकता। अब मुझे समझ में आया कि पुराने ख़याल किस तरह आते हैं और वे अपने साथ क्या-कुछ लाते हैं। मुझे भी पुराने ख़याल आये लेकिन मेरी बात मानो, लम्बे समय तक ऐसा होते रहना आनन्ददायक नहीं होता। मैं अलमारी से लगभग कूदने ही वाला था। मैं तुम सबको सामने के घर में इतना साफ़ देख रहा था जैसे कि तुम सचमुच यहीं रहते हो। रविवार की सुबह थी और तुम सारे बच्चे मेज़ के चारों ओर खड़े होकर हमेशा की तरह भजन गा रहे थे। तुम भक्ति भाव से हाथ जोड़े खड़े थे और तुम्हारे माता-पिता भी भजन में लीन थे, तभी दरवाज़ा खुला और तुम्हारी छोटी बहन मारिया को, जो अभी दो साल की भी नहीं है लेकिन गीत संगीत सुनकर हमेशा नाचती है, उसे भीतर लाया गया। उसे ऐसा नहीं करना था, लेकिन उसने तुरन्त नाचना शुरू कर दिया, हालाँकि वह गीत की लय के साथ नहीं नाच पायी क्योंकि गीत बहुत धीमा था। वह एक पैर पर खड़ी हुई और उसने अपना सिर आगे की तरफ़ झुकाया, लेकिन ऐसा ज़्यादा देर तक नहीं कर सकी। तुम सब चुपचाप खड़े रहे, हालाँकि यह तुम्हारे लिए काफ़ी कठिन था। लेकिन मैं मन ही मन में हँसा और इसीलिए मेज़ से गिर पड़ा और मुझे चोट लग गयी जो अभी भी है क्योंकि उस वक़्त हँसना ठीक नहीं था। अब यह सब और मेरे बाक़ी अनुभव

मेरे मन की आँखों के सामने आते हैं और यही पुराने ख़याल होंगे, जो अपने साथ सब कुछ लाते हैं। बोलो, तुम अभी भी रविवार को गाते हो ? छोटी मारिया के बारे में कुछ बताओ। और मेरा साथी और भाई टिन का सिपाही कैसा है ? हाँ, वह तो बहुत खुश होगा। लेकिन मैं यह सब नहीं सहन कर सकता !''

''तुम्हें किसी को दे दिया गया है।'' छोटे लड़के ने कहा, ''तुम जहाँ हो तुम्हें वहीं रहना चाहिए। ये बात तुम्हें क्या समझ में नहीं आती ?''

तभी बूढ़ा आदमी एक बक्सा लेकर आया जिसमें बहुत-सी चीज़ें थीं। छोटी सिन्दूर की डिबिया, इत्र की शीशियाँ, बड़े-बड़े और सोने से मढ़े ताश के पुराने प़त्ते जैसे आज के समय में किसी ने देखे भी न होंगे। और भी कई छोटे बक्से खोले गये। पियानो भी, जिसके ढक्कन पर प्रकृति के चित्र बने थे। लेकिन जब बूढ़े आदमी ने पियानो बजाया तो उसमें से काफ़ी मोटी आवाज़ निकली। फिर उसने सामने की दुकान से ख़रीदे हुए चित्र को देखकर सिर हिलाया और बूढ़े आदमी की आँखें चमक उठीं।

''मैं युद्ध में जाऊँगा ! मैं युद्ध में जाऊँगा !'' टिन का सिपाही जितनी ज़ोर से चिल्ला सकता था, चिल्लाया और उसने अपने आपको ज़मीन पर पटक दिया।

''वह कहाँ चला गया ?'' बूढ़े आदमी ने ढूँढ़ा, छोटे लड़के ने ढूँढ़ा लेकिन वह कहीं चला गया था और मिल नहीं पाया।

''मैं उसे ढूँढूँगा,'' बूढ़े आदमी ने कहा। लेकिन वह उसे कभी नहीं ढूँढ़ पया। ज़मीन इतनी खुली और गड्ढों वाली थी कि टिन का सिपाही एक दरार में चला गया था और वहाँ ऐसे लेटा था जैसे कि खुली हुई क़ब्र में लेटा हो।

दिन बीत गया और छोटा लड़का घर चला गया। कई हफ़्ते बीत गये और फिर बहुत सारे हफ़्ते बीत गये। खिड़कियों में बर्फ़ जम गयी थी। पुराने घर को देखने के लिए छोटे लड़के को मुँह की भाप से खिड़की का काँच साफ़ करना पड़ता था। बर्फ़ सारी नक्काशियों और लिखावटों में भर गयी थी और उसने सीढ़ियों को ढक लिया था जैसे कि घर में कोई रहता ही न हो। और सचमुच घर में कोई नहीं रहता था क्योंकि बूढ़ा आदमी मर गया था !

शाम को दरवाज़े के सामने एक घोड़ागाड़ी आकर खड़ी हुई और उसे ताबूत में रखा गया। उसे गाँव में ख़ानदानी क़ब्रिस्तान में दफ़नाया जाना था। उसे ले जाया गया लेकिन उसके साथ उसकी अन्तिम यात्रा में कोई नहीं गया क्योंकि उसके दोस्त मर गये थे। छोटे बच्चे ने ताबूत ले जाते समय उसका हाथ चूमा।

थोड़े दिनों के बाद पुराने घर में नीलामी हुई और छोटे लड़के ने खिड़की

में से देखा कि किस तरह राजपरिवार के पुरुष और स्त्रियाँ, लम्बे कानों वाले फूलों के गमलों, कुर्सियों और अलमारियों को ले जा रहे थे। एक यहाँ गया तो दूसरा वहाँ। "उसका" चित्र जो कि सामने की दुकान से ख़रीदा गया था, उसकी दुकान पर ही वापस चला गया और वहीं लटका दिया गया क्योंकि किसी ने उस पुराने चित्र का दाम नहीं लगाया।

बसन्त के मौसम में घर को भी गिरा दिया गया क्योंकि लोगों का मानना था कि वह पुराना कूड़ा-कचरा है। अब कोई भी गली से चमड़े से ढकी दीवार वाले कमरे में देख सकता था। जिसके चमड़े की परत उतार ली गयी थी—फटी और घिसी हुई। छज्जे की हरियाली एकदम गिर पड़ने की स्थिति में खम्भों पर लटक रही थी। अब सब साफ़ किया जा रहा था।

"यह अच्छा हुआ !" एक पड़ोसी ने कहा।

और एक बढ़िया घर बनाया गया जिसकी खिड़कियाँ बड़ी-बड़ी और दीवारें सफेद और चिकनी थीं। लेकिन उसके सामने, जिस जगह पर वह मकान वास्तव में खड़ा था, एक बग़ीचा लगाया गया और पड़ोस के घर की दीवार पर अंगूर की बेलें चढ़ी हुई थीं। बग़ीचे के सामने लोहे के दरवाज़े वाली एक बड़ी लोहे की रेलिंग लगायी गयी। वह बहुत ही राजसी दिखाई देती थी। लोग उसके समाने रुकते और उसे ध्यान से देखते। गौरैया दर्ज़नों की संख्या में अंगूर की बेल की शाख़ों पर बैठतीं और पूरी तेज़ी से चहचहातीं। लेकिन वे पुराने घर के बारे में बात नहीं करती थीं क्योंकि अब उन्हें उसके बारे में याद ही नहीं था। बहुत साल बीत गये थे—बहुत सारे, इतने साल कि छोटा लड़का बड़ा होकर एक आदमी बन गया था, एक परिपक्व आदमी जिसके माता-पिता उससे बहुत प्रसन्न थे। उसकी अभी-अभी शादी हुई थी और वह अपनी पत्नी के साथ उसी घर में रहने आया जिसके सामने बगीचा लगा था। वहाँ वह अपनी पत्नी की बगल में उस जगह खड़ा हुआ जहाँ उसकी पत्नी ने ज़मीन में फूलों का एक पौधा लगाया जो उसे बहुत सुन्दर लगता था। उसने अपने छोटे हाथों से उसके आसपास अपनी उँगलियों से मिट्टी दबाते हुए लगाया। "आह, वह क्या था ?" उसने मिट्टी खोदी। मुलायम मिट्टी में से कुछ नुकीला-सा दिखाई दे रहा था। सोचो ! यह वही टिन का सिपाही था जो बूढ़े आदमी के घर में गुम हो गया था और लम्बे समय तक पुरानी लकड़ियों और कचरे में छिपे रहने के बाद कई सालों तक मिट्टी में दबा पड़ा रहा। उस लड़के की पत्नी ने पहले उसे एक हरी पत्ती से पोछा फिर अपने सुगन्धित रूमाल से साफ़ किया। टिन के सिपाही को लगा जैसे कि वह ख़ुशबू से बेहोश हो रहा है।

"मुझे देखने दो।" लड़के ने कहा। फिर उसने मुस्कराकर अपना सिर हिलाया।

"यह वही तो नहीं हो सकता लेकिन यह मुझे एक टिन के सिपाही के साथ अपने सम्पर्क की याद दिलाता है जब मैं छोटा था।"

फिर उसने अपनी पत्नी को पुराने घर, बूढ़े आदमी और उस टिन के सिपाही के बारे में बताया जिसे उसने उस बूढ़े आदमी को दिया था जिसे वह बहुत चाहता था। उसकी पत्नी की आँखों में पुराने घर और बूढ़े आदमी के लिए आँसू भर आये।

"यह भी तो सम्भव हो सकता है कि यह वही टिन का सिपाही हो।" उसने कहा, "मैं इसको सम्भाल कर रखूँगी और तुम्हारी बतायी बातें याद करूँगी लेकिन तुम्हें मुझे बूढ़े आदमी की क़ब्र दिखानी होगी।"

"मुझे नहीं मालूम वह कहाँ है।" उसने कहा, "और कोई भी नहीं जानता। उसके सभी दोस्त मर चुके हैं, उसकी क़ब्र की देखभाल करने वाला कोई नहीं था और मैं तो छोटा-सा बच्चा था।"

"आह, वह कितना अकेला रहा होगा।" वह बोली।

"हाँ, एकदम ही अकेला।" टिन का सिपाही बोला। "लेकिन याद रखो इस तरह जाना भी अपने आप में बहुत सुन्दर है।"

"बहुत सुन्दर।" उसके पास ही एक आवाज़ ने दोहराया।

लेकिन टिन के सिपाही के अलावा कोई नहीं समझ पाया कि यह आवाज़ उस सुअर की ख़ाल से आ रही थी जिसके सुनहरे छापे अब मिट गये थे। वह भीगी मिट्टी जैसी दिख रही थी लेकिन फिर भी उसके अपने विचार थे जो ऐसे हैं :

"चमक ख़त्म हो जाती है जल्दी, लेकिन सुअर की खाल नहीं बदलती।" लेकिन टिन के सिपाही ने इस बात पर विश्वास नहीं किया।

16

विनोदप्रियता

मेरे पिता ने मुझे सबसे अच्छी विरासत दी थी—विनोदप्रियता। और मेरे पिता कौन थे ? लेकिन ये सवाल क्यों ? इसका विनोदप्रियता से कोई सम्बन्ध नहीं है। वैसे वे जीवन्त और मज़बूत थे। मोटे और गोल-मटोल थे। भीतर और बाहर से वे एकदम अलग-अलग थे। वह किस पेशे में थे और समाज में उनका आदर क्यों था ? हाँ, अगर इसे लिखकर किसी किताब के शुरू में छाप दिया जाये तो सम्भव है कि किताब पढ़ते समय बहुत-से लोग किताब किनारे रख दें और कहें, "यह बहुत अजीब है, मुझे इस तरह की चीज़ पसन्द नहीं है।" लेकिन फिर भी मेरे पिता न तो घोड़ों को क़त्ल करने वाले कसाई थे और न ही कोई जल्लाद, बल्कि इसके विपरीत अपने काम की वजह से शहर के प्रतिष्ठित लोगों में उनको ऊँची जगह मिली थी और उन्हें अपना पद अधिकार से मिला था—क्योंकि वही उनकी सही जगह थी। वे बिशप के पास पहले जाते थे और बढ़िया नस्ल की घोड़ी के पास बाद में। वह हमेशा पहले जाते थे—क्योंकि वे मुर्दागाड़ी के चालक थे।

वह देखो, वह आ गयी। मैं मानता हूँ कि लोग जब भी मेरे पिता को, मृत्यु के वाहन-चालक के रूप में बनकर बैठे हुए देखते तो उनका लम्बा-चौड़ा काला चोगा, और काली धारी वाला तिकोना हैट पहने, सूरज जैसा गोल और प्रसन्न चेहरा देखकर, क़ब्र और अपने दुख के बारे में सोचना भूल-सा जाते। उनका चेहरा कहता था, "कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, तुम जो सोचते हो उससे भी बेहतर होगा।"

देखिए, मुझे अपनी विनोदप्रियता उन्हीं से मिली और उनसे मिली दूसरी आदत क़ब्रिस्तान में जाने की, जो कि अगर सही भावना से किया जाये तो एक अच्छा काम है। फिर अपने पिता की तरह मैं भी 'सन्देशवाहक' अख़बार लेने लगा।

मैं बहुत छोटा नहीं हूँ। मेरी न तो पत्नी है, न ही बच्चे और न ही पुस्तकालय। लेकिन, जैसा कि मैंने पहले बताया मैं 'सन्देशवाहक' लेता हूँ जो कि मेरा प्रिय अख़बार है और पहले मेरे पिता का भी था। यह बहुत उपयोगी है और इसमें वह सब कुछ रहता है, जो एक आदमी को जानना चाहिए—जैसे कि नयी किताबों और चर्च में उपदेश कौन देता है। इसमें कितनी ही उदारता भरी, भोली, और सरल कविताएँ हैं। पति-पत्नियों के लिए विज्ञापन, साक्षात्कार के अनुरोध जैसी सभी बहुत सरल और स्वाभाविक बातें छपती थीं उसमें। अगर कोई 'सन्देशवाहक' लेता है तो वो बहुत ख़ुशी से जी सकता है और बड़े सन्तोष से मर भी सकता है। और एक आख़िरी लाभ यह भी है कि अपने जीवन के अन्त तक किसी भी व्यक्ति के पास इतना काग़ज़ इकट्ठा हो सकता है कि अगर वह क़ब्र में लकड़ी की पट्टी पर न लेटना पसन्द करे तो उन काग़ज़ों का एक नरम गद्दा बन सकता है।

अख़बार पढ़ना और क़ब्रिस्तान में जाना—ये दोनों मेरे बहुत रोचक काम रहे हैं—क्योंकि ये मेरे लिए पवित्र तीर्थस्थल जैसे रहे हैं जहाँ पहुँचते ही मेरी विनोदप्रियता ताज़ा हो जाती है।

अख़बार कोई भी स्वयं पढ़ सकता है। लेकिन कृपया मेरे साथ क़ब्रिस्तान में आएँ। हम वहाँ चलें जहाँ सूरज चमकता है और हरे पेड़ लगे हैं। हर पतली-सी क़ब्र एक बन्द किताब जैसी है जिसकी जिल्द सबसे ऊपर है जिससे कि कोई भी केवल किताब का नाम पढ़ सके और किताब के विषय के बारे में अन्दाज़ लगा सके। लेकिन कुछ बोल नहीं सके। लेकिन मैं उनमें से कुछ को जानता हूँ। मैंने उनके बारे में अपने पिता से सुना था या अपने आप पता किया था। मेरे पास सबका लेखा-जोखा है जो मैंने अपने उपयोग और आनन्द के लिए रखा है। सभी यहाँ लेटे हैं और कुछ और भी है जिनका यहाँ ब्योरा है।

अब हम क़ब्रिस्तान में हैं।

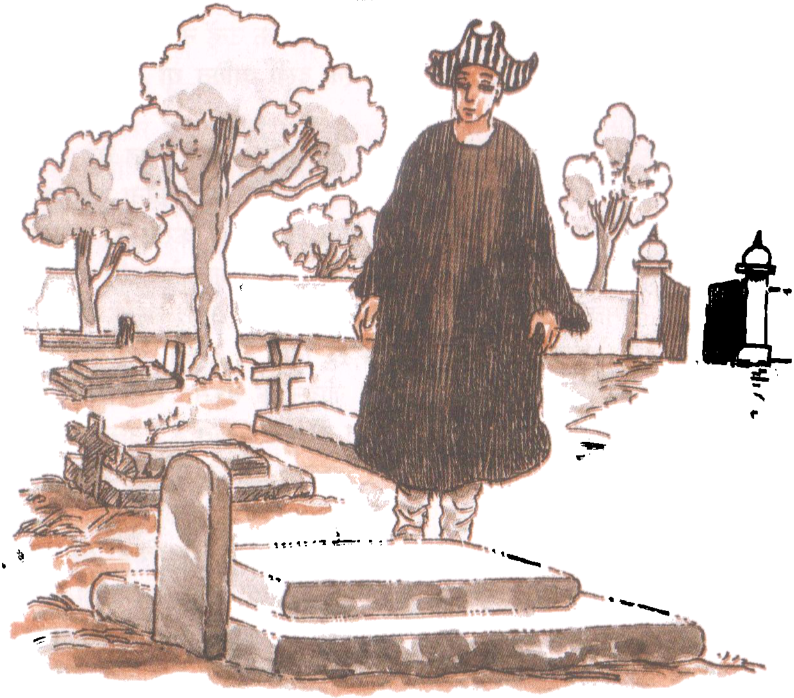
यहाँ इस सफ़ेद बाड़ के पीछे, कभी एक गुलाब का पौधा लगा था, जो अब नहीं है। अगली क़ब्र से एक सदाबहार का पेड़ अपनी हरी शाख़ों की उँगलियों से इशारा करता है—कि यहाँ एक दुखी आदमी रहता है। जब वह जीवित था तो कहते हैं, उसके हालात अच्छे थे। उसके पास जीविका के लिए पर्याप्त साधन थे बल्कि उससे कुछ अधिक ही था, लेकिन दुनिया की चिन्ताएँ—बल्कि सही शब्दों में कहें तो उसकी कलात्मक रुचि उसके ऊपर बोझ बन गयी। यदि शाम को वह थियेटर में आनन्द उठाने बैठता तो उसे बहुत तकलीफ़ होती। यदि प्रकाश-व्यवस्था वाले व्यक्ति ने चाँद की एक ओर बहुत तेज़ प्रकाश किया है

या कि आसमान के टुकड़े पीछे से लटकने की बजाय सामने की तरफ़ लटक रहे हों या 'बर्लिन-जीव-उद्यान' को दर्शाने के लिए ताड़ का पेड़ लगाया गया हो या टायरॉल के दृश्य में कैक्टस हो, या फिर नार्वे के सुदूर उत्तर के दृश्य में समुद्र तट पर लगने वाला पेड़ लगा दिया गया हो, तो वह परेशान हो उठता। जैसे कि उनका कोई ख़ास असर पड़ता हो। क्या यह बहुत महत्त्वपूर्ण है ? इतनी बेकार-सी बातों को लेकर कौन परेशान होगा ? यह ख़ाली विश्वास दिलाने के लिए होता है, और वास्तव में सबका उद्देश्य तो मनोरंजन ही होता है। फिर कभी-कभी दर्शक अपनी रुचि के अनुसार बहुत तालियाँ बजाते थे और कभी-कभी बहुत कम। "वे आज शाम भीगी लकड़ी की तरह हैं।" वह कहता, "वे बिल्कुल भी उत्तेजित नहीं होंगे।" और फिर वह देखता कि उसके आसपास कैसे लोग बैठे हैं। कभी वह उन्हें ग़लत जगह पर हँसते पाता जबकि उन्हें नहीं हँसना चाहिए, इससे वह चिढ़ जाता और दुखी होता। वह एक दुखी व्यक्ति था और अन्त में अपनी क़ब्र में भी दुखी रहा।

यहाँ एक बहुत ख़ुश व्यक्ति सोया है, बहुत बड़ा आदमी। वह बड़े घराने में पैदा हुआ था और यह उसकी ख़ुशकिस्मती थी क्योंकि इसके बिना वह इतना महत्त्वपूर्ण नहीं हो पाता। प्रकृति यह सब बहुत चतुराई से करती है, इसलिए ये सब हमें बहुत सुन्दर लगता है। वह आगे-पीछे कढ़ा हुआ कोट और मोतियों से कढ़ा हुआ क़ीमती चोगा पहनता था। सब कुछ इतने अच्छे तरीक़े से होता था कि कोई भी व्यक्ति उसे देखकर सहज ही ख़ुश हो सकता था।

यहाँ वह व्यक्ति लेटा है जिसने अपने जीवन के सड़सठ साल कोई एक अच्छा विचार ढूँढ़ने में बिता दिया। यह बहुत ही दुखद बात है। उसके जीवन का उद्देश्य एक अच्छी बात कहना था, और अन्ततः उसे वह विचार मिल गया था और वह इस बात से इतना ख़ुश हुआ कि अन्ततः एक अच्छा विचार मिलने की ख़ुशी से ही मर गया। किसी को उससे लाभ नहीं हुआ और किसी को पता भी नहीं चला कि वह अच्छा विचार क्या था। मैं सोचता हूँ कि यह अच्छी चीज़ उसे क़ब्र में भी शान्ति से नहीं रहने देगी क्योंकि यह अच्छी चीज़ केवल सुबह के नाश्ते के समय ही सही तरह से कही जा सकती होगी और भूत-प्रेतों के बारे में जानकारी के अनुसार वह केवल आधी रात में ही उठकर चल सकता होगा। उसे अच्छे विचार को सही समय नहीं मिल पायेगा और वह व्यक्ति अपना अच्छा विचार अपने पास ही रखे रहेगा। वह कितना दुखी व्यक्ति होगा !

यहाँ एक बड़ी ही कंजूस औरत लेटी है। अपने जीवन में वह रात में उठकर म्याऊँ-म्याऊँ करती थी, जिससे कि पड़ोसी सोचें कि उसने एक बिल्ली पाली



है—वह इतनी कंजूस थी।

यहाँ एक दूसरे तरह की लड़की है। जब कैनेरी चिड़िया चहचहाती थी तो वह अपने कानों में उँगलियाँ डाल लेती थी। उसकी शादी होने वाली थी—ख़ैर, यह तो आम कहानी है। हम मृत व्यक्ति को आराम करने दें।

यहाँ एक विधवा लेटी है जिसके होठों पर तो मधुर बातें थीं लेकिन दिल में दुष्टता थी। वह आसपास के परिवारों में शिकार करने जाती थी और यह शिकार उन परिवारों की कमियाँ और ग़लतियाँ होती थीं। वह एक कभी न थकने वाली शिकारी थी।

यहाँ एक पारिवारिक क़ब्रिस्तान है। इस परिवार में सबके विचार इतने मिलते-जुलते थे कि यदि पूरी दुनिया और साथ-साथ सारे अख़बार भी किसी विषय में कुछ कहें और घर का छोटा बच्चा स्कूल से आकर उसी विषय में कुछ कहे कि "मैंने तो ऐसा-ऐसा सीखा है" तो वे बच्चे की बात को ही सही ठहराते थे, क्योंकि वह उनके परिवार का बच्चा था। यह एक मानी हुई बात है कि जब इस परिवार का मुर्ग़ा आधी रात में बोल पड़ता था तो कह देते थे कि सुबह हो गयी है जबकि चौकीदार और शहर की दूसरी घड़ियाँ चिल्लाते रहते थे कि अभी रात के बारह ही बजे हैं।

महान कवि गेटे ने अपनी 'फ़ाउस्ट' कविता के अन्त में लिखा है "जारी रह सकता है" और क़ब्रिस्तान की हमारी यह यात्रा भी जारी रह सकती है। यदि कोई व्यक्ति जो मेरा दोस्त हो या नहीं हो, मेरे साथ चालाकी करता है तो मैं अपनी मनपसन्द जगह जाऊँगा और एक टीला ढूँढ़कर उसे उसमें ज़िन्दा दफ़ना दूँगा। वे वहाँ तब तक रहेंगे जब तक वे सुधर न जायें। मैं उनके जीवन और कामों के बारे में अपने नज़रिए से लेखा-जोखा रखूँगा और सभी को यही करना चाहिए।

जब कोई बेवकूफ़ी करे तो उन्हें चिढ़ना नहीं चाहिए बल्कि उसे सीधे दफ़नाकर अपनी विनोदप्रियता बनाये रखनी चाहिए और 'सन्देशवाहक' से सम्पर्क बनाये रखना चाहिए जो कि अक्सर मार्गदर्शन किये गये लोगों द्वारा लिखी गयी किताब होती है।

जब मेरी मृत्यु का समय आयेगा और जब मुझे दफ़नाया जाने लगेगा मुझे उम्मीद है कि उस समय वे मेरी क़ब्र पर लिखेंगे 'एक विनोदप्रिय आदमी' और यही मेरी कहानी है।

17

घण्टी

शाम को जब बड़े शहर की पतली सड़क पर सूरज ढलने लगता था और बादल चिमनियों के बीच सोने की तरह चमकते थे, कभी किसी को तो कभी किसी को अक्सर चर्च की घण्टी जैसी अजीब-सी आवाज़ सुनायी देती थी। लेकिन वह एक बार में केवल एक क्षण के लिए ही सुनायी देती थी क्योंकि सड़क पर लगातार गाड़ियाँ आती-जाती रहती थीं। और लोगों की आवाज़ें ज़ोर-ज़ोर से सुनायी पड़ती थीं। उन्हीं के बीच अचानक यह आवाज़ सुनाई देती। लोग कहते, "अब शाम की घण्टी सुनायी दे रही है, सूरज ढलने लगा है।"

जो लोग शहर के बाहर इन जगहों पर होते थे जहाँ मकान दूर-दूर बने हैं और उनके बीच खेत और बग़ीचे थे, और जहाँ शाम का आसमान सुन्दर दिखायी देता था—वहाँ घण्टी की आवाज़ और भी साफ़ सुनायी देती थी। ऐसा लगता था कि वह आवाज़ चर्च से आती है। लोग उस दिशा में देखने लगते और ध्यानमग्न हो जाते।

कुछ समय बीता। लोगों ने आपस में कहा, "क्या इस जंगल में कोई चर्च है ? घण्टी की वह आवाज़ बहुत ही सुन्दर है। क्या हम वहाँ जाकर उसे पास से देखें ? और अमीर लोग गाड़ियों पर और ग़रीब पैदल चलकर गये लेकिन वह रास्ता उन्हें बहुत लम्बा लगा। आख़िर जंगल के बाहरी किनारे पर लगे पेड़ों तक आये और वहीं बैठ गये। वे उनकी लम्बी शाखाओं को देखने लगे। उन्हें लगा कि वे सचमुच हरे-भरे जंगल में हैं। शहर से पेस्ट्री बनाने वाला भी आ गया और उसने अपना लम्बू लगा लिया लेकिन एक दूसरे पेस्ट्री बनाने वाले ने आकर अपने तम्बू के ठीक ऊपर एक घण्टी लगा दी। बारिश से बचने के लिए तम्बू लगाया गया था। उस तम्बू की ऊपरी नोक पर एक घण्टी लगी थी। लेकिन घण्टी के अन्दर उसे बजाने वाली लटकन न थी। जब लोग घर वापस लौटे तो

उन्होंने बताया कि जंगल की सारी यात्रा बड़ी मज़ेदार थी—साथ में बैठकर चाय पीने से भी अधिक मज़ेदार। तीन आदमियों ने बताया कि वे जंगल के आख़िरी सिरे तक चले गये थे और उन्हें हमेशा घण्टी की अनोखी आवाज़ें सुनायी दीं। लेकिन उन्हें ऐसा लगता था कि वे आवाज़ें शहर से आ रही हैं। उनमें से एक आदमी ने इसके बारे में एक गीत लिखा और बताया कि घण्टी की आवाज़ ऐसी लगती है जैसे कि कोई माँ अपने प्यारे बच्चे को कोई गीत सुना रही हो, कोई भी संगीत इस घण्टी की आवाज़ से सुन्दर नहीं हो सकता।

उस देश के राजा को भी इस बात की सूचना दी गयी। उसने घोषणा की कि जो भी यह पता लगायेगा कि वह आवाज़ कहाँ से आती है उसे 'घण्टी ढूँढ़ने वाले' का खिताब दिया जायेगा, भले ही वह आवाज़ घण्टी की न हो।

बहुत-से लोग जंगल में यह सोचकर गये कि वहाँ बहुत मज़ेदार चीज़ें होंगी। लेकिन एक ही व्यक्ति कुछ बातें पता करके लौट पाया। दरअसल कोई भी जंगल में बहुत अन्दर तक नहीं गया था। वह आदमी भी नहीं, लेकिन उस आदमी ने बताया कि वह आवाज़ एक बहुत ही बड़े उल्लू की है जो एक पेड़ की खोह में बैठा है। वह बुद्धि का उल्लू है जो लगातार पेड़ के तने से अपना सिर टकराता रहता है। लेकिन वह आवाज़ उल्लू के सिर से आ रही थी या पेड़ के तने से—यह वह निश्चित रूप से नहीं बता पाया। उसे 'घण्टी ढूँढ़ने वाले' का खिताब दिया गया और उसने हर साल उल्लू पर एक छोटा निबन्ध लिखा, लेकिन उन्हें पढ़ने के बाद भी लोगों की बुद्धि वैसी ही रहीं जैसी कि पहले थी।

कुछ समय बाद एक ख़ास दिन ईसाई बनाने का समारोह हुआ। बूढ़े पादरी ने बहुत अच्छे और प्रभावशाली ढंग से अपना भाषण दिया। और जिन्हें ईसाई बनाया जाना था, वे भी बहुत प्रभावित हुए। यह उनके लिए बहुत ख़ास दिन था क्योंकि अब वे बच्चे से बड़े हो गये थे और उनके बचपन को अब एक अधिक सम्वेदनशील व्यक्ति के रूप में बदलना था। जब वे बच्चे चलते हुए शहर से बाहर जाने लगे तो सूरज तेज़ी से चमक रहा था और जंगल से रहस्यमय बड़ी घण्टी की आवाज़ ज़ोर-ज़ोर से आने लगी। उन्हें अचानक इच्छा हुई कि वे वहाँ जाकर देखें और उनमें से तीन को छोड़कर बाक़ी सभी ने ऐसा करना चाहा। उनमें से एक लड़की घर जाकर अपनी नाच की पोशाक पहनना चाहती थी। दूसरा एक ग़रीब बच्चा था जो इस समारोह के लिए अपने मकान-मालिक के बेटे से कोट और जूते उधार लेकर आया था और उसे ये एक ख़ास समय तक वापस करने थे। तीसरे ने कहा कि वह कभी अपने माता-पिता के बिना किसी [illegible]बी जगह नहीं गया और वह हमेशा एक आज्ञाकारी बेटा रहा है और

ईसाई बनने के बाद भी ऐसा ही रहेगा और उन्हें उस पर हँसना नहीं चाहिए। लेकिन फिर भी वे उस पर हँसे।

और इस तरह ये तीनों नहीं गये। लेकिन दूसरे चलते रहे। सूरज की रोशनी आयी, चिड़ियाँ चहचहायीं और बच्चों ने भी गीत गाये और एक दूसरे के हाथ थामे क्योंकि उस दिन वे सभी ईश्वर के सामने एक समान थे। लेकिन उनमें सबसे छोटे दो बच्चे जल्दी ही थक गये और शहर वापस लौट गये। दो छोटी लड़कियाँ माला बनाने बैठ गयीं और बाक़ी बच्चों के साथ नहीं गयीं। जब बाक़ी बच्चे पेड़ के पास आये जहाँ पेस्ट्री बनाने वाला रहता था, वे बोले, रहता "अब हमने यहाँ आकर देख लिया है कि वास्तव में घण्टी है ही नहीं—वह केवल हमारी कल्पना थी।"

तभी अचानक जंगल में घण्टी इतनी गहरी और गम्भीर आवाज़ में बजने लगी कि उनमें से तीन-चार बच्चों ने जंगल में और भी आगे जाने का इरादा किया। जंगल बहुत ही घना था और आगे बढ़ना और भी कठिन था। यहाँ और भी अधिक लिली और एनीमोन के फूल खिले थे और फूलती हुई कन्वलवुलस और दूसरी बेलें मालाओं की तरह एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक लटकी हुई थीं। यहाँ चिड़िया गा रही थीं। और सूरज की रोशनी आ रही थी। यह सब बहुत सुन्दर था। लेकिन यह रास्ता लड़कियों के लिए ठीक नहीं था—यहाँ उनके कपड़े फट सकते थे। वहाँ कई रंगों की घासों से ढकी बड़ी-बड़ी चट्टानें पड़ी थीं—नीचे पानी का सोता बह रहा था। उसकी आवाज़ कुछ अजीब-सी आ रही थी, कुछ-कुछ "लक, लक" जैसी।

"यह घण्टी की आवाज़ नहीं हो सकती !" एक बच्चे ने कहा और उसने नीचे झुककर सुना। "इसे ध्यान से सुनना चाहिए।"

और वह वहीं रुक गया और बाक़ी आगे चले गये। वे पेड़ की छाल और शाख़ों से बने एक घर के पास पहुँचे। उस घर पर जंगली सेबों के एक बड़े पेड़ की शाख़ें फैली हुई थीं, जैसे कि वह उस छत को आशीर्वाद दे रहा हो जो खिले गुलाबों से ढकी हुई थीं। लम्बी शाख़ें छज्जे से लिपटी थीं और छज्जे से एक छोटी-सी घण्टी लटकी हुई थी। क्या यह वही घण्टी थी जिसकी आवाज़ उन्हें सुनाई दे रही थी ? एक को छोड़कर सभी ने यह मान लिया। जिसने यह नहीं माना था उसने कहा कि यह घण्टी इतनी छोटी और नाजुक थी कि उसकी आवाज़ इतनी दूर तक सुनायी देना कठिन था और उस घण्टी की आवाज़ एकदम अलग थी जिसने सभी को प्रभावित कर दिया था। जिसने ऐसा कहा वह एक राजा का बेटा था। दूसरों ने कहा कि इस तरह के लोग हमेशा अपने आप को

दूसरों से चतुर बताना चाहते हैं।

इसलिए उन्होंने उसे अकेले जाने दिया। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, उसका मन जंगल के एकान्त से और भी अधिक प्रभावित होता गया। लेकिन फिर भी उसे छोटी घण्टी की आवाज़ सुनायी देती रही, जिसका दूसरे आनन्द उठा रहे थे और जब पेस्ट्री बनाने वाले के घर से उसकी तरफ़ हवा का रुख़ होता तो उसे उनके गीत की आवाज़ भी सुनायी देती। लेकिन घण्टी की गहरी आवाज़ अभी भी ज़ोर से आ रही थी, कभी-कभी ऐसा लगता था कि कोई संगीत बज रहा हो, आवाज़ बायीं तरफ़ से आती थी—उस तरफ़ से जिस तरफ़ दिल होता है।



तभी झाड़ियों में कुछ हलचल हुई और एक छोटा लड़का राजकुमार के सामने आ खड़ा हुआ। उसने लकड़ी के जूते और इतनी छोटी जैकेट पहनी थी कि असानी से देखा जा सकता था कि उसकी कलाइयाँ कितनी लम्बी हैं। वे एक-दूसरे को जानते थे। वह बच्चा उस दिन ईसाई बनाये गये बच्चों में से सबसे

छोटा था। वह सबके साथ नहीं आ सका था क्योंकि उसे जल्दी से घर जाकर अपने मकान मालिक के लड़के का कोट और जूते वापस करने थे। उसने वे चीज़ें वापस कर दी थीं और अपने फटे कपड़े और लकड़ी के जूते पहन कर भटक रहा था और घण्टी की आवाज़ इतनी आकर्षक थी कि वह वहाँ आ गया।

"हम साथ जा सकते हैं।" राजकुमार बोला।

लेकिन लकड़ी के जूते पहने हुए ग़रीब लड़का झिझक रहा था। उसने अपनी जैकेट की छोटी बाँहें खींचीं और कहा कि वह तेज़ नहीं चल पायेगा। इसके अलावा उसे लग रहा था कि घण्टी दायीं तरफ़ मिलेगी क्योंकि वह जगह बहुत सुन्दर और अद्‌भुत थी।

"तब हम नहीं मिल पायेंगे।" राजकुमार बोला और उसने सिर हिलाकर उस ग़रीब लड़के को देखा, जो अँधेरे जंगल में चला गया था, जहाँ काँटों ने उसके गन्दे कपड़ों को फाड़ दिया और उसके हाथ-पैर खरोंच दिये। राजकुमार को भी थोड़ी कठिनाई हुई लेकिन उसके रास्ते पर सूरज चमक रहा था। हम इसी के साथ चलेंगे क्योंकि वह तेज़ी से जा रहा था।

"मुझे इस घण्टी का पता लगाना ही है।" उसने कहा, "चाहे मुझे इसके लिए दुनिया से बाहर ही क्यों न जाना पड़े।"

पेड़ों पर बदसूरत बन्दर बैठे थे और अपने दाँत निकाल रहे थें "क्या हम इसे पीटें ?" वे बन्दर बोले। "क्या हम इसे कुचल दें ? यह राजा का बेटा है !"

लेकिन वह हिम्मत से आगे और आगे बढ़ता ही रहा जहाँ जंगल में सर्वोत्तम पेड़ लगे थे। वहीं सफ़ेद सितारा-लिली के फूल खिले थे जिसके पुंकेसर एकदम लाल थे। आसमानी ट्यूलिप के फूल थे जो हवा में चमकते थे और सेब के पेड़ थे—जिन पर लगे सेब बड़े-बड़े चमकते साबुन के बुलबुलों जैसे लग रहे थे। ये पेड़ सूरज की रोशनी में चमक रहे थे। चारों तरफ़ हरी घास के मैदान थे। पेड़ों की छालें चटख रही थीं। दरारों से बाहर घास और बेलें बढ़ रही थीं और पेड़ों से घिरी शान्त झीलें थीं जिनमें सफ़ेद हंस तैर रहे थे और अपने पंख फड़फड़ा रहे थे। राजकुमार कभी-कभी चुपचाप खड़े होकर सुनता और उसे कभी लगता कि घण्टी झील में से उसके ऊपर बज रही है। लेकिन जल्दी ही उसे पता चल गया कि यह आवाज़ वहाँ से नहीं आ रही थी बल्कि घण्टी घने जंगल के भीतर बज रही थी।

अब सूरज डूबने लगा। आसमान आग जैसा लाल होकर चमकने लगा और जंगल में एकदम शान्ति छा गयी। वह अपने घुटनों के बल बैठ गया, शाम की प्रार्थना की और बोला, "मुझे जो चाहिए वह मुझे कभी नहीं मिलेगा। अब

तो सूरज भी डूब रहा है और काली रात आ रही हैं लेकिन शायद डूबने से पहले क्षितिज में एक बार फिर देख सकूँ। मैं चट्टानों पर चढ़ जाऊँगा क्योंकि वे सबसे ऊँचे पेड़ों से भी ऊँची हैं।"

और उसने जड़ों और बेलों को पकड़ा और गीली चट्टानों पर चढ़ने लगा। वहाँ पानी के साँप और मेंढ़क मानो उसके ऊपर भोंक रहे थे। लेकिन आख़िरकार वह सूरज डूबने से पहले उन चट्टानों पर चढ़ ही गया। ओह, कितना सुन्दर समुद्र, विशाल समुद्र, जिसकी लहरें किनारों तक आ रही थीं, उसके सामने फैला था और सूरज एक तरफ़ जलती हुई वेदी के समान वहाँ खड़ा था, जहाँ समुद्र और आसमान मिल रहे थे। सभी कुछ चमकीले रंगों में पिघल रहा था। जंगल ने गीत गाया और उसका दिल भी गाने लगा। समूची प्रकृति एक बड़े पवित्र चर्च के समान थी जिसमें पेड़ और बादल खम्भे थे, फूल और घास मख़मली क़ालीन और आसमान खुद ईश्वर। जब सूरज एकदम डूब गया तो लाल रंग हल्का पड़ गया। लेकिन इसके साथ ही लाखों तारे जगमगाने लगे और हीरे के लैम्प चमकने लगे। राजकुमार ने स्वर्ग की ओर, समुद्र की ओर और जंगल की ओर अपनी बाँहें फैलाईं। अचानक दाँयीं ओर से वह ग़रीब बच्चा अपनी छोटी जैकेट और लकड़ी के जूते पहने हुए आया। वह इसी समय यहाँ पहुँचा था और वह अपना रास्ता तलाश करके आया था। वे एक-दूसरे से मिलने दौड़े और एक ने दूसरे का हाथ प्रकृति के विशाल मन्दिर और उसकी कविता की पृष्ठभूमि में पकड़ा। और तभी उन्हें उस पवित्र अदृश्य घण्टी की आवाज़ सुनायी दी। पवित्र आत्माएँ उनके आसपास इकट्ठा हो गयीं। वे उनके ऊपर तैरते हुए प्रशंसा का आनन्दमय गीत गाने लगीं।

18

देवदूत

जब भी कोई अच्छा बच्चा मरता है, स्वर्ग से एक देवदूत पृथ्वी पर आता है और मृत बच्चे को अपनी बाँहों में लेकर अपने बड़े-बड़े पंख फैलाता है और उन सभी जगहों के ऊपर से उड़कर, जो बच्चे को प्रिय थीं, मुट्ठी भर फूल लेकर ईश्वर के पास जाता है, जिससे कि वे स्वर्ग में पृथ्वी से भी ज़्यादा अच्छी तरह खिल सकें। परमपिता फिर सब फूलों को अपने हृदय से लगाते हैं लेकिन उस फूल को चूमते हैं जो उन्हें सबसे ज़्यादा पसन्द आता है। फिर उस फूल को आवाज़ मिल जाती है—और वह ईश्वर की प्रशंसा के समूहगान में शामिल होकर गाने लगता है।

"देखो।" एक देवदूत ने कहा जब वह एक मृत बच्चे को स्वर्ग में ले जा रहा था और बच्चे ने जैसा कि सपने में सुना वे उन जगहों के ऊपर से गुज़र रहे थे जहाँ बच्चा खेलता था। वे बग़ीचों और सुन्दर फूलों के बीच से होकर आये, "हम इनमें से कौन-सा पौधा स्वर्ग में लगाने के लिए ले चलें ?" देवदूत ने पूछा।

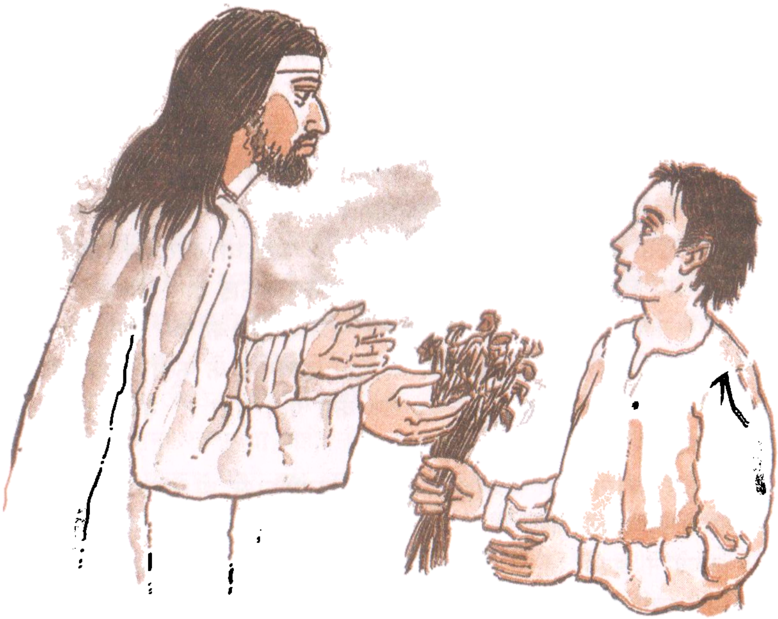
वहाँ एक लम्बी, सुन्दर गुलाब की झाड़ी लगी थी लेकिन किन्हीं क्रूर हाथों ने उसका तना तोड़ दिया था जिससे कि अधखिली कलियों वाली सभी शाख़ें मुरझाई-सी लटक रही थीं। "बेचारी गुलाब की झाड़ी !" बच्चे ने कहा, "इसे ले चलो, यह वहाँ खिल जायेगी।"

देवदूत ने उसे ले लिया, बच्चे को चूमा और बच्चे ने अपनी आँखें आधी खोलीं। उन्होंने कुछ और अच्छे फूल तोड़े लेकिन साथ ही अपने साथ कोने में लगा बटरकप और जंगली पैंजी का फूल भी लिया।

"अब हमारे पास फूल हैं।" बच्चा बोला।

देवदूत ने सिर हिलाया लेकिन वह अब भी स्वर्ग की ओर नहीं उड़ा। उस समय रात थी और चारों ओर शान्ति थी। वे बड़े शहर में रहे और एक छोटी

सड़क पर उड़ते रहे, जहाँ घास, राख और कचरे के ढेर पड़े थे क्योंकि उस दिन सफ़ाई का दिन था। वहाँ प्लेटों की किरचें, प्लास्टर के टुकड़े, चिथड़े और पुराने हैट पड़े थे। यह सब अच्छा नहीं लग रह था। देवदूत ने इस सारे कचरे के बीच एक टूटे हुए गमले और उसमें से गिरे मिट्टी के ढेर की तरफ़ इशारा किया। उस गमले में एक बड़ा, सूखा पेड़ लगा था। वह किसी काम का नहीं था इसीलिए उसे सड़क पर फेंक दिया गया था। "हम इसे अपने साथ ले चलेंगे।" देवदूत ने कहा, "जब हम आगे उड़ेंगे तब मैं तुम्हें इसकी वजह बताऊँगा।"



"उस पतली गली में एक छोटी-सी कोठरी में एक ग़रीब, बीमार बच्चा रहता था। बचपन से ही वह बीमार में बिस्तर पर पड़ा था। जब उसकी तबीयत ठीक होती तब वह बैसाखियों पर चढ़कर कई बार ऊपर-नीचे जा सकता था। इससे ज़्यादा वह कुछ नहीं कर सकता था। गर्मियों में कुछ दिन सूरज की रोशनी उस कोठरी में आती और जब वह बच्चा वहाँ बैठता तो उस पर धूप पड़ती और वह सूरज की रोशनी के सामने अपनी तीन उँगलियाँ रखकर उनमें लाल ख़ून देखता और कहता, "आज यह बाहर निकला है !" उसे जंगल के हरेपन का पता भी तभी चला जब पड़ोसी के लड़के ने उसे ताज़े हरे फ़र्न के पेड़ की

पहली शाख़ लाकर दी। उसने उस शाख़ को अपने सिर के ऊपर उठाया और कल्पना की कि वह फ़र्न के जंगल में आ गया है जहाँ सूरज चमक रहा है और चिड़ियाँ गा रही हैं।

बसन्त के दिनों में पड़ोसी के लड़के ने उसे खेतों के फूल लाकर दिये जिनमें से एक में संयोग से एक जड़ लटक रही थी। उसने उसे एक गमले में लगा दिया और बिस्तर की बगल में खिड़की के पास रख दिया। फूल सौभाग्यवान हाथों से लगा था, वह उग गया, उसमें नयी शाख़ें आयीं और हर साल फूल लगे। यह बीमार बच्चे के लिए एक सुन्दर फूलों के बगीचे जैसा हो गया। धरती पर एक छोटे ख़ज़ाने जैसा। वह उसमें पानी डालता, उसकी रखवाली करता और ध्यान रखता कि उस पर सूरज की रोशनी की हर वह किरण पड़े जो बड़ी कठिनाई से इस कोठरी में आती थी। फूल उसके सपनों में बस गया क्योंकि वह उसके लिए उगा था, उसने उसकी आँखों को आनन्द दिया और अपनी ख़ुशबू उसके आसपास फैलाई थी और इसी फूल के सामने उसकी मृत्यु आयी थी जब ईश्वर ने उसे बुलाया था। एक साल से वह ईश्वर के पास था और एक साल तक पौधा उपेक्षित खड़ा रहा और मुरझा गया। इसीलिए सफ़ाई वाले दिन उसे सड़क की धूल में फेंक दिया गया और इसी बेचारे मुरझाये फूल को हम अपने गुलदस्ते में ले जा रहे हैं क्योंकि इस फूल ने तो महारानी के बगीचे के फूलों से भी अधिक आनन्द दिया है।" "लेकिन तुम्हें यह सब कैसे पता चला ?" बच्चे ने देवदूत से पूछा जो उसे स्वर्ग ले जा रहा था।

"मुझे मालूम है।" देवदूत ने कहा, "क्योंकि मैं ही वह बच्चा हूँ जो बैसाखियों पर चलता था। मैं अपने फूल को अच्छी तरह जानता हूँ !"

बच्चे ने अपनी आँखें खोलीं और देवदूत के प्रसन्न सुन्दर चेहरे की ओर देखा और उसी समय वे उस क्षेत्र में प्रवेश कर गये जहाँ शान्ति और आनन्द था। ईश्वर ने मृत बच्चे को अपने हृदय से लगाया और उसके भी देवदूत जैसे पंख निकल आये और वह उसके हाथ में हाथ डाले उड़ चला। ईश्वर ने सभी फूलों को अपने हृदय से लगाया लेकिन उस सूखे मुरझाये फूल को चूमा। उसे आवाज़ मिल गयी और वह आसपास घूम रहे सभी देवदूतों के साथ गा उठा—उनमें से कुछ पास थे, कुछ दूर घेरा बनाये थे और गुछ अनजानी दूरी पर थे, लेकिन सभी एक समान प्रसन्न थे। छोटे-बड़े सभी गाने लगे, अच्छा, प्रसन्न बच्चा और मुरझाया फूल भी जो कि वहाँ सूखा हुआ, सफ़ाई के दिन धूल और कचरे से अटी एक सँकरी और अँधेरी गली में पड़ा था।

19

सुखी परिवार

हमारे देश में सबसे बड़ी पत्ती निश्चय ही नरकुल (जलपौधा) की है। अपनी कमर में सामने लपेट लो तो धोती बन जाये, सिर पर रख लो तो छतरी का काम दे क्योंकि यह बहुत ही बड़ी होती है। नरकुल कभी अकेले नहीं आता, जहाँ एक पेड़ होता है वहाँ बहुत से और भी होते हैं। उन्हें देखना बहुत सुन्दर लगता है ! पर इसकी सारी सुन्दरता तो घोंघों के मांस में है। बड़े सफ़ेद घोंघे जिन्हें पुराने समय में ख़ानदानी लोग उबालकर खाते और खाकर कहते थे, 'हाय ! यह कितना बढ़िया था !'' ''दरअसल वह उन्हें बहुत स्वादिष्ट लगता था। घोंघे नरकुल की पत्तियों पर जीवित रहते थे इसीलिए नरकुल उगाया भी जाता था।

एक पुराना राज्य था जहाँ लोग अब घोंघे नहीं खाते थे। घोंघे ख़त्म हो गये थे लेकिन नरकुल अभी बचे हुए थे। ये बाद में बढ़ते गये और पूरी जगह पर छा गये–उन्हें कोई रोकने वाला नहीं था इसलिए वह स्थान पूरी तरह से नरकुल का जंगल बन गया था। कहीं-कहीं कोई सेब या ख़ुबानी का पेड़ लगा था। लेकिन इनके नाम पर कोई भी यह नहीं सोचता था कि यह उनका बग़ीचा है। हर तरफ़ नरकुल थे और उनके बीच में दो आख़िरी और बहुत पुराने घोंघे बचे थे।

वे ख़ुद ही नहीं जानते थे कि उनकी आयु कितनी है। लेकिन वे अच्छी तरह याद कर सकते थे कि कभी उनके जैसे ही और भी घोंघे थे। यह भी कि वे एक विदेशी परिवार के वंशज थे और यह पूरा जंगल उनके और उनके साथियों के लिए लगाया गया था। वे घर से दूर कभी नहीं रहे थे। लेकिन उन्हें इतना ज़रूर मालूम था कि दुनिया में एक जगह है जिसका नाम सामन्ती महल है जहाँ घोंघों को उबाला जाता है, वे काले हो जाते हैं और फिर उन्हें चाँदी की प्लेट में रखा जाता है लेकिन इसके बाद क्या होता है यह उन्हें नहीं मालूम था। इसके अलावा वे अन्दाज़ नहीं लगा सकते थे कि यह कैसा होता होगा–उबाले

जाना और चाँदी की प्लेट में रखे जाना—लेकिन उन्होंने सुना था कि यह अच्छा होता है बल्कि विशेषरूप से भव्य ! न तो सब्ज़ी का कीड़ा, न मेंढक और न केंचुआ, उन्हें इस बारे में कोई जानकारी दे पाये क्योंकि उनकी प्रजाति में से किसी को भी, कभी भी न तो उबाला गया था और न ही कभी चाँदी की प्लेट में रखा गया था। ये पुराने सफ़ेद घोंघे दुनिया में सबसे बढ़िया थे। उन्हें यह मालूम था ! यह पूरा जंगल उनके लिए था और सामन्ती महल भी, जिससे कि उन्हें उबाला जा सके और चाँदी की प्लेट में रखा जा सके।

वे आराम और ख़ुशी की ज़िन्दगी बिता रहे थे। उनका कोई बच्चा नहीं था इसलिए उन्होंने एक छोटे आम घोंघे को गोद ले लिया था और उसे अपने बच्चे जैसा पाला-पोसा था। लेकिन छोटा घोंघा बढ़ा नहीं क्योंकि वह एक आम घोंघा था, जबकि बूढ़े घोंघे, ख़ासतौर पर उसकी माँ का यह मानना था कि वह अच्छी तरह से बढ़ गया है। और जब पिता यह नहीं देख पाया तो माँ ने उसे उसका कवच छूकर देखने को कहा। पिता ने बच्चे का कवच छूकर देखा और माना कि उसकी माँ सही कह रही थी।

एक दिन बहुत तेज़ पानी बरसा।

"सुनो, नरकुल के पत्तों पर कैसे तबला बज रहा है। ताक-धिना-धिन ! ताक-धिना धिन !" पिता—घोंघे ने कहा।



"ये बूँदें हैं।" माँ ने कहा, "ये सीधे शाख़ों से आ रही हैं। तुम देखना यहाँ सब भीग जायेगा। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि हमारा अपना घर है और हमारे बच्चे का भी अपना घर है। किसी भी जीव से कहीं ज़्यादा हमारे लिए किया गया है। यह बिल्कुल साफ़ देखा जा सकता है कि हम दुनिया के महान लोग हैं ! हमें अपने जन्म से ही घर मिले हुए हैं, हमारे लिए नरकुल का जंगल उगाया गया है। मुझे यह जानना है कि यह कितनी दूर तक जाता है और इससे आगे क्या है ?"

"कुछ नहीं।" पिता–घोंघे ने कहा, "यहाँ घर से बेहतर क्या हो सकता है ? मुझे किसी चीज़ की इच्छा नहीं है।"

"हाँ।" माँ बोली, "मेरी इच्छा है कि मुझे सामन्ती महल मे ले जाया जाये, उबाला जाये और फिर चाँदी की प्लेट में रखा जाये। यह हमारे सभी पूर्वजों के साथ किया गया था और तुम तो जानते ही हो कि यह कितना बड़ा सम्मान है।"

"सामन्ती महल शायद गिर गया है।" पिता-घोंघे ने कहा, "या फिर नरकुल के जंगल इसके ऊपर उग गये हैं जिससे कि लोग बाहर ही नहीं निकल सकें। तुम्हें जल्दी नहीं करनी चाहिए, लेकिन तुम हमेशा जल्दी करती हो और हमारे बच्चे को भी यही आदत पड़ रही है। क्या पिछले तीन दिनों में वह पेड़ की शाख़ों पर नहीं चढ़ने लगा है ? मैं जब उसे ऐसा करते देखता हूँ तो मेरा सिर दुखने लगता है।

"तुम्हें उसे डाँटना नहीं चाहिए।" माँ बोली, "वह बहुत धीरे-धीरे रेंगता है। हम उसे देखकर ही ख़ुश होंगे। हम बूढ़ों के लिए ज़िन्दगी में और है ही क्या ? लेकिन क्या तुमने सोचा है कि हम उसके लिए पत्नी कहाँ से लायेंगे ? क्या तुम्हें नहीं लगता कि जंगल मे और आगे हमारे जैसे और भी घोंघे होंगे ?"

"मुझे लगता है वहाँ काले घोंघे होंगे।" बूढ़े घोंघे ने कहा, "बिना घरों वाले काले घोंघे। लेकिन वे तो बहुत ही भद्दे होते हैं और इसीलिए उनका तिरस्कार भी किया जाता है। लेकिन हम चींटियों को इसकी ज़िम्मेदारी सौंप सकते हैं। वे यहाँ से वहाँ दौड़ती फिरती हैं जैसे कि वे नौकरी करती हों। वे ज़रूर हमारे बच्चे के लिए एक पत्नी ढूँढ़ सकती हैं।"

"मुझे सचमुच एक सुन्दर दुल्हन के बारे में पता है," एक चींटी बोली, "लेकिन मुझे लगता है कि वह नहीं चलेगी क्योंकि वह रानी है !"

"उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।" बूढ़े घोंघों ने पूछा, "उसके पास घर है ?"

"उसका एक महल है !" चींटी ने कहा, "बहुत सुन्दर चींटियों का महल जिसमें सात सौ रास्ते हैं।"

"धन्यवाद।" माँ बोली, "हमारा बच्चा चींटी के बिल में नहीं जायेगा यदि तुम्हें और किसी के बारे में नहीं मालूम तो हम यह ज़िम्मेदारी सफ़ेद पतंगों को दे देते हैं। वे बरसात और धूप में दूर तक उड़कर जाते हैं और वे नरकुल के जंगल को भीतर-बाहर से अच्छी तरह जानते हैं।"

"हम तुम्हारे बच्चे के लिए एक पत्नी के बारे में जानते हैं।" एक पतंगा बोला। यहाँ से आदमी के सौ क़दमों की दूरी पर एक छोटी घोंघी झरबेरी की झाड़ी पर बैठी है। वह एकदम अकेली है और उसकी उम्र भी शादी के लायक़ है। बस यहाँ से आदमी के सौ क़दमों की दूरी पर।"

"हाँ, उसे आने दो।" बूढ़े लोग बोले, "हमारे बेटे के पास एक पूरा का पूरा जंगल है जबकि उसके पास केवल एक झाड़ी।"

और वे इस घोंघे को ले आये। उसके आने के पहले वे आठ दिन रुके लेकिन इसकी भी एक ख़ास वजह थी कि वे जाँचना चाह रहे थे कि वह सही है या नहीं।

फिर उनकी शादी हुई। जुगनू अपनी पूरी शक्ति से चमके। इस ख़ास बात के अलावा सब कुछ शान्ति से हुआ क्योंकि बूढ़े घोंघे दावतें और पैसे की बर्बादी नहीं सहन कर पाते थे। लेकिन माँ–घोंघा ने एक लम्बा-चौड़ा भाषण दिया। पिता बहुत अधिक भावुक हो गये इसलिए कुछ नहीं बोल पाये। उन्होंने नवदम्पति को विरासत में पूरा नरकुल का जंगल दे दिया और हमेशा की अपनी बातें दोहरायीं–जैसे कि वह दुनिया में सबसे अच्छी जगह है और यदि युवा लोग सम्मान के साथ रहें और अपनी संख्या में वृद्धि करते रहें तो एक दिन वे ज़रूर अपने बच्चों को सामन्ती महल में ले जायेंगे जहाँ उन्हें उबालकर काला किया जायेगा और फिर एक चाँदी की प्लेट में रखा जायेगा। जब भाषण समाप्त हुआ तो बूढ़े घोंघे अपने घरों में रेंगकर वापस चले गये और फिर कभी बाहर नहीं निकले क्योंकि वे सो गये थे।

नये घोंघों के जोड़े ने जंगल पर शासन किया और बहुत-से बच्चे पैदा किये। लेकिन जब घोंघों के बच्चों को कभी नहीं उबाला गया और चाँदी की प्लेट में नहीं डाला गया तो उन्होंने मान लिया कि सामन्ती महल गिर गया है और दुनिया के सारे व्यक्ति मर गये हैं। और जब उनकी बात का खण्डन किसी ने नहीं किया तो वे सही ही कह रहे होंगे। बरसात की बूँदें नरकुल की पत्ती पर गिरकर उनके लिए तबला बजाने लगीं और सूरज की रोशनी में पूरा नरकुल का जंगल रंगीन हो गया। वे ख़ुश थे, बहुत ही खुश–पूरा परिवार खुश था, बेहद ख़ुश !

20

दो भाई

डेनमार्क के एक द्वीप में जहाँ हमारे पूर्वजों के वे सिंहासन हैं जिन पर बैठ कर वे न्याय करते थे, वहाँ समुद्र के किनारे बड़े-बड़े पेड़ हैं, एक छोटा-सा शहर है जिसके छोटे मकानों की छतें लाल कवेलुओं से ढकी हैं। इनमें से एक घर में अद्‌भुत चीज़ें भट्ठी पर पकाई जा रही थी। काँच के बड़े बर्तन में कुछ चीज़ें उबल रही थीं। उन्हें मिला कर छाना जा रहा था, जड़ी-बूटियाँ काटी और पीसी जा रही थीं—और यह सब काम एक बूढ़े आदमी की देख-रेख में हो रहा था।

उसने कहा, "सबको हमेशा सही काम ही करना चाहिए। सबको प्रकृति के एक-एक कण के बारे में जानना चाहिए और इस सच्चाई के हमेशा क़रीब रहना चाहिए।"

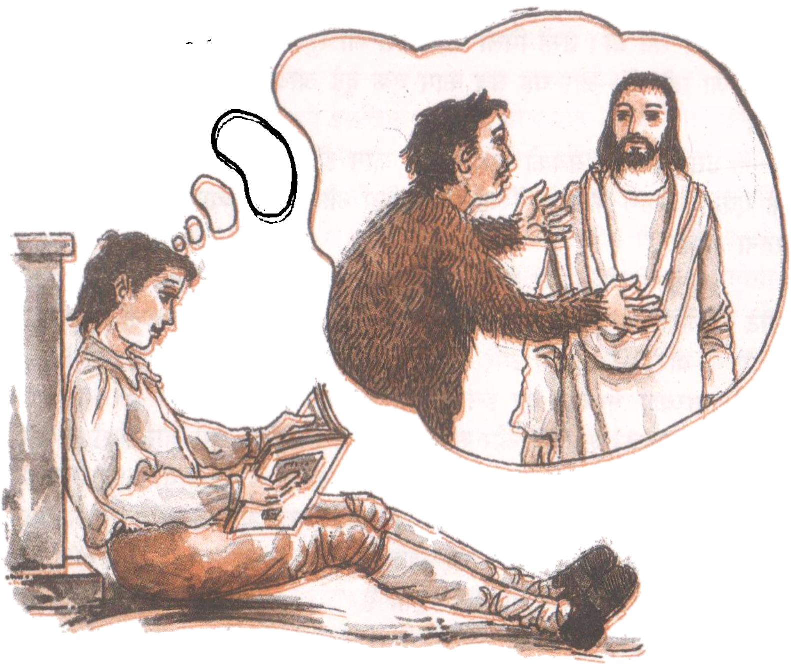
इस कमरे में कुशल गृहस्वामिनी अपने दोनों बेटों के साथ बैठी थी, जो छोटे थे लेकिन उनके विचार बड़ों जैसे थे। उनकी माँ ने हमेशा उन्हें सत्य और न्याय के बारे में शिक्षा दी और हमेशा सच्चाई की ही राह पर चलने को कहा। क्योंकि सच्चाई भगवान का इस दुनिया को सबसे बड़ा वरदान है।

बड़ा लड़का शरारती और साहसी था। उसे प्रकृति, सूर्य और तारों के बारे में पढ़ना पसन्द था। लोककथाएँ उसे नहीं भाती थीं। वह सोचता था, "ओह, खोज की यात्रा पर जाना या चिड़िया की नक़ल करते हुए हवा में उड़ना कितना आनन्ददायक होगा। हाँ, यही वास्तविक चीज़ होगी। पिता सही थे और माँ भी—सत्य ही दुनिया को जोड़कर रखता है।"

छोटा लड़का शान्त था और किताबों में डूबा रहता था। जब उसने जैकब के बारे में पढ़ा जिसने भेड़ की खाल पहन कर अपने भाई यीशू को उसके जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित करने की कोशिश की, उस धोखेबाज़ के ख़िलाफ़

उसकी नन्हीं मुट्ठियाँ हवा में तन गयीं। जब वह तानाशाहों, सभी ग़लत काम करने वालों और ग़लत चीज़ों के बारे में पढ़ता तो उसकी आँखें नम हो जातीं और वह सत्य के बारे में सोचता जो अन्त में विजयी होगा।

एक शाम, जब वह अपने बिस्तर पर लेटा था, पर्दे खुले थे और रोशनी उस पर पड़ रही थी। वह बिस्तर पर किताब लेकर लेटा था, क्योंकि वह सोलोन की कहानी पूरी करना चाहता था। उसके विचार अपनी अद्‌भुत उड़ान के साथ उसे उड़ा ले गये। उसे लगा कि उसका बिस्तर एक जहाज़ है जो अपनी फूली पालों के साथ उसे ले जा रहा है। क्या उसने सपना देखा था ? नहीं ? तो उसे क्या हो रहा था ? वह पानी पर तैरते-तैरते पुराने समय में पहुँच गया और उसे सोलोन की आवाज़ सुनायी दी। एक अजनबी लेकिन उसे समझ में आने वाली भाषा में उसने एक डेनिश कहावत सुनी "क़ानून से ही देश का शासन चलता है।"



मानव जाति के विद्वान, जो उस कमरे में इकट्ठा थे, उसके बिस्तर पर और उसके माथे को चूमा। "यशस्वी बनो, जीवन की लड़ाई में मज़बूत बनो ! तुम्हारे भीतर का सच तुम्हें बहुत आगे ले जाये !"

बड़ा भाई अभी तक लेटा नहीं था और खिड़की पर खड़े होकर बग़ीचे में छाने वाली धुन्ध को देख रहा था वहाँ परियाँ नहीं नाच रही थीं, जैसा कि बूढ़ी दाई ने कहा था। वह बेहतर जानता था कि यह भाप है जो हवा से गर्म होने की वजह से ऊपर उठ रही है। आकाश में एक टूटता हुआ तारा चमका और बच्चे के विचार ज़मीन की धुन्ध से उठकर आकाश के उस तारे तक पहुँच गये। स्वर्ग के तारे चमके और उनसे सुनहरे धागे पृथ्वी की ओर आते हुए दिखायी दिये।

"मेरे साथ उड़ो," आवाज़ आयी और लड़के ने सुना। वह महान विद्वान–जिसकी गति चिड़ियों, तीर और दुनिया में किसी भी उड़ने वाली चीज़ से तेज़ थी–उसे ऊपर उस दुनिया में ले गया–जहाँ तारों से तारों तक किरणें फैली थीं। उस पतली हवा में हमारी पृथ्वी भी घूमती नज़र आयी। उसके धरातल पर बसे शहर बहुत पास-पास लगे। उस गोले से आवाज़ आयी, "मानव के लिए भला उस वक़्त क्या दूर है और क्या पास है–जब उसकी मानसिक शक्ति उसे ऊपर उठा देती है ?"

और फिर लड़का खिड़की के पास खड़ा होकर सामने देखने लगा और छोटा भाई बिस्तर पर लेटा था। उनकी माँ उनके नाम लेकर पुकार रही थी, "एन्ड्रेस सैन्डो और हैन्स क्रिश्चियन।"

डेनमार्क उन्हें जानता है और दुनिया भी उन्हें जानती है।–इन दो ओर्स्टेड* भाइयों को।

---

* चुम्बक शक्ति की इकाई का नाम इसी भौतिकविद् हैंस क्रिश्चियन ओर्स्टेड के नाम पर है।

21

बर्फ़ की रानी की सात कहानियाँ

पहली कहानी

शीशों का जादू

तो अब हम कहानी शुरू करते हैं। जब कहानी ख़त्म होगी तो हम जितना अभी जानते हैं, उससे काफ़ी ज़्यादा जान जायेंगे क्योंकि वह एक बुरा बौना था। वह बहुत ही बुरा था, क्योंकि वह एक राक्षस था। एक दिन वह बहुत खुश था। उस दिन उसने एक ख़ास शीशा बनाया। उसकी ख़ासियत यह थी कि सारी सुन्दर और अच्छी चीज़ें उसमें एकदम बेकार बदसूरत दिखायी देती थीं। और जो कि बेकार और बदसूरत चीज़ें होतीं, वे इसमें और भी बुरी दिखायी देती थीं—अपनी असलियत से भी ज़्यादा बदसूरत। सुन्दर पहाड़ों-नदियों और पेड़-पौधों के चित्र इसमें उबले पालक जैसे दिखते थे और अच्छे आदमी या तो दिखायी ही नहीं देते थे या सिर के बल खड़े बिना शरीर के दिखायी देते थे। उनके चेहरे इतने बिगड़े हुए होते कि वे पहचान में ही नहीं आते। एक झुर्री-सी पूरी नाक और चेहरे पर फैली होती थी। राक्षस के लिए यह सब बहुत मज़ेदार था। जब भी कोई अच्छा विचार किसी के मन में आता, वह भी शीशे में दिखायी पड़ जाता और राक्षस अपनी कलात्मक खोज पर हँसने लगता। उसने सब तरफ़ घोषणा कर दी थी कि उसने एक जादुई खोज की है और इसे देखने के लिए उसकी 'बौनों की संस्था' में आइए। इसलिए जो भी उस बौनों की संस्था में आते, हर जगह जाकर उस अनोखी चीज़ के बारे में बताते, क्योंकि अब उनका कहना था कि यहाँ कोई चीज़ पहली बार अपने वास्तविक रूप में देखी जा सकती है। वे उड़कर स्वर्ग तक जाना चाहते थे और देवदूतों पर नाक-भौं सिकोड़ना चाहते थे। शीशे के साथ वे जितना ऊपर उड़कर जाते, उतना ही वह हँसता।



वे बड़ी मुश्किल से उसे पकड़े हुए थे। वे ऊपर और ऊपर उड़ते गये और शीशा हँसी के बीच इतनी ज़ोर से काँपा कि वह उनके हाथों से छूटकर धरती पर गिर पड़ा और हज़ारों-हज़ार टुकड़ों में टूट गया। अब इस शीशे से और भी अप्रसन्नता फैली क्योंकि कुछ टुकड़े अभी भी मकई के दानों के बराबर थे और वे दुनिया में उड़ते फिर रहे थे और जब भी वे उड़कर किसी की आँखों में जाते तो वे उनमें चिपक जाते और उन लोगों को हर चीज़ ग़लत शक्ल में दिखायी देने लगती। या वे केवल बुरी चीज़ों को ही देख पाते क्योंकि शीशे के छोटे-से टुकड़े में भी वही शक्ति थी जो कि पूरे शीशे में। कुछ लोगों के तो दिल के भीतर भी ये टुकड़े चले गये। यह सचमुच बहुत भयानक था क्योंकि वह दिल बर्फ़ की सिल्ली हो जाता था। शीशे के कुछ टुकड़े इतने बड़े थे कि वे खिड़कियों की तरह इस्तेमाल कर लिए गये लेकिन इन खिड़कियों से किसी मित्र को देखना बहुत ही बुरा था। कुछ टुकड़े चश्मे बन गये लेकिन जब लोगों ने इन्हें लगाया और सही तरीक़े से देखना चाहा तो बहुत ही बुरा हुआ। यह सब देखकर राक्षस इतना हँसा कि

उसकी तोंद हिलने लगी क्योंकि उसे उससे और ज़्यादा गुदगुदी लग रही थी। लेकिन बाहर शीशे के नन्हें टुकड़े अभी भी हवा में तैर रहे थे। अब हम आगे सुनेंगे।

दूसरी कहानी

छोटा लड़का और छोटी लड़की

एक बड़े शहर में बहुत सारे मकान और बहुत सारे लोग हैं। वहाँ इतनी जगह नहीं है कि हर कोई एक बग़ीचा लगा सकें। इसलिए अधिकांश लोग गमलों में लगे फूलों से ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। लेकिन दो ग़रीब बच्चों के पास गमले से थोड़ा बड़ा एक बग़ीचा था। वे भाई-बहन नहीं थे, लेकिन वे एक-दूसरे को इतना प्यार करते थे जैसे कि वे सचमुच में ही भाई-बहन हों। उनके माता-पिता एक-दूसरे के सामने दो छज्जों में रहते थे जिनकी छतें एक-दूसरे से जुड़ी थीं। घरों के बीच से जाने वाला पानी का पाइप एक छोटी-सी सीढ़ी था, जो एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक जाने के लिए काम आता था।

दोनों बच्चों के माता-पिता के पास एक बड़ा बक्सा था, जिसमें रसोई में काम आने वाली सब्जियाँ और मसालों के पौधे और एक नन्हीं गुलाब की झाड़ी लगी थी। दोनों बक्सों में एक गुलाब का पौधा था। जो अच्छी तरह से बढ़ रहा था। अब माता-पिता को यह लगा कि उन बक्सों को उस पाइप के आसपास रख देना चाहिए जिससे कि वे एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक पहुँच जायें और फूलों की दो क्यारियों जैसे लगें। मटर के पौधे बक्स से लटकने लगे। गुलाब के पौधों में नयी शाखें आयीं जो खिड़की के पास छा गयीं और एक-दूसरे से मिल गयीं। यह बिल्कुल फूल-पत्तों से बना हुआ एक 'शानदार-द्वार' जैसा लगता था। बक्से बहुत ऊपर रखे थे इसलिए बच्चे जानते थे कि वे उन पर नहीं चढ़ सकते। इसलिए वे अक्सर बक्सों के पीछे की छत पर चढ़कर गुलाबों के पास छोटी-छोटी कुर्सियों पर बैठने की अनुमति ले लेते। वहाँ वे अच्छी तरह खेल सकते थे।

सर्दियों में यह खेल रुक गया। कई बार खिड़की बर्फ़ से पूरी तरह जमी रहती। लेकिन तब वे ताँबे के सिक्के स्टोव पर गर्म करके खिड़की पर रख देते जिससे बर्फ़ में एक गोल छेद बन जाता, एकदम गोल ! और उस छेद के पीछे से दोनों खिड़कियों पर एक-एक सुन्दर-सी आँख झाँकती रहती। ये आँखें छोटे

लड़के और छोटी लड़की की होतीं। लड़के का नाम केय और लड़की का नाम जेर्डा था।

गर्मियों में वे आराम से एक-दूसरे के पास पहुँच सकते थे। लेकिन सर्दियों में उन्हें बाहर बर्फ़ जमी होने पर लम्बी सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे जाना पड़ता।

"वे सफ़ेद मधुमक्खियाँ हैं," बूढ़ी दादी बर्फ़ को देखकर बोलीं।

"क्या उनमें रानी-मक्खी भी है ?" छोटा लड़का बोला, क्योंकि उसे मालूम था कि सचमुच की मक्खियों में एक रानी-मक्खी भी होती है।

"हाँ है," दादी ने जवाब दिया, "वह हमेशा घने झुण्ड में उड़ती है। वह उनमें सबसे बड़ी होती है और धरती पर कभी शान्ति से नहीं रहती। वह वापस काले बादलों में उड़ जाती है। अक्सर आधी रातों में वह शहर की सड़कों पर उड़ती हुई घूमतीं है, घरों की खिड़कियों के भीतर देखती है। फिर वह बहुत अजीब तरीक़े से जम जाती है और फूलों जैसी दिखायी देती है।"

"हाँ, मैंने देखा है !" दोनों बच्चे चिल्लाए, और अब उनकी समझ में आ गया कि यह सच था।

"क्या बर्फ़ की रानी यहाँ आ सकती है ?" छोटी लड़की ने पूछा।

"उसे आने तो दो।" छोटा लड़का चिल्लाया, "मैं उसे गर्म स्टोव पर रख दूँगा और वह पिघल जायेगी।"

लेकिन दादी ने उसके बाल सहलाये और उन्हें दूसरी कहानियाँ सुनायीं। शाम को नन्हा केय घर पर था। उसने आधे कपड़े ही पहने थे। वह खिड़की के पास रखी कुर्सी पर चढ़ गया और छोटे छेद में से बाहर देखने लगा। बर्फ़ के कुछ क़तरे गिर रहे थे और उनमें से एक सबसे बड़ा, फूलों के एक बक्से के किनारे पड़ा रह गया था। बर्फ़ का क़तरा बड़ा और बड़ा होता चला गया और उसने आख़िर में झिलमिलाते कणों से मिलकर बनी बारीक़ जालीदार सफ़ेद कपड़े पहने हुए स्त्री का रूप ले लिया। वह सुन्दर और नाज़ुक थी, लेकिन बर्फ़ की बनी थी—चमकीली, झिलमिलाती बर्फ़ की। वह जीवित थी, उसकी आँखें दो सितारों की तरह चमक रही थीं, लेकिन वे शान्त नहीं थीं। उसने खिड़की की ओर देखकर सिर हिलाया और अपने हाथ के इशारे से बुलाया। छोटा लड़का डर गया और कुर्सी से कूद पड़ा। फिर ऐसा लगा जैसे खिड़की के सामने एक बड़ी चिड़िया उड़ी हो।

अगले दिल बर्फ़ साफ़ हो गयी थी। फिर बसन्त ऋतु आयी। सूरज चमकने लगा और हरी कोंपलें उगीं। अबाबीलों ने घोंसले बनाये, खिड़कियाँ फिर खुल गयीं और छोटे बच्चे ऊँची छत पर अपने बग़ीचे में आ बैठे।

इस बार गुलाब में कितने सुन्दर फूल आए थे। छोटी लड़की ने एक भजन सीखा था, जिसमें गुलाबों का ज़िक्र था और गुलाबों की बात करते समय उसने अपने बारे में ही सोचा। उसने यह गीत छोटे लड़के को गाकर सुनाया और वह भी गाने लगा—

"गुलाब मुरझाकर चले जायेंगे
लेकिन हम क्राइस्ट-शिशु बने रहेंगे।"

और बच्चों ने एक-दूसरे के हाथ पकड़ लिये, गुलाबों को चूमा, सूरज की रोशनी को देखा, उनसे बात की—जैसे कि भगवान के बच्चे वहाँ हों। वे कितने अच्छे गर्मियों के दिन थे। बाहर ताज़ी गुलाब की झाड़ियों में सब कुछ कितना सुन्दर था जैसे कि उनमें कभी फूल आना बन्द नहीं होंगे !

केय और जेर्डा बैठकर राक्षसों और चिड़ियों के चित्रों वाली किताब देखने लगे। जब चर्च की मीनार पर घड़ी बारह बजाने ही वाली थी कि केय ने कहा,

"ओह, मेरे दिल सें कुछ टकराया और मेरी आँख में चुभ गया।"

छोटी लड़की ने उसकी गर्दन के पास झुककर देखा, उसने अपनी आँखें झपकायीं लेकिन कुछ नहीं दिखा।

"मुझे लगता है वह निकल गया है," वह बोला, लेकिन वह निकला नहीं था। वे उस शीशे से टूटे हुए टुकड़े थे—जादुई शीशे से, जिसकी हमें अच्छी तरह याद है। वही बदसूरत शीशा, जिसमें सभी बड़ी और अच्छी चीज़ें छोटी और बदसूरत दिखायी देती थीं। छोटी और ख़राब चीज़ें उभरकर सामने दिखायी देती थीं और उनका हर दोष एकदम साफ़ दिखता था। बेचारे नन्हें केय के दिल में भी एक टुकड़ा उड़कर लगा और अब उसका दिल बर्फ़ का हो जायेगा। अब उसे दर्द नहीं हो रहा था लेकिन टुकड़ा अभी भी वहीं था।

"तुम क्यों रो रही हो ?" उसने पूछा, "तुम कितनी बदसूरत लग रही हो। मुझे कुछ नहीं हुआ है। ओह, छिः !" वह अचानक बोला, "इस गुलाब को कीड़े ने खा लिया है और यह एकदम तिरछा है। ये एकदम बेकार गुलाब हैं। वे इन बक्सों जैसे ही हैं जिनमें ये लगे हुए हैं।"

और उसने बक्स को ठोकर मारी और दोनों गुलाबों को उखाड़ फेंका।

"केय, तुम क्या करना चाहते हो ?" छोटी लड़की चिल्लायी।

जब उसने लड़की को डरा हुआ देखा तो उसने एक और गुलाब तोड़ दिया और वापस अपनी खिड़की पर प्यारी छोटी जेर्डा से दूर चला गया।

बाद में जब वह अपनी चित्रों वाली किताब लेकर आयी तो केय ने कहा, "यह तो केवल दूध पीते बच्चों के देखने की किताब हैं और जब दादी कहानियाँ



सुनाने लगतीं तो वह हमेशा ऊटपटाँग सवाल पूछता। वह उनके पीछे जाकर खड़ा हो जाता और एक चश्मा लगाकर उनकी नक़ल करता। वह बहुत चतुराई से यह करता और लोग उस पर हँसते। जल्दी ही वह सड़क चलते लोगों की नक़ल करने लगा। हर आदमी की ख़ास और बुरी बात की वह नक़ल करता और लोग कहते, "इस लड़के का दिमाग़ बहुत तेज़ है।" लेकिन यह तो उस शीशे की करामात थी जो उसके दिल में घुस गया था। वह नन्हीं जेर्डा को भी तंग करने लगा जो उसे दिल से चाहती थी।

उसके खेल अब पहले से अलग हो गये। वे काफ़ी संवेदनशील हो गये। एक सर्दी की शाम जब बर्फ़ गिरी तो वह एक बड़ा आतिशी-शीशा लेकर बाहर आया, अपने नीले कोट का पिछला हिस्सा पकड़ा और उस पर बर्फ़ गिरने दी।

"जेर्डा, अब इस काँच को देखो।" वह बोला।

और बर्फ़ का हर क़तरा बड़ा होकर एक सुन्दर फूल की तरह या दस कोनों वाले सितारे की तरह दिखायी दे रहा था। यह दृश्य बहुत ही सुन्दर था।

"देखो यह कितनी होशियारी का काम है।" केय बोला, "यह असली फूलों

से भी बढ़िया है और इसमें कोई ख़राबी भी नहीं है। पिघलने तक ये एकदम बढ़िया रहते हैं।" जल्दी ही केय मोटे दस्ताने पहनकर आया और अपनी पीठ के बल बर्फ़ पर फिसलने लगा। उसने जेर्डा को बताया, "मुझे बड़े चौक में दूसरे लड़कों के साथ खेलने जाने की आज्ञा मिल गयी है" और वह चला गया।

बड़े चौक पर तेज़ तर्रार लड़के अक्सर अपनी बर्फ़ गाड़ियाँ गाँव के लोगों की गाड़ियों से बाँध देते थे, और उनके पीछे-पीछे बर्फ़ पर फिसलते दूर तक चले जाते थे। यह यात्रा मज़ेदार होती थी। अभी वे खेल ही रहे थे कि वहाँ एक बड़ी बर्फ़गाड़ी आयी और केय उसके साथ जाने लगा। वह तेज़, और तेज़ चलते-चलते अगली सड़क पर चली गयी। गाड़ी को चलाने वाला आदमी मुड़कर दोस्ती से केय की ओर देखने लगा। ऐसा लगा जैसे कि वे एक-दूसरे को जानते हों। हर बार जब केय अपनी नन्हीं बर्फ़गाड़ी छुड़ाने लगता, अजनबी फिर से सिर हिलाता और केय रुक जाता और इस तरह वे शहर के दरवाज़े तक पहुँच गये। तभी बर्फ़ इतनी तेज़ी से गिरने लगी कि लड़का एक हाथ से ज़्यादा दूर की कोई चीज़ देख ही नहीं सका, लेकिन फिर भी वह चलता रहा। उसने जल्दी से रस्सी छोड़ दी जिससे कि वह उस बड़ी बर्फ़गाड़ी से अलग हो जाये, लेकिन उससे कोई फ़ायदा नहीं हुआ क्योंकि उसकी बर्फ़गाड़ी, बड़ी बर्फ़गाड़ी से कसकर बँधी थी और वे हवा की तरह तेज़ी से चले गये। फिर वह ज़ोर से चिल्लाया लेकिन किसी ने उसकी आवाज़ नहीं सुनी। बर्फ़ गिरती रही और बर्फ़गाड़ी आगे उड़ती गयी। हर थोड़ी देर में वह उछलती और ऐसा लग रहा था कि वे बाड़ों और गड्ढों पर से उड़ते जा रहे हैं। लड़का बहुत डरा हुआ था। वह अपनी प्रार्थना करना चाह रहा था लेकिन उसे पहाड़ों और गिनती के अलावा कुछ भी याद न आया।

बर्फ़ के क़तरे बड़े होते गये। आख़िर में वे बड़े सफ़ेद मुर्गों जैसे दिखायी देने लगे। अचानक वे एक तरफ़ हो गये और बर्फ़गाड़ी रुक गयी और जो व्यक्ति उसे चला रहा था, उठ खड़ा हुआ। उसकी टोपी और बाल सब बर्फ़ के थे। वह एक औरत थी। लम्बी पतली और एकदम सफ़ेद। "यह बर्फ़ की रानी थी।"

"हम अच्छी तरह आ गये हैं !" वह बोली, "लेकिन तुम सर्दी से क्यों काँप रहे हो ? मेरे बालों के लबादे में घुस जाओ।" उसने उसे अपनी बर्फ़गाड़ी में अपने पास बिठा लिया और उसके आसपास अपने लबादे के बाल लपेट दिये और उसे ऐसा लगा कि जैसे वह बर्फ़ की नदी में डूब गया हो।

"क्या तुम्हें अभी भी ठण्ड लग रही है ?" उसने पूछा और उसका माथा चूमा। ओह, यह तो बर्फ़ से भी ठण्डा था। वह ठण्डक सीधे उसके दिल तक

चली गयी जो कि आधी बर्फ़ की थी। उसे लगा जैसे कि वह मरने वाला हो, लेकिन केवल एक क्षण के लिए क्योंकि उसके बाद उसे काफ़ी ठीक लगा और उसे अपने आस-पास की ठण्डक का पता भी न चला।

"मेरी बर्फ़गाड़ी ! मेरी बर्फ़गाड़ी को मत छोड़ो।"

यह पहली चीज़ थी, जिसके बारे में उसने सोचा। वह एक सफ़ेद मुर्गे से बँधी हुई थी और यह मुर्गा उसके साथ अपनी पीठ पर बर्फ़गाड़ी लेकर उड़ा जा रहा था। बर्फ़ की रानी ने केय को फिर से चूमा और फिर वह नन्हीं जेर्डा, अपनी दादी और घर की सभी बातों को भूल गया।

"अब मैं तुम्हें और नहीं चूमूँगी।" वह बोली, "क्योंकि यदि मैंने ऐसा किया तो तुम मेरे चुम्बनों से मर जाओगे।"

केय ने उसकी ओर देखा। वह इतनी सुन्दर थी कि उसने इससे सुन्दर या भावपूर्ण चेहरा कभी देखा भी नहीं था। जब वह खिड़की पर बैठकर उसे बुला रही थी तब वह उसे पहले की तरह बर्फ़ से बनी हुई नहीं लग रही थी। उसकी नज़र में वह एकदम अच्छी थी। उसे ज़रा भी डर नहीं लग रहा था। उसने उससे कहा कि वह मन ही मन में गणित कर सकता है और हिसाब रख सकता है क्योंकि उसे देश का क्षेत्रफल और उसकी जनसंख्या पता है। वह मुस्कराती रही और तब केय को लगा कि उसे जो जानकारी थी वह काफ़ी नहीं थी। उसने ऊपर आसमान की ओर देखा और वह उसे लेकर ऊपर, काले बादलों में उड़ गयी। तूफ़ान आया और सीटियाँ बजाने लगा। ऐसा लगा जैसे हवा पुराने गीत गा रही हो। वे जंगलों, तालाबों, समुद्र और मैदानों के ऊपर से उड़ते गये। उनके नीचे ठण्डी हवा साँय-साँय करती रही, भेड़िये रिरियाते रहे और बर्फ़ चटखती रही। उनके ऊपर चीखते हुए काले कौए उड़ रहे थे लेकिन सबसे ऊपर चाँद एकदम चमकीला और साफ़ चमक रहा था और केय लम्बी, बहुत लम्बी सर्दी की रात को देख रहा था। जब दिन निकला तो वह रानी के पैरों पर सो गया।

तीसरी कहानी

जादूगरनी का फूलों का बग़ीचा

लेकिन जब केय नहीं लौटा तो जेर्डा के साथ क्या बीता ? उसके साथ क्या हुआ होगा ? कोई नहीं जानता था, कोई नहीं बता सकता था। लड़कों ने केवल इतना बताया कि उन्होंने उसे अपनी बर्फ़गाड़ी, एक बहुत बड़ी बर्फ़गाड़ी के साथ बाँधते

हुए देखा था जो सड़कों से होती हुई शहर के दरवाज़े तक चली गयी थी। किसी को नहीं मालूम कि उसका क्या हुआ। बहुत लोगों ने आँसू बहाए और ख़ासतौर पर नन्हीं जेर्डा बहुत समय तक ज़ोर-ज़ोर से रोती रही। तब उसने बताया वह मर गया है—वह उस नदी में डूब गया है जो उनके स्कूल के पास बहती है। ओह, वे लम्बी, सर्दियों की रातें थीं ! लेकिन अब बसन्त की गुनगुनी धूप आ गयी थी।

"केय मर गया।" नन्हीं जेर्डा बोली।

"मैं नहीं मानती।" धूप बोली।

"वह मरकर हमसे दूर चला गया।" उसने चिड़ियों से कहा, "हम नहीं मानतीं," वे बोलीं और अन्त में नन्हीं जेर्डा को खुद ही इस बात पर भरोसा नहीं हुआ।

"मैं अपने नये लाल जूते पहनूँगी।" एक सुबह वह बोली, "वे जूते, जो केय ने कभी नहीं देखे हैं, और फिर मैं नदी के किनारे जाकर उसके बारे में पूछताछ करूँगी।"

बहुत ही सुबह वह उठी। उसने अपनी बूढ़ी दादी को चूमा जो अभी सोयी ही थीं। अपने लाल जूते पहने और शहर के दरवाज़े से बाहर नदी की तरफ़ अकेली निकल गयी।

"क्या यह सच है कि तुमने मुझसे मेरा साथी छीन लिया है ? यदि तुम मुझे उसे वापस कर दोगी तो मैं तुम्हें अपने लाल जूते दूँगी !"

और उसे ऐसा लगा जैसे लहरों ने कुछ अजीब तरीक़े से सिर हिलाया हो। उसने अपने लाल जूते लिए, जो उसे अपनी सभी चीज़ों से प्यारे थे और उन्हें नदी में फेंक दिया। लेकिन वे किनारे के पास गिरे और नन्हीं लहरें उन्हें वापस उसके पास ज़मीन पर खींच लायीं। ऐसा लगा जैसे कि नींद उससे उसकी सबसे प्यारी चीज़ नहीं लेग़ी क्योंकि उसके पास केय नहीं था। लेकिन उसे लगा कि उसने जूते दूर तक नहीं फेंके हैं और इसलिए वह सरकण्डों के बीच पड़ी एक नाव में चढ़ गयी। वह नाव के दूसरे सिरे तक रेंगकर गयी और वहाँ से जूते पानी में फेंक दिये। लेकिन नाव अच्छी तरह नहीं बँधी थी। जैसे ही वह थोड़ा हिली, वह किनारे से आगे जाकर बहने लगी। उसने यह सब देखा और वापस आने के लिए हड़बड़ायी, लेकिन जब तक वह वापस आ पाती नाव किनारे से एक गज़ आगे बढ़ चुकी थी और तेज़ी से बढ़ने लगी थी।

नन्हीं जेर्डा बहुत डर गयी और रोने लगी। उसकी आवाज़ चिड़ियों के अलावा किसी ने नहीं सुनी। किन्तु चिड़ियों उसे किनारे की ज़मीन तक वापस

नहीं ला सकती थीं। लेकिन वे किनारे के साथ-साथ उड़ती रहीं और उसे धीरज देने का गीत गाती रहीं, "हम यहाँ हैं ! हम यहाँ हैं !" नाव धारा के साथ बहती रही और नन्हीं जेर्डा चुपचाप बैठी रही। उसने केवल मोज़े पहने हुए थे और उसके लाल नन्हें जूते उसके पीछे तैर रहे थे। लेकिन वे नाव तक नहीं आ सकते थे क्योंकि वे उससे अभी भी काफ़ी दूर थे।

दोनों किनारों पर बहुत सुहावने दृश्य थे। सुन्दर फूल, पुराने पेड़, ढलान पर भेड़ें और गाय। लेकिन कहीं भी, एक भी आदमी दिखायी नहीं देता था।

"शायद यह नदी मुझे केय के पास ले जाये।" जेर्डा ने सोचा।

फिर वह बहुत खुश हो गयी और खड़ी हो गयी। वह घण्टों तक नदी के हरे-भरे तट देखती रही। फिर वह एक बड़े चेरी के बग़ीचे में आ गयी जिसमें एक ख़ास तरह की नीली और लाल खिड़कियों वाला एक छोटा घर था। इसकी छत घास-फूस की थी और उसके बाहर दो लकड़ी के सिपाही खड़े थे जो सामने से गुज़रने वालों को सलामी देते थे।

जेर्डा को लगा कि वह जीवित हैं इसलिए उसने उन्हें आवाज़ दी, लेकिन जैसा कि तय था उन्होंने जवाब नहीं दिया। वह उनके काफ़ी पास आ गयी। नदी नाव को किनारे की ओर ले गयी। जेर्डा ने और तेज़ आवाज़ दी। और फिर उस घर से एक बूढ़ी औरत बैसाखी पर चलकर बाहर आयी। उसने एक बड़ा मख़मल का टोप पहना था जिस पर सुन्दर फूल बने हुए थे।

"बेचारी नन्हीं बच्ची !" बूढ़ी औरत बोली, "तुम इस बड़ी तूफ़ानी नदी से होकर तैरते हुए इतनी दूर कैसे आ सकीं ?"

बूढ़ी औरत चुपचाप पानी में गयी। नाव को अपनी बैसाखी से रोककर उसे धरती की ओर खींचा और नन्हीं जेर्डा को बाहर निकाल लिया, हालाँकि जेर्डा उस बूढ़ी अजनबी औरत से थोड़ा-सा डर रही थी। लेकिन फिर भी वह वापस सूखी धरती पर आकर बहुत ख़ुश हुई।

"यहाँ आकर मुझे बताओ कि तुम कौन हो और यहाँ किस तरह आ पहुँची।" बूढ़ी औरत बोली। जेर्डा ने उसे सब कुछ बताया और बूढ़ी औरत हुँकारा भरती रही, "हम्म ! हम्म !" और जब जेर्डा अपनी बात ख़त्म कर चुकी तो उसने पूछा कि क्या बूढ़ी औरत ने केय को देखा है। औरत बोली कि वह अभी तक यहाँ नहीं आया है लेकिन शायद जल्दी ही आ जायेगा। जेर्डा बहुत दुखी नहीं थी। फूलों को देख रही थी और फलों का स्वाद ले रही थी क्योंकि यहाँ वे किसी चित्रों की किताब में बने फलों से भी सुन्दर थे। उनमें से हर एक कोई कहानी सुना सकता था। फिर बूढ़ी औरत ने जेर्डा का हाथ पकड़ा और उसे छोटे-से

घर के अन्दर ले गयी और घर में ताला लगा दिया।

खिड़कियाँ बहुत ऊँची थीं और उनके काँच लाल, नीले और पीले थे। जब सूरज की रोशनी उन पर पड़ती थी तो ये सभी रंग बहुत ही सुन्दर लगते थे। टेबल पर बढ़िया चेरी के फल रखे थे। जेर्डा ने वे फल मन भरकर खाये क्योंकि उसे ऐसा करने की पूरी छूट थी। जब वह चेरियाँ खा रही थी तब बूढ़ी औरत ने एक सोने की कंघी से अपने बालों में कंघी की और उसके बालों के सुनहरे घूँघर उसके चेहरे के आसपास लटकने लगे और उसका चेहरा एक खिलते हुए गुलाब की तरह लगने लगा।

"मुझे कितने समय से तुम्हारे जैसी प्यारी लड़की की इच्छा थी।" बूढ़ी औरत बोली, "अब तुम देखना कि हम लोग एक-दूसरे के साथ कितनी अच्छी तरह रहेंगे।"

और जैसे-जैसे वह औरत कंघी करती गयी जेर्डा अपने मुँह बोले भाई को भूलती गयी, क्योंकि वह औरत जादू कर सकती थी, लेकिन वह चुड़ैल नहीं थी। वह केवल अपने आनन्द के लिए थोड़ा-बहुत जादू करती थी और जेर्डा को अपने पास रखना चाहती थी। इसीलिए वह बग़ीचे में गयी और गुलाब की झाड़ियों की तरफ़ अपनी बैसाखी घुमाई जिससे कि वे ज़मीन में इस तरह घुस गये कि कोई कह ही नहीं सकता था कि वहाँ कभी गुलाब थे। बूढ़ी औरत को डर था कि यदि नन्हीं लड़की ने गुलाब देखे तो वह अपने बारे में ही सोचेगी और केय को याद करके भाग जायेगी।

फिर जेर्डा फूलों के बग़ीचे में आ गयी। वहाँ कितनी सुगन्ध और कितनी सुन्दरता थी। हर तरह के फूल वहाँ बड़ी खूबसूरती से खिले थे। वहाँ हर मौसम के फूल थे। इससे सुन्दर तो कोई चित्रों की किताब भी नहीं हो सकती थी। जेर्डा खुशी से उछली और तब तक खेलती रही जब तक कि सूरज ऊँचे चेरी के पेड़ों के पीछे नहीं डूब गया। सोने के लिए उसे एक ऐसे बिस्तर पर ले जाया गया जिस पर नीले वॉयलेट के फूलों से भरे हुए लाल रेशमी तकिए थे। वह वहाँ सो गयीं। वह इतने सुन्दर सपने देखने लगी जैसे कि कोई राजकुमारी अपनी शादी के दिन देखती है।

एक दिन फिर वह गुनगुनी धूप में फूलों के साथ खेली और इस तरह कई दिन बीत गये। जेर्डा को हर फूल के बारे में पता था। भले ही वहाँ इतने सारे फूल क्यों न थे, लेकिन उसे लग रहा था कि एक फूल की कमी थी। लेकिन किस फूल की—यह उसे नहीं पता था। एक दिन वह बैठकर बूढ़ी औरत का टोप देख रही थी, जिस पर फूलों के चित्र बने थे जिनमें सबसे सुन्दर एक गुलाब

था। बूढ़ी औरत ने जब बाक़ी गुलाब की झाड़ियों को अपनी बैसाखी से हटाया था तब वह इसे हटाना भूल गयी थी। लेकिन अक्सर ही ऐसा होता है कि जब कोई किसी चीज़ के लिए ज़्यादा कोशिश करता है तो वही ग़लत हो जाती है।

"अरे, यहाँ तो कोई भी गुलाब नहीं है !" जेर्डा चिल्लायी। और वह क्यारियों के बीच जाकर खोजती रही, खोजती रही, लेकिन उसे एक भी गुलाब नहीं मिला। जब वह बैठकर रोने लगी, उसके आँसू ठीक उसी जगह पर गिरे जहाँ गुलाब की झाड़ी दबी हुई थी और जब गर्म आँसुओं से मिट्टी भीगी तो पेड़ एकदम से उसी तरह फूलता हुआ उग आया जैसा कि वह ज़मीन में दबते समय था। जेर्डा ने उसे गले से लगा लिया और गुलाबों को चूमते हुए अपने घर के सुन्दर गुलाबों को और नन्हें केय को याद किया।

"ओह, मैं यहाँ किस तरह क़ैद हूँ !" लड़की बोली, "मैं नन्हें केय को ढूँढ़ना चाहती थी। क्या तुम्हें मालूम है वह कहाँ है ?" उसने गुलाबों से पूछा, "क्या तुम्हें लगता है वह मर गया ?"

"नहीं वह मरा नहीं है।" गुलाब बोले, "हम ज़मीन के भीतर थे। सभी मरे हुए लोग वहीं होते हैं, लेकिन केय वहाँ नहीं है।"

"धन्यवाद।" नन्हीं जेर्डा बोली और फिर वह दूसरे फूलों के पास गयी, उनके भीतर झाँककर देखा और उनसे पूछा, "क्या तुम्हें मालूम है केय कहाँ है ?"

लेकिन धूप में खिला हर फूल अपनी ही कहानी या किसी और ही क़िस्से के बारे में सोच रहा था। जेर्डा ने वे सभी क़िस्से सुने लेकिन उनमें से किसी को भी केय के बारे में नहीं मालूम था।

और टाइगर लिली ने क्या कहा ?

"क्या तुमने "रब-डब" ढोल सुना है ? इसमें हमेशा दो सुर होते हैं– "रब-डब"।"

"मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा !" नन्हीं जेर्डा बोली।

"यह मेरी कहानी है।" लिली बोली।

कन्वलवुलस फूल क्या कहते हैं ?

पतली सड़क पर एक पुराना राजसी महल है। मोटी लाल दीवारों के ऊपर घनी आइवी की बेल लगी है जिसके पत्ते और शाखें छज्जे तक गयी हैं और वहाँ एक सुन्दर लड़की खड़ी है। वह छज्जे पर झुककर सड़क पर देखती है। शाख पर का कोई भी गुलाब उससे सुन्दर नहीं है। कोई भी सेब का फूल हवा में उतना हल्का नहीं डोलता जैसे कि वह। उसके बेशक़ीमती रेशमी कपड़े किस तरह सरसराते हैं। लेकिन वह जिसकी प्रतीक्षा करती है, वह अभी तक नहीं आया ?"

"क्या तुम्हारा मतलब केय से है ?" नन्हीं जेर्डा ने पूछा।

"मैं केवल एक कहानी बता रहा हूँ—एक सपना।" कन्वलवुलस बोला।

बर्फ़ के नन्हें कतरे ने क्या कहा ?

"पेड़ों के बीच में रस्सी से एक बड़ा पटरा लटका है। वह एक झूला है। दो सुन्दर लड़कियाँ बर्फ़ जैसे सफ़ेद कपड़े पहने और अपने हैट में लम्बे हरे रेशमी रिबन लगाये हुए इन फूलों पर बैठी है और झूला झूल रही हैं। उनका भाई, जो उनसे बड़ा है, झूले पर खड़ा है और उसने अपने आपको सम्हाले रखने के लिए झूले की रस्सियों में अपनी बाँहें फँसा रखी हैं क्योंकि उसके एक हाथ में एक छोटी प्लेट है और दूसरे में एक मिट्टी का पाइप है। वह बुलबुले उड़ा रहा है। झूला ऊपर-नीचे आ रहा था। वह तरह-तरह के रंगीन बुलबुले बना रहा था। आख़िरी बुलबुला अभी भी हवा में झूलता हुआ पाइप पर लटका हुआ था। झूला ऊपर-नीचे आ रहा था। बुलबुलों की ही तरह हल्का काला कुत्ता अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर झूले पर चढ़ना चाह रहा था। झूला ऊपर जाता है और कुत्ता गिर जाता है। भौंकता है और गुस्सा होता है क्योंकि उसको चिढ़ाया गया है और बुलबुला फूट जाता है। झूला और बुलबुला यही मेरा गीत है।"

"तुम तो कह रहे हो वह सब बहुत सुन्दर है लेकिन तुम यह सब बहुत दुखी होकर बता रहे हो और तुमने इसमें नन्हें केय का ज़िक्र भी कहीं नहीं किया।"

जलकुम्भी क्या बोली ?

"तीन बहुत सुन्दर बहने थीं, एकदम पारदर्शी और नाज़ुक। एक की पोशाक लाल थी, दूसरी की नीली और तीसरी की एकदम सफ़ेद। सफ़ेद चाँदनी में वे हाथों में हाथ लिए शान्त झील के किनारे नाच रही थीं। वे परियाँ नहीं थीं, लड़कियाँ थीं। वहाँ सब कुछ बहुत सुन्दर और सुगन्धित था। लड़कियाँ जंगल में ग़ायब हो गयीं और मधुर सुगन्ध और तेज़ हो गयी। तीन सुन्दर लड़कियों को लिए तीन ताबूत झील के पार जंगल से सरकते हुए आए। जुगनू उनके ऊपर रोशनियों जैसे उड़ रहे थे। क्या नाचने वाली लड़कियाँ सो रही थीं या वे मर गयी थीं ? फूलों की खुशबू से लगता था कि वे मर गयी हैं और शाम की घंटियाँ उनके लिए आख़िरी बार बज रही हैं।"

"तुमने मुझे बहुत दुखी कर दिया।" नन्हीं जेर्डा ने कहा, "तुम्हारी खुशबू इतनी तेज़ है कि मैं मृत लड़कियों के बारे में सोचने से खुद को नहीं रोक सकती। आह ! क्या नन्हा केय सचमुच मर गया है ? गुलाब की झाड़ियाँ जो ज़मीन के भीतर दबी पड़ी थीं, वे तो कहती हैं कि केय मरा नहीं है।"

"क्लिंग ! क्लैंग !" जलकुम्भी की घण्टियाँ बजीं, "हम नन्हें केय के लिए

नहीं बज रही हैं। हम उसे नहीं जानतीं। हमने केवल अपना गीत गाया, वह गीत जो हमें आता था।''

और जेर्डा बटरकप के फूल के पास गयी, जो हरी पत्तियों के बीचोंबीच चमक रहा था।

''तुम छोटे चमकीले सूरज हो,'' जेर्डा बोली। ''यदि तुम्हें मालूम है तो मुझे बाताओ कि मेरा साथी कहाँ मिल सकता है।''

और बटरकप बहुत गरिमा से चमका और उसने जेर्डा को देखा। बटरकप अब कौन-सा गीत गायेगा ? यह भी केय के बारे में नहीं था।

छोटे से आँगन में बसन्त के पहले दिन सूरज की गुनगुनी धूप आ रही थी। सूरज की किरणें पड़ोस के घर की सफ़ेद दीवारों पर फिसल रही थीं और पास ही पहला पीला फूल झूलता हुआ चमकीली धूप में सोने की तरह लग रहा था। बूढ़ी दादी दरवाज़े के बाहर अपनी कुर्सी पर बैठी थीं। उनकी पोती जो कि एक ग़रीब नौकरानी थी, थोड़े समय के लिए घर आयी थी। उसने अपनी दादी को चूमा। उस चुम्बन में सोना था, दिल में सोना—मुँह में सोना, सुबह सब कुछ सोने जैसा आनंददायी था। यही है मेरी छोटी-सी कहानी।'' बटरकप बोला।

''बेचारी मेरी बूढ़ी दादी माँ !'' जेर्डा ने आह भरी, ''हाँ, वह निश्चय ही मेरी राह देखकर मेरे लिए परेशान हो रही होंगी जैसे कि वह नन्हें केय के लिए हुई थीं। लेकिन मैं जल्दी ही केय को साथ लेकर घर वापस जाऊँगी। इन फूलों से कुछ भी पूछने का कोई फ़ायदा नहीं क्योंकि ये सभी केवल अपने ही गीत जानते हैं और मुझे कुछ भी नहीं बताते।'' फिर उसने अपनी फ्रॉक को कसकर बाँधा जिससे वह तेज़ दौड़ सके लेकिन जब वह नरगिस के पौधे के ऊपर से कूदी तो वह उसके पैरों से टकराई और वह लम्बे पीले फूल को देखने रुकी और उससे पूछा, ''शायद तुम नन्हें केय के बारे में कुछ जानती हो ?''

वह फूल की ओर झुकी और उसने क्या कहा ?

''मैं खुद देख सकती हूँ। मैं खुद देख सकती हूँ !'' नरगिस बोली, ''ओह ! ओह ! मेरी सुगन्ध कितनी बढ़िया है। मीनार पर ऊपर छोटे कमरे में एक छोटी नाचने वाली लड़की खड़ी है। कभी वह एक पैर पर खड़ी होती है, कभी दोनों पैरों पर। वह पूरी दुनिया में घूमती है। वह कुछ नहीं सिर्फ़ आँखों का एक भ्रम है। वह चाय की केतली से एक कपड़े के टुकड़े पर पानी डालती है—वह उसकी पोशाक है।—'सफ़ाई अच्छी चीज़ है,' वह कहती है। उसकी सफ़ेद फ्रॉक एक हुक पर टँगी है। इसे भी चाय की केतली से धोया गया है और छत पर सुखाया

गया है। वह उसे पहनकर नारंगी रूमाल अपने गले में बाँधती है और उसकी पोशाक और भी सफ़ेद दिखाई देती है। अपने पैरों को देखो ! वह किस तरह एक शाख़ पर खड़ी रहती है। मैं खुद देख सकती हूँ ! मैं खुद देख सकती हूँ।''

''मुझे इस सबकी परवाह नहीं।'' जेर्डा बोली, ''तुम मुझे यह सब मत बताओ।''

और वह बग़ीचे के दूसरे सिरे की ओर दौड़ गयी। दरवाज़े पर ताला लगा था लेकिन उसने जंग लगे ताले को दबाया और वह टूट गया। दरवाज़ा खुल गया और नन्हीं जेर्डा नंगे पाँव बाहर दौड़ गयी। उसने तीन बार पीछे मुड़कर देखा लेकिन उसे रोकने के लिए वहाँ कोई नहीं था। अख़िरकार वह और नहीं दौड़ सकी और एक बड़े पत्थर पर बैठ गयी। जब उसने अपने आसपास देखा तो गर्मी बीत चुकी थी—अब शरद के आख़िरी दिन थे। उस बग़ीचे में मौसमों का बदलाव नहीं दिखता था क्योंकि वहाँ हर समय धूप रहती थी और हर मौसम के फूल वहाँ खिले रहते थे।

''ओह मैं कितना भटकी !'' नन्हीं जेर्डा बोली, ''शरद आ गयी, मैं अब फिर आराम नहीं कर सकती।'' और वह जाने के लिए उठी। ओह ! वह कितनी थक गयी थी और उसके पैर कितने दुख रहे थे। सब ओर ठण्ड और अँधेरा था। शरपत्र की लम्बी पत्तियाँ काफ़ी पीली हो गयी थीं और ओस पानी की तरह गिर रही थी। एक के बाद एक पत्ती झड़ रही थी केवल एक झाड़ी में फल लगे थे लेकिन वे खट्टे थे और उनसे दाँत खट्टे हो जाते थे। ओह, बाहर दुनिया कितनी उदास और धुँधली लग रही थी।

चौथी कहानी

राजकुमार और राजकुमारी

जेर्डा को फिर आराम करना पड़ा। तभी उसके ठीक सामने बर्फ़ पर उछलता एक बड़ा कौआ आया। वह कौआ उसे देखने के लिए देर तक रुका। अपना सिर हिलाता रहा—फिर बोला, ''काँव ! काँव ! नमस्ते ! नमस्ते !'' वह साफ़ नहीं बोल पाता था, लेकिन उसे उस लड़की से दोस्ती करने की इच्छा थी। उसने उससे पूछा कि क्या वह इस विशाल दुनिया में अकेली ही है। ''अकेली'' शब्द जेर्डा को अच्छी तरह समझ में आ गया और वह उसका अर्थ भी अच्छी तरह समझ गयी। उसने कौए को अपने जीवन की पूरी कहानी सुनायी और उससे

पूछा कि क्या उसने केय को देखा है ?

कौए ने बड़े दुख से सिर हिलाया और बोला,

"हो सकता है ! हो सकता है !"

"क्या सचमुच तुम्हें ऐसा लगता है ?" नन्हीं जेर्डा चिल्लायी, और कौए को पकड़कर इतनी ज़ोर से चूमा कि वह मर ही जाता।

"धीरे-धीरे !" कौआ बोला, "मुझे लगता है मैं जानता हूँ। मुझे लगता है वह नन्हा केय ही था, लेकिन निश्चय ही राजकुमारी के साथ रहकर वह तुम्हें भूल गया है।"

"क्या वह एक राजकुमारी के साथ रहता है ?" जेर्डा ने पूछा।

"हाँ, सुनो।" कौआ बोला, "लेकिन मेरे लिए तुम्हारी भाषा बोलना बहुत मुश्किल है। यदि तुम कौओं की भाषा जानती हो तो मैं तुम्हें अपनी बात अच्छी तरह समझा सकता हूँ।"

"नहीं, मैंने यह भाषा कभी नहीं सीखी।" जेर्डा बोली, "लेकिन मेरी दादी यह भाषा जानती हैं और बोल भी सकती हैं। काश, मैंने भी यह भाषा सीखी होती।"

"कोई बात नहीं।" कौआ बोला, "लेकिन थोड़ी मुश्किल होगी।" और फिर कौए ने वह सब बताया जो उसे मालूम था।

"जिस देश में हम इस वक़्त हैं उसमें एक राजकुमारी रहती है जो बहुत ही चालाक है। उसने दुनिया के सारे अख़बार पढ़ रखे हैं और उन्हें भूल भी गयी है। वह बहुत ही चतुर है। बाद में वह गद्दी पर बैठी, पर वह उतना आनन्ददायक नहीं था जैसा कि आमतौर पर होता है—वह एक गाना गाने लगी जो इस तरह का था—"मैंने अब तक शादी क्यों नहीं की ? सोचो, इसमें कुछ तो बात थी।" कौआ बोला, "और वह शादी करना चाहती थी, लेकिन उसे एक ऐसा पति चाहिए था जो उसकी हर बात का जवाब दे। ये नहीं कि वह केवल सुन्दर दिखे और एक तरफ़ खड़ा रहे, क्योंकि ऐसा आदमी तो बहुत उबा देने वाला होता है। इसीलिए उसने अपनी सभी दासियों को बुलाया और जब उन्होंने उसका विचार सुना तो वे बहुत खुश हुईं, "यह तो बहुत ही अच्छी बात है।" वे बोलीं, "हमने पहले भी यह बात सोची थी।" तय मानो कि मेरी एक-एक बात सच है।" कौआ बोला, "मेरी एक प्यारी दोस्त है जो महल में आज़ादी से आती जाती है और उसी ने मुझे सब कुछ बताया है।"

निश्चय ही वह दोस्त एक कौवी ही थी। कौए को हमेशा दूसरा कौआ मिल जाता है और एक तरह के पक्षी साथ में रहते हैं।

"अख़बारों में दिलों के डिज़ाइन के किनारों और राजकुमारी के हस्ताक्षरों के साथ यह ख़बर छपी कि जो भी युवा व्यक्ति सुन्दर हो वह महल में आकर राजकुमारी से बात कर सकता है। और जो वहाँ सहजता से सबसे अच्छी तरह बात कर सकेगा, राजकुमारी उसे अपने पति के रूप में चुनेगी। हाँ, हाँ।" कौआ बोला, "मेरी बात मानो यह उतना ही सच है जितना कि तुम्हारे सामने यहाँ बैठा हुआ मैं। बहुत-से युवा व्यक्ति आये। बहुत-सी भीड़ हुई। हलचल हुई लेकिन पहले और दूसरे दिन किसी को सफलता नहीं मिली। वे सभी जब बाहर सड़कों पर होते थे तो बहुत अच्छी तरह बातें कर सकते थे। लेकिन जैसे ही वे महल के द्वार के भीतर जाते और चौकीदारों की रूपहली पोशाकें देखते, महल की सीढ़ियाँ चढ़ते, दासों की सुनहरी पोशाकें और बड़े-बड़े रोशनीदार कमरे देखते तो हड़बड़ा जाते। और जब वे सिंहासन के सामने खड़े होते जिस पर राजकुमारी बैठी होती, तो वे सिवाय राजकुमारी के कहे वाक्य के आख़िरी शब्द को दोहराने के अलावा कुछ भी न बोल पाते और राजकुमारी किसी भी हाल में अपनी ही कही बातें दोबारा नहीं सुनना चाहती थी। ऐसा लगता था जैसे कि वे सभी सड़क पर वापस जाने के पहले कोई नशीली दवा खाकर सो रहे होते थे क्योंकि उससे पहले वे कुछ कह ही नहीं पाते थे। शहर के द्वार से महल के द्वार तक युवकों की क़तार थी। मैंने खुद यह सब देखा था।" कौआ बोला, "वे भूखे-प्यासे थे लेकिन महल में उन्हें एक गिलास गर्म पानी भी न मिला। कुछ समझदार लोग अपने साथ रोटियाँ बाँधकर लाये थे लेकिन उन्होंने अपने साथियों के साथ अपना खाना नहीं बाँटा जिससे कि दूसरे व्यक्ति को भूख लगे और राजकुमारी उसे पसन्द न करे।"

"लेकिन नन्हा केय ?" जेर्डा ने पूछा, "वह कब आया ? क्या वह भी भीड़ में था ?"

"रुको, रुको ! मैं उसी के बारे में बताने जा रहा हूँ। तीसरे दिन एक छोटा लड़का बिना किसी घोड़े या बग्घी के हँसी-खुशी पैदल चलकर महल तक आया। उसकी आँखें तुम्हारी तरह चमक रही थीं। उसके बाल सुन्दर और लम्बे थे लेकिन उसके कपड़े गन्दे थे।"

"वह केय होगा !" जेर्डा खुश होकर चिल्लायी, "ओह, तब तो वह मुझे मिल गया !" उसने ताली बजायी।

"उसकी पीठ पर एक थैला था।" कौए ने बताया।

"नहीं, वह उसकी बर्फ़गाड़ी होगी।" जेर्डा बोली, "क्योंकि वह बर्फ़गाड़ी पर ही गया था।"

"हो सकता है।" कौआ बोला, "क्योंकि मैंने उसे बहुत ध्यान से नहीं देखा था। लेकिन मेरी प्यारी दोस्त ने इतना बताया कि जब वह महल के द्वार से होकर गया और उसने रूपहली पोशाक पहने चौकीदारों को देखा, फिर जब वह सीढ़ियों पर चढ़ा और उसने सुनहरी पोशाक पहने दासों को देखा, तब वह ज़रा भी घबराया हुआ नहीं था। उसने सिर हिलाकर उन लोगों से कहा, "सीढ़ियों पर खड़े रहकर मैं थक जाऊँगा, इससे बेहतर होगा कि मैं भीतर जाऊँ।" अन्दर बड़े कमरों में खूब रोशनी थी, पार्षद और सामन्त नंगे पैरों, सोने के बर्तन लेकर घूम रहे थे वहाँ कोई भी चुना जा सकता था। उसके जूते तेज़ आवाज़ कर रहे थे लेकिन इसके लिए वह ज़रा भी शर्मिन्दा नहीं था।"

"वह निश्चय ही केय था !" जेर्डा चिल्लायी, "उसके जूते नये थे और वे दादी के कमरे में भी आवाज़ करते थे।"

"हाँ, वे आवाज़ करते थे।" कौए ने बताया, "वह आत्मविश्वास के साथ सीधे राजकुमारी के पास गया जो बहुत बड़े चरखे के आकार वाले मोती के ऊपर बैठी थी। सभी दास और उनके सहायक और उनके सहायकों के सहायक, सभी सिपाही और उनके अनुचर और उनके अनुचरों के भी अनुचर, जिनमें से हरेक के पास एक-एक अनुचर था, आसपास खड़े थे। जो दरवाज़े के जितना पास खड़ा था, वह उतना ही गर्व महसूस कर रहा था। अनुचरों के अनुचर, जो कि हमेशा चप्पलें पहने रहते थे और कभी किसी के सामने नहीं आते थे, आज इतने गर्व से गलियारों में खड़े थे।"

"वह सब तो बहुत विचित्र रहा होगा !" नन्हीं जेर्डा अटकी, "लेकिन फिर भी केय ने राजकुमारी को जीत लिया ?"

"अगर मैं एक कौआ नहीं होता तो मैं ख़ुद ही उससे शादी कर लेता। यह भी नहीं सोचता कि मेरी सगाई हो चुकी है। वे बताते हैं कि वह उतनी ही अच्छी तरह वहाँ बोला जैसा कि मैं कौओं की भाषा में बोल सकता था। मुझे यह मेरी प्यारी दोस्त ने बताया था। वह खुश और अच्छा था, वह शादी करने नहीं बल्कि राजकुमारी की बुद्धिमानी की बातें सुनने वहाँ आया था और उन दोनों ने एक दूसरे को पसन्द कर लिया।"

"हाँ, निश्चय ही वह केय ही था !" जेर्डा बोली, "वह इतना चतुर है कि वह मन-ही-मन में गणित के कठिन सवाल हल कर लेता है। ओह ! क्या तुम मुझे महल तक नहीं ले जा सकते ?"

"यह कहना बहुत आसान है।" कौआ बोला, "लेकिन हम यह कर कैसे सकते हैं ? मैं इस बारे में अपनी प्यारी दोस्त से बात करूँगा, वह मुझे इस बारे

में सलाह दे सकती है। लेकिन मैं एक बात तुम्हें बता दूँ कि तुम्हारी जैसी छोटी लड़की को पूरी तरह से भीतर जाने की छूट कभी नहीं मिलेगी।''

''मुझे छूट मिलेगी।'' जेर्डा बोली, ''जब केय सुनेगा कि मैं आयी हूँ तो वह आकर मुझे सीधे भीतर ले जायेगा।''

''वहाँ जाली के पास खड़े होकर मेरी राह देखो।'' कौए ने कहा और अपना सिर हिलाकर उड़ गया।

कौआ देर शाम को वापस लौटा।

''काँव ! काँव !'' वह बोला, ''मेरी दोस्त ने तुम्हें नमस्ते कहा है और तुम्हारे लिए यह रोटी का छोटा-सा टुकड़ा भेजा है। यह उसे रसोई से मिला है। वहाँ बहुत-सी रोटियाँ हैं और तुम भूखी भी होगी। शायद तुम महल में नहीं जा सकोगी क्योंकि तुम नंगे पैर हो और रूपहले कपड़े पहने चौकीदार और सुनहरे कपड़ों वाले दास तुम्हें भीतर नहीं जाने देंगे। लेकिन, रो मत, तुम वहाँ जाओगी। मेरी दोस्त पिछवाड़े की एक छोटी सीढ़ी के बारे में जानती है जो राजकुमारी के सोने के कमरे तक जाती है और उसे उस कमरे की चाभी के बारे में भी मालूम है।''

और वे बग़ीचे में गये। वे एक बड़ी पगडण्डी से होकर आगे बढ़े जहाँ पत्तियाँ एक के बाद एक झर रही थी। जब महल में एक-एक करके सभी बत्तियाँ बुझ गयीं तब कौआ जेर्डा को पिछले दरवाज़े की तरफ़ ले गया जो खुला हुआ था।

''ओह, जेर्डा का दिल उत्सुकता और डर से किस तरह धड़क रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कि वह कोई शरारत करने जा रही हो। वह तो केवल यह जानना चाहती थी कि वहाँ नन्हा केय था या नहीं। हाँ, यह वही होगा। उसे उसकी साफ़ आँखों और लम्बे बालों का ख़याल आया और उसे लगा कि वह सामने बैठकर उसी तरह मुस्करा रहा है जैसे कि वह तब मुस्कराया करता था जब वह घर में गुलाबों के बीच बैठते थे। वह ज़रूर उसे देखकर और यह जानकर कि वह उसके लिए कितनी दूर सफ़र करके आयी है, बहुत खुश होगा। उसे यह जानकर भी अच्छा लगेगा कि घर पर सब उसके वापस न आने से कितने दुखी हैं। यह सब सोचने में कितनी खुशी थी और कितना डर भी।

अब वे सीढ़ियों पर थे। एक तरफ़ एक छोटा दीया जल रहा था और ज़मीन पर बीचोंबीच कौए की प्यारी दोस्त हर तरफ़ अपना सिर घुमाती हुई बैठ कर जेर्डा को देख रही थी। जेर्डा ने उससे नमस्ते कहा जैसा कि उसकी दादी ने उसे सिखाया था।

''मेरे साथी ने तुम्हारी बहुत तारीफ़ की है प्यारी बच्ची।'' वह बोली,

"तुम्हारी कहानी बहुत दुखभरी है। क्या तुम दीया अपने हाथ में लोगी ? मैं फिर तुम्हारे आगे चलूँगी। तुम सीधे रास्ते जाओ फिर हमें कोई भी नहीं देखेगा।"

मुझे लगता है जैसे कोई हमारे पीछे आ रहा है।" जेर्डा बोली। उसे लगा जैसे कोई चीज़ उसके पास से होकर गुज़री हो। वह दीवार पर किसी छाया की तरह थी। उसे लगा जैसे वे घोड़े हैं जिनकी अयालें और पैर हवा में तैर रहे थे। उन पर शिकारी बैठे थे घोड़ों की पीठ पर औरतें और आदमी भी थे।

"यह केवल सपना है।" दोस्त बोली, "ये सपने हमारे विचारों को ले जाने के लिए आते हैं। यह अच्छा है क्योंकि तुम सोते समय इन्हें और ध्यान से देख सकोगी।"

"यह तो होना ही चाहिए !" जंगल का कौआ बोला।

अब वे पहले कमरे में आ गये। इसमें गुलाबी साटन के पर्दे थे और दीवारों पर फूलों के चित्र बने थे। सपने उनके पास से फुदकते हुए गुज़र रहे थे लेकिन वे लोग इतनी तेज़ी से जा रहे थे कि जेर्डा सामन्तों और उनकी पत्नियों को, नहीं देख सकी। हर कमरा पिछले कमरे से सुन्दर था। कोई भी अचम्भित रह सकता था। अब वे सोने के कमरे में थे। यहाँ की छत एक बड़े ताड़ के पेड़ जैसी थी, जिसकी पत्तियाँ काँच की थीं, क़ीमती काँच की, और कमरे के बीचोंबीच दो पलँग सोने की एक मोटी छड़ से लटक रहे थे। ये पलंग कमलिनी के फूलों की तरह दिख रहे थे। उनमें से एक सफ़ेद था जिस पर राजकुमारी लेटी थी और दूसरा लाल था जिस पर जेर्डा केय को ढूँढ़ रही थी। उसने उसकी एक लाल पंखुड़ी अलग हटायी और उसे एक नन्हीं साँवली गर्दन दिखाई दी। ओह यह केय था। उसने उसका नाम ज़ोर से पुकारा और दीया उसकी तरफ़ बढ़ाया। सपने फिर घोड़े पर सवार होकर कमरे में आ गये—वह जाग गया, उसने अपना सिर घुमाया और—नहीं। यह नन्हा केय नहीं था !

केवल राजकुमार की गर्दन उसके जैसी थी। लेकिन वह जवान और सुन्दर था। राजकुमारी ने पलकें झपकाते हुए सफ़ेद कमलिनी से ऊपर देखा और पूछा कि कौन आया है। नन्हीं जेर्डा रोने लगी और उसे पूरी कहानी सुनायी और यह भी बताया कि दोनों कौओं ने उसके लिए क्या किया है।

"बेचारी बच्ची !" राजकुमार और राजकुमारी बोले।

उन्होंने कौओं की तारीफ़ की और कहा कि वे उनसे ज़रा भी नाराज़ नहीं हैं लेकिन कौओं को दोबारा ऐसा नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें इसका इनाम मिलना चाहिए।

"क्या तुम आज़ाद रहना चाहोगे ?" राजकुमारी ने कौओं से पूछा, "या

तुम हमारे दरबार में जगह पाना चाहोगे और साथ में रसोई में बची सारी चीज़ें पाना चाहोगे ?" और दोनों कौओं ने झुककर दरबार में जगह माँगी, क्योंकि उन्हें अपनी उमर का ख़याल था। वे बोले, "बुढ़ापे का इन्तज़ाम हो जाना अपने आप में बड़ी बात है।"

राजकुमार अपने बिस्तर से उठा और जेर्डा को उस पर सोने दिया क्योंकि इससे ज़्यादा वह और कुछ नहीं कर सकता था। जेर्डा ने अपने दोनों हाथ जोड़े और सोचा, "आदमी और जानवर सभी कितने अच्छे होते हैं !" और अपनी आँखें बन्द करके सो गयी। सभी सपने दोबारा उड़ते हुए भीतर आये। वे देवदूतों जैसे लग रहे थे और एक बर्फ़गाड़ी खींचते हुए आ रहे थे जिस पर केय सिर हिलाता हुआ बैठा था लेकिन यह सब एक सपना था और इसीलिए जैसे ही वह उठी सब ग़ायब हो गया।

अगले दिन उसने सिर से पाँव तक मख़मल के कपड़े पहने। उसे महल में रहने और आनन्द उठाने के लिए भी कहा गया, लेकिन उसे तो केवल एक छोटी गाड़ी, उसे खींचने के लिए एक घोड़ा, एक जोड़ी नन्हें जूते चाहिए थे जिससे वह बाहर घूमकर केय को खोज सके।

उसे जूते ही नहीं बल्कि मेल खाता गुलूबन्द भी मिला। उसने अच्छी तरह कपड़े पहने और जब वह चलने के लिए तैयार हो गयी तो एक सोने की बग्घी दरवाज़े के सामने आकर खड़ी हो गयी। उस पर राजकुमार और राजकुमारी के सेवक और कोचवान सितारों जैसे चमक रहे थे। उस पर घुड़सवार भी थे जो सोने के मुकुट पहने घोड़े की पीठ पर बैठे थे। राजकुमार और राजकुमारी ने उसे बग्घी में बैठने में मदद की और उसे शुभकामनाएँ दीं। कौआ, जिसकी अब शादी हो गयी थी, उसके साथ तीन मील तक आया। वह जेर्डा की बग़ल में बैठा क्योंकि वह घोड़े पर उलटा नहीं बैठ सकता था। उसकी पत्नी दरवाज़े पर अपने पंख फड़फड़ाकर खड़ी रही, वह उनके साथ नहीं आयी क्योंकि उसे सिरदर्द हो रहा था। उसे सिरदर्द तब से होने लगा था जब से वह राजदरबार में आयी थी और खूब खाने लगी थी। बग्घी में भीतर की तरफ मिठाइयाँ लगी थीं और सीट पर केक और मेवे थे।

"अलविदा ! अलविदा !" राजकुमार और राजकुमारी चिल्लाये और नन्हीं जेर्डा रोने लगी। कौआ भी रोया। इसी तरह वे तीन मील तक चलते गये फिर कौए ने अलविदा कहा और यह सबसे दुखभरी विदाई थी। कौआ उड़कर पेड़ पर बैठ गया और जब तक उसे बग्घी दीखती रही वह अपने पंख फड़फड़ाता रहा। बग्घी चमकीली धूप की तरह चमक रही थी।

पाँचवीं कहानी

नन्हीं दस्यु-कन्या

वे घने जंगलों से गुज़र रहे थे, लेकिन बग्घी बहुत तेज़ चमक रही थी जिससे कि लुटेरों की आँखें चकाचौंध हो गयीं और वे उसे सहन नहीं कर सके।

"यह सोना है ! यह सोना है !" वे चिल्लाये और आगे दौड़कर घोड़ों को रोक दिया और कोचवान और दूसरे सेवकों को मारकर जेर्डा को बग्घी से बाहर खींच लिया।

"यह मोटी-ताज़ी है—सुन्दर है—इसने खूब मेवा-मलाई खाया है !" लम्बी-घनी दाढ़ी और आँखों के ऊपर लटकी बिखरी भौंहों वाली लुटेरन बुढ़िया बोली, "यह एक छोटी पालतू भेड़ जैसी बढ़िया है। मैं इसको खाकर कितने मज़े लूँगी।"

और उसने अपना चमचमाता चाकू बाहर निकाला जो कि बड़ा ही भयावह



दीख रहा था।

"ओह !" बूढ़ी औरत अगले ही क्षण चीख़ी क्योंकि उसकी पीठ पर बँधी उसकी लड़की ने शरारत से उसका कान काट खाया था। "बदमाश लड़की !" बूढ़ी औरत चिल्लायी और इसलिए वह जेर्डा को उस वक़्त नहीं मार सकी।

"यह मेरे साथ खेलेगी।" नन्हीं दस्यु कन्या बोली, "यह मुझे अपना गुलूबन्द और सुन्दर कपड़े देगी और मेरे साथ सोएगी !"

फिर लड़की ने दोबारा काटा जिससे बूढ़ी औरत उछल पड़ी और चक्कर खाने लगी। सभी लुटेरे हँसे और बोले, "देखो, यह अपने मेमने के साथ किस तरह नाच रही है।"

"मुझे बग्घी में जाना है।" नन्हीं दस्यु कन्या ने ज़िद की। और उसे जाना ही था क्योंकि वह बिगड़ी हुई और ज़िद्दी क़िस्म की लड़की थी। वह और जेर्डा बग्घी में बैठ गयीं और पत्थरों और पौधों के ऊपर से होकर घने जंगल में चली गयीं। नन्हीं दस्यु कन्या जेर्डा के ही बराबर थी लेकिन वह अधिक ताक़तवर और चौड़े कन्धों वाली थी उसका रंग साँवला था। उसकी आँखें काली थीं और उनमें उदासी थी। उसने जेर्डा की क़मर में हाथ डाल दिया और बोली, "वे तुम्हें तब तक नहीं मारेंगे जब तक मैं तुमसे नाराज़ नहीं होती। मुझे लगता है तुम एक राजकुमारी हो।"

"नहीं।" जेर्डा बोली। और फिर उसने अपनी पूरी कहानी बतायी और बताया कि वह केय को कितना चाहती थी।

लुटेरी लड़की ने उसे ध्यान से देखा, सिर हिलाया और बोली, "अगर मैं तुमसे नाराज़ होऊँ तब भी वे तुम्हें नहीं मारेंगे क्योंकि तब तो मैं खुद ही तुम्हें मारूँगी।"

फिर उसने जेर्डा की आँखें पोंछीं और उसके मुलायम और गर्म गुलूबन्द को अपने हाथ में लपेट लिया।

बग्घी रुक गयी और वे अब लुटेरों के एक महल के आँगन में आ गये थे। यह ऊपर से नीचे तक खण्डहर था। बड़ी-बड़ी खोहों में से कौए और काले-चमकीले कौए निकल रहे थे। बड़े कुत्ते—जिन्हें कि देखकर ही लगता था कि वे आदमी को निगल सकते हैं ऊँचे उछले, लेकिन भौंके नहीं क्योंकि उन्हें ऐसा करना मना था।

पुराने-से, धुएँ भरे बड़े कमरे में पत्थर के फ़र्श पर तेज़ आग जल रही थी। आग छत के नीचे-नीचे फैलकर बाहर निकलने की राह ढूँढ़ने लगी। एक बड़े बर्तन में सूप उबल रहा था और ख़रगोश सलाख़ों में भूने जा रहे थे।

"तुम्हें आज मेरे और मेरे नन्हें जानवरों के साथ सोना पड़ेगा।" दस्यु कन्या बोली।

उन्होंने खाया-पिया और एक कोने में गयीं जहाँ घास और कालीन बिछे थे। इनके ऊपर फट्टों और डण्डों पर साठ से भी अधिक कबूतर बैठे थे। ऐसा लगता था कि वे सभी सो रहे हों लेकिन जब ये दोनों लड़कियाँ वहाँ पहुँची तो वे थोड़ा-सा हिले।

"ये सभी मेरे हैं।" वह लड़की बोली और जल्दी से एक कबूतर को पकड़ लिया। उसका पैर पकड़ा और उसे इस तरह हिलाने लगी कि वह अपने पंख फड़फड़ाने लगा। "इसे चूमो !" वह चिल्लायी और उसे जेर्डा के चेहरे पर लगा दिया। "वहाँ जंगली उल्लू बैठे हैं।" उसने कुछ फट्टों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, जिन्हें दीवार के एक छेद के सामने ठोंका गया था। "ये दोनों जंगली उल्लू बन्द करके न रखने पर उड़ जाते हैं। और यह मेरा पुराना दोस्त है—आओ।" और उसने एक बँधे हुए रेनडियर का सींग पकड़कर अपनी तरफ़ खींचा, जिसके गले में एक ताँबे की चमकीली कण्ठी पड़ी थी। "हमें इसे भी बाँधकर रखना पड़ता है, नहीं तो यह भी भाग जायेगा। हर सुबह मैं इसकी गर्दन पर तेज़ छुरी रगड़ती हूँ, इससे यह डरा रहता है।"

और लड़की ने दीवार की खोह से एक छुरी निकाली और उसे रेनडियर की गर्दन पर हल्के-से चलाया। बेचारे जानवर ने दुलत्ती चलायी और दस्यु कन्या हँसने लगी। इसके बाद वह जेर्डा को अपने बिस्तर पर ले गयी।

"क्या तुम सोते समय अपने पास छुरी रखती हो ?" जेर्डा ने छुरी देखकर डरते हुए पूछा।

"मैं हमेशा छुरी लेकर सोती हूँ।" दस्यु कन्या ने कहा, "कोई नहीं जानता कब क्या हो जाये। लेकिन केय के बारे में तुमने जो कहा था, वह मुझे फिर से बताओ और यह भी बताओ कि तुम इस तरह दुनिया में बाहर क्यों निकली हो ?"

जेर्डा ने फिर से पूरी बात सुनायी। जंगली कबूतर अपने पिंजरों के अन्दर से उन पर चिल्लाये और बाक़ी कबूतर सोते रहे। दस्यु कन्या ने अपनी बाँहें जेर्डा के गले में डाल दीं। एक हाथ में चाकू पकड़ा और खर्राटे भरते हुए सो गयी। लेकिन जेर्डा अपनी आँखें भी नहीं बन्द कर सकी—उसे नहीं मालूम था कि वह ज़िन्दा रहेगी या मरेगी।

लुटेरे आग के पास बैठकर गाते हुए शराब पी रहे थे। बूढ़ी औरत एक ओर लुढ़क गयी थी। एक छोटी लड़की के लिए यह देखना भयानक था।

तब जंगली कबूतर बोले, "कू ! कू ! हमने नन्हें केय को देखा है। एक सफ़ेद उल्लू उसकी बर्फ़गाड़ी ले जा रहा था। वह बर्फ़ की रानी की गाड़ी में बैठा था जो कि जंगल के पास से गुज़र रही थी। तब हम अपने घोंसलों में बैठे थे। उसने हम कबूतरों को फूँका और हम दोनों को छोड़कर बाक़ी सब मर गये। कू ! कू !"

"तुम क्या कह रहे हो ?" जेर्डा ने पूछा। बर्फ़ की रानी कहाँ जा रही थी ? क्या तुम्हें कुछ मालूम है ?"

"वह शायद लेपलैण्ड की ओर जा रही थी क्योंकि वहाँ हमेशा बर्फ़ पड़ती रहती है। इस रेनडियर से पूछो जो यहाँ बँधा है।"

"वहाँ बर्फ़ है और वह बहुत ही सुन्दर जगह है।" रेनडियर बोला।

"वहाँ कोई भी बड़े-बड़े चमकीले मैदानों में दौड़ सकता है। वहाँ बर्फ़ की रानी का गर्मियों का कैम्प है लेकिन उसका पक्का, मज़बूत महल तो यहाँ उत्तरी ध्रुव में है, उस द्वीप पर जिसका नाम है—स्पिट्ज़बर्गेन।"

"ओह, केय, नन्हें केय !" जेर्डा चिल्लायी।

तुम चुपचाप पड़ी रहती हो या मैं अपनी छुरी तुम्हारे शरीर में घुसाऊँ ? दस्यु कन्या बोली।

सुबह जेर्डा ने उसे जंगली कबूतरों की कही हुई बातें बतायीं। लड़की एकदम गम्भीर लगने लगी और अपना सिर हिलाकर बोली, "यह सब वही है, यह सब वही है !"

"क्या तुम्हें पता है लेपलैण्ड कहाँ है ?" उसने रेनडियर से पूछा।

"मुझसे बेहतर कौन जान सकता है ?" उसकी आँखें चमकीं और उसने जवाब दिया, "मैं वहीं पला-बढ़ा हूँ, मैं वहाँ बर्फ़ के मैदानों में दौड़ा करता था।"

"सुनो !" लड़की ने जेर्डा से कहा, "देखो, हमारे सब लोग बाहर गये हैं। केवल माँ हैं। लेकिन दोपहर तक वह पूरी एक बोतल शराब पीकर थोड़ा सो जाती है। तब ही मैं तुम्हारे लिए कुछ करूँगी।"

वह अचानक बिस्तर से उठी और उसने अपनी माँ को पकड़ लिया और चिल्लाते हुए उसकी नाक खींची।

"गुड-मॉर्निंग मेरी बूढ़ी बकरी।" और उसकी माँ तब तक अपनी नाक रगड़ती रही जब तक वह लाल-नीली न हो गयी। यह सब प्यार में ही हो रहा था। जब माँ ने अपनी बोतल में से शराब पी ली और सोने चली गयी तब दस्यु कन्या रेनडियर के पास गयी और बोली, "मैं तुम्हारे ऊपर और भी कई बार छुरी रगड़ना चाहती हूँ क्योंकि तब तुम बहुत मज़ेदार हरकतें करते हो। लेकिन

इसमें कोई नयी बात नहीं होती है। मैं तुम्हारी रस्सी खोलकर तुम्हें बाहर छोड़ दूँगी जिससे तुम लैपलैण्ड जा सको। लेकिन तुम्हें अच्छी तरह दौड़ना होगा और इस लड़की को बर्फ़ की रानी के महल में ले जाना होगा जहाँ इसका साथी रहता है। उसने मुझे जो कुछ बताया वह तुमने सुना होगा, क्योंकि उसने वह सब काफ़ी बुलन्द आवाज़ में कहा था।''

रेनडियर खुशी से उचका। लड़की ने जेर्डा को उसकी पीठ पर बिठा दिया और ध्यान से उसे कसकर बाँध दिया और अपना छोटा तकिया भी जीन की तरह दे दिया।

''ये तुम्हारे लिए ख़ाल के जूते हैं।'' वह बोली, ''क्योंकि ठण्ड हो रही है। लेकिन मैं गुलूबन्द रखूँगी क्योंकि यह बहुत ही सुन्दर है। फिर भी तुम्हें सर्दी नहीं लगेगी। यह मेरी माँ का बड़ा गुलूबन्द है जो तुम्हारी कुहनियों तक पहुँचेगा। अब तुम बिल्कुल मेरी बदसूरत माँ की तरह लग रही हो।''

और जेर्डा खुशी से रोने लगी।

''मैं तुम्हें रोते हुए नहीं देख सकती।'' लड़की बोली, ''तुम्हें खूब खुश दिखना चाहिए। और यह तुम्हारे लिए दो रोटियाँ हैं। अब तुम भूखी नहीं रहोगी।''

यह सब रेनडियर की पीठ पर बाँध दिया गया। लड़की ने दरवाज़ा खोला, बड़े कुत्तों को पुचकारकर भीतर किया और तब अपनी तेज़ छुरी से रस्सी काटकर रेनडियर से बोली, ''दौड़ जाओ, लेकिन इस नन्हीं बच्ची का ध्यान रखना।'' और जेर्डा ने बड़े से गुलूबन्द में लिपटे हाथ उस दस्युकन्या की तरफ़ बढ़ाये और कहा, ''अलविदा !''

और रेनडियर नदी-पहाड़ों के ऊपर से दौड़ पड़ा। बड़े जंगल के पार। दलदल से दूर जितनी तेज़ भाग सकता था भागा। भेड़िये रिरियाये और काले कौए काँव-काँव करने लगे। ''हिस्स ! हिस्स !'' वह हवा में दौड़ रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे आसमान में आग चमक रही हो।

''वे हैं मेरी पुरानी उत्तरी ध्रुव की रोशनियाँ।'' रेनडियर बोला, ''देखो, कैसे जगमगाती हैं वे !'' और वह पहले से भी तेज़ दौड़ता रहा, दिन-रात।

छठी कहानी

लेपलैण्ड की औरत और फ़िनलैण्ड की औरत

एक छोटी झोंपड़ी के पास वे रुके। वह बहुत छोटी थी। उसकी छत लगभग

ज़मीन तक झुकी थी। दरवाज़ा इतना नीचा था कि उस परिवार को भीतर या बाहर जानें के लिए अपने पेट के बल रेंगना पड़ता था। इस घर में सिवाय एक लैंपलैण्ड की औरत के और कोई नहीं था। वह लैम्प की रोशनी में मछली पका रही थी। रेनडियर ने उसे जेर्डा की पूरी कहानी सुनायी लेकिन उसने पहले अपनी कहानी सुनायी क्योंकि रेनडियर को दोनों में से वही ज़्यादा ज़रूरी लगी। जेर्डा ठण्ड से इतनी परेशान हो गयी थी कि वह कुछ बोल ही नहीं पायी।

"ओह, बेचारे लोग।" लैंपलैण्ड की औरत बोली, "तुम्हें अभी बहुत दूर दौड़कर जाना है ! तुम्हें सौ मील से भी अधिक दूर फ़िनमार्क जाना होगा, क्योंकि वहीं बर्फ़ की रानी है। वह उसी देश में रहती है और हर शाम 'बेंगाल-लैम्प' की रोशनी करती है। मैं एक सूखी मछली पर कुछ लाइनें लिख देती हूँ क्योंकि मेरे पास कागज़ तो है नहीं। मैं तुम्हें वह चिट्ठी फ़िनलैण्ड की औरत के नाम लिखकर देती हूँ क्योंकि इस बारे में वह तुम्हें मुझसे बेहतर जानकारी दे सकती है।"

और जब जेर्डा खा-पीकर तरोताज़ा हुई तो लैंपलैण्ड की औरत ने सूखी मछली पर कुछ लाइनें लिखकर उसे दीं और उसे सम्हालकर रखने को कहा। उसने उसे फिर से रेनडियर की पीठ पर बाँधा और रेनडियर दौड़ पड़ा। साँय....साँय ! वह हवा में उछलता चला गया और पूरी रात दौड़ने के बाद सुन्दर नीली उत्तर की रोशनियाँ जलती दिखायी दीं।

अब वे फ़िनमार्क आ गये और फ़िनलैण्ड की औरत की चिमनी खटखटायी क्योंकि उसकी तो झोंपड़ी भी नहीं थी।

चिमनी में इतनी गर्मी थी कि वह औरत लगभग बिना कपड़े पहने ही रहती थी। उसने तुरन्त नन्हीं जेर्डा के कपड़े ढीले किए और उसका गुलूबन्द और जूते उतारे। नहीं तो इतनी गर्मी सह पाना उसके लिए मुश्किल हो जाता। फिर उसने रेनडियर के सिर पर एक बर्फ़ का टुकड़ा रखा और मछली पर लिखी हुई चिट्ठी पढ़ी। उसने वह चिट्ठी तीन बार पढ़ी और जब वह उसे अच्छी तरह याद हो गयी तो वह मछली उसने सूप के बर्तन में डाल दी क्योंकि वह मछली खाने लायक़ थी और वह कभी भी कोई चीज़ बेकार नहीं फेंकती थी।

अब रेनडियर ने पहले अपनी कहानी सुनायी फिर नन्हीं जेर्डा की। फ़िनलैण्ड की औरत ने चालाकी से अपनी आँखें झपकायीं लेकिन कहा कुछ भी नहीं।

"तुम बहुत चालाक हो।" रेनडियर बोला, "मुझे मालूम है कि तुम एक रस्सी के टुकड़े से दुनिया की सारी हवाएँ बाँध सकती हो। यदि मल्लाह एक गाँठ खोलता है तो अच्छी हवा चलती है, यदि वह दूसरी गाँठ ढीली करता है

तो तेज़ हवा बहती है। लेकिन यदि वह तीसरी और चौथी गाँठ भी खोल दे तो इतना तेज़ तूफ़ान आता है कि जंगल तक उड़ जाते हैं। क्या तुम इस नन्हीं लड़की को एक तूफ़ान नहीं दोगी जिससे कि इसमें बारह आदमियों की ताक़त आ जाये और यह बर्फ़ की रानी के पास पहुँच सके ?''

''बारह आदमियों की ताक़त !'' फ़िनलैण्ड की औरत ने दोहराया, ''यह तो मेरी शक्ति का बढ़िया इस्तेमाल होगा !''

और वह बिस्तर पर गयी और एक लिपटी हुई ख़ाल लेकर आयी और उसे खोला। इस पर आश्चर्यजनक लिपि लिखी हुई थी। फ़िनलैण्ड की औरत इस लिपि को तब तक पढ़ती रही जब तक उसके माथे पर पसीना नहीं आ गया।

लेकिन रेनडियर ने फिर से नन्हीं जेर्डा के लिए प्रार्थना की और जेर्डा ने फ़िनलैण्ड की औरत की ओर आँखों आँखों में आँसू लिए बड़ी करुणा से देखा। वह औरत फिर से आँखें झपकाने लगी और रेनडियर को एक कोने में ले जाकर उससे फुसफसाकर कुछ कहते हुए उसके सिर पर बर्फ़ रखने लगी।



"नन्हा केय निश्चय ही बर्फ़ की रानी के पास है और उसे वहाँ अपनी पसन्द की इतनी चीज़ें मिल रही हैं कि उसे लगता है कि यही दुनिया की सबसे अच्छी जगह है। लेकिन ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि उसकी आँख और दिल में काँच के टुकड़े रह गये हैं और इन टुकड़ों को बाहर निकालना ही पड़ेगा नहीं तो वह कभी भी सही इन्सान नहीं बन पायेगा और उसे बर्फ की रानी हमेशा अपने नियंत्रण में रखेगी।"

"लेकिन क्या तुम जेर्डा को ऐसा कुछ नहीं दे सकतीं जिससे उसमें इन सब चीज़ों को ठीक करने की शक्ति आ जाये ?"

मैंने उसे जो दिया है उससे ज़्यादा कोई शक्ति नहीं दे सकती। तुम्हें लगता नहीं कि उसकी शक्ति कितनी महान है ? देखो कि किस तरह आदमी और जानवर उसकी सेवा के लिए तत्पर रहते हैं और वह दुनिया में नंगे पैरों भी कितने आराम से रहती है ? वह हमसे शक्ति नहीं ले सकती। उसकी शक्ति इसी में है कि वह एक प्यारी और भोली-भाली बच्ची है। यदि वह खुद ही बर्फ़ की रानी के पास जाकर केय के शरीर में लगे काँच नहीं निकाल सकती तो हम भी किसी काम के नहीं हैं। यहाँ से दो मील दूर से बर्फ़ की रानी का बग़ीचा शुरू होता है। तुम इस बच्ची को वहाँ ले जा सकते हो। बर्फ़ में लगी लाल फलों वाली बड़ी झाड़ी के पास उसे बिठा दो। बातें करते हुए मत खड़े रहो, जल्दी जाओ और लौटकर आओ !"

और फ़िनलैण्ड की औरत ने जेर्डा को रेनडियर पर बिठा दिया और वह जितनी तेज़ भाग सकता था, भाग निकला।

"ओह मेरे पास मेरे जूते नहीं हैं ! मेरे पास मेरा गुलूबन्द नहीं है !" जेर्डा चिल्लायी।

उस काटती हुई सर्दी में उसे जल्दी ही इस बात का ध्यान आया, लेकिन रेनडियर रुका नहीं। जब तक वह लाल फलों वाली झाड़ी के पास नहीं आ गया, वह दौड़ता ही रहा। वहाँ उसने जेर्डा को बिठा दिया। उसे चूमा और उसकी आँखों से बड़े-बड़े आँसू बह निकले। वह वापस इतनी ही तेज़ी से दौड़ गया। बेचारी जेर्डा वहाँ बिना जूते और दस्ताने पहने फ़िनमार्क में भयानक सर्दी में खड़ी रही।

वह जितना तेज़ दौड़ सकती थी, दौड़ने लगी। आगे चलकर बहुत-सी बर्फ़ गिरने लगी, लेकिन वह आसमान से नहीं गिर रही थी, क्योंकि वह बहुत चमकीली थी और उत्तर की रोशनी के साथ चमक रही थी। बर्फ़ के क़तरे ज़मीन पर दौड़ने लगे। वे जितना पास आते जाते, उतना ही बड़े होते जाते। जेर्डा को अभी भी

याद था कि जब वह आतिशी शीशे से बर्फ़ के क़तरों को देखती थी तो वे कितने बड़े और सुन्दर दिखायी देते थे। लेकिन यहाँ वे बहुत ही बड़े और भयानक थे—वे एकदम जीते-जागते थे। वे बर्फ़ की रानी के सीमा-रक्षक थे और उनके आकार बहुत ही अजीब थे। उनमें से कुछ तो बहुत बड़े, बदसूरत बिच्छुओं जैसे थे, तो कुछ साँपों जैसे अपने फन उठाये थे। कुछ मोटे भालुओं जैसे थे जिनके बाल खड़े थे। सभी एकदम सफ़ेद थे, एकदम जीते-जागते।

जेर्डा ने प्रार्थना शुरू कर दी। सर्दी इतनी तेज़ थी कि उसे अपने मुँह से भाप जैसी निकलती साँस खुद ही दिखायी दे रही थी। साँस और घनी होती गयी और उससे छोटे-छोटे देवदूत बन गये। वे देवदूत जैसे ही धरती को छूते, बड़े होते जाते। उन सब ने सिर पर हैलमेट, शरीर पर कवच पहना था और वे हाथ में भाले और ढाल लिए हुए थे। उनकी संख्या बढ़ती गयी और जब जेर्डा ने अपनी प्रार्थना ख़त्म की तो उसके आसपास उनकी एक पूरी सेना खड़ी थी और वे अपने भालों से भयानाक बर्फ़ के आकारों को मार रहे थे जिससे वे आकार टूटकर हज़ारों टुकड़ों में बिखरते जा रहे थे। जेर्डा फिर हिम्मत से आगे बढ़ती जाती। देवदूतों ने उसके हाथ-पैरों को रगड़ा जिससे उसे कम सर्दी लगने लगी और वह बर्फ़ की रानी के महल की तरफ़ जल्दी-जल्दी जाने लगी।

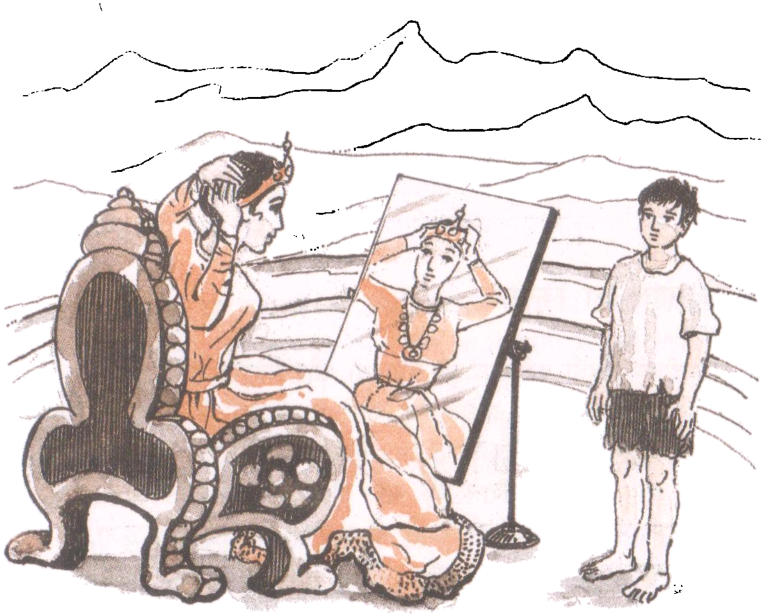
लेकिन अब हमें देखना चाहिए कि केय क्या कर रहा है। निश्चय ही वह जेर्डा के बारे में नहीं सोच रहा था। कम से कम वह इतना तो नहीं ही सोच सकता था कि वह महल के सामने खड़ी हुई है।

सातवीं कहानी

बर्फ़ के महल का क़िस्सा

महल की दीवारें बहती हुई बर्फ़ की बनी थीं और खिड़कियाँ-दरवाज़े तेज़ हवा के बने थे। उसमें सौ से भी अधिक बड़े कमरे थे जो बर्फ़ के ही बने थे। इसमें से सबसे बड़ा कमरा कई मील लम्बा था। तेज़ उत्तर की रोशनी इन सब कमरों में चमकती थी। वे सभी कितने बड़े और ख़ाली, कितने ठण्डे और चमकीले थे ! यहाँ कभी भी खुशी नहीं थी, कभी भी भालुओं का नाच नहीं हुआ, जिसमें तूफ़ान ने संगीत बजाया हो। हाँ, भालू वहाँ अपने पिछले पैरों पर खड़े होकर अपना सभ्य व्यवहार ज़रूर दिखाया करते थे। वहाँ लुकाछिपी या छुआछाई का कभी कोई खेल नहीं होता था। सफ़ेद लोमड़ियाँ कभी भी कॉफ़ी पीते हुए गपशप

नहीं करती थीं। बर्फ़ की रानी के महल के कमरे ख़ाली, बड़े और ठण्डे थे। उत्तर की रोशनियाँ इतनी तेज़ चमक रही थीं कि कोई भी उन्हें आसानी से गिन सकता था। इस विशाल बर्फ़ के कमरे के बीचोंबीच एक जमी हुई झील थी जो हज़ारों टुकड़ों में टूट गयी थी लेकिन उसका हर टुकड़ा एक-सा था जिसके कारण वह एक अद्भुत कलाकृति जैसी लग रही थी। इस झील के बीच में बर्फ़ की रानी बैठती थी, जब वह घर पर होती थी। वह कहती थी कि वह बुद्धि के आईने पर बैठी है और यही दुनिया का अकेला और सबसे बड़ा आईना है। नन्हा केय सर्दी से बहुत नीला पड़ गया था—सचमुच एकदम काला-सा। लेकिन उसने इस पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि बर्फ़ की रानी ने उसे चूमकर उसकी ठिठुरन दूर कर दी थी और उसका दिल खुद ही एक बर्फ़ का टुकड़ा था। उसने बर्फ़ के कुछ चपटे टुकड़े आगे-पीछे खींचे और उन्हें तरह-तरह से जोड़कर देखा क्योंकि वह उनमें कुछ ढूँढ़ना चाहता था। यह उसी तरह था जैसे हम लकड़ी के छोटे-छोटे ब्लॉक जोड़कर तरह-तरह की चीज़ें बनाते हैं। केय ने भी तरह-तरह के आकार बनाये जो वास्तव में बहुत कलात्मक थे। यह बुद्धि का बर्फ़ीला खेल था। उसकी नज़र में ये आकार बहुत ख़ास और बहुत ही महत्त्वपूर्ण थे। यह



उसकी आँखें में घुसे काँच के टुकड़े के कारण था। उसने आकार बनाये जिन्हें जोड़कर एक शब्द बनता था—लेकिन वह अपनी पसन्द का शब्द नहीं बनाना पाया। वह शब्द था—'अनन्तता' (इटर्निटी)। तब बर्फ़ की रानी ने कहा था,

"यदि तुम यह आकार बना लोगे तो तुम अपने मालिक हो जाओगे और मैं तुम्हें एक जोड़ी स्केट्स के साथ पूरी दुनिया दे दूँगी।"

लेकिन वह नहीं बना पाया।

"अब मैं जल्दी से गर्म प्रदेश में जाऊँगी।" बर्फ़ की रानी बोली, "मैं जाकर अपने काले बर्तनों को देखूँगी। ये 'एटना' और 'वेसूवियस' ज्वालामुखी के नाम से जाने जाते हैं। मैं उन्हें थोड़ा सफ़ेद कर दूँगी। यह ज़रूरी है, इससे नींबू और अंगूर के गुच्छे होंगे।"

और बर्फ़ की रानी उड़ गयी और केय बड़े और मीलों लम्बे बर्फ़ के कमरे में अकेला चुपचाप बैठा रहा और अपने बर्फ़ के टुकड़े को देखता रहा। उसने सोचा कि चटखने की आवाज़ उसके भीतर से आ रही है। कोई भी सोच सकता था कि वह जम गया है।

तभी जेर्डा ने दरवाज़े से उस सफ़ेद कमरे में प्रवेश किया। यहाँ बहुत तेज़ हवाएं चल रही थीं। लेकिन उसने प्रार्थना की और हवाएँ इस तरह शान्त हो गयीं जैसे वे सोने चली गयी हों। और वह बड़े ख़ाली ठण्डे कमरे में आयी और केय को पकड़ लिया। वह उसे पहचान गयी थी। उड़कर उसके पास गयी और उसे ज़ोर-से गले लगाकर बोली, "केय, प्यारे केय ! आख़िरकार तुम मुझे मिल ही गये।"

लेकिन वह चुपचाप, बिना हिले, सर्द बैठा रहा। इस पर जेर्डा रोने लगी और उसके गर्म आँसू केय की छाती पर गिरे। वे उसके दिल तक पहुँचे, और उन आँसुओं ने उसकी आँखों के काँच को भी पिघलाकर ख़त्म कर दिया। उसने उसे देखा और वह गाने लगी—

"गुलाब खिलेंगे और फिर मुरझा जायेंगे,
लेकिन हम ईश्वर के शिशु एक दिन आयेंगे।"

तब केय भी रोने लगा और वह ऐसे रोया कि काँच का टुकड़ा उसकी आँखों से बाहर आ गया। अब उसने जेर्डा को पहचान लिया और खुशी से रोने लगा, "जेर्डा, प्रिय जेर्डा ! तुम इतने दिन कहाँ थीं ? और मैं कहाँ था ?" और उसने अपने चारों ओर देखा, "यहाँ कितनी ठण्ड है ! कितना विशाल और सूना-सूना !"

और वह जेर्डा के गले लग गया और वह खुशी से रोने और हँसने लगी।

यह दृश्य इतना सुन्दर था कि पास के बर्फ़ के टुकड़े भी खुशी से नाचने लगे, और जब वे थककर बैठ गये तो उन्होंने जोड़कर वह शब्द बना लिया जिसके बनाने पर बर्फ़ की रानी उसे अपना मालिक खुद बनाकर पूरी दुनिया और स्केट्स की एक नयी जोड़ी देने वाली थी।

जेर्डा ने उसके गालों को चूमा और वे खिल उठे। उसने उसकी आँखों को चूमा और उसकी आँखें जैसे चमक उठीं, उसने उसके हाथ-पैरों को चूमा और वह अच्छा और खुश हो गया। बर्फ़ की रानी अब घर वापस आने वाली थी। उसकी आज़ादी का सन्देश बर्फ़ के चमकीले अक्षरों में लिखा था।

और उन्होंने एक दूसरे का हाथ पकड़ा और बर्फ़ के विशाल महल में भटकने लगे। उन्होंने दादी माँ और छत पर लगे गुलाबों के बारे में बात की। जहाँ-जहाँ वे गये हवा रुक गयी और सूरज की रोशनी भीतर आ गयी, और जब वे लाल फलों की झाड़ी के पास गाये तो रेनडियर वहाँ खड़ा उनकी राह देख रहा था। वह अपने साथ एक और रेनडियर को लेकर आया था जिसने उन्हें गर्म दूध दिया और उन्हें चूमा। उसके बाद वे केय और जेर्डा को पहले फ़िनलैण्ड की औरत की पास ले गये जहाँ उन्होंने गर्म कमरे में आराम किया और घर वापसी की यात्रा के बारे में जानकारी ली। इसके बाद वे लेपलैण्ड की औरत के पास गये जिसने उनके लिए नये कपड़े बनवाये थे और उनकी बर्फ़ गाड़ियाँ ठीक कर रखी थीं।

रेनडियर और उसका साथी उनके साथ-साथ चलते रहे और देश की सीमा तक उन्हें छोड़ने आये। वहाँ उन्हें पहले हरियाली दिखाई दी और उन्होंने रेनडियर और लेपलैण्ड की औरत से विदा ली। "अलविदा !" सभी ने कहा। चिड़ियाँ चहकती दिखायी देने लगीं, ताज़ी कलियाँ दिखने लगीं और हरियाली के बीच में से एक सुन्दर घोड़े पर (जिसे जेर्डा जानती थी क्योंकि यह वही घोड़ा था जिसने उसकी सोने की बग्घी खींची थी) एक सुन्दर लड़की चमकीली लाल टोपी पहने दो पिस्तौलें लगाकर आयी। यह नन्हीं दस्युकन्या थी जो घर पर रहते-रहते थक गयी थी और जल्दी से उत्तर की ओर या वहाँ भी ठीक न लगने पर किसी और जगह जाना चाहती थी। उसने जेर्डा को एकदम पहचान लिया और जेर्डा ने भी। दोनों इस मुलाक़ात पर बहुत खुश हुईं।

"तुम यात्रा करने के लिए अच्छे साथी हो !" उसने नन्हें केय से कहा, "लेकिन मैं जानना चाहूँगी कि क्या तुम इस लायक़ हो कि तुम्हारे पीछे-पीछे पूरी दुनिया में भागा जाये ?"

जेर्डा ने उसके गाल थपथपाकर राजकुमार और राजकुमारी के बारे में पूछा।

"वे विदेश गये हैं।" लड़की ने कहा।

"लेकिन कौआ ?" जेर्डा बोली।

"कौवा नहीं रहा।" लड़की बोली, "उसकी प्यारी दोस्त विधवा हो गयी और वह अपने पैर में काला धागा बाँधे रहती है। वह बहुत उदासी से शिकायत करती है, लेकिन ये सब केवल बातें हैं। अब मुझे बताओ कि तुम किस तरह वहाँ पहुँचीं और कैसे इसे पकड़ा।"

जेर्डा और केय ने अपनी कहानी सुनायी।

"आल-तू, जलाल-तू, आयी बला को टाल-तू !" लुटेरन लड़की बोली उसने दोनों का हाथ पकड़ा और उनसे वादा किया कि वह जब कभी उनके शहर आयेगी, उनसे आकर ज़रूर मिलेगी। और फिर वह घोड़े पर सवार होकर चली गयी। लेकिन जेर्डा और केय हाथ में हाथ डाले चलते रहे। जैसे ही वे आगे चले, फूलों वाला हरा-भरा बसन्त आ गया। चर्च की घण्टियाँ बजने लगीं और उन्होंने बड़े शहर और उसकी मीनारों को पहचान लिया। यह वही शहर था जहाँ वे रहते थे। वे दादी माँ के दरवाज़े तक गये, सीढ़ियाँ चढ़ीं और कमरे में गये। सारी चीज़ें अपनी जगह पर थीं। घड़ी घड़ी "टिक-टिक !" कर रही थी और उसके काँटे घूम रहे थे। लेकिन जैसे-जैसे वे कमरों से होकर गुज़रे, उन्हें लगा कि वे बड़े हो गये हैं। छत के गुलाब खिड़की पर खिल रहे थे और वहाँ छोटे बच्चों की कुर्सियाँ रखी थीं। केय और जेर्डा अपनी-अपनी कुर्सी पर बैठ गये और एक-दूसरे का हाथ पकड़ लिया। वे बर्फ़ की रानी के ठण्डे, ख़ाली और भव्य महल को बुरे सपने की तरह भूल गये थे। दादी माँ बाहर धूप में बैठकर ज़ोर से बाइबल पढ़ रही थीं, "स्वीकार करो कि तुम छोटे बच्चे हो गये हो, नहीं तो तुम ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकोगे।"

केय और जेर्डा ने एक-दूसरे की आँखों में देखा और उन्हें पुराना गीत याद आ गया—

"गुलाब खिलेंगे और मुरझायेंगे,
लेकिन हम ईश्वर के शिशु एक दिन आयेंगे।"

वे वहीं बैठे रहे। वे—बड़े थे लेकिन फिर भी बच्चे—दिल से बच्चों की तरह—और वे गर्मियों के दिन थे, गुनगुने अच्छे गर्मियों के दिन।

22

सोने का ख़ज़ाना

नगाड़ा बजाने वाले की पत्नी चर्च गयी। उसने नयी वेदी देखी जिस पर चित्रकारी की गयी थी और देवदूतों की मूर्तियाँ खुदी हुई थीं। वे कैनवस पर बने चित्रों की तरह ही सुन्दर थे और साथ ही साथ उन पर सुन्दर रंग और सोने की परतें चढ़ी थीं। उनके बाल धूप में सुनहरे चमक रहे थे। वे बहुत सुन्दर लग रहे थे लेकिन असली धूप अधिक सुन्दर थी। जब सूरज डूबने लगा तो सूरज अँधेरे पेड़ों के बीच से ज़्यादा लाल और साफ़ दिखायी देने लगा। इस तरह स्वर्ग की रोशनी को देखना बहुत सुन्दर था। उसने सूरज को देखा और उसके बारे में गहराई से सोचने लगी। उसने उस छोटे बच्चे के बारे में भी सोचा जिसे बगुला लाने वाला था। नगाड़ा बजाने वाले की पत्नी बहुत ख़ुश थी और उसकी प्रतीक्षा से भरी आँखें यह सोच रही थीं कि बच्चे पर सूरज की रोशनी की चमक होनी चाहिए जिससे कि वह वेदी पर बने चमकीले देवदूतों जैसा लग सके।

और जब नन्हा बच्चा उसकी बाँहों में आया और उसने उसे उसके पिता को दिया तब वह चर्च के देवदूतों के जैसा सुन्दर ही लग रहा था। उसके बाल सोने जैसे चमक रहे थे। डूबते सूरज की रोशनी उस पर पड़ रही थी।

"मेरे सुनहरे ख़ज़ाने, मेरे लाल, मेरी रोशनी।" माँ बोली और उसने उसके चमकते घुँघराले बालों को चूमा और यह आवाज़ नगाड़ा बजाने वाले के कमरे में संगीत की तरह सुनायी दी। वहाँ प्रसन्नता, जीवन और आनन्द था। नगाड़े वाले ने खुशी की धुन बजायी। फिर नगाड़ा बोला—हाँ वही नगाड़ा जो शहर में आग लगने पर बजाया जाता था—

"लाल केश ! इस नन्हें बच्चे के लाल केश हैं। इस नगाड़े की बात सुनो, वह मत सुनो जो तुम्हारी माँ कहती है ! रब्बा-डब, रब्बा-डब !" और पूरे शहर ने नगाड़े की बात दोहरायी।

लड़के को चर्च ले जाकर ईसाई बनाया गया। उसके नाम के बारे में ज़्यादा कुछ कहने लायक़ नहीं था सिवाय इसके कि उसका नाम पीटर था। पूरे शहर ने और नगाड़े ने भी उसे नगाड़े वाले का लाल बालों वाला बच्चा पीटर कहना शुरू कर दिया। लेकिन उसकी माँ उसके लाल बालों को चूमती और उसे अपना "सोने का ख़ज़ाना" कहती।

घाटी के रास्ते पर दोनों ओर की कच्ची मिट्टी की दीवार पर बहुत-से लोगों ने, स्मृति के लिए अपने नाम खोद दिये थे।

"प्रसिद्धि हमेशा महत्त्वपूर्ण होती है !" नगाड़े वाला बोला और उसने अपना नाम भी वहाँ खोद दिया और अपने छोटे बेटे का भी।

यहाँ अबाबील आये। उन्होंने अपनी लम्बी यात्राओं में पत्थरों पर खुदे हुए बहुत से नाम देखे थे। जैसे हिन्दुस्तान के मन्दिरों क़ी दीवारों पर—महान राजाओं के नाम काम, अमर नाम खुदे रहते हैं—इतने पुराने कि अब उन्हें न कोई पढ़ सकता है, न उनके बारे में बात करता है। कितने प्रसिद्ध लोग थे वे ?

मुँडेरों पर मार्टेन चिड़ियों ने अपने घोंसले बनाये। उन्होंने ढलान में गहरे छेद बनाये और तेज़ बरसात और कोहरे ने नामों को धो दिया—नगाड़े वाले का नाम भी और उसके बेटे का नाम भी।

"पीटर का नाम डेढ़ साल तक चलेगा !" पिता ने कहा था।

"बेवकूफ़ !" आग के नगाड़े ने सोचा लेकिन उसने केवल इतना कहा, "डब-डब-डब, रब्बा-डब !"

यह नगाड़े वाले का लाल बालों वाला बच्चा एक जीवन्त और प्रसन्न बच्चा था। उसकी आवाज़ बहुत सुन्दर थी। वह गा सकता था और जंगल में गाने वाली चिड़ियों की तरह गाता था। उसमें लय थी और नहीं भी थी।

"इसे एक गायन मण्डली का सदस्य होना चाहिए।" माँ बोली, "इसे चर्च में गाना चाहिए और उन सुनहरे देवदूतों के साथ खड़े होना चाहिए जिनसें यह मिलता-जुलता है।"

"खूँखार बिल्ली !" शहर के किसी मसख़रे व्यक्ति ने पीटर को कहा।

नगाड़े ने यह बात पड़ोसी की पत्नी से सुनी।

"पीटर, घर मत जाओ।" गली के लड़के चिल्लाए। यदि तुम दुछत्ती पर सोये तो घर में आग लग जायेगी और आग का नगाड़ा बजाना पड़ेगा।" "ठहरो, तुम्हें नगाड़े बजाने का मुगदर दिखाता हूँ।" पीटर ने जवाब दिया। वह छोटा बच्चा तो था ही। दौड़कर आगे बढ़ा और सबसे आगे के लड़के को उसने ज़ोर से ऐसा घूँसा मारा कि वह लड़का ज़मीन पर लुढ़क गया। ये देखकर बाक़ी सब

नौ-दो ग्यारह हो गये।

शहर का संगीतकार बहुत भद्र और अच्छा व्यक्ति था। वह राजा के बर्तन धोने वाले का लड़का था। उसे पीटर से बहुत प्यार था। वह कभी-कभी पीटर को अपने घर ले जाता और उसे वॉयलिन देकर बजाना सिखाता। ऐसा लगता जैसे समूची कला लड़के की उँगलियों में छिपी हो। वह एक नगाड़ा बजाने से कहीं ज़्यादा कुछ बनना चाहता था--वह शहर का संगीतकार बनना चाहता था।

"मैं एक सिपाही बनूँगा।" पीटर बोला क्योंकि वह अभी भी एक छोटा बच्चा ही था और उसे बन्दूक़ लेकर "एक-दो, एक-दो" करते हुए मार्च करना, सिपाही की वर्दी पहनना और तलवार हाथ में लेना सबसे अच्छी चीज़ लगती थी।

"आह, तुम्हें नगाड़े की खाल की तलाश करना सीखना होगा। डम-डम-डम।" नगाड़ा बोला।

"काश कि ये इतनी तरक्की करे कि एक दिन जनरल बन जाये।" पिता ने कहा, "लेकिन ये इससे पहले भी हो सकता है, अगर युद्ध हो गया तो।"

"हे ईश्वर !" माँ बोली।

"हमारे पास खोने के लिए कुछ नहीं है।" पिता बोले।

"क्यों ? हमारा बेटा जो है।" माँ ने व्यंग्य से कहा।

"लेकिन सोचो, जब वह जनरल बनकर लौटेगा !" पिता बोले।

"बिना हाथ पैरों के !" माँ चिल्लायी, "नहीं, इसके बजाये तो मैं सोने का ख़ज़ाना अपने पास ही रखूँगी।"

"डम-डम-डम !" आग का नगाड़ा और दूसरे नगाड़े बजने लगे, क्योंकि युद्ध शुरू हो गया था। सिपाही तैयार होकर निकल पड़े और नगाड़ा बजाने वाले का लड़का भी उनके पीछे चल पड़ा। "लाल बालों वाला। सोने का ख़ज़ाना।"

माँ रोयी, पिता ने कल्पना में उसे, 'यशस्वी' रूप में देखा और शहर के संगीतकार की राय थी कि उसे युद्ध में नहीं जाना चाहिए था बल्कि घर पर ही रहकर संगीत सीखना चाहिए था।

"लाल बालों वाला।" सिपाहियों ने कहा और नन्हा पीटर हँसा लेकिन जब कभी कोई कहता, "लोमड़ी जैसा चालाक" तो वह अपने दाँत भींचकर चुप रह जाता और दूसरी तरफ़ देखने लगता—बाहर की विशाल दुनिया में, जैसे वह ऐसे नामों की परवाह नहीं करता हो।

लड़का बहुत चुस्त था, अच्छी तरह से बात करता था और हँसमुख था। उसके पुराने साथियों के अनुसार यही उसके स्वभाव की खूबी थी। कई रातों

उसे खुले आसमान के नीचे सोना पड़ा जहाँ वह कई बार बरसात या ओस से भीग जाता लेकिन उसके हँसमुख स्वभाव ने उसे कभी उदास नहीं रहने दिया। नगाड़े की लकड़ियाँ बोलीं, "रब्बा-डब, सब उठो, सब उठो।" तो क्या वह एक नगाड़ा बजाने वाला बनने के लिए ही पैदा हुआ था ?



युद्ध का दिन आ गया। सूरज अभी उगा नहीं था लेकिन सुबह हो चुकी थी। हवा ठण्डी थी लेकिन युद्ध में गर्मी थी। हवा में ओस थी, लेकिन बारूद का धुआँ उससे ज़्यादा छाया था। गोलियाँ सिपाहियों के सिरों के ऊपर से गुज़र रही थीं और उनके सिरों, हाथ-पैरों और शरीर के भीतर जा रही थीं। लेकिन फिर भी वे आगे बढ़ते जा रहे थे। कोई न कोई सिपाही यहाँ-वहाँ गिरता रहा, कोई घुटनों के बल, तो कोई सिर के घावों से रिसते खून से लथपथ होकर। उनके चेहरे इतने सफ़ेद थे जैसे उन पर चूना पुता हुआ हो। नन्हें नगाड़ा वादक का रंग वैसा ही बना रहा, उसे कोई नुक़सान नहीं हुआ। उसने खुशी से रेज़िमेंट के कुत्ते को देखा जो कि इतना खुश होकर उछल रहा था जैसे सारा कुछ उसके मनोरंजन के लिए ही हो रहा हो और जैसे कि गोलियाँ केवल खेल-खेल में ही उड़ रहीं हों।

"मार्च। आगे बढ़ो, मार्च !" नगाड़े के लिए यह निर्देशक शब्द थे। यह

निर्देश पीछे रह जाने के लिए नहीं था, हालाँकि वे ऐसा कर सकते थे और शायद यह ठीक भी था। आख़िरकार "आराम" शब्द कहाँ गया। लेकिन हमारा नन्हा नगाड़ा बजाने वाला "आगे बढ़। मार्च !" का आदेश पाकर बढ़ता ही रहा क्योंकि उसे निर्देश इसी तरह समझ में आया था। सिपाहियों ने नगाड़े के शब्दों का पालन किया। यह एक अच्छा संगीत था और इसने उन सैनिकों के लिए विजय की प्रेरणा का काम किया जो मैदान छोड़कर जा रहे थे।

युद्ध में लोगों के हाथ-पैर कटे और जानें गयीं। बमों से लाल-लाल माँस के लोथड़े उड़े, घास के उन ढेरों में आग लग गयी, जिन्हें घायल अपने लेटने के लिए खुद ही खींच लाये थे—शायद उतने समय तक लेटने के लिए जितने समय उन्हें ज़िन्दा रहना था।

यह सब सोचने से कोई लाभ नहीं लेकिन फिर भी कोई यह सब सोचे बिना नहीं रह सकता—दूर किसी शान्त शहर में भी नहीं। नगाड़े बजाने वाला और उसकी पत्नी भी सोच रहे थे क्योंकि पीटर युद्ध में गया था।

"अब मैं इन शिकायतों से थक गया हूँ।" आग के नगाड़े ने कहा।

फिर से युद्ध का दिन शुरू हुआ। सूरज अभी उगा नहीं था लेकिन सुबह हो गयी थी। नगाड़ा बजाने वाला और उसकी पत्नी सोये हुए थे। वे अपने बेटे के बारे में सारी रात बात करते रहे थे और वास्तव में वे हर रात उसकी ही बातें करते थे, क्योंकि वह वहाँ ईश्वर के हाथों में था। पिता ने सपना देखा कि युद्ध समाप्त हो गया है और सिपाही घर लौट आये हैं और पीटर ने सीने पर एक चाँदी का क्रॉस पहना हुआ है। लेकिन माँ ने सपना देखा कि वह चर्च गयी है और वहाँ उसने चित्रों को देखा, सुनहरे बालों वाले खुदे हुए देवदूत और अपने प्यारे बेटे—अपने दिल के सोने के ख़ज़ाने को देखा, जो सफ़ेद कपड़े पहने देवदूतों के साथ खड़ा हुआ बिल्कुल देवदूतों जैसी मधुरता से गीत गा रहा है। वह उनके साथ सूरज की रोशनी में चमक रहा है और अपनी माँ को देखकर सिर हिला रहा है।

"मेरे सोने के ख़ज़ाने !" वह चिल्लायी और जाग गयी। "अब ईश्वर ने उसे अपने पास बुला लिया है !" उसने अपने हाथ जोड़े और चादर में मुँह छिपाकर रोने लगी। "वह अब कहाँ है ? क्या बहुत सारे लोगों के लिए खोदी गयी बड़ी कब्र में ? शायद वह दलदल में है ? कोई भी उसकी कब्र नहीं जानता, उस पर जाकर किसी ने भी पवित्र शब्द नहीं पढ़े !" और ईश्वर की प्रार्थना में उसके होंठ हिलने लगे, उसने अपना सिर झुकाया और इतनी थक गयी कि सो गयी।

और ज़िन्दगी में सपनों जैसे दिन बीतते गये।

एक शाम युद्ध के मैदान पर एक इन्द्रधनुष निकला जो जंगल और गहरी दलदल को छू रहा था।

यह कहा जाता है और लोगों में यह मान्यता बनी हुई हैं कि जहाँ भी इन्द्रधनुष ज़मीन को छूता है, वहाँ एक ख़ज़ाना दबा पड़ा होता है, एक सोने का ख़ज़ाना और यहाँ भी एक ख़ज़ाना था। यह बात किसी और ने नहीं बल्कि उसकी माँ ने, नन्हें नगाड़ा बजाने वाले के बारे में सोची और उसका सपना देखा था।

और ज़िन्दगी में सपनों जैसे दिन बीतते गये ! उसका एक बाल भी बाँका नहीं हुआ था, एक सुनहरा बाल भी नहीं। "ड्रम-मा-रम ! ड्रम-मा-रम !" यहाँ है वह ! ड्रम बोल रहा था। उसकी माँ भी गा सकती थी यदि उसने उसे सचमुच या सपने में देखा होता।

ख़ुशी और गीतों के साथ, विजय की मालाएँ पहने वे घर वापस आये क्योंकि युद्ध ख़त्म हो गया था और शान्ति हो गयी थी। रेजिमेंट का कुत्ता लम्बी-लम्बी छलाँगें लगाकर जल्दी-जल्दी आगे चल रहा था।

दिन और हफ़्ते बीत गये। पीटर अपने माता-पिता के कमरे में आया। वह एक जंगली आदमी की तरह हो गया था। उसकी आँखें चमकीली थीं और उसका चेहरा सूरज की रोशनी जैसा था। उसकी माँ ने उसे बाँहों में भर लिया और उसके होठों, माथे और लाल बालों को चूमने लगी। उसका बेटा वापस आ गया था। उसके सीने पर चाँदी का क्रॉस नहीं था, जैसाकि उसके पिता ने सपने में देखा था लेकिन उसके हाथ-पैर ठीक थे। वहाँ कितनी ख़ुशी थी ! वे हँसे और रोये और पीटर ने पुराने आग के नगाड़े को गले लगा लिया।

"अभी भी इस नगाड़े का पुराना ढाँचा ठीक है !" वह बोला।

और पिता ने उस पर एक धुन बजायी।

"कोई सोचेगा कि यहाँ भीषण आग लग गयी है।" नगाड़ा बोला, "लेकिन आज तो बड़ी ख़ुशी का दिन है। दिल में ख़ुशी की आग लगी है... सोने का ख़ज़ाना ! ढम ! ढम ! ढम !"

"क्या हुआ ? क्या हुआ !–"शहर के संगीतकार से पूछो !"

"पीटर नगाड़े से बहुत बड़ा हो गया है।" वह बोला, "पीटर मुझसे भी बड़ा होगा।"

कुछ भी हो, वह संगीतकार राजा के बर्तन धोने वाले का बेटा था। उसने जो कुछ अपनी आधी ज़िन्दगी में सीखा था, पीटर ने आधे साल में सीख लिया था।

उसके बारे में ख़ुश होने की बात ही ऐसी थी–सचमुच दिल से निकली हुई बात। इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता था कि उसकी आँखें और बाल

चमक रहे थे।

"उसे अपने बाल रँगवा लेने चाहिए थे।" पड़ोसी की पत्नी बोली, "इससे वह पुलिस वाले की बेटी के लायक़ हो जायेगा और उसे पति मिल जायेगा।"

"लेकिन पुलिस वाले की बेटी के बाल तो पानी की घास की तरह हो गये हैं और वह उन्हें हमेशा रँगती रहती है।"

"उसे मालूम है, उसे क्या करना चाहिए।" पड़ोसियों ने कहा, "और पीटर को भी। वह बहुत से सम्भ्रान्त घरों में जाता है, यहाँ तक कि सामन्त के घर भी जहाँ वह कुमारी शारलोट को पियानो सिखाता है।"

"वह बजा सकता है ! वह सीधे अपने दिल से बजा सकता है, सबसे सुन्दर संगीत का टुकड़ा, जो कभी भी संगीत में रचा नहीं गया।"

वह चाँदनी रातों में और अँधेरी रातों में भी बजाता रहा। पड़ोसी कहते थे कि यह असहनीय है और आग के नगाड़े की भी यही राय थी।

जब तक उसके विचार दौड़ने नहीं लगे, वह बजाता रहा। वह भविष्य की कल्पना करने लगा :

"मुझे मशहूर होना है !"

और सामन्त की बेटी शारलोट पियानो पर बैठ गयी। उसकी नाजुक उँगलियाँ कुंजियों पर नाचने लगीं और उससे पैदा हुआ मधुर संगीत पीटर के दिल में उतर गया। यह उसके लिए बहुत बड़ी बात थी और ऐसा एक बार नहीं बल्कि कई बार हुआ और एक दिन उसने उन उँगलियों और गोरी हथेली को अपने हाथों में लेकर चूम लिया और उसकी भूरी, बड़ी-बड़ी आँखों में देखा। ईश्वर जाने उसने क्या कहा, लेकिन हम अन्दाज़ तो लगा ही सकते हैं। शारलोट इसका अन्दाज़ लगा कर शरमा गयी। उसका चेहरा भौंहों से गले तक लाल हो गया और वह उत्तर में एक भी शब्द नहीं बोली। पीटर उसके पास बहुत देर तक बैठा रहा और वह अपनी सुन्दर आँखों से उसे देखती रही।

घर पर उसने उस शाम दुनिया की सैर और उस सोने के ख़ज़ाने की बात की जो उसकी वॉयलिन में छिपा था।

"मुझे प्रसिद्ध होना है !" पीटर ने कहा।

"तुम्म-लम, टम्म-लम, टम्म-लम !" आग का नगाड़ा बोला, "पीटर की अक्ल मारी गयी है। मुझे लगता है उसके घर में आग लगने वाली है।"

अगले दिन माँ बाज़ार गयी।

"क्या मैं तुम्हें ख़बर सुनाऊँ, पीटर ?" घर लौटकर उसने कहा, "एक बड़ी ख़ास ख़बर। सामन्त की बेटी शारलोट की सगाई राज्य के पार्षद के बेटे से

हो गयी है। सगाई कल शाम को हुई।''

''नहीं !'' पीटर चिल्लाया और अपनी कुर्सी से उछल पड़ा। लेकिन उसकी माँ दृढ़ता से बोली, ''हाँ।'' उसने यह बात नानबाई की पत्नी से सुनी थी जिसके पति ने उसे स्वयं सामन्त से सुना था। पीटर मृत्यु की तरह पीला पड़ गया और फिर से वापस बैठ गया।

''हे ईश्वर ! तुम्हें क्या हुआ ?'' माँ ने पूछा।

''कुछ नहीं, कुछ नहीं, केवल मुझे अकेला छोड़ दो।'' उसने जवाब दिया लेकिन उसके गालों पर आँसू बह रहे थे।

''मेरे प्यारे बच्चे, मेरे सोने के ख़ज़ाने !'' माँ चिल्लायी और रोने लगी लेकिन आग का नगाड़ा गाने लगा—तेज़ आवाज़ में नहीं बल्कि भीतर ही भीतर। ''शारलोट चली गयी ! शारलोट चली गयी ! और गीत ख़त्म हुआ।''

लेकिन गीत अभी ख़त्म नहीं हुआ था। इसमें अभी और बहुत-से छन्द थे, लम्बे छन्द, सुन्दर छन्द, ज़िन्दगी के सोने के ख़ज़ाने।

वक़्त गुज़रने लगा। पीटर दूसरे देशों की यात्रा पर चला गया।

''वह पागलों जैसी हरकतें करती है।'' पड़ोसी की पत्नी ने पीटर की माँ के बारे में कहा, ''पूरी दुनिया को वे ख़त देखने चाहिए जो उसे उसका सोने का ख़ज़ाना लिखता है। और वे शब्द पढ़ने चाहिए जो उसके वॉयलिन-वादन के बारे में अख़बारों में लिखे होते हैं। वह इसे पैसे भी भेजता है और वह पैसा उसके बहुत काम आता है क्योंकि वह एक विधवा है।''

''वह राजा-महाराजाओं के सामने बजाता है।'' नगर के संगीतकार ने कहा। मुझे यह सौभाग्य कभी नहीं मिला। लेकिन मुझे गर्व है कि वह मेरा शिष्य है और वह अपने बूढ़े शिक्षक को नहीं भूला है।''

उसकी माँ बोली, ''उसके पिता ने सपना देखा था कि पीटर युद्ध से चाँदी का क्रॉस लेकर आयेगा। उसे युद्ध में वह नहीं मिला, लेकिन यह सब जो उसे मिला, वह पाना बहुत ही कठिन है। अब उसके पास सम्मान का क्रॉस है। काश ! उसके पिता यह सब देख पाते !''

''वह प्रसिद्ध हो गया है !'' आग का नगाड़ा बोला। पीटर के पूरे शहर में नगाड़ा बजाने वाले के लड़के, लाल बालों वाले पीटर के लिए यही कहा—पीटर जिसे वे सब बचपन से जानते थे, जब वह अपने लकड़ी के जूते पहनकर दौड़ता रहता था। फिर एक नगाड़ा बजाने वाले के रूप में, जो नर्तकों के साथ बजाता था—वह अब प्रसिद्ध हो गया था !

''राजा के सामने बजाने से पहले वह हमारे घर बजाता था।'' सामन्त की

पत्नी बोली। उस समय वह शारलोट के प्रति आकर्षित था। वह हमेशा से कुछ बनना चाहता था उस समय वह हँसमुख और उत्साही था। मेरे पति को जब इस सम्बन्ध का पता चला तो वे बहुत हँसे थे और अब हमारी शारलोट, राज्य के पार्षद की पत्नी है।"

बेचारे बच्चे के दिल और आत्मा में एक सोने का ख़ज़ाना छिपा हुआ था जो नगाड़े पर संगीत बजाता था—विजयी होकर लौटते लोगों के लिए विजय की धुन। उसके सीने में एक सोने का ख़ज़ाना था। संगीत की शक्ति। यह उसके वॉयलिन के माध्यम से सामने आयी जैसे कि उसका वाद्य एक सम्पूर्ण वाद्य हो और जैसे कि गर्मियों की मध्यरात्रि के सभी बौने उसके तारों पर नाच रहे हों। उसकी आवाज़ में गायक-पक्षी की पुकार और मानव-स्वर की स्पष्टता सुनायी देती थी और उसका नाम पूरी धरती पर विजयी हुआ। वह एक बड़ा आग का नगाड़ा था—प्रेरणा का नगाड़ा।

"वह बहुत भव्य लगने लगा है !" युवा और बूढ़ी स्त्रियों ने कहा और उनमें सबसे बूढ़ी औरत ने उन प्रसिद्ध घुँघराले बालों को देखने के लिए उसके चित्रों की एक किताब ली जिससे कि वह उसके घने, सुन्दर बालों का एक गुच्छा माँग सके—वह ख़ज़ाना, वह सोने का ख़ज़ाना !

बेटा नगाड़ा बजाने वाले के साधारण से कमरे में आया। वह एक राजकुमार की तरह भव्य और एक राजा से भी ज़्यादा प्रसन्न दिख रहा था। उसकी आँखें एकदम साफ़ थीं। उसका चेहरा सूरज की तरह चमक रहा था। उसने अपनी माँ को अपनी बाँहों में पकड़ा था वह उसका मुँह चूम रही थी और आनन्द में रो रही थी। वह कमरे की एक पुरानी कुर्सी-मेज़-अलमारी, जिस पर चाय के प्याले रखे थे और फूलदान को ध्यान से देख रहा था। उसने पलंग को देखा जिस पर वह बचपन में सोता था। फिर पुराने आग के नगाड़े को उसने खींचकर बाहर निकालाकर कमरे के बीचोंबीच ले आया और उससे और अपनी माँ से बोला, "मेरे पिता आज शाम एक ख़ास धुन बजाते। अब मुझे वह बजानी चाहिए।"

और उसने एक तेज़, धमाकेदार धुन नगाड़े पर बजायी। नगाड़े को इतना फ़ख्र महसूस हुआ कि उस पर चढ़ा चमड़ा उत्तेजना से फट गया।

"उसका स्पर्श बहुत अच्छा है !" नगाड़ा बोला, "उसकी स्मृतियाँ मेरे साथ हमेशा रहेंगी। मैं उम्मीद करता हूँ कि उसकी माँ के साथ भी अपने सोने के ख़ज़ाने पर गर्व अनुभव करने पर ऐसा ही होगा।" और यही कहानी थी 'सोने का ख़ज़ाना' की।

23

प्रेमी

रस्सी से घूमने वाला एक लट्टू और एक गेंद दूसरे और खिलौनों के साथ एक दराज़ में पड़े थे। लट्टू ने गेंद से कहा, "हम एक ही दराज़ में रहते हैं, तो क्यों न हम शादी कर लें ?"

लेकिन गेंद ने, जिसका कोट मोरक्को के चमड़े का था और जिसे किसी भी भद्र स्त्री जितना अहंकार था, इस प्रस्ताव का कोई जवाब नहीं दिया।

अगले दिन वह छोटा लड़का, जिसके वे सब खिलौने थे, आया और उस लट्टू को लाल-पीला रंगकर उसमें एक पीतल की कील गाड़ दी। इसके बाद वह लट्टू बहुत ही सुन्दर लगने लगा।

"मुझे देखो !" वह गेंद से बोला, "तुम अब क्या सोचती हो ? क्या हम सगाई कर लें ? हम एक-दूसरे से कितना मेल खाते हैं। तुम उछलती हो, मैं नाचता हूँ। हम बहुत खुश रहेंगे।"

"सचमुच ? क्या तुम्हें ऐसा लगता है ?" गेंद ने पूछा, "शायद तुम्हें नहीं मालूम कि मैं भेड़ के चमड़े की बनी हूँ और मेरे भीतर स्पेनिश कार्क है ?"

"हाँ, लेकिन मैं महोगनी लकड़ी का बना हूँ।" लट्टू बोला, "और बढ़ई ने मुझे अपने हाथ से घुमाकर बनाया है। उसके पास अपनी खराद मशीन है जिस पर काम करने में उसे बहुत मज़ा आता है।"

"क्या मैं तुम्हारी बात पर भरोसा करूँ ?" गेंद ने पूछा।

"यदि यह सच न हो तो मुझे फिर कभी न घुमाया जाये।" लट्टू ने कहा।

"तुम अपने बारे में अच्छी तरह बात कर सकते हो।" गेंद बोली, "लेकिन मैं तुम्हारी बात नहीं मान सकती। ऐसा लगता है कि जैसे मेरी सगाई अबाबील से हो गई है। जब भी मैं हवा में उछलती हूँ वह अपने घोंसले से सिर निकालकर मुझे देखता है और कहता है, "क्या तुम मुझसे शादी करोगी ?" और अब मैंने

चुपचाप उसे इशारा कर दिया है। "हाँ" और यह तो आधी सगाई के बराबर ही है। लेकिन मैं तुम्हें बचन देती हूँ कि मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूँगी।"

"हाँ, यही अच्छा होगा !" लट्टू ने कहा। और उनकी बात ख़त्म हो गयी।

अगले दिन लड़के ने गेंद को बाहर निकाला। लट्टू ने देखा कि वह किस तरह चिड़िया के समान हवा में उड़ती है। और नज़रों से ओझल हो जाती है। हर बार वह वापस आती है, लेकिन हर बार ज़मीन से टकराकर ऊपर उछलती है। यह शायद इसकी दोबारा ऊपर जाने की इच्छा की वजह से या उसके भीतर की स्पेनिश कॉर्क की वजह से होता है। लेकिन नौवीं बार वह गेंद लौटी ही नहीं और लड़का उसे ढूँढ़ता ही रहा। गेंद कहीं गुम हो गयी थी।

"मुझे अच्छी तरह मालूम है वह कहाँ है ?" लट्टू ने आह भरी, "वह अबाबील के घोंसले में है और उसने अबाबील से शादी कर ली है।"

लट्टू ने जितना ज़्यादा गेंद के बारे में सोचा, वह उतना ही उससे मिलने की इच्छा करने लगा। यह सोचकर कि वह गेंद को नहीं पा सकेगा, उसका प्रेम बढ़ता गया। और यह बात कि गेंद ने किसी और को चुन लिया है, एक ख़ास मुद्दा बन गयी। लट्टू सब ओर नाचा और गुनगुनाया लेकिन हमेशा गेंद के बारे में ही सोचता रहा जो कि उसके ख़यालों में और भी अधिक सुन्दर हो गयी थी। इस तरह बहुत साल बीत गये और अब यह प्रेम पुराना हो चला था।

लट्टू भी अब जवान नहीं था। लेकिन एक दिन उस पर सब ओर सोने की पॉलिश कर दी गयी। वह पहले कभी इतना सुन्दर नहीं दिखा था। अब वह सुनहरा लट्टू था। वह फिर उछला और गुनगुनाया। सचमुच वह दृश्य देखने लायक़ था। लेकिन अचानक वह बहुत ऊपर उछला और ग़ायब हो गया।

वे उसे सब जगह, यहाँ तक कि तहख़ाने में भी ढूँढ़ते रहे लेकिन वह नहीं मिला। वह कहाँ हो सकता था ?

वह कूड़ेदान में कूद गया था जहाँ तरह-तरह की चीज़ें पड़ी थीं। बन्दगोभी का डण्ठल, कचरा और छत से गिरी धूल।

"यह जगह चुपचाप पड़े रहने के लिए अच्छी है। मैं कितनी चीज़ों के साथ नीचे बैठ गया हूँ।"

और उसने अपने पास में पड़े बिना पत्तों वाले गोभी के डण्ठल को और एक अजीबोगरीब गोल-सी पुराने सेब जैसी चीज़ को देखा। लेकिन वह सेब नहीं था, बल्कि एक पुरानी गेंद थी जो बरसों से छत की नाली में पड़ी थी और बहुत-सा पानी सोख चुकी थी।

"ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है कि हममें से ही कोई यहाँ पर है, जिससे

मैं बात कर सकती हूँ !" गेंद बोली। उसने सुनहरे लट्टू को देख कर कहा, "मैं सचमुच भेड़ के चमड़े की हूँ। लड़कियों ने मुझे बनाया है और मेरे भीतर स्पेनिश कॉर्क है लेकिन मुझे देखकर कोई यह नहीं सोच सकता। जब मैं क़रीब-क़रीब अबाबील से शादी करने ही वाली थी कि तभी मैं छत पर की नाली में गिर पड़ी और पूरे पाँच साल यहाँ पड़ी रही और पानी में एकदम फूल गयी। सोचो, एक कम उम्र लड़की के लिए यह कितना लम्बा समय है।"

लेकिन लट्टू कुछ नहीं बोला। उसने अपने पुराने प्रेम के बारे में सोचा। वह जितना ज़्यादा उसकी बात सुनता गया उसे स्पष्ट होता गया कि यह वही गेंद है।

तभी वहाँ कचरा फेंकने के लिए नौकरानी आयी।

"आह ! सुनहरा लट्टू!" वह चिल्लायी।

और इस तरह लट्टू दोबारा सम्मान की जगह वापस आ गया। लेकिन गेंद के बारे में किसी ने कुछ नहीं सुना। लट्टू ने भी अपने पुराने प्रेम के बारे में कोई बात नहीं की, क्योंकि जब उसकी प्रेमिका छत की नाली में गिरकर पाँच साल वहाँ रहने के बाद फूल गयी थी, तभी वह प्रेम मर गया था। हाँ, कोई अपनी प्रेमिका से जब उस वक़्त मिलता है, जबकि उसकी सुन्दरता ख़त्म हो जाती है तो उसके मिलने का कोई मतलब नहीं होता—तब वह वैसी ही होती है जैसे कूड़ेदान में पड़ी गेंद।

24

टावर का पहरेदार—ओले

"दुनिया में ऊँच-नीच तो होती ही रहती हैं—लेकिन मैं अब और ऊपर नहीं जा सकता !" टावर-रक्षक ओले ने कहा, "कई लोगों को ऊपर और नीचे दोनों जगह कोशिश करनी पड़ती है और सही अर्थों में देखें तो हम सभी को अन्ततः पहरेदार बनना पड़ता है और जीवन को एक ख़ास ऊँचाई से देखना पड़ता है।"

यह ओले के शब्द थे—हाँ, टावर का पहरेदार—ओले। जो मेरा दोस्त था। एक अनोखा, बातूनी बूढ़ा आदमी, जो अपनी खोपड़ी में आने वाली सभी बातों को बन्द कर देता था। उसके दिल में सभी के लिए गम्भीर विचार थे। हाँ, वह बड़े लोगों का बेटा था। कुछ लोग तो यह भी कहते थे कि वह एक बड़े न्यायाधीश का बेटा था। वह पढ़ा-लिखा भी था और वह सहायक अध्यापक और डिप्टी क्लर्क भी रह चुका था। लेकिन ये सब उसके किस काम का था ? उन दिनों वह एक क्लर्क के मकान में रहता था और उसके घर में सब कुछ था। जैसा कि कहते हैं, उसे मुफ़्त मकान मिला था लेकिन फिर भी वह एक भद्र युवा व्यक्ति था। वह अपने जूतों पर एक ख़ास पेटेंट-पॉलिश करना चाहता था लेकिन एक क्लर्क की हैसियत तो केवल साधारण ग्रीस ही ख़रीदने की थी। और इसी बात पर उसमें और उसके दोस्तों के बीच मतभेद हो गया—एक कंजूसी की बात करता था तो दूसरा दान की। इस तरह यह काली पॉलिश उनकी दुश्मनी का कारण बन गयी और आख़िरकार वे अलग हो गये।

वह दुनिया से यही कुछ चाहता था—जैसे पेटेंट पॉलिश—पर उसे कुछ नहीं बल्कि ग्रीस मिली। आख़िर में उसने सभी से किनारा कर लिया और एक सन्त बन गया। लेकिन चर्च की वह टावर शहर में थी ही ऐसी जगह जहाँ कि काम और रोटी दोनों मिल सकते थे। इसीलिए वह वहाँ गया और अकेले चक्कर लगाते हुए अपना पाइप पीता रहा। उसने नीचे और ऊपर देखा और सोचा और बताया

कि उसने किताबों में क्या पढ़ा था और उसने अपने बारे में क्या जाना था। मैं अक्सर उसे किताबें, अच्छी किताबें पढ़ने को दिया करता था। किसी भी आदमी को उसकी संगत देखकर जान सकते हो। न तो उसे अंग्रेज़ी परिवेश के उपन्यास पसन्द थे और न ही फ्रेंच उपन्यास जिन्हें वह हवाई बातों और मीठी-मीठी बातों का मिश्रण कहता था। उसे जीवनियाँ और दुनिया के आश्चर्यों के बारे में पढ़ना अच्छा लगता था। मैं कम-से-कम साल में एक बार उससे मिलने जाता था—अक्सर नया साल शुरू होने के तुरन्त बाद। तब वह अक्सर पुराने साल में आये बदलावों के बारे में बात करता रहता था।

मैं अपनी इस तरह की तीन मुलाक़ातों की कहानियाँ बताऊँगा और जहाँ तक मुझे याद रहेगा उसकी बातें उसके शब्दों में ही बताने की कोशिश करूँगा।

पहली मुलाक़ात

जो किताबें मैंने बाद के दिनों में ओले को दी थीं उनमें से एक किताब उसे बहुत ही पसन्द आयी थी और उसने उसे बहुत दिल लगाकर पढ़ा था। यह एक भूगर्भशास्त्र की किताब थी जिसमें शिलाखण्डों के बारे में जानकारी थी।

"हाँ, ये दुर्लभ पुराने लोग हैं—ये शिलाखण्ड।" उसने कहा, "सोचो कि ये कैसे हो सकता है कि हम उन पर बिना ध्यान दिये निकल जायें। सड़कों के फुटपाथों पर लगे पत्थरों पर से हम अपनी पारम्परिक विरासत के पुराने अवशेषों पर से, बिना कुछ उनके बारे में सोचे हुए गुज़र जाते हैं। मैंने भी यह किया है। लेकिन अब मैं हर फुटपाथ के पत्थर को सम्मान के साथ देखता हूँ। इसके लिए इस किताब का बहुत-बहुत धन्यवाद ! उसने मुझे विचार दिए हैं और मेरे भीतर इस विषय पर और किताबें पढ़ने की इच्छा जगायी है। पृथ्वी के प्रति प्रेम, हर प्रेम से कहीं ज़्यादा आश्चर्यजनक और आनन्ददायी है। दुख की बात है कि हम इसका पहला खण्ड नहीं पढ़ पाते, क्योंकि वह उस भाषा में लिखा होता है जिसे हम नहीं पढ़ पाते। शिलाखण्डों की हर पर्त को अलग तरह से पढ़ना चाहिए क्योंकि वे सभी अलग-अलग समय की हैं।

हाँ, यह एक अनोखा आनन्द है। अद्भुत प्रेम है और वह हम सबको आकर्षित करता है। हम तलाश करते हैं और ढूँढ़ निकालते हैं और फिर भी हम वहीं रहते हैं जहाँ थे। लेकिन स्रोत बार-बार बदलता रहता है पर ख़त्म नहीं होता। जिस धरती पर हम हैं, वह हमें सम्हाले रखती हैं, अलग नहीं करती।

और इस तरह कहानी हज़ारों-हज़ारों साल से चल रही है और अभी भी

जारी है। शिलाखण्डों की किताब को मेरा बहुत धन्यवाद। वे सचमुच मित्र हैं। वे यदि बोल सकते तो हमें कुछ काम-की बातें ज़रूर बताते। कभी-कभी एकदम नगण्य होना भी बहुत आनन्ददायक होता है, ख़ासतौर पर मेरे जैसे ऊँचे आदमी के लिए। मैं सोचता हूँ कि पेटेंट पॉलिश के बावजूद हम कीड़ों से कुछ अधिक नहीं हैं जो एक क्षण भर के लिए दीमक की बाँबी की तरह धरती पर रह रहे हैं। भले ही हम सितारों और कमरबन्दों से सजते हों, महलों और दफ़्तरों में बैठते हों।

हज़ारों साल पुराने इन आदरणीय शिलाखण्डों के सामने हर कोई अपने आपको बच्चा महसूस करेगा। पिछले साल नये साल की पूर्वसन्ध्या पर मैं यह किताब पढ़ रहा था और मैं इसमें इतना खो गया कि मैं अक्सर नये साल पर करने वाला काम भूल ही गया—'अमाक' जाकर शिकार करना। ओह ! तुम नहीं जानते वह क्या हैं।

झाड़ुओं पर बैठी चुड़ैलों की यात्रा के बारे में सभी जानते हैं—यह यात्रा सन्त जॉन की पूर्व सन्ध्या पर ब्रोकन के लिए निकलती है। लेकिन एक और जंगली-यात्रा भी है जो कि राष्ट्रीय और आधुनिक है। यह यात्रा नव वर्ष की सन्ध्या पर 'अमाक' के लिए की जाती है। सभी कवि और कवयित्रियाँ संगीतकार, पत्रकार, लेखक और कलाकार, मेरा मतलब जो भले लोग नहीं हैं, नव वर्ष की सन्ध्या पर हवा में उड़कर 'अमाक' पहुँचते हैं। वे इसके लिए अपने चित्रकारी के ब्रुशों पर या पंखों वाली क़लमों पर पीछे की ओर बैठते हैं, क्योंकि स्टील के पेन कठोर होने की वजह से उनका भार नहीं झेल पायेंगे। जैसा कि मैंने तुम्हें बताया, मैं यह यात्रा हर नव वर्ष की सन्ध्या पर देखता हूँ और अधिकांश यात्रियों के नाम बता सकता हूँ। लेकिन मैं उनसे दुश्मनी नहीं मोल लेना चाहता क्योंकि उन्हें ये पसन्द नहीं है कि लोग क़लमों पर बैठकर की गयी उनकी 'अमाक' की यात्रा के बारे में बात करें। मेरी एक भतीजी जैसी है जो कि मछुआरन है और जो तीन महत्त्वपूर्ण अख़बार बाँटती हैं—जिनमें उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली गालियाँ और अपशब्द होते हैं। वह भी एक आमंत्रित मेहमान की तरह 'अमाक' गयी थी लेकिन वह अलग ही रह गयी—क्योंकि उसके पास न तो पंखवाली क़लम थी और न उसे उस पर चढ़ना ही आता था। उसने मुझे इस बारे में सब कुछ बताया था। उसकी बतायी आधी बातें सच नहीं हैं। लेकिन बाक़ी आधी बातों से बहुत-सी जानकारी मिलती है। जब वह वहाँ गयी तो समारोह एक गीत के साथ शुरू हुआ। हर मेहमान ने अपना गीत लिखा था और हर-एक ने अपना गीत गाया, क्योंकि उसे वही सबसे अच्छा लगा। सब

एक साथ एक ही धुन पर गा रहे थे। उसके बाद वे मार्चपास्ट करते हुए छोटे बैण्ड के साथ आये। घण्टियाँ भी थीं, जो रुक-रुककर बज रही थीं। इसके बाद छोटे ड्रम बजाने वाले आये जो अपने टट्टू को मारते थे। इनके बाद वे आये जो अपना नाम दिये बिना लिखते थे। इसका यहाँ मतलब वैसा ही है जैसे कि पेटेंट पॉलिश के बदले ग्रीस इस्तेमाल करना। इसके बाद एक भिखारी अपने लड़के के साथ आया। लेकिन लड़का बहुत ही दुर्भाग्यशाली था क्योंकि सामान्यतः उस पर ध्यान नहीं दिया गया। इसके बाद अपनी गाड़ी के साथ सड़क बुहारने वाला आया, जो कचरे के किसी डिब्बे में उंड़ेलने जा रहा था और कहता जा रहा था, "अच्छा, बहुत अच्छा, बेहद अच्छा !" इसी आनन्द के बीच में 'अमाक' में धूल के बड़े ढेर से एक तना, पेड़, एक सुन्दर फूल, एक बड़ा कुकुरमुत्ता, एक अच्छी छत निकली जो एक भण्डार जैसी लग रही थी क्योंकि उसमें ही वह सब लटक रहा था जो उन्होंने दुनिया को पिछले साल दिया था। पेड़ में से आग की चिनगारियाँ निकल रही थीं—ये वे विचार थे—जो उन्होंने दूसरों से लेकर प्रयोग किये थे और अब वे मुक्त होकर आतिशबाज़ी की तरह चटखकर भाग रहे थे। वे 'छड़ी जलाना' गीत गा रहे थे। और युवा-कवि 'दिल जलाना' गीत गा रहे थे। मन्दबुद्धि लोग परिहास कर रहे थे और उनके हँसी मज़ाक़ इतनी ज़ोर से गड़गड़ाहट के साथ गूँज रहे थे जैसे दरवाज़े से ख़ाली बर्तन टकरा रहे हों।

यह सब बहुत मज़ेदार था। मेरी भतीजी ने कहा—वास्तव में उसने तो बहुत-सी बातें कही थीं जो बहुत शरारत से भरी और बहुत मज़ेदार थीं। लेकिन मैं उनका ज़िक्र यहाँ नहीं करूँगा क्योंकि आदमी का स्वभाव अच्छा होना चाहिए न कि उसे दोष ढूँढ़ने वाला आलोचक होना चाहिए। परन्तु अब तुम्हें अच्छी तरह समझ में आ जायेगा कि कब एक व्यक्ति 'अमाक-यात्रा' के अधिकार जान सकता है। जैसा कि मैं जानता हूँ—नये साल पर इस ख़तरनाक दौड़ को देखना बहुत स्वाभाविक है। यदि नये साल में मैं हमेशा आने वाले कुछ आदमियों को नहीं देखता हूँ तो दूसरी ओर मुझे कुछ नये व्यक्ति भी मिलते हैं लेकिन इस साल मैंने मेहमानों पर ध्यान नहीं दिया। मैं शिलाखण्डों पर कूदता हुआ हज़ारों साल पीछे चला गया और उत्तर में चट्टानों को टूट कर बिखरते देखा, बर्फ़ की चट्टानों को तैरते देखा और इन्द्रधनुष के बनने से बहुत पहले उन्हें समुद्र की तली में बैठते और फिर पानी के साथ समुद्र के किनारे रेत बनकर वापस आते देखा। तब कहा, "यह ज़ीलैण्ड होगा !" मैंने उन पर अनजान पक्षियों को बैठे देखा। [illegible]बी जंगली व्यक्ति भी बैठे थे जिनके बारे में हम कुछ नहीं

जानते थे जब तक कि उन्होंने इन पत्थरों पर अपने रहस्यपूर्ण चिह्न नहीं बनाये जो बाद में इतिहास बन गये। लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, समय बीत गया और मैं सिर्फ़ शून्य हो गया—कुछ भी नहीं रहा ! इसी समय तीन या चार तारे टूट कर नीचे गिरे और मेरे विचारों को नयी दिशा मिली। तुम जानते हो टूटे तारे क्या होते हैं ? क्या तुम नहीं जानते ? विद्वान इसके बारे में कुछ नहीं जानते। मैंने भी टूटते हुए तारों के बारे में अपने विचार बनाये हैं जैसे कि बहुत-सी जगहों पर लोग इनके बारे में सोचते हैं। इस बारे में मेरे अलग विचार हैं। जिन्होंने अच्छा और भलाई का काम किया हो, उसे बार-बार चुपचाप धन्यवाद दिया जाता है। यह धन्यवाद मौन होता है लेकिन फिर भी बोलता है। जिन लोगों ने अच्छे काम किये हैं उन लोगों के लिए धन्यवाद सूरज की मौन किरणें लेकर आती हैं और उनके ऊपर चमकती हैं। और यदि कई लोग एक लम्बे समय बाद किसी का धन्यवाद करना चाहते हैं तो यह धन्यवाद की भावना फूलों के गुच्छे की तरह होती है और बाद में किसी भले आदमी की क़ब्र पर टूटे तारे के रूप में दिखायी देती है। मैं हमेशा टूटते हुए तारे को देखकर बहुत ख़ुश होता हूँ : ख़ास तौर पर नये साल की पूर्व सन्ध्या पर, और फिर पता करता हूँ कि यह धन्यवाद की भेंट किसके लिए थी। बाद में बहुत-से लोगों को धन्यवाद करता हुआ एक चमकता सितारा दक्षिण-पश्चिम में गिरा। "यह सितारा किसके लिए था ?" मैंने सोचा, यह निश्चय ही पलेन्सबर्ग की खाड़ी के पास की पहाड़ी पर गिरा जहाँ कि शेपीग्रेल लासलोएस और उनके साथियों की उन क़ब्रों पर गिरा होगा जिन्हें डेनब्रोग नदी की लहरें सींचती हैं। एक तारा धरती पर भी गिरा—सोरो में हॉलबर्ग की क़ब्र पर—यह बहुत-से लोगों की तरफ़ से इस साल का धन्यवाद था—उसके सुन्दर नाटकों के लिए !

यह बहुत महान और सुन्दर विचार है कि टूटे तारे हमारी क़ब्रों पर गिरते हैं। लेकिन मेरी क़ब्र पर निश्चय ही कोई तारा नहीं गिरेगा—कोई सूरज की किरण भी मुझे धन्यवाद नहीं देगी, क्योंकि मैंने धन्यवाद के लायक़ कुछ भी नहीं किया है।" मुझे पेटेंट पॉलिश भी नहीं मिलेगी," ओले बोला, "क्योंकि धरती पर मेरे भाग्य में केवल ग्रीस ही है।"

दूसरी मुलाक़ात

वह नये साल का दिन था। मैं टावर तक गया था। ओले ने पुराने साल से नये साल में और एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र तक जाते हुए शराब पीने के बाद

जागी इच्छाओं और शुभकामनाओं के बारे में बताया। उसने मुझे गिलासों के बारे में एक कहानी बतायी जिसमें गहरा अर्थ छिपा था। वह कहानी इस तरह थी :

"जब नये साल की पूर्व सन्ध्या पर घड़ी बारह बजाती है तो मेज़ों पर बैठे लोग अपने हाथों में भरे हुए गिलास लेकर उठ खड़े होते हैं। और इन गिलासों को ख़ाली करते हुए नये साल में सफलता की कामना करते हैं। जो अपने हाथों में गिलास लेकर नया साल शुरू करते हैं, वह बड़े लोगों के लिए अच्छी शुरुआत है। जो नये साल की शुरुआत बिस्तर में जाते हुए करते हैं, वह आलसी लोगों के लिए अच्छी शुरुआत है। गिलास की ही तरह नींद की भी नये साल में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। तुम जानते हो गिलास में क्या होता है ?" ओले ने पूछा, "मैं बताता हूँ—गिलास में सेहत, आनन्द और समूची संवेदनाओं के आनन्द के साथ-साथ दुर्भाग्य और भयानक दुख भी होता है। अब मान लो कि हम गिलास गिनते हैं—निश्चय ही मैं अलग-अलग लोगों के लिए—गिलासों को अलग-अलग श्रेणियों में रखूँगा—

"पहला गिलास सेहत का होता है जिसमें सेहत की बूटी उगती है। इसे छत की शहतीर पर रख दें। ऐसा करके साल के अन्त में आप सेहत का आनन्द उठा रहे होंगे।

"यदि आप दूसरा गिलास लें तो उसमें से एक नन्हीं चिड़िया ऊपर आती है और बड़ी सहजता और खुशी से चहचहाती है। बहुत-से लोग उसका गीत सुनकर यह सोचना शुरू कर सकते हैं—जीवन आनन्द है ! नीचे मत देखो ! हिम्मत रखो और आगे बढ़ो !

"तीसरे गिलास से एक नन्हीं पंखों वाली परी आती है जो निश्चय ही नन्हीं परी नहीं कही जा सकती क्योंकि उसकी रग़ों में बेताल का खून बहता है और उसकी आत्मा भी बेताल की है। वह आपको नुक़सान नहीं पहुँचायेगा लेकिन आपके साथ चालाकी ज़रूर कर सकता है। वह आपके कान के पास आकर बैठेगा और आपके कान में अच्छे विचार फुसफुसायेगा। वह आपके दिल में उतर जायेगा। और आपको गर्मी देगा जिससे आप प्रसन्न हो सकें और खूब बातें कर सकें।

"चौथे गिलास में न तो बूटी है, न चिड़िया और न ही परी। इस गिलास में विवेक द्वारा तय की गयी सीमा है और किसी को भी उसके बाहर नहीं जाना चाहिए।

"आप पाँचवाँ गिलास लेंगे तो आप अपने-आप पर रोयेंगे, पर बहुत भावुक

हो जायेंगे और कुछ और ही महसूस करेंगे। गिलास में से कार्निवल राजकुमार नौ बार कूदकर निकलेगा जो बहुत ही ज़्यादा खुश होगा। वह आपको अपने साथ ले जायेगा और आप अपनी गरिमा भूल जायेंगे। आपको जितना कुछ भूलना चाहिए इससे ज़्यादा आप भूल जायेंगे। सारा गीत, संगीत और नृत्य आपके सामने होगा और ये मुखौटे आपको अपने साथ ले जायेंगे और अहंकार की बेटियाँ रेशम और साटन के कपड़े पहने खुले बालों में आयेंगी, लेकिन यदि रख सकते हैं तो अपने आपको इनसे दूर रखें !

"छठवाँ गिलास ! हाँ, इसमें एक राक्षस अच्छे कपड़े पहने हुए आकर्षक और बहुत ही मनोरम छोटे-से व्यक्ति के रूप में बैठा रहता है—जो आपको अच्छी तरह समझ सकता है, आपकी सारी बातें मानता है और आपको एकदम अपने जैसा ही लगता है। उसके हाथ में एक लालटेन होती है जिससे वह आपको आपके साथ घर जाते समय रास्ता दिखाता है। एक सन्त के बारे में, एक पुरानी कहानी है जिसे सात भयानक पापों में से एक चुनना था, और जिसने शराब को चुना। उसे यह सबसे छोटा लगा था। लेकिन उसी के कारण उसे बाक़ी छह पाप करने पड़े। तब आदमी का खून, राक्षस के खून से मिल जाता है—यही छठा गिलास है और इसी के साथ सभी बुराइयों के विषाणु हमारे भीतर प्रवेश कर जाते हैं। उनमें से हरेक सरसों के बीज की ताक़त से उगता है और पेड़ बन जाता है, और पूरी दुनिया पर फैल जाता है। अधिकतर लोगों के पास इस भट्ठी में जाकर दो बार जलने और नये बदसूरत रूप में आने के सिवाय कोई चारा नहीं होता। यही गिलासों का इतिहास है।" टावर का पहरेदार ओले बोला, "और यह बात केवल शराब या केवल ग्रीस के साथ बतायी जा सकती है, लेकिन मैं तुम्हें दोनों के साथ बताता हूँ।"

तीसरी मुलाक़ात

इस बार ओले के पास जाने के लिए मैंने साधारण कामकाजी दिन चुना क्योंकि शहर की सड़कों पर उस दिन सब कुछ अजीब-सा ही था। सड़कों पर कचरा, चीजों के टुकड़े और सभी तरह की बची-खुची चीज़ें पड़ी थीं जिन्हें मुश्किल से ही पार किया जा सकता था।

लेकिन इस बार मुझे उस कचरे के संसार में दो बच्चे खेलते दिखायी दिये। वे 'नींद-नींद का खेल' खेल रहे थे और आसपास का माहौल भी इसमें सहायक था। वे घास के ढेर में घुस गये और एक पुराने पर्दे को चादर की तरह ओढ़

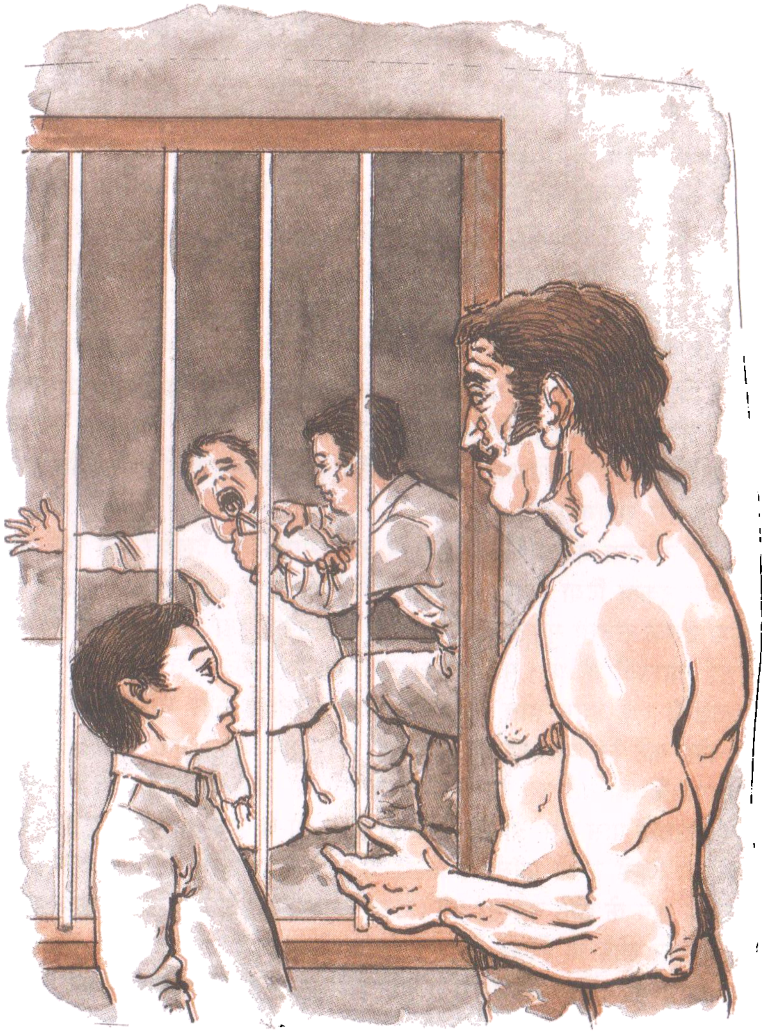
लिया। "यह बहुत ही अच्छा है !" वे बोले, लेकिन मेरे लिए यह कुछ अलग था और मुझे ओले से मिलने भी जाना था।

"आज एक कामकाजी दिन है।" उसने कहा, "सड़कें और घर कचरे के डिब्बे की तरह हैं—एक बड़े कचरे के डिब्बे की तरह। लेकिन मैं एक ठेला भर सामान से ख़ुश हूँ। उसमें मुझे कुछ अच्छा मिल सकता है और मुझे एक बार में ही कुछ काम की चीज़ मिली। क्रिसमस के तुरन्त बाद मैं सड़क पर जा रहा था। मौसम बेहद ख़राब था—गीला और गन्दा जिसमें कोई भी आसानी से सर्दी खा सकता था। सफ़ाई वाला वहाँ अपने भरे हुए ठेले के साथ आया और सड़कों को देखने लगा। ठेले की पिछली तरफ़ अभी तक हरा चीड़ का एक पेड़ खड़ा था जिसकी पत्तियाँ चमक रही थीं। इसे क्रिसमस की पूर्व सन्ध्या में इस्तेमाल किया गया था और अब इसे सड़क पर फेंक दिया गया था। सफ़ाई वाले ने इसे अपने ठेले पर खड़ा कर दिया। ऐसा करना बहुत मज़ेदार लग रहा है—या आप इसे दुखद भी कह सकते हैं—इसे देखकर आप कुछ भी सोच सकते हैं। मैंने इसके बारे में और ठेले पर की बहुत-सी चीज़ों के बारे में सोचा। मैं और भी कुछ सोच सकता था—पर बात एक ही थी। वहाँ एक बूढ़ी औरत का दस्ताना भी था। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह क्या सोच रहा होगा ? क्या मैं आपको बताऊँ कि दस्ताना वहाँ पड़ा अपनी छोटी उँगली से उसी पेड़ की ओर इशारा कर रहा है। "मैं पेड़ के लिए दुखी हूँ," उसने सोचा, "जहाँ जगमगाते झाड़-फ़ानूस जल रहे थे, वहाँ मुझे भी बुलाया गया था। मेरी ज़िन्दगी एक नृत्य की रात में ही ख़त्म हो गयी। हाथ पर हल्का-सा दबाव पड़ा और मैं फट गया ! मेरे दिमाग़ में बार-बार यही बात आती है और मेरे पास जीने के लिए और कुछ नहीं है।" दस्ताने ने यही सोचा या सोचा होगा। "उस चीड़ के पेड़ के साथ कितनी अजीब बात हुई है।" गमले के टुकड़े ने कहा। देखो, गमले का टुकड़ा हमेशा अजीब ही सोचता है। "जब कोई कचरे के ठेले पर हो," उन्होंने कहा, "तो उसे अहंकार नहीं दिखाना चाहिए और चमकीली चीज़ें नहीं पहननी चाहिए। मुझे मालूम है कि मैं दुनिया में काम की चीज़ था, इस हरी छड़ी से कहीं ज़्यादा काम की चीज़।" यह राय बनायी जा सकती थी और मुझे लगता है यह कुछ ख़ास नहीं है, क्योंकि चीड़ का पेड़ अच्छा दिख रहा था। वह उस कचरे के ढेर में कविता की तरह था, और सचमुच सड़क पर भी बहुत-सा कचरा था। तब रास्ता कठिन और परेशानी भरा हो जाता है। तब मैं परेशान होकर भागना ही ठीक समझता हूँ। लेकिन अगर मैं टावर पर होता तो मैं वहाँ बैठकर सब देखता और आनन्द उठाता।

"नीचे कुछ अच्छे आदमी है जो 'घर बदलो' खेल रहे हैं। वे अपने सामान

को खींचते हुए पसीना-पसीना हो रहे हैं और उनका घरेलू बेताल पुराने टब में बैठकर उनके साथ जा रहा है। घर-परिवार की सभी छोटी-छोटी परेशानियाँ और वास्तविक दुख और समवेदनाएँ उनके साथ पुरानी जगह से नयी जगह जा रहे हैं और इन सबसे उन्हें या हमें क्या मिल रहा है ? हाँ, बहुत पहले एक अच्छा पुराना सूत्र वाक्य लिखा गया था। "मृत्यु के महान दुखद दिन के बारे में सोचो !" यह एक गम्भीर विचार है। मुझे उम्मीद है कि मेरा इसके बारे में बात करना आपको ख़राब नहीं लगा होगा। मृत्यु सबसे निश्चित सन्देशवाहक है जो बहुत व्यस्त रहने के बाद भी अपना काम करती है। हाँ, मृत्यु बस की कण्डक्टर है, वह पासपोर्ट लिखती है, वह हमारी सेवा-पुस्तिका पर हस्ताक्षर भी करती है और वह हमारे जीवन के बैंक की निदेशक भी है। क्या आपको मेरी बात समझ में आयी। अपने जीवन की सारी सम्पत्ति—बड़ी और छोटी—हम इस बैंक में रखते हैं। जब मृत्यु अपनी बस लेकर आती है हमें उसमें बैठना होता है और उसके साथ अमरता के देश जाना होता है, तब सीमा पर वह हमें हमारी सर्विस-बुक 'पास' की तरह देती है। यात्रा में वह हमारे किसी अच्छे या बुरे काम को भी लेती है या तो वह बहुत आनन्ददायक होता है या बहुत भयानक। कोई भी इस बस की यात्रा से बच नहीं सकता। लेकिन एक व्यक्ति के बारे में बात ज़रूर की जाती है जिसे इसमें नहीं जाने दिया गया था—उसे भटकता हुआ यहूदी कहते हैं—उसे इस बस के पीछे जाना पड़ा था। यदि उसे चढ़ने दिया जाता तो वह कवियों की बैसाखियाँ ले भागता।

अपने मन की आँखें उस बस पर केन्द्रित करो। यह समाज मिला जुला है—राजा और भिखारी, बेवकूफ़ और विद्वान यहाँ पास-पास बैठते हैं। इसमें वे अपना धन एवं सम्पत्ति नहीं ले जा सकते, उनके पास केवल अपनी सर्विस बुक और बैंक से मिली भेंट होती है। लेकिन हमारी किस सम्पत्ति को चुनकर हमें दिया जाता है ? शायद कोई बहुत छोटी-सी, जिसके बारे में हम भूल गये हों लेकिन जिसका लेखा-जोखा हो—मटर जैसी छोटी, लेकिन मटर से भी तो फूल खिल सकते हैं। वह बेचारा गँवार जो कि कोने में स्टूल पर बैठा है और जिसे ताने दिये जा रहे हैं और मज़ाक़ बनाया जा रहा है,उसे यह टूटा-फूटा स्टूल ही साथ रखने को मिला है। यह स्टूल अमरता के देश में कुछ और ही लग सकता है। यह वहाँ सोने-सा चमकने वाला सिंहासन और किसी पेड़-सा फूलता लग सकता है। जो व्यक्ति हमेशा आनन्द की शराब पीता है और इतना अलसाया पड़ा रहता है कि वो यहाँ अपने किये हुए बुरे काम भी भूल जाता है उसे सम्पत्ति के रूप में एक पीपा दिया जायेगा जिसे उसे यात्रा के दौरान पीना पड़ेगा। यह



शराब अच्छी और शुद्ध होगी जिससे कि विचार भी शुद्ध रहें और अच्छे और ऊँचे विचार जागें। उसने अपने जीवन में जो नहीं देखा और महसूस किया है, वह उसे इस यात्रा में दिखता और महसूस होता है। और तब उसके भीतर सज़ा के रूप में एक ऐसा 'कुतरने वाला कीड़ा' आता है जो कभी नहीं मरता। यदि गिलासों पर 'विस्मृति' लिखा होता है तो पीपों पर 'स्मृति' लिखा होता है।

जब मैं कोई अच्छी किताब पढ़ता हूँ, कोई ऐतिहासिक किताब, तो मैं हमेशा उस पढ़ी हुई किताब के काव्य-सौन्दर्य के बारे में सोचता हूँ। मैं मृत्यु की बस के बारे में सोचता हूँ और यह विचार करता हूँ कि नायक के किस काम को मृत्यु उसके साथ रखेगी और यात्रा में उसे क्या दिया जायेगा एक बार की बात है। एक फ्रांसीसी राजा था—मुझे उसका नाम याद नहीं आ रहा क्योंकि अच्छे लोगों के नाम लोग कई बार भूल जाते हैं, यहाँ तक कि मैं भी भूल जाता हूँ। लेकिन किसी दिन मुझे वह याद आयेगा। तो एक बार वह राजा अकाल के समय अपनी जनता का संरक्षक बन गया और उसकी जनता ने बर्फ़ से उसका स्मारक बनाया और उस पर लिखा, "यह जितनी जल्दी पिघलता है उससे भी जल्दी तुमने हमारी सहायता की !"

मैं कल्पना करता हूँ कि मृत्यु ने इस स्मारक को देखकर उसे एक बर्फ़ का ऐसा टुकड़ा दिया होगा, जो कभी नहीं पिघलता है। अमरता के देश में यह टुकड़ा उसके राजसी मुकुट के पास सफ़ेद तितली-सा उड़ा। इसी तरह एक समय में लुई ग्यारहवाँ भी था। मुझे उसका नाम याद है क्योंकि बुरा हमेशा याद रहता है—उसकी एक ख़ास बात मुझे हमेशा याद आती है और मेरी इच्छा होती है कि कोई कहे कि यह कहानी सही नहीं है। उसने अपने एक पदाधिकारी को प्राणदण्ड दिया। वह उसे प्राणदण्ड दे सकता था चाहे वह ग़लत हो या सही। लेकिन उसके पास उस अधिकारी के दो बच्चे भी थे, एक सात और दूसरा आठ साल का जिन्हें उसने फाँसी के तख़्ते के नीचे खड़ा करवा दिया जिससे उनके पिता के खून के छींटे उन पर पड़ें। उसके बाद उसने उन्हें बेस्टिले नामक स्थान पर भेजकर लोहे के पिंजरे में बन्द करवा दिया जहाँ उन्हें ठण्ड से बचने को एक चादर भी नहीं दी गयी। राजा लुई वहाँ हर हफ़्ते अपने जल्लाद को भेजकर उनका एक-एक दाँत उखड़वाता, जिससे उन्हें तकलीफ़ हो। इस पर बड़ा लड़का बोला, "मेरी माँ मेरे छोटे भाई की तकलीफ़ सुनकर दुख से मर ही जायेगी। इसीलिए उसे छोड़कर मेरे ही दो दाँत उखाड़ लो।"

जल्लाद की आँखों में आँसू आ गये। लेकिन राजा की इच्छाशक्ति उन आँसुओं से भी बड़ी थी। हर हफ़्ते चाँदी की तश्तरी में रखकर उसके सामने

दो नन्हें दाँत लाये जाते। लुई की माँग यही थी और उसकी माँग पूरी होती थी। मैं कल्पना करता हूँ कि मृत्यु इन्हीं दो नन्हें दाँतों को जीवन के बैंक से ले गयी होगी और लुई ग्यारहवें को अमरता के देश में अपने साथ ले जाने को दिए होंगे। वे दाँत उसके आगे आग की दो लपटों की तरह उड़े। फिर वे नन्हें दाँत चमके, जले और उन्होंने उसे काट लिया।

हाँ, यह एक गम्भीर यात्रा है। एक लेखक की रचनाओं के महान गतिशील दिनों की यात्रा। और इस यात्रा पर कब जाना चाहिए ? यह भी गम्भीर विषय है। किसी दिन, किसी घण्टे, किसी मिनट की वह रचना की वह प्रक्रिया शुरू हो सकती है। पता नहीं हमारे कौन-से काम, मृत्यु हमें यात्रा पर जाते समय बैंक से निकालकर देगी ? चलिये हम उस गतिशील दिन की बात सोचें जो कैलेण्डर में नहीं दिखाया गया है।

25

कुत्ते वाली गुल्लक

एक खिलौनाघर में बहुत-से खिलौने इधर-उधर पड़े थे। बहुत ऊपर, कपड़ों वाली अलमारी में एक गुल्लक पड़ी थी जो मिट्टी की बनी थी और कुम्हार से ख़रीदी गयी थी। इसका आकार कुत्ते जैसा था। उसकी पीठ में एक छेद था जिसे चाकू से उतना बड़ा कर दिया गया था कि उससे बड़े-बड़े सिक्के अन्दर डाले जा सकते थे। वास्तव में उसमें कुछ सिक्कों के साथ दो बड़े नोट डाले भी जा चुके थे। वह इतना भर चुकी थी कि उसमें से अब खनखनाहट भी नहीं होती थी और किसी भी गुल्लक की यह सर्वोत्तम स्थिति होती है। वह कपड़ों की अलमारी के ऊपर ऊँचे बैठकर कमरे की सभी चीज़ों को देख रही थी। उसे अच्छी तरह मालूम था कि उसके पेट में जितने पैसे हैं उनसे ये सारे खिलौने ख़रीदे जा सकते हैं और इसी को हम आत्माभिमान या अहंकार कहते हैं।

औरों ने भी यह सोचा, हालाँकि उन्होंने इस बारे में बात नहीं की क्योंकि बात करने के लिए और भी चीज़ें थीं। एक आधी खुली दराज़ में एक सुन्दर गुड़िया पड़ी थी, हालाँकि वह थोड़ी पुरानी भी थी और उसकी गर्दन भी टूटी हुई थी। वह बाहर झाँककर बोली, "अब हम आदमियों और औरतों जैसा खेल खेलेंगे क्योंकि उसमें ही बड़ा मज़ा आता है।"

इस पर एक ज़ोरदार आवाज़ हुई और यहाँ तक कि दीवार पर टँगे चित्र भी घूमकर अपनी पीठ दिखाने लगे, लेकिन वे ऐसा इस सुझाव का विरोध करने के लिए नहीं कर रहे थे।

रात काफ़ी बीत चुकी थी। खिड़की से चाँदनी आ रही थी। यह सबसे सस्ती रोशनी थी। खेल अब शुरू होने वाला था और सभी, यहाँ तक कि बच्चे को घुमाने वाली गाड़ी को भी, जो कि पूरी तरह खिलौनों में नहीं गिनी जाती थी, खेल में हिस्सा लेने के लिए बुलाया गया था।

"सभी का अपना ख़ास मूल्य है।" बच्चा गाड़ी ने कहा, "हम सभी भद्रजन नहीं हो सकते। जैसा कि कहा जाता है, छोटे-मोटे काम करने वाला भी तो कोई होना चाहिए।"

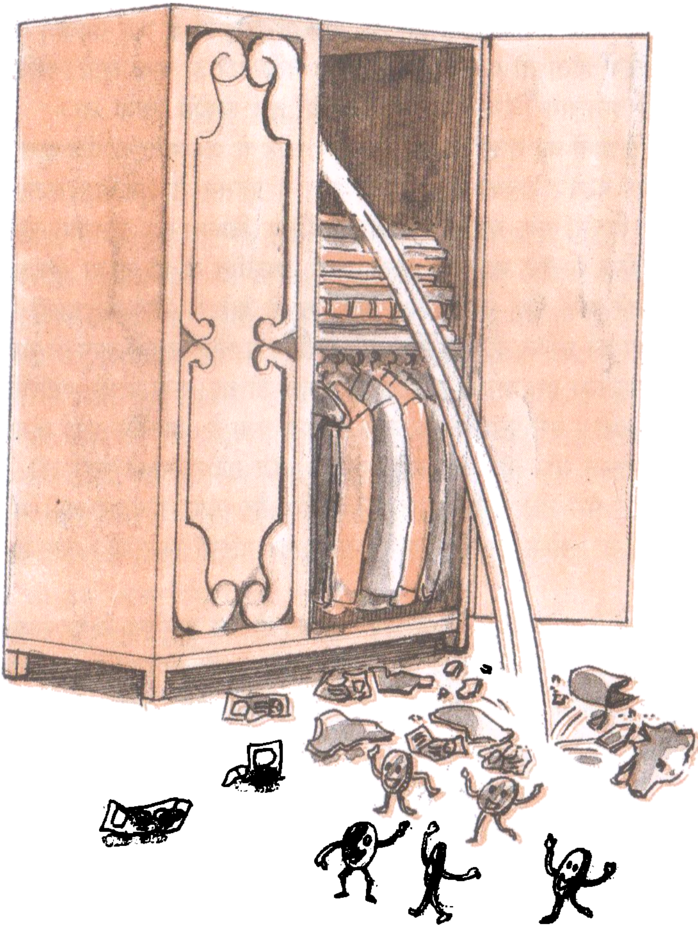
केवल गुल्लक को लिखा हुआ निमंत्रण मिला था क्योंकि वह ऊँची जगह पर थी और सबको डर था कि केवल बोलकर बुलाने से वह आयेगी नहीं। वास्तव में न तो उसने जवाब दिया कि वह आयेगी और न ही वह आयी। यदि उसे हिस्सा लेना होता तो वह अपनी ही जगह बैठी-बैठी ही मज़ा लेती। लेकिन इसी तरह से इन्तज़ाम किया जाना चाहिए था, वह उन्होंने किया था।

खिलौनों का नन्हा थियेटर अब इस तरह से जम गया था कि कुत्ता अपनी जगह पर बैठकर सबको देख सकता था। वे प्रहसन से शुरूआत करना चाहते थे और बाद में एक चाय पार्टी और मानसिक विकास पर बातचीत होने वाली थी। लेकिन उन्होंने मानसिक विकास पर बातचीत से ही तुरन्त शुरुआत कर दी। झूलने वाले घोड़े ने प्रशिक्षण और रेस के बारे में और बच्चागाड़ी ने रेलवे और भाप की शक्ति क़े बारे में बताया क्योंकि ये चीज़ें उनके काम से सम्बन्धित थीं और उनका इस बारे में बातें करना उचित ही था। घड़ी बोली, 'पॉलिटिक्स–टिक्स-टिक्स।' उसे पता था कि अभी कितना बजा है। हालाँकि कोई फुसफुसाया कि वह ग़लत थी। बाँस की छड़ी कठोरता और गर्व के साथ खड़ी रही, क्योंकि उसे अपने पैरों तले लगी पीतल की पुल्ली और ऊपर मूठ पर लगी चाँदी पर बड़ा गर्व था। सोफ़े पर दो बनायी गयी सुन्दर गद्दियाँ रखी थीं। अब खेल शुरू हुआ।

सब बैठ गये और देखने लगे। दर्शकों से यह अनुरोध किया गया कि वे ख़ुश होने पर तालियाँ बजायें और ख़ुशी ज़ाहिर करें। लेकिन चाबुक़ बोला कि वह बूढ़े लोगों के लिए कभी नहीं ख़ुश हुआ। वह केवल युवा और अविवाहित लोगों के लिए ही ख़ुश होता है।

"मैं सबके लिए ख़ुश होता हूँ।" पटाख़े ने कहा।

और सब इसी तरह के विचार व्यक्त करते रहे। और नाटक चलता रहा। नाटक बेकार था, लेकिन सबने उसे अच्छे से खेला था। सभी ने अपना रँगा हुआ हिस्सा दर्शकों की तरफ़ किया हुआ था क्योंकि उन्हें ऐसा ही बनाया गया था कि उन्हें उसी तरफ़ से देखा जा सके, दूसरी तरफ़ से नहीं। सभी ने अच्छा काम किया और लैम्प की रोशनी से काफ़ी दूर चले गये क्योंकि तार भी थोड़े लम्बे ही थे। रफ़ू की हुई गुड़िया इतनी थकी हुई और उत्तेजित थी कि उसकी गर्दन रफ़ू की हुई जगह से फट ही गयी। कुत्ता-गुल्लक यह देखकर इतनी ख़ुश



हुई कि उसने तय किया कि वह किसी एक अभिनेता के लिए कुछ करेगी और अपनी वसीयत में लिखेगी कि उसे उसके साथ परिवार की तिजोरी में दफ़ना दिया जाये।

यह सब सचमुच मज़ेदार था। इतना मज़ेदार कि उन्होंने चाय का विचार लगभग छोड़ ही दिया और ख़ाली मनोरंजन का ही विचार रखा। इसे ही वे आदमियों और औरतों की नक़ल वाला खेल कहते थे और इसमें कुछ ग़लत भी नहीं था क्योंकि वे केवल नाटक ही तो कर रहे थे। हर कोई अपने बारे में सोच रहा था और इस बारे में कि कुत्ता-गुल्लक क्या सोच रही होगी ? कुत्ता-गुल्लक सबसे आगे सोच रही थी क्योंकि वह अपनी वसीयत और अपने आपको दफ़नाने के बारे में सोच रही थी। और यह कब हो सकता था ? निश्चय ही उम्मीद से भी बहुत पहले।

धड़ाक ! और तभी वह अलमारी से नीचे ज़मीन पर गिर पड़ी—और टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गयी। उसके सारे सिक्के बाहर निकलकर मसख़रों जैसे नाचने लगे। छोटे सिक्के गोल-गोल घूमने लगे और बड़े लुढ़ककर दूर चले गये, ख़ास तौर पर एक बड़ा चाँदी का सिक्का जो बाहर निकलकर दुनिया देखना चाहता था। वह दुनिया में बाहर आया और बाक़ी सब भी बाहर आये।

गुल्लक के टुकड़े कचरे के डिब्बे में डाल दिये गये, लेकिन अगले दिन अलमारी पर एक नयी कुत्ते वाली गुल्लक रखी थी। उसके पेट में अभी एक पैसा भी नहीं था इसलिए वह खनखना नहीं सकती थी। और यहीं से बात इसमें पहले वाली कुत्ता-गुल्लक जैसी थी। यहीं से उसकी शुरूआत हुई थी—और हम यहीं पर कहानी ख़त्म करते हैं।

26

पानी की बूँद

तुम्हें पता ही होगा कि 'आतिशी शीशा' (मैग्नीफ़ाइंग ग्लास) क्या होता है—यह वह गोल काँच होता हैं जिससे चीज़ों को कई गुना बड़ा करके देखा जा सकता है। अगर कोई इसे लेकर किसी गड्ढे के पानी की एक बूँद को देखे, तो उसे हज़ारों अद्भुत जीव-जन्तु दिखायी पड़ेंगे जो कि वैसे पानी में कभी दिखायी नहीं पड़ते। लेकिन वे वहाँ होते हैं इसमें कोई सन्देह नहीं है। इसे देखकर क़रीब-क़रीब ऐसा लगता है कि एक प्लेट में बहुत सारी मकड़ियाँ उछल-कूद कर रही हों। और वे कितनी शक्तिशाली हैं। वे एक दूसरे के हाथ, पैर और शरीर आगे-पीछे से तोड़े दे रही हैं और फिर भी वे ख़ुश हैं।

किसी समय एक आदमी था, जिसका नाम क्रिबल-क्रैबल था। वह हमेशा हर काम को सबसे अच्छे तरीक़े से करना चाहता था और जब नहीं कर पाता था तो उसके लिए जादू का प्रयोग करता था।

एक दिन वह बैठा था और उसने अपना आतिशी-शीशा (मैग्नीफ़ाइंग ग्लास) अपनी आँखों के पास पकड़ रखा था। उसने ग्लास से पानी की बूँद को देखा जो गड्ढे के पास के कीचड़ से आयी थी। लेकिन उसमें कितनी खलबली मची हुई थी ! उसमें हज़ारों छोटे-छोटे जीव-जन्तु उछल-कूद कर रहे थे, एक-दूसरे को खींच रहे थे और खा रहे थे।

"कितना भयानक है !" बूढ़े क्रिबल-क्रैबल ने कहा, "क्या कोई इन्हें शान्ति से रहने और अपने काम से काम रखने के लिए नहीं कह सकता ?"

उसने इस बारे में बार-बार सोचा लेकिन कोई हल नहीं निकला और हारकर उसे जादू का प्रयोग करना पड़ा।

"मैं उन्हें रंगीन बना देता हूँ, जिससे उन्हें सादी आँखों से भी देखा जा सके।" उसने कहा और लाल शरबत जैसी चीज़ की बूँद पानी में डाली। यह



वास्तव में चुड़ैल के कानों का ख़ून था और नौ रुपये में एक बूँद मिलता था। और अब नन्हें जीव लगभग गुलाबी लग रहे थे। जैसे वह नंगे जंगली आदमियों का शहर हो।

"तुम्हारे पास क्या है ?" वहाँ बैठे दूसरे बूढ़े जादूगर ने पूछा। जिसका कोई नाम नहीं था और यही उसके लिए सबसे बड़ी बात थी।

"यदि तुम अन्दाज़ लगा सकते हो तो मैं तुम्हें यह भेंट कर दूँगा।"

लेकिन यदि किसी को पता न हो तो उसका अन्दाज़ा लगाना बहुत ही कठिन था।

तब जिस जादूगर का कोई नाम नहीं था उसने इस आतिशी शीशे से देखा। उसे सचमुच एक बड़ा शहर दिख रहा था जिसमें सारे लोग दौड़ रहे थे लेकिन बिना कपड़े पहने हुए। बड़ा भयानक दृश्य था। उसे देखना तो और भी भयानक था कि किस तरीक़े से वे एक दूसरे को धकेल और खींच रहे थे, काट और नोच रहे थे। जो ऊपर थे, उन्हें नीचे धकेला जा रहा था और नीचे वाले ऊपर आने की कोशिश कर रहे थे।

"देखो ! देखो ! उसका पैर मुझसे बड़ा है ! वाह ! दूर हटो ! अरे इसके तो छोटा-सा घाव है। वह उसे घायल कर रहा है। और अभी और ज़्यादा घायल करेगा।"

और वे सचमुच उस पर टूट पड़े। उसे खींचा और खा गये क्योंकि वह घायल था। दूसरी ओर एक कीड़ा नन्हीं बच्ची की तरह स्थिर बैठा था और शान्ति की प्रार्थना कर रहा था। लेकिन उसे भी बाहर आना पड़ा। उन्होंने उसे खींचा और खा गये।

"यह सब तो बड़ा अज़ीबोगरीब है !" जादूगर ने कहा।

"हाँ, लेकिन इसके बारे में तुम क्या सोचते हो ?" क्रिबल-क्रैबल ने कहा।

"क्या तुम कुछ समझ सके।"

"क्यों, यह तो कोई भी आसानी से समझ सकता है।" दूसरे ने कहा, "यह पेरिस या कोई और बड़ा शहर हो सकता है क्योंकि वहाँ के लोग भी तो इन लोगों जैसे दिखाई देते हैं। ज़रूर यह कोई बड़ा शहर है !"

"नहीं यह नाले के पानी की एक बूँद है।" क्रिबल-क्रैबल ने कहा और हँसने लगा। "इन्सानों के किसी शहर और पानी की बूँद के इस जन्तु-जगत के लोगों में भला क्या फ़र्क है ?"

27

आकाश की एक पंखुड़ी

बहुत ऊपर स्वच्छ नीले आकाश में एक देवदूत स्वर्ग के बग़ीचे का एक फूल लेकर उड़ रहा था। जब वह फूल को चूम रहा था तो एक बहुत छोटी-सी पंखुड़ी टूटकर जंगल के बीच मुलायम मिट्टी में गिर पड़ी और तुरन्त ही उसमें जड़ आ गयी, वह उग गयी और उसकी शाखाएँ आसपास के पेड़ों के बीच फैल गयीं।

"यह मज़ेदार-सा पौधा है।" बाक़ी पौधों ने कहा। लेकिन कलश वाले पौधे और काँटे वाले नेटल के पौधे ने उस अनोखे पौधे को पहचाना ही नहीं।

"इसी बग़ीचे का यह कोई पौधा होगा।" उन्होंने कहा। उन्होंने उसे घूरा और फिर जैसे वह बग़ीचे के बाहर की कोई चीज़ हो, उस तरह उसका तिरस्कार किया।

"तुम कहाँ से आ रहे हो ? बड़े कलश वाले पौधे ने चिल्लाकर पूछा, जिसके पत्तों पर काँटे थे। "तुम फैलते जा रहे हो। यह सब बकवास है—हम यहाँ तुम्हें शरण देने के लिए नहीं हैं।" वे बड़बड़ाये।

सर्दियाँ आ गयीं और पौधों पर बर्फ़ पड़ गयी। लेकिन उस अनोखे पौधे के कारण उस बर्फ़ में भी ऐसी चमक आ गयी थी जैसे कि उसके ऊपर के साथ-साथ भीतर भी सूरज चमक रहा हो। जब बसन्त ऋतु आयी तो पौधे पर फूल आये और वह जंगल के सारे पौधों से सुन्दर दीखनें लगा।

इसी समय वनस्पति शास्त्र का एक प्रोफ़ेसर वहाँ आया जो पौधे के बारे में साफ़-साफ़ बता सकता था। उसने उस पौधे को देखा, उसकी जाँच की। लेकिन उसने यह पाया कि वह उसके वनस्पति शास्त्र के ज्ञान से बाहर है। शायद वह यह नहीं जान पाया कि पौधा किस वर्ग का है।

"यह कोई छोटी प्रजाति होगी।" उसने कहा, "मैं इसके बारे में नहीं जानता। यह किसी वर्ग में शामिल नहीं है।"

"किसी वर्ग में शामिल नहीं है ?" कलश और नैटल ने दोहराया। आस-पास के बड़े-बड़े वृक्षों ने यह देखा और सुना लेकिन वे कुछ नहीं बोले, न अच्छा, न बुरा जो कि बेवकूफ़ लोगों के लिए सबसे समझदारी की बात होती है।

तब जंगल में एक दिन एक मासूम लड़की आयी। उसका दिल साफ़ था, और उसकी समझ भी बढ़ी हुई थी। उसकी पूरी विरासत एक पुरानी बाइबिल थी, जिसके पन्नों के बीच में एक आवाज़ उससे बोली, "यदि लोग हमारा बुरा करने की कोशिश करें तो याद रखो कि जोसेफ़ के बारे में क्या कहा गया था। वे बुराई की सोचते हैं लेकिन ईश्वर उसे अच्छाई में बदल देता है। यदि हम अपनी ग़लती के कारण कष्ट भोगते हैं—यदि हमें ग़लत समझा जाता है और हमारा तिरस्कार किया जाता है—तो हम 'उसके' शब्द याद कर सकते हैं जो अपने आप में ईमानदारी और अच्छाई है और जिसने स्वयं को कीलों से सूली पर चढ़ानेवालों को माफ़ किया और उनके लिए प्रार्थना की।"

लड़की उस अनोखे पौधे के सामने चुपचाप खड़ी रही जिसकी बड़ी पत्तियों से मधुर और तरोताज़ा करने वाली सुगन्ध आ रही थी और जिसके फूल सूरज की रोशनी में रंगीन आग की तरह चमकते थे। हर फूल में से एक आवाज़ आ रही थी, जैसे कि उसमें संगीत का ऐसा स्रोत छिपा हो जो हज़ारों सालों में भी ख़त्म न होगा। एक विनम्र आभार के साथ लड़की ने 'रचयिता' की सृष्टि को देखा और पेड़ ने अपनी एक शाख़ लड़की की तरफ़ बढ़ा दी और लड़की के दिल में एक प्रकाश पैदा हुआ। उसके दिल को अच्छा लगा और वह ख़ुशी से एक फूल तोड़ने ही वाली थी, लेकिन वह तय नहीं कर पायी कि उसे फूल तोड़ना चाहिए या नहीं—क्योंकि फूल तोड़ने पर वह तुरन्त मुरझा जाता। इसीलिए लड़की ने केवल एक पंखुड़ी तोड़ी और उसे घर पर अपनी बाइबिल में रख दिया। वह वहाँ ताज़ी, हरी और बिना मुरझाई रखी है। बाइबिल के पन्नों में वह पड़ी रही और जब कई हफ़्ते बाद लड़की को उसके ताबूत में रखा गया तो बाइबिल को उसके सिर के नीचे रख दिया गया। लड़की के चेहरे पर मृत्यु की अलौकिक शान्ति थी, जैसे कि भौतिक जगत के सत्य, 'परमात्मा' के सामने खड़े होने पर उसके शरीर पर प्रकट हो उठे हों।

लेकिन वह अनोखा पौधा अभी भी जंगल में लगा रहा। वह अब एक ऊँचा पेड़ था और सभी चिड़ियाँ उस पर बैठती थीं।

"वह विदेशी अब घमण्ड दिखा रहा है।" कलश और बर्शेक बोले, "हमने कभी ऐसा नहीं किया।"

और फूल पर काले पौधों ने सचमुच थूक दिया।



इसके बाद सुअर चराने वाला आया जो कलश और दूसरे पौधों को जलाकर राख बनाने के लिए इकट्ठा कर रहा था। वह पौधा उसकी पोटली में रखा गया।

"यह बहुत उपयोगी होगा।" उसने कहा और ऐसा ही किया। जल्दी ही देश के राजा को उदास रहने की बीमारी हो गयी। वह बहुत मेहनती था और व्यस्त रहता था लेकिन इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। उन्होंने उसे पहले ज्ञान की, फिर हल्की-फुल्की और फिर मनोरंजन की हर तरह की किताबें पढ़कर सुनायीं, लेकिन कोई अन्तर न पड़ा। इसके बाद एक बहुत विद्वान आदमी ने, जिसे उन्होंने बुलवाया था, अपने सन्देशवाहक से कहलवाया कि राजा का इलाज़ करने का एक उपाय है। वह बोला,

"राजा के अपने देश के जंगल में स्वर्ग का एक पौधा उगा है। वह ऐसा-ऐसा दिखता है। उसे पहचानने में कोई भूल न होने पाये।"

"मुझे लगता है कि यह मेरी पोटली में था और बहुत पहले जलकर राख बन गया था।" सुअर चराने वाला बोला, "लेकिन मैं उसकी अच्छाइयों से बेख़बर था।"

"तुम अज्ञानी थे ! अज्ञानी से भी बड़े अज्ञानी।" और ये शब्द सुअर चराने वाले ने सुने क्योंकि वे उसके लिए ही कहे गये थे और किसी के लिए नहीं।

उस पौधे की अब कोई और पंखुड़ी नहीं मिल सकती थी सिवाय मृत लड़की के ताबूत के, लेकिन उसके बारे में कोई नहीं जानता था।

राजा बेचैन होकर ख़ुद जंगल में भटकने लगा।

"यहाँ वह पौधा था !" वह बोला, "यही वह पवित्र जगह है।" उस जगह के आसपास सोने की बाड़ लगायी गयी और वहाँ एक सिपाही तैनात किया गया।

वनस्पति शास्त्र के प्रोफ़ेसर ने उस अलौकिक पौधे पर एक बड़ा निबन्ध लिखा। इसके लिए उसका सब जगह सम्मान किया गया और सम्मान उसे और उसके परिवार को खूब फला। वास्तव में कहानी का यही सबसे अच्छा हिस्सा है। लेकिन राजा उसी तरह दुखी और उदास रहा जैसा पहले था—कम-से-कम सिपाही ने तो यही कहा।

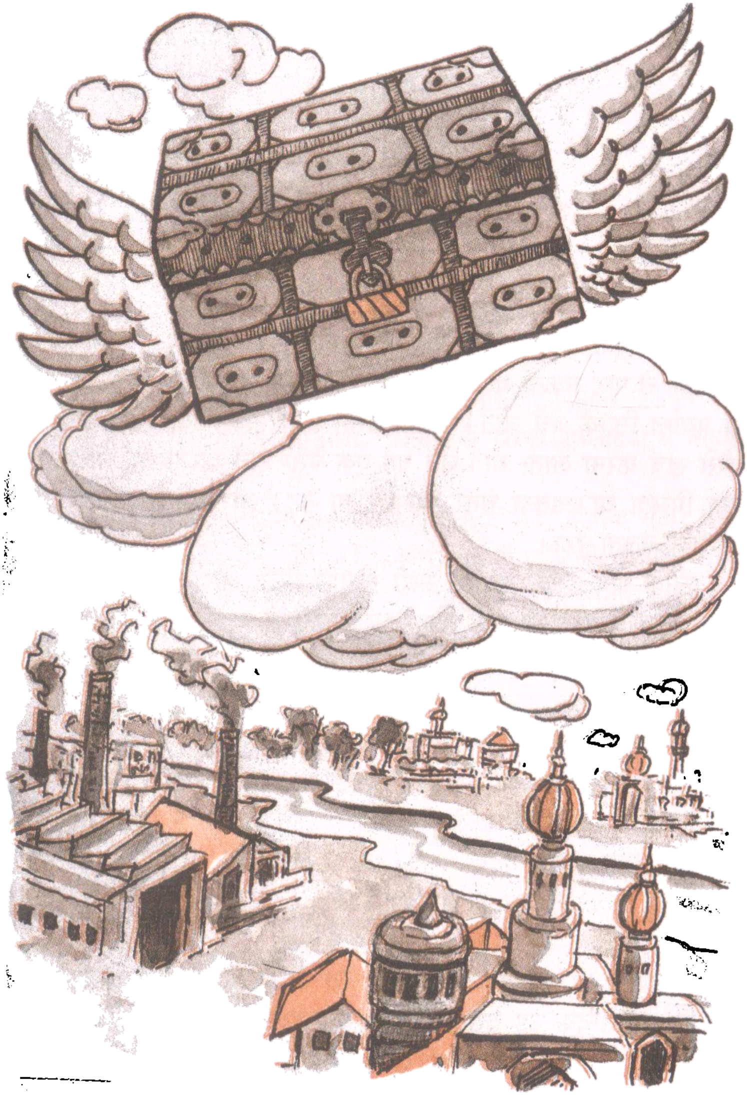
28

उड़ने वाला सन्दूक़

एक समय में एक व्यापारी था, जो इतना अमीर था कि वह पूरी सड़क को सोने के सिक्कों से पाट सकता था और उसके बाद भी एक छोटी गली के लिए उसके पास पर्याप्त सिक्के बच जाते। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसे दूसरी तरह से पैसे ख़र्च करना आता था। जब वह एक पैसा ख़र्च करता था, तो उसे एक रुपया मिलता था। इतना चतुर व्यापारी था वह। और यह सिलसिला उसकी मृत्यु तक चलता रहा।

उसके बाद उसके बेटे को सारी सम्पत्ति मिली और वह हँसी-ख़ुशी रहा। वह हर शाम नृत्य समारोह में जाता था। नोटों से पतंगें बनाकर उड़ाता और कंकड़ों की जगह सोने के टुकड़ों से समुद्र-तट पर बतख़ों के साथ खेलता था। इस तरह से तो पैसे जल्द ही ख़त्म हो जाने थे और ऐसा ही हुआ। आख़िर में उसके पास केवल चार सिक्के, एक जोड़ी चप्पलें और एक पुराना ड्रेसिंग-गाउन बचा। अब उसके दोस्त भी उसकी चिन्ता नहीं करते थे क्योंकि अब वे उसके साथ सड़क पर नहीं चल सकते थे। लेकिन उनमें से एक ने जो अच्छे स्वभाव का था, उसे एक पुराना सन्दूक़ भेजा, जिस पर लिखा था "भर दो !" यह सन्दूक़ था तो बहुत अच्छा, लेकिन उसके पास उसमें भरने को कुछ भी नहीं था इसलिए वह ख़ुद ही सन्दूक़ में बैठ गया।

यह बहुत ही बढ़िया सन्दूक़ था। जैसे ही किसी ने बाहर से ताला बन्द किया कि वह सन्दूक़ उड़ चला। हुर्र ! सन्दूक़ उसे लेकर चिमनियों और बादलों के ऊपर से दूर, बहुत दूर उड़ चला। लेकिन जैसे ही सन्दूक़ के नीचे एक छोटी-सी दरार हुई उसे डर लगा कि वह टूट ही जायेगा और उसने एक बड़ी गुलाटी खायी। इस तरह वह तुर्किस्तान में आ गया। उसने सन्दूक को जंगल में सूखी पत्तियों के नीचे छुपा दिया और शहर में चला गया। वह उन लोगों में आराम से घुलमिल



गया था क्योंकि सभी तुर्क उसी की तरह ड्रेसिंग-गाउन और चप्पलें पहने हुए थे। यहाँ उसे एक नन्हें बच्चे के साथ एक आया मिली।

''ओ तुर्क़ी आया।'' उसने कहा, ''शहर के पास वह विशाल महल कैसा है जिसकी खिड़कियाँ इतनी ऊँची-ऊँची हैं ?''

''वहाँ सुल्तान की लड़की रहती है।'' उसने जवाब दिया, ''उसके बारे में यह भविष्यवाणी की गयी है कि वह अपने प्रेमी के कारण बहुत दुख झेलेगी। इसीलिए जब तक सुल्तान और सुल्ताना सामने नहीं होते, कोई उससे नहीं मिल सकता।''

''धन्यवाद !'' व्यापारी के बेटे ने कहा। और वह जंगल में चला गया। वहाँ वह सन्दूक़ में बैठ गया और महल की छत पर से उड़ते हुए खिड़की से राजकुमारी के सोने के कमरे में घुस गया।

वह सोफ़े पर लेटी सो रही थी। वह इतनी सुन्दर थी कि व्यापारी का बेटा उसे चूमे बिना न रह सका। वह जाग गयी और भौंचक्की रह गयी। लेकिन उसने कहा कि वह एक तुर्क़ी देवदूत है जो उसके पास हवा में से नीचे उतरा है। यह बात राजकुमारी को जँच गयी।

वे आसपास बैठ गये और वह उसे उसकी आँखों के बारे में कहानियाँ सुनाने लगा। उसने कहा कि उसकी आँखें सबसे सुन्दर काली झीलें हैं, जिनमें विचार जलपरियों की तरह तैर रहे हैं। उसके माथे के बारे में उसने कहा कि वह एक बर्फ़ीला पहाड़ है जिस पर सुन्दर चित्र हैं। उसने उसे उस बलॉक चिड़िया के बारे में भी बताया जो प्यारे नन्हें बच्चों को लाती है।

हाँ, वे सिर्फ़ प्यारी-प्यारी कहानियाँ थीं। फिर उसने राजकुमारी से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी ? और राजकुमारी ने सीधे ही ''हाँ'' कह दिया।

''लेकिन तुम्हें यहाँ शनिवार को आना पड़ेगा।'' उसने कहा। ''उस समय सुल्तान और सुल्ताना यहाँ चाय पी रहे होंगे। उन्हें बहुत गर्व होगा कि मैं एक तुर्की देवदूत से शादी करूँगी। लेकिन ध्यान रखना कि तुम्हें एक सुन्दर कहानी आती हो, क्योंकि मेरे माता-पिता को कहानियाँ बेहद पसन्द हैं। मेरी माँ को ऊँचे आदर्शों वाली और शिक्षाप्रद कहानियाँ पसन्द हैं लेकिन मेरे पिता हँसी-मज़ाक़ की मनोरंजक कहानियाँ पसन्द करते हैं।''

''ठीक है, मैं कहानी का कोई तोहफ़ा नहीं बल्कि एक कहानी लेकर आऊँगा।'' उसने कहा और चला गया लेकिन राजकुमारी ने उसे एक राजदण्ड और सोने के तारों से कढ़ी हुई एक चादर दी। ये चीज़ें उसके लिए बहुत काम की थीं।

वह उड़ गया। उसने एक नया ड्रेसिंग गाउन ख़रीदा, जंगल में बैठकर एक कहानी बनायी। कहानी शनिवार तक तैयार हो जानी थी और यह आसान नहीं था।

जब तक कहानी तैयार हुई शनिवार आ गया। सुल्तान, सुल्ताना और सभी दरबारी राजकुमारी के घर चाय पर आये। व्यापारी के बेटे का बहुत भव्य स्वागत हुआ।

"क्या तुम हमें एक कहानी सुनाओगे ?" सुल्ताना ने कहा, "ऐसी जो कि गम्भीर और जानकारियों से भरी हो।"

"हाँ, लेकिन ऐसी भी जिस पर हम हँस सकें।" सुल्तान बोला।

"बिल्कुल।" उसने कहा और कहानी शुरू हो गयी। और सब लोग ध्यान से सुनने लगे।

"एक बार एक माचिसों का बण्डल था। इन माचिसों को अपने ऊँचे ख़ानदान पर बहुत घमण्ड था। उनका वंश वृक्ष एक विशाल चीड़ का पेड़ था जिसका वे मामूली-सा टुकड़ा थीं। वह जंगल का एक बहुत पुराना पेड़ था। माचिसें अभी एक चक़मक़ डिबिया और एक पुराने लोहे के बर्तन के बीच पड़ी थीं। और अपनी युवावस्था के दिनों के बारे में बता रही थीं।"

"जब हम हरी शाख़ों पर थीं।" उन्होंने कहा, "तब हमारे दिन सचमुच ही बड़े सुहावने थे। हर सुबह और शांम हमारे लिए हीरे की चाय आती थी, हीरे से हमारा मतलब है ओस की बूँदे। हमारे पास पूरे दिन भर सूरज की रोशनी रहती थी और सभी नन्हीं चिड़ियाँ कहानी सुनाती थीं। हमें पता था कि हम बहुत अमीर हैं क्योंकि बाक़ी पेड़ केवल गर्मियों में कपड़े पहनते थे, जबकि हमारे पास सर्दियों में भी हरे कपड़े पहनने के साधन थे। लेकिन तभी एक दिन एक लकड़हारा तूफ़ान की तरह आया और हमारा पूरा परिवार बिखर गया। हमारे परिवार का मुखिया एक प्रथम-श्रेणी के जहाज़ का मुख्य मस्तूल बना दिया गया, जो ज़रूरत पड़ने पर दुनिया की सैर कर सकता था। दूसरी शाखाएँ दूसरी जगहों पर गयीं, और हम यहाँ भद्दे लोगों के लिए रोशनी जलाने का काम कर रहे हैं। और इस तरह हम बड़े लोग रसोई तक आ गये।"

"मेरा भाग्य दूसरी तरह का था।" माचिस के पास खड़े लोहे के बर्तन ने कहा, "शुरू से ही, जब मैं इस दुनिया में आया, मेरे भीतर बहुत-सी चीज़ें पकाई जाने लगीं। मैं काम-काज की चीज़ें देखता हूँ और इस घर में पहले-पहल आया था। रात के खाने के बाद साफ़-सुथरा होकर अपनी जगह पर बैठना और अपने साथियों से बात करना ही मेरा सबसे बड़ा आनन्द है। लेकिन पानी के

बर्तन के सिवाय, जिसे कभी-कभी नीचे आँगन में ले जाया जाता है, हम सभी इन्हीं चार दीवारों के भीतर ही रहते हैं। हमें केवल बाज़ार जाने वाली टोकरी ही ख़बरें लाकर देती है। लेकिन वह सरकार और लोगों के बारे में अज़ीब बातें करती है। हाँ, एक दिन एक पुराना बर्तन डरकर गिर पड़ा था और टूट गया था। वह बहुत उदार था—यह मैं दावे से कह सकता हूँ।" "अब तुम कुछ ज़्यादा ही बोल रहे हो।" चक़मक़ डिबिया ने बीच में टोका। तभी लोहा चक़मक़ पत्थर से चिपक गया और एक चिनगारी उड़ी। "क्यों न आज शाम हम कुछ मौज मज़ा करें ?" चक़मक़ डिबिया ने कहा।

"ठीक है, चलो हम सब देखें कि हममें कौन सबसे बड़ा है।" माचिस ने कहा।

"नहीं मैं अपने बारे में बात नहीं करना चाहता।" बर्तन ने मना किया। "शाम को हम एक मनोरंजन का कार्यक्रम रखें। मैं शुरू करूँगा। मैं वास्तविक ज़िन्दगी की एक कहानी सुनाऊँगा, ऐसी कहानी जो सबने अनुभव की हो, जिससे हम सभी उस स्थिति की कल्पना कर सकेंगे और मज़ा ले सकेंगे। बल्कि सागर के डेनिश तट पर।"

"यह अच्छी शुरुआत है !" सभी प्लेटें चिल्लायीं, "हमें ऐसी कहानी पसन्द आयेगी।"

"हाँ, मेरे साथ यह युवावस्था में हुआ, जब मैं एक अच्छे परिवार में रहता था। जहाँ कुर्सी-मेज़ें पॉलिश की जाती थीं, फ़र्श चमकाया जाता था और हर पखवाड़े के बाद नये पर्दे लगाये जाते थे।"—बर्तन ने कहा।

"तुम कितने रोचक तरीक़े से कहानी कह रहे हो !" क़ालीन साफ़ करने वाली झाड़ू बोली, "तुम्हारी कहानी सुन कर कोई भी कह सकता है जैसे कि कोई ऐसा आदमी बोल रहा है जिसे औरतों के समाज में रहने का अनुभव है। इस बात में बहुत सच्चाई है।"

और बर्तन अपनी कहानी सुनाता रहा। उसका अन्त भी उतना ही सुन्दर था जितनी की शुरुआत।

"सभी प्लेटें खुशी में खनखनायीं और क़ालीन साफ़ करने वाली झाड़ू कचरे की जगह से कुछ हरा धनिया ले आयी और बर्तन को माला की तरह पहना दिया। वह जानती थी कि ऐसा करके वह दूसरों से बदले में कुछ पा सकेगी। "यदि मैं आज इसे ताज पहनाऊँगी।" उसने सोचा, "तो यह मुझे कल ताज पहनायेगा।"

"मैं अब नाचूँगा।" चिमटा बोला और नाचने लगा। "हमें बचाओ। वह

एक पैर कैसे उठा सकता है ?'' कुर्सी का पुराना गद्दा चिल्लाया और फट गया !

''क्या मुझे भी ताज पहनाया जायेगा ?'' चिमटे ने सोचा और सचमुच उसे भी एक माला पहनायी गयी।

''ये बिल्कुल आम आदमी सरीखे है !'' माचिस ने सोचा।

अब चाय के बर्तन को गाना था। लेकिन उसने कहा कि उसे ठण्ड लग गयी है और जब तक उसमें कुछ उबाला नहीं जायेगा वह नहीं गा सकती। लेकिन यह केवल बहाना था, क्योंकि वह बड़े लोगों के सिवाय किसी और के सामने नहीं गाना चाहती थी।

खिड़की में पुरानी पंख वाली क़लम पड़ी थी जिससे अधिकतर नौकरानी लिखती थी। उसमें कोई ख़ास बात नहीं थी, सिवाय इसके कि उसे स्याही में गहरा डुबाया गया था। लेकिन उसे अपने आप पर कम घमण्ड था। ''यदि चाय की केतली नहीं गायेगी तो कोई बात नहीं।'' उसने कहा, ''बाहर पिंजरे में बैठी चिड़िया गा सकती है। हालाँकि उसने गाना कहीं सीखा नहीं है, लेकिन हम इस बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं देंगे।''

''मेरे ख़याल से यह एकदम ग़लत है।'' चाय की केतली ने कहा। वह रसोई में गाती थी और चाय के बर्तन की सौतेली बहन थी। वह बोली, ''उस अमीर और विदेशी चिड़िया का गाना सुनना ठीक नहीं है। क्या इसे आप देशभक्ति कहेंगे ?'' इसे तो बाज़ार जाने वाली टोकरी तय करेगी।''

''मैं दुखी हूँ।'' बाज़ार जाने वाली प्लास्टिक की टोकरी ने कहा, ''कोई नहीं जानता कि मुझे किस तरह गुपचुप तरीक़े से चिढ़ाया गया है। क्या यह शाम बिताने का ठीक तरीक़ा है ? क्या इसके बदले घर को ठीक-ठाक करना बेहतर नहीं होगा ? हरेक अपनी जगह पर चला जाये और मैं बाक़ी चीज़ें ठीक करती हूँ। यही करना एकदम ठीक रहेगा।''

''ठीक है हम कुछ अलग तरह का काम करते हैं।'' सब चिल्लाये। तभी दरवाज़ा खुला और नौकरानी अन्दर आयी और सब अपनी-अपनी जगह रुक गये। कोई हिला तक नहीं। लेकिन उनमें से कोई भी बर्तन ऐसा नहीं था जो कि न जानता हो कि वह क्या कर सकता था और वह कितना बड़ा था। ''हाँ, यदि मैं चाहता तो आज की शाम बहुत सुन्दर हो सकती थी।'' सभी सोच रहे थे।

नौकरानी ने माचिस ली और उससे आग जलायी। ''हे ईश्वर ! वह माचिस की तीली आग में किस तरह चटखती हुई जल गयी। ''अब सभी देख सकते हैं।'' माचिस की तीली ने सोचा, ''कि हम पहले नम्बर पर हैं। हम कैसे चमकती हैं। क्या रोशनी है—और वे जलकर ख़ाक हो गयीं।''

"यह बहुत अच्छी कहानी थी।" सुल्ताना ने कहा, "मैं रसोई में, माचिसों के पास पहुँच गयी थी। हाँ, आप अब हमारी लड़की से शादी कर सकते हैं।"

"बिल्कुल।" सुल्तान बोला, "आप हमारी लड़की से सोमवार को शादी कर सकते हैं।"

उन्होंने उसे 'आप' कहकर पुकारा क्योंकि वह भी अब उनके परिवार का सदस्य बनने वाला था।

शादी की तैयारियाँ शुरू हो गयीं और एक दिन पहले पूरा शहर रोशनी से जगमगा उठा। लोगों ने मिठाइयाँ बाँटीं। गलियों में लड़के नाचने लगे और सीटियाँ बजाते हुए...हुर्रा...चिल्लाने लगे। यह सब अनोखा और भव्य था।

"मुझे एक उत्सव मनाना चाहिए।" व्यापारी के बेटे ने सोचा। उसने रॉकेट, और हर तरह के पटाख़े ख़रीदकर अपने सन्दूक़ में रखे और उसमें बैठकर उड़ गया।

"फटाक !" वे किस तरह से फूटे और फूटते चले गये। सभी तुर्क़ यह देखकर ऐसे उछल पड़े कि उनकी चप्पलें उनके कानों तक उड़ने लगीं। इस तरह की आतिशबाज़ी उन्होंने कभी नहीं देखी थी। अब वे सचमुच मान गये कि कोई तुर्क़ी का देवदूत ही राजकुमारी से शादी करने वाला है।

लोगों ने क्या-क्या क़िस्से सुनाये ! जिससे भी किसी ने इसके बारे में बात की वह अलग ही बताता था, लेकिन सभी को वह पसन्द आया था।

"मैंने तुर्क़ी-देवदूत को स्वयं देखा है।" एक बोला, "उसकी आँखें चमकीले सितारे जैसी और दाढ़ी पानी के झाग जैसी है।"

"वह एक जलता हुआ चोग़ा पहनकर उड़ता है।" दूसरे ने कहा, "उसके चोग़े की परतों में से सबसे सुन्दर पंखों वाला बच्चा झाँक रहा था।"

सचमुच उसने बहुत मज़ेदार बातें सुनायीं और अगले दिन उसकी शादी होनी थी।

वह जंगल में अपने सन्दूक़ में आराम करने गया। लेकिन वहाँ क्या हुआ था ? आतिशबाज़ी की एक चिंगारी से उसमें आग लग गयी थी और सन्दूक़ जलकर राख हो गया था। अब वह और नहीं उड़ सकता था और अपनी दुल्हन के पास भी नहीं जा सकता था।

शहज़ादी पूरे समय छत पर खड़ी राह देखती रही और शायद वह अभी भी इन्तज़ार कर रही है। उधर व्यापारी का लड़का परीकथाएँ सुनाता हुआ पूरी दुनिया में भटक रहा है। लेकिन वे कहानियाँ इतनी सुन्दर नहीं हैं जैसी कि उसकी माचिस वाली कहानी थी।

29

एन-लिस्बेथ

एन-लिस्बेथ का रंग ऐसा था जैसे दूध में लाल रंग मिला हो। वह तरोताज़ा, युवा और हँसमुख थी। उसके दाँत चमकीले सफ़ेद और आँखें चमकीली थीं। नाचते समय उसके क़दम हल्के पड़ते थे। उसकी सोच भी बहुत सादी थी, लेकिन इस सबका क्या फ़ायदा था ? उसका बेटा एक बदसूरत लड़का था। हाँ, वह सुन्दर नहीं था, इसीलिए उसे एक नौकरानी पालती थी। एन-लिस्बेथ एक सामन्त के क़िले में रेशम और मख़मल से सजे सुन्दर कमरे में रहती थी। हवा भी उसे नहीं छू सकती थी। कोई भी उससे तेज़ शब्दों में नहीं बोल सकता था, क्योंकि वह सामन्त के बच्चे की आया थी जो कि एक राजकुमार की तरह गोरा और नाज़ुक और एक देवदूत की तरह सुन्दर था। वह बच्चे को बहुत प्यार करती थी। उसका खुद का बेटा नौकरानी के पास रहता था जहाँ अच्छा खाने को भी कुछ नहीं होता था। घर पर भी बच्चे की देखभाल करने वाला कोई नहीं होता था। वह रोता था, लेकिन उसे सुनने वाला कोई भी नहीं होता था। वह रोते-रोते थककर सो जाता था। नींद में भूख और प्यास किसी को नहीं परेशान करती। नींद भी क्या बढ़िया चीज़ है।

समय के साथ एन-लिस्बेथ का बेटा भी घास-फूस की तरह बढ़ता गया। लेकिन लोगों का मानना था कि अपनी उम्र के हिसाब से उसकी बढ़त कम थी। वह धीरे-धीरे उस परिवार का सदस्य ही बन गया, जिसमें वह रहता था। उस परिवार को उसके पालन-पोषण के लिए पैसे मिलते थे। एन-लिस्बेथ ने उसे हमेशा के लिए छुटकारा पा लिया था। वह एक शहरी औरत बन गयी थी और उसके पास एक आरामदायक घर था। घर से बाहर निकलने पर वह चेहरे पर हल्का-सा जालीदार नकाब डाल लिया करती थी। लेकिन वह उस नौकरानी के घर कभी भी नहीं गयी जिसका घर शहर से बहुत दूर था। वैसे भी वह वहाँ

नहीं जाना चाहती थी। लड़का नौकरानी का ही हो गया था और एन-लिस्बेथ का मानना था कि अब उसे अपनी जीविका खुद कमानी चाहिए इसीलिए उसने माट्ज की लाल गाय रख ली। धीरे-धीरे वह पशुओं की देखभाल करके अपनी जीविका कमाने लगी।

एक बड़ा कुत्ता, सामन्त के महल के आँगन के दरवाज़े पर धूप में 'कुत्ता घर' के ऊपर गर्व से बैठा रहता था और जहाँ से गुज़रने वाले हर व्यक्ति पर भौंकता रहता था। पानी बरसने पर वह वापस अपने घर में घुस जाता। जहाँ गर्मी से वह सूख जाता। एन-लिस्बेथ का बेटा धूप में बैठकर एक लकड़ी का टुकड़ा काटता रहता। बसन्त में उसे तीन स्ट्राबेरी के पौधों के बारे में मालूम था जिनमें फूल आ रहे थे और निश्चित ही फल भी आने वाले थे। यह उसकी शायद सबसे बड़ी इच्छा थी। लेकिन फल नहीं आये। वह ख़राब मौसम में बाहर बरसात में बैठा रहा और पूरी तरह भीग गया। बाद में ठण्डी हवा ने उसके कपड़े सुखा दिये। बाद में जब वह सामन्त के बाड़े में आया तो वह हड़बड़ाया हुआ था और खाँस रहा था क्योंकि वहाँ के लोगों की राय थी कि वह निहायत ही बदसूरत है। लेकिन उसे इन बातों की आदत हो गयी थी कि उसे कोई प्यार नहीं करता है !

एन-लिस्बेथ के बेटे के साथ यह सब बीता, और वह इससे बच भी कैसे सकता था ? यह तो उसकी किस्मत में ही लिखा था कि उसे कोई प्यार न करे।

अभी तक वह 'ज़मीन का केकड़ा' ही था और अब ज़मीन ने उसे पानी के जहाज़ पर फेंक दिया था। वह एक दयनीय जहाज़ पर समुद्र में गया और पतवार के पास बैठ गया, जबकि कप्तान शराब की टंकी के ऊपर बैठा था। वह गन्दा और बदसूरत था, आधा ठण्ड से जमा हुआ और आधा भूख से परेशान। कोई भी उसे देखकर कह सकता था कि उसे कभी भी पेट भर खाना नहीं मिला है और सचमुच बात भी ऐसी ही थी।

वे शरद के आख़िरी दिन थे। मौसम ख़राब, गीला और हवाओं वाला था। ठण्डी हवा मोटे-से-मोटे कपड़ों को भी चीर सकती थी, ख़ासतौर पर समुद्र पर। समुद्र पर एक टूटी-फूटी नाव जा रही थी जिस पर दो लोग बैठे हुए थे, बल्कि ठीक से कहा जाये तो केवल डेढ़ लोग बैठे थे—कप्तान और एन-लिस्बेथ का बेटा। दिन भर हल्का-सा धुँधलका छाया रहा था और अब अँधेरा हो गया था। भयानक सर्दी भी थी। कप्तान ने शरीर में गर्मी पहुँचाने के लिए एक घूँट पिया। बोतल और गिलास पुराने थे—गिलास ऊपर से तो ठीक था लेकिन नीचे से थोड़ा टूटा हुआ था जिसके कारण उसे एक लकड़ी के तराशे गये नीले रंग के टुकड़े



पर टिकाया गया था। "एक घूँट आराम के लिए ठीक है, लेकिन दो घूँट उससे भी बेहतर है।" कप्तान ने सोचा। लड़का पतवार के पास बैठा रहा और अपने कठोर, गठीले हाथों से उसे पकड़े रहा। वह बदसूरत था, उसके बाल चीकट थे और वह लँगड़ा और बौना-सा लग रहा था। वह नौकरानी का बेटा था—हालाँकि चर्च के रजिस्टर में उसका नाम एन-लिस्बेथ के बेटे के रूप में दर्ज था।

हवा पाल को काटकर अपनी राह बना रही थी और नाव समुद्र को काटकर। पतवार हवा से भरकर फूल गयी थी और वे आगे बढ़ते जा रहे थे। आसपास और ऊपर वातावरण ख़राब और गीला था। मौसम और भी ख़राब होने की आशंका थी। लेकिन रुकिए ! वह क्या था ? वहाँ क्या टकराया ? वहाँ क्या फूटा ? नाव कैसे रुक गयी ? नाव उछली और उलट गयी। क्या यहाँ तूफ़ान आया था ? क्या लहराते हुए समुद्र के अचानक शान्त होने से ऐसा हुआ ? पतवार के पास बैठा लड़का ज़ोर से चिल्लाया, "ईश्वर हमारी मदद करो !" नाव समुद्र की गहराई में धँसी एक चट्टान से टकरायी थी और दलदल में पुराने जूते की तरह डूब गयी थी। वह पूरी की पूरी डूब गयी थी उस पर चूहे भी थे। और केवल दो लोग थे—एक कप्तान और दूसरा नौकरानी का बेटा। तैरती समुद्री चिड़ियों और वहाँ की मछलियों के अलावा उसे किसी ने नहीं देखा बल्कि उन्होंने भी इसे ठीक से नहीं देखा क्योंकि जब नाव में पानी भरकर वहाँ डूब गयी तो वे घबराकर पीछे हट गये थे। वहाँ पर वे कोई बारह फ़ीट गहरे में पड़े रहे। क्योंकि वे दोनों, लोगों की नज़र में दफ़न हो गये थे और भुला दिये गये थे। केवल नीली लकड़ी के सहारे खड़ा गिलास नहीं डूबा क्योंकि लकड़ी के सहारे वह तैरता रहा—टूटकर किनारे पर लग जाने के लए। पता नहीं, कब और कहाँ ? लेकिन इसका कोई महत्त्व नहीं है। उसने अपना काम किया था और उसे सब प्यार करते थे जबकि एन-लिस्बेथ के बेटे को नहीं करते थे। लेकिन स्वर्ग में कोई भी आत्मा यह नहीं कह सकती कि उसे 'कभी प्यार नहीं किया गया।'

एन-लिस्बेथ बहुत साल शहर में रही। अब उसे 'मैडम' कहा जाता था। उसे अपने पुराने 'ख़ास' दिन याद आते थे जब वह बग्घी में बैठकर सामन्तों और दरबारियों की पत्नियों से मिलने जाया करती थी। उसका सुन्दर 'सामन्त-पुत्र' देवदूत के समान था। उसका दिल बड़ा उदार था। वह एन-लिस्बेथ को बहुत प्यार करता था और बदले में उसने भी उसे बहुत प्यार किया था। वे एक-दूसरे को चूमते थे। यह बेटा उसका आनन्द था, उसका दूसरा जीवन। अब वह बहुत लम्बा हो गया था। और अब चौदह साल का सुन्दर और बुद्धिमान लड़का था। जब वह उसे गोद में उठाया करती थी, तब के बाद से उसने उसे



नहीं देखा था। बहुत सालों से वह सामन्त के महल में भी नहीं गयी थी, क्योंकि वह यहाँ से बहुत दूर था।

"मुझे एक बार वहाँ ज़रूर जाना चाहिए। वह नन्हा सामन्त भी मुझे ज़रूर देखना चाहता होगा। वह भी मेरे बारे में उन दिनों की तरह याद करता होगा। जब वह अपनी प्यारी बाँहें मेरे गले में डालकर मुझे बुलाता था, 'एन-लिज़' तो उसकी आवाज़ संगीत की तरह गूँज उठती थी। हाँ, मुझे ज़रूर कोशिश करके उससे जाकर मिलना चाहिए।"

वह एक चरवाहे की गाड़ी पर बैठकर बहुत दूर तक गयी। उसके बाद पैदल चल पड़ी और इस तरह सामन्त के महल में पहुँची। वह हमेशा की तरह ही विशाल और सुन्दर था। बग़ीचा भी पहले जैसा ही था लेकिन वहाँ के सभी लोग उसके लिए अजनबी थे। उनमें से एक भी एन-लिस्बेथ को नहीं पहचानता था और कोई भी नहीं जानता था कि पहले वह यहाँ क्या काम करती थी। लेकिन उसे लगा कि सामन्त की पत्नी ज़रूर सबको और अपने प्यारे बेटे को इस बारे में बता देंगी। वह उसे देखने को कितना तरस रही थी।

अब एन-लिस्बेथ की यात्रा ख़त्म हुई। उसे काफ़ी देर इन्तज़ार कराया गया और इन्तज़ार करते हुए तो समय और भी धीमे बीतता है। लेकिन बड़े लोगों ने खाने की मेज़ पर जाने से पहले उसे बुला लिया और उससे सम्मानपूर्वक व्यवहार किया। उसे अपने प्यारे लड़के से रात के भोजन के बाद मिलना था। उस वक़्त उसे फिर भीतर बुला लिया गया था।

सामन्त का बेटा कितना लम्बा और दुबला-पतला था। लेकिन उसकी आँखें और देवदूतों जैसा चेहरा अभी भी वैसा ही सुन्दर था। उसने एन को देखा लेकिन बोला कुछ भी नहीं। निश्चय ही उसने उसे नहीं पहचाना था। वह मुड़ा और वापस जाने ही वाला था लेकिन एन ने उसका हाथ पकड़कर होठों से लगा लिया।

"ठीक है, ठीक है !" वह बोला और कमरे से बाहर निकल गया।—हाँ, वह बेटा जिसके बारे में वह बहुत कुछ सोचती थी, जिसे उसने सबसे ज़्यादा प्यार किया था और जिस पर उसे गर्व था।

एन-लिस्बेथ महल से निकलकर खुली सड़क पर आ गयी। वह बहुत ही दुखी थी। सामन्त का बेटा उसके साथ बहुत अजीब और रूखे तरीक़े से पेश आया था। उसके पास एन के लिए न कोई विचार था और न ही कोई शब्द। उसके पास जिसे वह कभी दिन-रात लिए चूमती थी और जिसे वह अभी भी अपने सपनों में साथ रखती थी।

एक बड़ा काला कौआ गोली लगने से घायल होकर उसके समाने सड़क पर गिरा और काँव-काँव करने लगा।

"हाय !" वह बोली, "तू भी कितना अपशकुनी पक्षी है।" वह नौकरानी की झोंपड़ी तक आयी। वह दरवाज़े पर खड़ी थी। दोनों एक दूसरे से बातें करने लगीं।

"तुम अच्छी दिख रही हो।" नौकरानी बोली, "तुम मोटी भी हो गयी हो, काफ़ी रईस लगती हो।"

"हाँ।" एन-लिस्बेथ बोली।

"उनको लेकर नाव डूब गयी।" नौकरानी बोली, "कप्तान हैंस और वह लड़का दोनों डूब गये। वे ख़त्म हो गये। मैं हमेशा सोचती थी कि वह लड़का ज़रूर कुछ रुपयों से मेरी मदद करेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अब तुम्हें उसके पालन-पोषण का कोई ख़र्च नहीं देना होगा, एन-लिस्बेथ ।"

"तो वे डूब गये ?" एन-लिस्बेथ ने दोहराया और फिर वे ख़ामोश हो गईं। इस बारे में आगे कोई बात नहीं हुई।

एन-लिस्बेथ बहुत दुखी थी क्योंकि उसके प्रिय सामन्त के बेटे ने, जिसे वह बहुत चाहती थी, उससे बात करने में कोई रुचि नहीं दिखायी थी। एन ने उसके लिए इतने पैसे ख़र्च करके इतनी लम्बी यात्रा की थी और इस यात्रा से उसे कोई सन्तोष नहीं हुआ था। फिर भी वह उसके बारे में एक शब्द भी नहीं बोली। उसने इस बारे में नौकरानी से कोई बात भी नहीं की, नहीं तो वह सोचती कि महल में वह पुराने समय में बुरे हाल में रह रही थी। बड़ा कौआ एक बार फिर चीख़ा और उसके सिर पर से गुज़र गया।

"काला भूत !" एन-लिस्बेथ बोली, "यह मुझे आज डराकर ही मरेगा।"

एन-लिस्बेथ यह सोचकर कॉफ़ी ख़रीद कर लायी थी कि वह उस ग़रीब औरत की कुछ मदद करेगी। उसे वह एक कप कॉफ़ी बनाने को कहेगी और ख़ुद भी एक कप पियेगी। नौकरानी ने कॉफ़ी बनायी और इस बीच एन-लिस्बेथ कुर्सी पर बैठकर सो गयी। उसने सपने में वह देखा जो उसने पहले कभी नहीं देखा था। उस अजीब सपने में उसने अपने बच्चे को देखा जो भूखा था और नौकरानी की झोंपड़ी में रो रहा था। वह सर्दी और गर्मी से परेशान था और अब समुद्र की गहराई में पड़ा था—ईश्वर जाने कहाँ ? उसने देखा कि वह झोंपड़ी में बैठी है जहाँ नौकरानी अभी कॉफ़ी बना रही थी—कॉफ़ी की ख़ुशबू भी ले सकती थी। लेकिन अचानक उसे लगा कि किनारे पर एक सुन्दर व्यक्ति खड़ा है, सामन्त के बेटे जैसा सुन्दर और वह छाया उससे बोली, "दुनिया ख़त्म हो

रही है ! मुझे अच्छी तरह पकड़ो क्योंकि तुम मेरी माँ हो। स्वर्ग में तुम्हारा एक देवदूत है। मुझे अच्छी तरह पकड़ो !"

और उस देवदूत बालक ने उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाया और एक ज़ोर का धमाका हुआ—क्योंकि दुनिया चूर-चूर होने जा रही थी। एन उस देवदूत के साथ ज़मीन से ऊपर उठ रही है लेकिन दूसरी तरफ़ उसके पैरों से कुछ भारी चीज़ लटक गयी और उसे वापस खींचने लगी। उसे महसूस हुआ कि सैकड़ों औरतें उससे लटकी हुई हैं और चिल्ला रही हैं।

"यदि तुम्हें बचाया जा रहा है तो हमें भी बचाओ ! अच्छी तरह पकड़ो। कसकर पकड़ो !"

और वे सभी उससे लटक गयीं। लेकिन वे बहुत सारी थीं। और रिट्स ! रिट्स !—और एन की बाँह टूट गयी और वह डरकर नीचे गिर पड़ी—और जाग गयी। और सचमुच वह जिस कुर्सी पर बैठी थी उसके समेत गिरने ही वाली थी। वह इतनी चौंक गयी और चौकन्नी हो गयी कि वह अपने सपने के बारे में भूल ही गयी। लेकिन उसे यह याद रहा कि सपना कुछ भयानक था।

कॉफ़ी आ गयी और वे बातें करने लगीं। फिर एन-लिस्बेथ छोटे शहर की ओर गयी जहाँ उसे गाड़ीवान से मिलना था और फिर उसे लेकर अपने घर वापस जाना था। लेकिन जब वह उससे बात करने आयी तब उसने कहा कि वह अगली शाम से पहले वहाँ से नहीं निकल पायेगा। वह रास्ते की दूरी और ख़र्च के बारे में सोचने लगी और जब उसने सोचा कि समुद्र तट के पास का रास्ता दो मील छोटा है और चाँदनी रात है और मौसम भी साफ़ है तो उसने तय किया कि वह पैदल ही इसी वक़्त निकल जायेगी और अगले दिन घर भी पहुँच जायेगी।

सूरज डूब गया था और गाँव के चर्च में शाम की घण्टियाँ बज रही थीं। गूँज रही थीं। लेकिन नहीं, ये घण्टियाँ नहीं थीं बल्कि कीचड़ में मेढ़कों की पुकार थी। अब वे चुप हो गये थे और सब ओर शान्ति थी। एक चिड़िया भी नहीं बोल रही थी। वे सभी आराम करने चली गयी थीं। यहाँ तक कि उल्लू भी अपने घर वापस आ गया था। जंगल की सीमा पर और समुद्र तट के किनारे गहरा सन्नाटा था। एन-लिस्बेथ को रेत पर चलते हुए अपने ही पैरों की आवाज़ सुनायी दे रही थी। समुद्र की लहरों की कोई आवाज़ नहीं आ रही थी, गहरे पानी में भी सब कुछ सन्नाटे में डूब गया था। समुद्र के जीवित और मृत जीव सभी शान्त थे।

एन-लिस्बेथ "बिना किसी चीज़ के बारे में सोचते हुए" चलती रही। उसके विचार भटकते रहे, लेकिन वे भटककर उससे दूर नहीं गये क्योंकि वे हमसे बाहर

कभी नहीं जाते। वे केवल सो जाते हैं। लेकिन वे विचार जिन्होंने अभी तक हममें हलचल नहीं की थी, अपने समय पर आते हैं और कभी दिल तो कभी दिमाग़ में हलचल मचाते हैं और हममें ऐसे आते हैं जैसे कि कहीं ऊपर से आये हों।

यह लिखा गया है कि किसी भी अच्छे काम का अच्छा फल मिलता है और...यह भी लिखा गया है कि पाप मृत्यु है। लेकिन बहुत सारी वे बातें लिखी गयी हैं और बहुत सारी वे बातें कही गयी हैं, जिनके बारे में लोग आमतौर पर कुछ नहीं सोचते और एन-लिस्बेथ के साथ भी यही हो रहा था। लेकिन यह हो सकता है कि किसी में भीतर से प्रकाश जागे और भूली हुई बातें दोबारा याद आयें।

सभी अच्छे और बुरे गुण हमारे दिल में रहते हैं। वे मुझमें हैं और तुम में हैं। वे वहाँ अनाज के छोटे बीजों की तरह पड़े रहते हैं। फिर बाहर से एक सूरज की किरण या शैतान का हाथ आता है या फिर तुम स्वयं ही मुड़कर दाँयें या बाँयें जाने लगते हो। यही अन्तिम परिणाम हो भी सकता है, क्योंकि इससे ही वह नन्हा बीज हरकत में आ जाता है और फूलकर उगने लगता है। वह फूट पड़ता है—अपना रस तुम्हारे खून में उंड़ेल देता है और फिर तुम्हारी यात्रा शुरू होती है।

कभी पीड़ादायक विचार भी होते हैं जिन्हें झपकी लेकर चलता हुआ आदमी नहीं पकड़ पाता। लेकिन वे होते ज़रूर हैं। दिल में पलते हुए। एन-लिस्बेथ इसी तरह अपनी सम्वेदनाओं को आधी नींद में लिए हुए चल रही थी और विचार उसके भीतर बढ़ते जा रहे थे। क्षमादान के एक मंगलवार से अगले मंगलवार तक बहुत कुछ घटित होता है, जो दिल पर बोझ बनता जाता है—पूरे साल में। हम बहुत कुछ भूल जाते हैं जैसे शब्दों और विचारों में ईश्वर के विरुद्ध किये पाप, पड़ोसी के बारे में और हमारे अपने विवेक के बारे में सोचे गये बुरे विचार। हम इन सबके बारे में नहीं सोचते और एन-लिस्बेथ ने भी नहीं सोचा। उसने कोई अपराध नहीं किया था। उसका बहुत आदर था। वह सम्माननीय और भद्र महिला थी, यह वह जानती थी। समुद्रतट के पास से जाते समय उसे वहाँ क्या पड़ा दिखा ? एक पुराना हैट ! वह कहाँ से आया होगा ? वह पास आयी और हैट को देखने के लिए रुकी। हाय ! वहाँ क्या पड़ा था ? वह काँप गयी लेकिन वह और कुछ नहीं बल्कि एक पत्थर के आसपास उलझी हुई समुद्री घास और समुद्री शैवाल थी जिसे देखकर किसी शरीर का भ्रम होताा था। वह केवल घास और समुद्री शैवाल थी—लेकिन वह उसे देखकर डर गयी थी। जैसे ही वह फिर

चलने लगी उसे बचपन में सुनी बातों का ध्यान आया—समुद्र-तट के किनारे भूतों के पुराने अन्धविश्वास। डूबे लेकिन बिना दफ़नाये लोगों के भूतों के बारे में, जिनकी लाशें बहकर किनारे पर आ जाती हैं। उसने सुना था कि ऐसा शरीर किसी को नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। लेकिन आत्मा किसी भी अकेले यात्री के पीछे पड़ सकती है। वह उस पर चढ़कर उसे क़ब्रिस्तान ले जाने के लिए मजबूर कर सकती है—जहाँ वह पवित्र धरती पर रहेगी। "कसकर पकड़ो ! कसकर पकड़ो !" भूत तब चिल्लायेंगे और जब तक एन-लिस्बेथ ये शब्द दोहराती तब तक उसका सपना उसके सामने वैसे का वैसा आ गया—'औरतें', 'अपनी बाँह टूटने' और 'अपने बच्चे के बारे में'। उसका बच्चा, उसका अपना बच्चा, जिसे उसने कभी प्यार नहीं किया अब समुद्र में दफ़न हो गया है। वह पानी में से भूत की तरह उठकर चिल्ला सकता है, "कसकर पकड़ो ! मुझे पवित्र धरती पर ले चलो।"

और जैसे ही ये विचार उसके दिमाग़ में आये, वह डरकर तेज़ी से चलने लगी। उसे ऐसा डर लगा जैसे उसके दिल पर कोई ठण्डा भीगा हुआ हाथ रखा हो। वह बेहोश-सी होने लगी और जैसे ही उसने समुद्र की तरफ़ देखा वहाँ सब कुछ अँधेरा ही अँधेरा दिखायी देने लगा। भारी धुन्ध छाने लगी। पेड़ों और झाड़ियों पर धुन्ध छा गयी जिससे उनके आकार डरावने बन गये। वह मुड़ी और उसने चाँद को देखा जो उसके पीछे उग आया था। वह एक पीली और उदास सतह जैसा लग रहा था उसके पैरों में भारीपन महसूस होने लगा। "कसकर पकड़ो !" उसने सोचा और जब उसने दूसरी बार मुड़कर चाँद को देखा तो उसका सफ़ेद चेहरा उसे अपने एकदम पास लगा। धुन्ध पीले कपड़े की तरह उसके कन्धों से लटक गयी। "कसकर पकड़ो ! मुझे पवित्र धरती पर ले चलो !" उसके कानों में खोखली आवाज़ गूँजी। यह आवाज़ मेंढकों या कौओं की नहीं थी, वहाँ कोई नहीं था। "क़ब्र ! मेरे लिए एक क़ब्र खोदो !" बार-बार यही आवाज़ आयी। हाँ, यह उसके बच्चे का भूत था। वह बच्चा, जो समुद्र में डूब गया था और जिसकी आत्मा क़ब्रिस्तान में जाने से पहले आराम नहीं पा सकती थी, जब तक कि उसके लिए पवित्र ज़मीन में क़ब्र नहीं खोदी जाती। वह वहाँ जाकर क़ब्र खोदेगी, यह सोचकर वह चर्च की दिशा में चलने लगी। उसे अपने दिल का बोझ हल्का महसूस होने लगा और फिर एकदम ख़त्म हो गया। लेकिन जब वह सबसे छोटे रास्ते से घर जाने के लिए मुड़ी तो बोझ वापस आ गया। "कसकर पकड़ो ! कसकर पकड़ो !" और आवाज़ साफ़ होती गयी। हालाँकि उसे सुनकर किसी मेंढक या चिड़िया की आवाज़ का भ्रम होता था, "क़ब्र ! मेरे लिए एक क़ब्र खोदो !"

धुन्ध ठण्डी और गीली थीं। उसके हाथ और चेहरा भी डर से ठण्डे और नम थे। किसी भारी चीज ने फिर उसे रोक लिया और जैसे उस पर सवार हो गयी। उसके दिमाग़ में विचारों के लिए इतनी बड़ी जगह बन गयी जैसी पहले कभी नहीं थी।

यहाँ उत्तर में समुद्र तट के पेड़ों में अक्सर एक ही रात में कलियाँ फूटती हैं और सुबह की रोशनी में वे बहुत सुन्दर दिखायी देती हैं। इसी तरह एक ही घटना के माध्यम से, हमारा 'विवेक' विचारों, शब्दों और पिछली ज़िन्दगी के कामों में काम किये गये पापों को उजागर कर सकता है। वह विवेक एक ही क्षण में उजागर हो सकता है और जब हमें इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं होती तभी ईश्वर इसे जगाता है। तब हमें कोई बहाना नहीं मिलता—हमारे काम वहाँ होते हैं जो हमारे विरुद्ध गवाही देते हैं और विचार शब्द बन जाते हैं और दुनिया में गूँजते हैं। हम अपने भीतर मौजूद चीज़ों से भयभीत हो जाते हैं और जो भी हमने अहंकार और विचारहीनता से बोया है, उसे रोकते नहीं हैं। दिल के भीतर सभी अच्छे और बुरे गुण छिपे रहते हैं और ये उथली से उथली ज़मीन में भी आ जाते हैं।

एन-लिस्बेथ को इन सारे विचारों का अनुभव हो गया। उस पर उनका बहुत असर हुआ और वह ज़मीन पर गिरकर कुछ दूर रेंगी। ''क़ब्र ! मेरे लिए एक क़ब्र खोदो !'' फिर से उसके कानों में आवाज़ गूँजी। यदि हर काम के लिए माफ़ी होती तो वह ख़ुशी-ख़ुशी क़ब्र में दफ़न हो जाती। यह उसके जागने का पहला हिस्सा था—डर और चिन्ता से भरपूर। थोड़ी-थोड़ी देर में अन्धविश्वास से उसका शरीर ठण्ड से काँप उठता था और उसका खून डर की आग से जल उठता था। बहुत-सी चीज़ें, जिनके बारे में वह बात करना पसन्द नहीं करती थी, उसके दिमाग़ में आयीं। चमकती चाँदनी में बादलों की छाया की तरह एक भूत की छाया उसके पास से होकर गुज़री। उसने इसके बारे में पहले भी सुना था। उसके पास से नथुने फुनफुनाते हुए चार घोड़े, जिनकी आँखों और थूथनों से आग निकल रही थी, गुज़रे। वे एक लाल बग्घी खींच रहे थे जिसमें एक दुष्ट सामन्त बैठा था, जिसने यहाँ सौ साल पहले राज्य किया था। कहा जाता है कि हर रात बारह बजे वह अपने महल के आँगन में जाता था और बाहर आता था। वह एक मृत व्यक्ति की तरह पीला नहीं था बल्कि कोयले की तरह काला था।

उसने एन-लिस्बेथ को देखकर सिर हिलाया और उसे बुलाया। ''कसकर पकड़ो ! कसकर पकड़ो ! जिससे तुम दोबारा सामन्त की बग्घी में सफ़र कर सको और अपने बेटे को भूल जाओ।''

वह उठी और क़ब्रिस्तान की ओर तेज़ी से बढ़ी लेकिन वहाँ काले क्रॉस और काले कौए उसकी आँखों के सामने घूमने लगे और वे इतने घुल मिल गये कि वह उनमें फ़र्क़ नहीं कर पायी। कौए उसी तरह काँव-काँव करने लगे जैसे कि उसने उन्हें दिन में करते हुए देखा था। लेकिन अब वह समझी कि वे क्या कर रहे थे, "मैं कौए की माँ हूँ ! मैं कौए की माँ हूँ !" हर कौआ चिल्लाया और एन-लिस्बेथ समझ गयी कि यही नाम उस पर भी लागू होता है। उसने कल्पना की कि यदि वह क़ब्र नहीं खोदती तो वह भी ऐसी ही काली चिड़िया बनकर उसी तरह रोयेगी।

और वह ज़मीन पर गिरकर एक क़ब्र खोदने लगी। ज़मीन कड़ी थी और उसकी उँगलियों से खून बहने लगा।

"क़ब्र ! मेरे लिए एक क़ब्र खोदो !" अभी भी आवाज़ आ रही थी। उसे डर था कि मुर्ग़ा बाँग दे देगा और पूर्व में सूरज की पहली किरण उसका काम ख़त्म करने से पहले निकल आयेगी और वह खो जायेगी।

मुर्ग़े ने बाँग दी, पूर्व में दिन निकला और क़ब्र केवल आधी ही खुदी थी। तभी एक बर्फ़ीला ठण्डा हाथ उसके सिर, चेहरे और दिल पर महसूस हुआ।

"केवल अपनी क़ब्र !" एक रोती हुई आवाज़ आयी और दूर चली गयी।

हाँ, वह समुद्र में चली गयी थी। वह एक समुद्र का भूत था। थकी-चुकी और डरी हुई एन-लिस्बेथ ज़मीन पर गिर पड़ी और बेहोश हो गयी।

जब वह होश में आयी तो दिन निकल आया था और दो लोग उसे उठा रहे थे। लेकिन वह क़ब्रिस्तान में नहीं, बल्कि समुद्र के तट पर थी जहाँ उसने रेत में एक गहरा गड्ढा खोदा था और उसका हाथ काँच के एक गिलास से कट गया था। जिसके नीचे नीला लकड़ी का टुकड़ा लगा था। उसे बुख़ार था। विवेक ने अन्धविश्वास के पत्ते फेंटे और उन्हें फैलाया और एन ने सोचा कि उसके पास केवल आधी आत्मा है और बाक़ी आधी आत्मा उसका बेटा समुद्र में ले गया है। जब तक उसे वह बाक़ी हिस्सा नहीं मिल जाता, जो अभी गहरे पानी में है, वह ईश्वर के पास नहीं जा सकती।

एन-लिस्बेथ अपने पुराने घर वापस गयी। लेकिन वह पहले जैसी नहीं रही थी। उसके विचार एक जाल की तरह उलझ गये थे। वह केवल एक धागा—एक विचार—ही सुलझा पायी थी कि उसे समुद्र के भूत को क़ब्रिस्तान तक ले ही जाना होगा और उसके लिए एक क़ब्र खोदनी होगी और इसी तरह उसे अपनी आत्मा वापस मिल सकती है।

अक्सर वह रातों को घर से ग़ायब हो जाती और समुद्र तट पर जाकर

भूत का इन्तज़ार करती रहती। इस तरह एक साल बीत गया और फिर एक रात वह फिर ग़ायब हो गयी और मिली नहीं। अगला पूरा दिन उसकी तलाश में बीता।

शाम को जब चर्च का कर्मचारी चर्च की घण्टी बजाने आया तो उसने वेदी पर एन-लिस्बेथ को देखा जो पूरे दिन भर वहाँ पर थी। वह एकदम चुक गयी थी लेकिन उसकी आँखें चमक रही थीं और उसके गालों पर अब भी गुलाबी आभा थी। सूरज की आख़िरी किरणें उस पर पड़ीं और वेदी पर रखी बाइबिल के फीते भी चमकें और हज़रत जोएल के इन शब्दों पर भी रोशनी पड़ी, "अपना दिल दो, न कि अपने वस्त्र। तुम ईश्वर की ओर मुड़ो।" यह केवल एक संयोग ही था और बहुत-सी चीज़ें संयोग से ही होती है।"

सूरज की रोशनी में एन-लिस्बेथ के चेहरे पर शान्ति दिखायी दे रही थी। उसने कहा कि वह खुश है, क्योंकि वह जीत गयी है। पिछली रात समुद्र का भूत, उसका अपना बेटा, उसके पास लौट आया था उसने कहा था–

"तुमने मेरे लिए केवल आधी ही क़ब्र खोदी थी लेकिन पिछले एक साल और एक दिन से तुमने मुझे अपने दिल में दबा रखा है। और यहीं कोई माँ अपने बच्चे को सबसे अच्छी तरह छिपा सकती है !"

और उसने अपनी माँ को उसकी खोई हुई आत्मा वापस दे दी और उसे चर्च में लेकर आया।

"अब मैं ईश्वर के घर में हूँ।" वह बोली, "और यहाँ हम सब खुश रहते हैं।"

और सूरज ढलने पर उसकी आत्मा उस देश में चली गयी जहाँ कोई चिन्ता नहीं होती। एन-लिस्बेथ की परेशानियों का अन्त हो गया था।

समुद्र-कन्या

समुद्र में भीतर, बहुत दूर—पानी सुन्दर मक्के के फूल की तरह नीला और शुद्ध काँच की तरह साफ़ है। लेकिन वह बहुत गहरा है। समुद्र तल में पड़े किसी जीव के बिल से भी गहरा; पानी की तली से सतह तक पहुँचने के लिए बहुत-सी मीनारों को एक पर एक रखने की ज़रूरत होगी। ऐसी ही गहराई में समुद्रवासी जीव रहते हैं।

तुम्हें यह नहीं मानना चाहिए कि नीचे केवल रेत के अलावा कुछ नहीं है। नहीं, वहाँ अनोखे नाज़ुक पौधे और फूल उगते हैं, इतने नाज़ुक कि पानी की हल्की-सी गति से उनकी शाखें और पत्तियाँ इस तरह हिलती हैं जैसे कि उनमें जीवन हो। बड़ी और छोटी मछलियाँ शाखों के बीच इस तरह तैरती हैं जैसे कि धरती पर पेड़ों के ऊपर पक्षी बैठते हैं। सबसे गहराई में समुद्र के राजा का महल है। उसकी दीवारें मूँगे की हैं और शुद्ध कहरुए की बनी हुई ऊँची मेहराबदार खिड़कियाँ हैं। सीपों की छतें हैं। वे पानी के बहाव के अनुसार खुलती और बन्द होती हैं। यह दृश्य बहुत सुन्दर लगता है क्योंकि हर सीप में एक चमकीला मोती होता है जिनमें से रानी के मुकुट में यदि एक भी मोती लगा हो तो उसकी क़ीमत मुकुट से कहीं अधिक होती।

समुद्र का राजा बहुत सालों से विधुर था। उसकी गृहस्थी की देख-रेख उसकी बूढ़ी माँ करती थी। वह एक चतुर महिला थी और साथ ही बहुत घमण्डी भी। वह अपनी पोशाक पर बारह सीपें टाँकती थी जबकि बाक़ी बड़े लोगों को केवल छह सीप टाँकने की अनुमति थी। इस बात के अलावा उसकी हर बात प्रशंसा के लायक़ थी, ख़ास तौर पर इसलिए कि वह अपनी पोतियों—यानी समुद्र की राजकुमारियों से बहुत प्यार करती थी। ये छः नन्हीं राजकुमारियाँ थीं लेकिन



उनमें सबसे छोटी राजकुमारी अत्यन्त सुन्दर थी। उसकी त्वचा गुलाब की पंखुड़ी की तरह साफ़ और नाज़ुक थी। उसकी आँखें गहरे समुद्र की तरह नीली थीं। लेकिन अपनी बाक़ी बहनों की तरह ही उसके भी पैर नहीं बल्कि उनकी जगह मछली की पूँछ थी।

सारे दिन वे महल में बीच के कमरों में खेलती रहतीं जहाँ दीवारों में सुन्दर फूल खिले थे। बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ खुली रहतीं और मछलियाँ उनमें से भीतर आ जातीं, जैसे कि हमारे खिड़की खोलने पर पक्षी भीतर आ जाते हैं। लेकिन मछलियाँ सीधे राजकुमारियों के पास चली जातीं जो उन्हें अपने हाथों से खाना देतीं और सहलातीं। महल के बाहर एक विशाल बग़ीचा था जिसमें चटख़ लाल और गहरे नीले फूल खिले थे। फल सोने जैसे चमकते थे और फूल आग की तरह; और उनकी आँखें और पत्तियाँ लगातार हिलती रहतीं। ज़मीन बारीक रेत की थी, लेकिन यह रेत गन्धक की लौ की तरह नीली थी। वहाँ हर चीज़ में एक अलग तरह की नीली आभा थी। ऐसा लगता था कि यह आकाश है, समुद्र नहीं और ईश्वर की छतरी ऊपर और आसपास है। समुद्र शान्त होने पर सूरज भी दिखायी देता था। तब वह एक ऐसे बैंगनी फूल की तरह दिखता था, जिससे रोशनी निकलती हो।

हर राजकुमारी की, बग़ीचे में अपनी जगह थी, जहाँ वह गड्ढे खोदकर अपनी पसन्द के पौधे लगा सकती थी। एक ने अपनी क्यारी को व्हेल मछली का आकार दिया, दूसरी ने समुद्री स्त्री का। लेकिन सबसे छोटी राजकुमारी ने अपनी क्यारी गोल बनायी। एकदम सूरज की तरह। उसमें उसने लाल फूल लगाये जो सूरज की तरह चमकते थे। वह अनोखी लड़की थी—शान्त और गम्भीर। दूसरी बहनों ने टूटे हुए जहाज़ों से मिली सुन्दर चीज़ें क्यारियों में लगायीं। लेकिन उसने अपनी क्यारी में केवल लाल फूल लगाये जो सूरज जैसे थे। इसके अलावा उसने एक छोटी संगमरमर की मूर्ति भी इस क्यारी में लगायी थी। यह सफ़ेद पत्थर से बनी एक सुन्दर लड़के की मूर्ति थी जो किसी टूटे जहाज़ से वहाँ आ गिरी थी। उसने उस मूर्ति के पास एक गुलाबी फूलों का पौधा लगाया। वह अब पेड़ बन गया था और उसकी शाख़ें मूर्ति के ऊपर से होकर नीचे की नीली रेत की ओर लटक रही थीं। उन शाख़ों की छाया बैंगनी रंग की होकर दिखायी पड़ रही थी जो कि शाखों के साथ-साथ हिलती भी थीं। तब ऐसा लगता था जैसे शाख़ों के सिरे और पेड़ की छाया आपस में खेल रहे हों और एक-दूसरे को चूमना चाहते हों।

छोटी राजकुमारी के लिए ऊपर बसी मनुष्यों की दुनिया के बारे में सुनने

से बड़ा आनन्द और कोई नहीं था। वह बूढ़ी दादी माँ से जहाज़ों, शहरों, मनुष्यों और जानवरों की वे सभी बातें सुनती जो उन्हें मालूम थीं। उसे यह बात बहुत ख़ास लगती थी कि ऊपर धरती पर फूलों से ख़ुशबू आती है और पेड़ हरे होते हैं, क्योंकि समुद्र के पौधों में ऐसा कोई पौधा नहीं था। इसके अलावा मछलियाँ, जो वहाँ पेड़ों पर बैठती हैं, ज़ोर-ज़ोर से गा भी सकती हैं। दादी-माँ जिन्हें मछली कह रही थीं वे दरअसल पक्षी थे लेकिन राजकुमारी उनके बारे में कुछ सोच नहीं पायी क्योंकि उसने पक्षी कभी देखे ही नहीं थे।

"जब तुम पन्द्रहवें साल में पहुँच जाओगी तब तुम समुद्र में ऊपर जाकर चाँदनी में चट्टानों पर बैठ सकती हो और पास से गुज़रते जहाज़ों को देख सकती हो।" दादी-माँ बोली, "उसके बाद तुम जंगल और शहर देखोगी !"

अगले साल उसकी एक बहन पन्द्रह साल की हुई। सभी बहनों में एक-एक साल का अन्तर था और इसलिए सबसे छोटी बहन को ऊपर आकर दुनिया देखने के लिए पाँच साल इन्तज़ार करना था। लेकिन बड़ी बहन ने पहले दिन ऊपर जाकर देखी गयी सुन्दर चीज़ों और उनमें भी सबसे सुन्दर चीज़ के बारे में बाक़ी बहनों को बताने का वक़्त दिया था। इसलिए क्योंकि दादी-माँ ने उन्हें बहुत कुछ नहीं बताया था—जबकि वे बहुत सारी चीज़ों के बारे में जानना चाहती थीं।

सबसे छोटी बहन इस सबके बारे में सबसे ज़्यादा उत्सुक थी—क्योंकि उसे सबसे ज्यादा इन्तज़ार करना था और इसीलिए वह शान्त और गम्भीर थी। अक्सर वह रातों को खुली खिड़की के पास खड़ी रहती और नीले पानी के पार मछलियों को अपने पंखों और पूँछ से पानी उड़ाते देखती। वह चाँद और तारों को देख सकती थी, वे धुँधले तो थे, लेकिन पानी के उस पार बहुत बड़े दिखाई देते। जब काले बादल जैसी कोई चीज़ उसके ऊपर से गुज़रती तो वह समझ जाती कि या तो वह ऊपर से गुज़रती हुई ह्वेल मछली है या कई लोगों को लिए हुए कोई जहाज़। जहाज़ वालों को भला क्या पता था कि एक सुन्दर समुद्र कन्या नीचे खड़ी होकर उनके जहाज़ की ओर अपने गोरे हाथ फैलाये हुए हैं !

सबसे बड़ी राजकुमारी पन्द्रह साल की हो गयी थी और समुद्र की सतह पर जा सकती थी।

जब वह वापस आयी तो उसके पास उन्हें बताने के लिए बहुत सारी चीज़ें थी। लेकिन उसने सबसे अच्छी चीज़ जो बतायी वह शान्त समुद्र के तट की रेत पर चाँदनी में लेटकर पास के तट, विशाल शहर को, जहाँ बिजलियाँ सितारों जैसी चमकती हैं, और चर्च की मीनारों को देखना और गाड़ियों, मनुष्यों और चर्च की घण्टियों की आवाज़ें सुनना था। वह उन सबके पास नहीं जा सकती

थी, इसलिए उसे इन सबको पास से देखने की तीव्र इच्छा हुई।

सबसे छोटी बहन ने यह सब बहुत ध्यान से सुना। बाद में जब वह खिड़की पर खड़ी हुई और गहरे नीले पानी के पार देखा तो उसे शोरगुल वाले विशाल शहर का विचार आया और उसे लगा कि वह इतनी गहराई में भी चर्च की घण्टियों की आवाज़ सुन सकती है।

अगले साल दूसरी बहन को ऊपर जाने की अनुमति मिली। वह सूरज डूबते समय ऊपर आयी और उसे यह दृश्य सबसे सुन्दर लगा। पूरा आसमान सोने जैसा चमकता था और बादलों की सुन्दरता का वर्णन तो करना ही मुश्किल था। बैंगनी रंग के बादल उसके सिर के ऊपर से उड़ते हुए गुज़र रहे थे। लेकिन बादलों से भी तेज़ इस लम्बे सफ़ेद दुपट्टे की तरह जंगली हंसों का झुण्ड सूरज की तरफ़ जा रहा था। वह उनकी ओर तैरकर गयी, पर तभी सूरज डूब गया और गुलाबी आभा बादलों और समुद्र पर से हट गयी।

अगले साल अगली बहन ऊपर गयी। वह उन सब में सबसे बहादुर थी और इसीलिए वह एक ऐसी धारा पर तैरने लगी जो समुद्र में गिरती थी। उसने पेड़-पौधों से ढकी सुन्दर पहाड़ियाँ देखीं, घने जंगलों के बीच चमकते महल देखे और पक्षियों को गाते हुए सुना। लेकिन अक्सर सूरज इतनी तेज़ी से चमकने लगता कि उसे अपने जलते हुए चेहरे को झुलसने से बचाने के लिए वापस समुद्र में डुबकी लगानी पड़ती।

एक बार उसने एक छोटी-सी खाड़ी में नन्हें जीवों का एक झुण्ड देखा। वे नंगे थे और पानी में खेल रहे थे, उसकी इच्छा उनके साथ खेलने की हुई लेकिन वे डरकर भाग गये। फिर एक छोटा काला जीव आया—वह एक कुत्ता था। लेकिन उसने कभी कुत्ता नहीं देखा था। वह उस पर इतनी ज़ोर से भौंका कि वह डर गयी और वापस खुले समुद्र में लौटने लगी। लेकिन वह उन सुन्दर जंगलों, हरी-भरी पहाड़ियों और सुन्दर बच्चों को नहीं भूल पायी जो तैर रहे थे—पर जिनकी मछली जैसी पूँछ नहीं थी।

चौथी बहन इतनी बहादुर नहीं थी। वह समुद्र के बीचों बीच गयी और बताया कि वहाँ बहुत सुन्दरता है। चारों तरफ़ मीलों खुला हुआ समुद्र है और ऊपर आसमान काँच की घण्टी की तरह लगता है। उसने जहाज़ भी देखे थे लेकिन बहुत दूर से—वे समुद्री पक्षियों जैसे दिख रहे थे। मज़ेदार डॉल्फ़िन मछलियाँ उछल रही थीं और विशाल ह्वेल मछलियाँ नथुनों से पानी फेंक रही थीं जो कि फ़व्वारों जैसा दिखायी दे रहा था।

अब पाँचवीं बहन की बारी आयी। उसका जन्मदिन सर्दियों में था इसलिए

उसे वह देखने को मिला जो उसकी बहनों ने नहीं देखा था। समुद्र हरा-सा था और उसमें बड़ी-बड़ी बर्फ़ की चट्टानें तैर रही थीं। हर चट्टान मोती की तरह लग रही थी। कोई-कोई चट्टान तो मनुष्य की बनायी चर्च की मीनारों से भी ऊँची थी। वे मज़बूत और अलग-अलग आकारों की थीं। हीरों जैसी चमक रही थीं। वह सबसे बड़ी चट्टान पर बैठ गयी। हवा उसके बालों से खेलने लगी और सभी जहाज़ उसके पास से रास्ता बादल कर दूर चले गये लेकिन शाम तक आकाश बादलों से ढक गया। बिजली चमकी और बादल गरजे। काली लहरों ने बर्फ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानों को उछाल दिया और वे लाल होकर चमकने लगीं। सभी जहाज़ों पर पाल फिर से लगाये गये। सब ओर चिन्ता और भय फैल गया। लेकिन वह चुपचाप अपनी तैरती हुई चट्टान पर बैठी रही और नीली बिजलियों को समुद्र में गिरते देखती रही।

उनमें से हरेक बहन को जब पहली बार पानी में ऊपर आने की अनुमति मिली तो वे नयी और सुन्दर चीज़ें देखकर बहुत ख़ुश हुईं। लेकिन अब जबकि वे बड़ी लड़कियों की तरह कहीं भी आ-जा सकती थीं, उनके लिए इसका कोई महत्त्व नहीं रह गया था। वे वापस आना चाहती थीं और जब एक महीना बीत गया तो उन्होंने मान लिया कि नीचे, तली ही सबसे अच्छी जगह है क्योंकि वहाँ घर जैसा आराम मिलता है।

अक्सर शाम को पाँचों बहनें हाथ पकड़ कर पानी की सतह के ऊपर आ जातीं। उनकी आवाज़ बहुत सुन्दर थी, किसी भी जीव से सुन्दर। जब तूफ़ान आता और उन्हें लगता कि कोई जहाज़ डूब जायेगा तो वे जहाज़ के आगे-आगे तैरते हुए सुन्दर गीत गातीं जिनमें यह कहा जाता कि समुद्र की तली बहुत सुन्दर है। गीत में नाविकों को नीचे आने से न डरने के लिए प्रेरित भी किया गया था। लेकिन नाविक कुछ भी न समझ पाते और सोचते कि यह तूफ़ान गरज रहा है। वे समुद्र के नीचे की सुन्दरता नहीं देख पाते थे क्योंकि यदि जहाज़ डूबता तो वे भी डूब जाते और समुद्र के राजा के महल में लाशों के रूप में आते।

जब पाँचों बहनें शाम को हाथ पकड़ कर ऊपर आयीं तो छोटी बहन उन्हें अकेली खड़ी देखती रही और उसे रोना आने लगा। लेकिन उसके आँसू नहीं थे और इसी वजह से उसे अधिक दुख झेलना पड़ता था।

"काश मैं पन्द्रह साल की होती।" वह बोली, "मुझे मालूम है कि मुझे ऊपर की दुनिया और उसमें रहने वाले बहुत पसन्द आयेंगे।"

आख़िरकार वह पन्द्रह साल की हो गयी।

"देखो, तुम बड़ी हो गयी हो।" दादी बोलीं, "आओ, मैं तुम्हें तुम्हारी बहनों की तरह सजा दूँ।"

उसने सफ़ेद लिली के फूलों की एक माला उसके बालों में सजा दी, जिसका हर फूल अधखिला था और उसकी पोशाक पर आठ बड़े सीप उसकी प्रतिष्ठा के प्रतीक के रूप में लगाये।

"लेकिन मुझे दर्द होता है !" समुद्र कन्या बोली।

"हाँ, प्रतिष्ठा में पीड़ा तो होती है।" दादी ने उत्तर दिया।

ओह, वह प्रतिष्ठा के ये सारे चिह्न और फूलों की मालाएँ हटाकर कितना खुश होती ! उसे अपने बगीचे के लाल फूल ही अच्छे लगते थे लेकिन वह कुछ नहीं कर सकती थी। "विदा !" उसने कहा और ऊपर की ओर चल पड़ी—समुद्र में हल्के और साफ़ बुलबुले की तरह।

जब वह समुद्र के ऊपर आयी तो सूरज उसी वक़्त डूबा था। लेकिन बादल अभी भी सोने और गुलाबों की तरह चमक रहे थे। मटमैले लाल आसमान में सितारे चमकने लगे थे। हवा सुहानी और समुद्र शान्त था। वहाँ तीन मस्तूलों वाला एक बड़ा जहाज़ खड़ा था, उस पर केवल एक पाल लगी थी और मस्तूल की रस्सियों पर नाविक बैठे थे। गाना-बजाना हो रहा था और जैसे ही शाम ढली ढेर-सी रंगीन लालटेनें जल उठीं और ऐसा लगा कि हर देश के झण्डे फहरा रहे हैं। समुद्र कन्या सीधी केबिन की खिड़की तक तैरकर गयी और हर बार जब वह ऊपर आती, वह खिड़की से भीतर देख सकती थी। खिड़की के साफ़ काँच से उसे भीतर का दृश्य एकदम साफ़ दिख रहा था। वहाँ बढ़िया कपड़े पहने लोग बैठे दिखायी दिये। लेकिन इनमें सबसे सुन्दर बड़ी-बड़ी काली आँखों वाला राजकुमार था। वह सोलह साल से बड़ा नहीं था। आज उसका जन्मदिन था और उसी वजह से यहाँ दावत चल रही थी। नाविक डेक पर नाच रहे थे और जब राजकुमार आया तो हवा में सैकड़ों रॉकेट छोड़े गये। उनके चमकने से दिन जैसी रोशनी हो गयी और समुद्र कन्या ने डरकर पानी में डुबकी लगा दी। लेकिन जल्दी ही उसने अपना सिर फिर बाहर निकाल लिया और उसे ऐसा लगा जैसे आसमान के सारे तारे उसके ऊपर गिर रहे हों। उसने ऐसी आतिशबाज़ी कभी नहीं देखी थी। बड़े-बड़े सूरज आग उगल रहे थे। सुन्दर आग की मछलियाँ नीली हवा में उड़ रही थीं। यह सब कुछ नीले समुद्र में साफ़ झलक रहा था। जहाज़ भी इतने सुन्दर तरीक़े से सजा था कि उसकी एक-एक रस्सी साफ़ दिखती थी। ओह, राजकुमार कितना सुन्दर था ! वह लोगों से हाथ मिलाते हुए मुस्करा रहा था और सुन्दर रात में संगीत बज रहा था।

देर हो रही थी लेकिन समुद्र कन्या, राजकुमार और जहाज़ पर से अपनी आँखें हटा ही नहीं पा रही थी। रंगीन लालटेनें बुझ गयी थीं। रॉकेट उड़ने बन्द हो गये थे और तोपें भी नहीं गरज रही थीं, लेकिन समुद्र में भीतर कुछ हलचल थी। वह पानी पर ऊपर-नीचे तैरने लगी जिससे वह केबिन के भीतर देख सके। लेकिन जैसे-जैसे जहाज़ आगे बढ़ने लगा एक-एक करके पालें फैलती गयीं। अब लहरें ऊपर उठीं, घने बादल छा गये और दूर बिजली चमकने लगी। ओह, मौसम भयानक हो रहा था इसीलिए नाविकों ने पालें लगा दी थीं। जहाज़ तेज़ी से जा रहा था। पानी विशाल काले पहाड़ों जैसा ऊपर उछल रहा था, जो मस्तूल तक पहुँचने की कोशिश करने लगा था। जहाज़ एक हंस की तरह ऊँची लहरों पर उछलता-तैरता हुआ आगे चलता रहा।

समुद्र कन्या के लिए यह एक खेल ही था, लेकिन नाविकों के लिए यह अलग बात थी। जहाज़ चरमराया, उसके मोटे तख़्ते भारी थपेड़ों से झुक गये और समुद्र का पानी जहाज़ में घुस गया। मस्तूल एक पतली लकड़ी की तरह दो-दो टुकड़ों में टूट गया। जहाज़ रुक गया और उसमें पानी घुस गया। समुद्र-कन्या ने देखा कि लोग ख़तरे में हैं। उसे भी पानी पर तैरती खपच्चियों और टुकड़ों से अपने आपको बचाना पड़ रहा था। एक क्षण को इतना अँधेरा छा गया कि हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था। लेकिन तभी बिजली चमकी तो जहाज़ पर हरेक को पहचाना जा सका। वह राजकुमार की तलाश कर रही थी और जब जहाज़ टूटा तब उसने उसे समुद्र में डूबते हुए देखा। वह बहुत ख़ुश हुई क्योंकि वह अब उसके पास आ सकता था। लेकिन फिर उसे याद आया कि मनुष्य पानी में ज़िन्दा नहीं रह पाते और जब वे उसके पिता के महल में आते हैं तो वे मृत होते हैं। नहीं, राजकुमार को मरना नहीं चाहिए। इसीलिए वह पट्टियों और खपच्चियों के बीच से तैरती गयी, वह यह भी भूल गयी कि इनमें से एक भी लकड़ी उसे कुचल सकती है। पानी की लहरों के बीच बार-बार डुबकी लगाकर ऊपर आने पर आख़िरकार वह राजकुमार के पास पहुँच ही गयी जो बहुत मुश्किल से तैर पा रहा था। उसके हाथ-पैर जवाब दे रहे थे, उसकी आँखें बन्द हो रही थीं और यदि समुद्र-कन्या नहीं आती तो मर ही जाता। उसने पानी से बाहर सिर निकाला और फिर वह और राजकुमार लहरों के सहारे चल पड़े।

सुबह तूफ़ान थम गया था। जहाज़ का एक टुकड़ा तक नहीं दिख रहा था। चमकता लाल सूरज पानी में से निकला और ऐसा लगा कि उसकी किरणें राजकुमार के चेहरे पर भी जीवन की आभा ले आयीं। लेकिन राजकुमार की आँखें बन्द ही रहीं। समुद्र कन्या ने उसका चौड़ा माथा चूमा और उसके भीगे

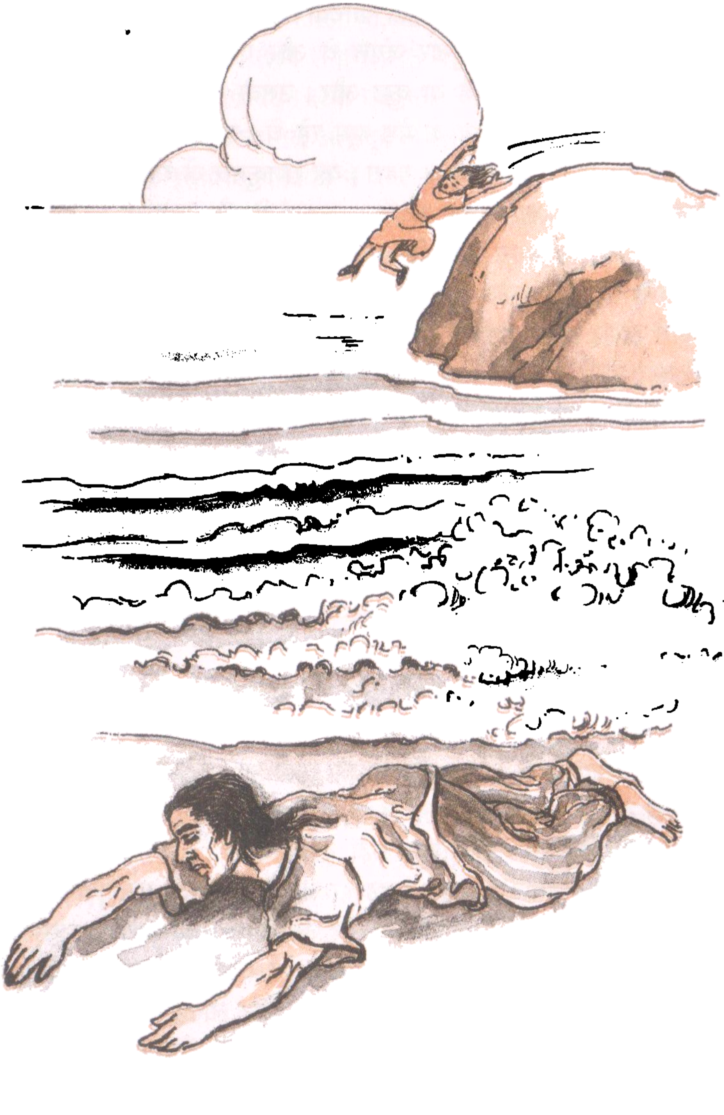
बाल पीछे किये। वह उसे अपने बगीचे की संगमरमर की मूर्ति की तरह लगा। उसने उसे चूमा और आशा की कि वह बच जायेगा। उसे सामने सूखी ज़मीन दिखायी दी। ऊँचे नीले पहाड़ जिनकी चोटियों पर बर्फ़, हंसों की तरह दीख पड़ती थी। नीचे तट पर हरे-भरे सुन्दर जंगल थे और एक भवन भी वहाँ था—उसे नहीं पता था कि वह चर्च है या कुछ और। उसके बगीचे में नींबू और सन्तरे के पेड़ थे और द्वार पर ताड़ के पेड़ झूम रहे थे। समुद्र वहाँ एक छोटी खाड़ी के रूप में था, शान्त लेकिन बहुत गहरा। वह राजकुमार के साथ सीधे उस चट्टान के पास जहाँ सफ़ेद बारीक रेत थी, तैर कर पहुँची और उसे रेत पर लिटा दिया और इस बात का ध्यान रखा कि उसके सिर पर गर्म धूप पड़ती रहे।

तभी उस बड़े सफ़ेद भवन में सभी घण्टियाँ बज उठीं और कई लड़कियाँ बगीचे से होकर आने लगीं। समुद्र-कन्या बड़ी चट्टानों के बीच में से तैरकर आगे आयी और पानी से बाहर निकलकर अपने बालों और गले पर थोड़ा झाग मल लिया जिससे कोई उसका चेहरा न देख सके और फिर वह देखने लगी कि राजकुमार के पास कौन आता है।

थोड़े ही समय बाद एक छोटी लड़की उधर आयी। वह डर गयी लेकिन केवल एक क्षण के लिए फिर वह और लोगों को बुलाकर लायी फिर समुद्र कन्या ने देखा कि राजकुमार होश में आ गया है और सबको देखकर मुस्कुरा रहा है। लेकिन वह उसे देखकर नहीं मुस्कुराया। उसे नहीं मालूम था कि उसने उसे बचाया है। उसे बहुत दुख हुआ और जब लोग उसे बड़े भवन में ले गये तो उसने बहुत दुखी होकर पानी में डुबकी लगायी और अपने पिता के महल में वापस चली गयी।

वह हमेशा से ही शान्त और उदास रहती थी। लेकिन अब वह और भी दुखी रहने लगी थी। उसकी बहनों ने पूछा कि पहली बार ऊपर जाने पर उसने क्या देखा लेकिन उसने उन्हें कुछ नहीं बताया।

अक्सर वह सुबह-शाम उस जगह पर जाती जहाँ उसने राजकुमार को छोड़ा था। उसने देखा कि फल पक गये हैं और उन्हें तोड़ लिया गया है, उसने देखा कि ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ़ पिघल गयी है लेकिन उसे राजकुमार नहीं दिखायी दिया। इसीलिए वह हमेशा पहले से भी ज़्यादा दुखी होकर लौटती। उसे केवल बगीचे में राजकुमार से मिलती-जुलती संगमरमर की मूर्ति को बाँहों में लेकर बैठना ही अच्छा लगता, वह फूलों की देख-रेख भी नहीं करती थी, वे अपने-आप बढ़ते जा रहे थे और बेलें पेड़ों पर चढ़कर घनी हो गयी थीं और वहाँ बेहद अँधेरा हो गया था।



आख़िरकार वह यह सब नहीं सहन कर सकी और उसने अपनी बहनों को यह बात बता दी। बहनों से यह बात दूसरी समुद्र-कन्याओं में भी फैल गयी। उनमें से एक राजकुमार को जानती थी, उसने जहाज़ पर हुआ समारोह भी देखा था। उसने बताया कि वह कहाँ से आया था और उसका राज्य कहाँ था।

"आओ बहन !" दूसरी राजकुमारियाँ बोलीं और हाथ पकड़कर तैरती हुई समुद्र के ऊपर आयीं जहाँ उन्हें राजकुमार के महल का पता चला था।

यह महल चमकीले पीले पत्थर से बना था और उसमें बड़ी-बड़ी संगमरमर की सीढ़ियाँ थीं। उनमें से एक सीधी समुद्र में जाती थी। महल पर सुन्दर सोने की परत चढ़े हुए गुम्बद थे और महल के चारों तरफ़ के खम्भों के बीच सुन्दर संगमरमर की मूर्तियाँ ऐसी लगती थीं जैसे वे जीवित हों। ऊँची खिड़कियों के काँच से नीचे वाले कमरे दिखायी देते थे जहाँ महँगे रेशम के पर्दे लगे थे और दीवारों पर सुन्दर चित्र थे। सब कुछ बहुत ही सुन्दर था। इनमें सबसे बड़े कमरे के बीचोबीच एक बड़ा फ़व्वारा चल रहा था जिसकी धार ऊपर काँच के गुम्बद पर पड़ती थी जिससे होकर सूरज की रोशनी नीचे पानी और सुन्दर पौधों पर पड़ रही थी।

अब वह जान गयी थी कि राजकुमार कहाँ रहता है और अब वह अक्सर शाम और रात को वहाँ पानी के ऊपर आ जाती। वह धरती के इतने पास आ जाती जितने पास जाने का किसी में साहस नहीं होता था। वह महल के संगमरमर के छज्जे के नीचे तक आ गयी जिसकी छाया पानी पर पड़ती थी। वह यहाँ बैठकर राजकुमार को देखती, जहाँ वह चाँदनी में बैठा अपने आपको बहुत अकेला महसूस करता था।

अक्सर शाम को वह उसे संगीत के बीच लहराते हुए झण्डों वाली महँगी नाव में बैठकर जाते देखती। वह हरे सरकण्डों के बीच से झाँकती और जब भी हवा उसका चाँदी जैसा सफ़ेद दुपट्टा उड़ाती तो ऐसा लगता कि कोई हंस अपने पंख फैला रहा है।

बहुत बार वह समुद्र में रात को मछुआरों को अपनी लालटेनें लिए हुए देखती। वे राजकुमार के बारे में अच्छी बातें करते और वह ख़ुश होती कि उसने राजकुमार को भयानक लहरों में डूबने से बचाया था। वह याद करती कि किस तरह राजकुमार ने अपना सिर उसके सीने पर टिकाया था और किस तरह उसने राजकुमार को चूमा था। लेकिन राजकुमार इसके बारे में कुछ नहीं जानता था और उसके बारे में सोच भी नहीं सकता था।

धीरे-धीरे वह मनुष्य को और भी ज़्यादा चाहने लगी। उसकी ज़्यादा से

ज़्यादा इच्छा होने लगी कि वह उनके बीच में रहे, जिनकी दुनिया उसकी दुनिया से बहुत बड़ी है। वे जहाज़ में समुद्र के ऊपर उड़ सकते थे, बादलों से भी ऊपर पहाड़ों पर जा सकते थे और उनके पास ढेर-सी ज़मीन थी, जो जंगलों और खेतों में इतनी दूर तक फैली थी जितनी दूर उसकी नज़र भी नहीं पहुँचती थी। वह बहुत कुछ जानना चाहती थी। लेकिन उसकी बहनें उसे ज्यादा नहीं बता पाती थीं। वह बूढ़ी दादी-माँ के पास पूछने गयी। वे ऊपर की दुनिया के बारे में अच्छी तरह जानती थीं।

"यदि लोग डूबें नहीं तो क्या वे हमेशा ज़िन्दा रहेंगे ?" समुद्र-कन्या ने पूछा, "क्या वे हमारी तरह तीन सौ साल बाद नहीं मरते ?"

"हाँ।" दादी बोलीं, "वे हमसे जल्दी मरते हैं। उनकी ज़िन्दगी हमसे छोटी होती है। हम तीन सौ साल ज़िन्दा रहते हैं। लेकिन जब हम मर जाते हैं तो हम झाग में बदलकर पानी की सतह पर तैरने लगते हैं और हमारी क़ब्र भी उनके बीच नहीं होती, जिन्हें हम प्यार करते हैं। हम अमर नहीं हैं, हमें दूसरा जीवन नहीं मिलता। हम हरी समुद्री घास की तरह हैं जो एक बार कटने पर दोबारा नहीं उगती। लेकिन दूसरी तरफ़ मनुष्य की आत्मा होती है। वो हमेशा रहती है—तब भी जब कि शरीर ख़त्म हो जाता है। तब आत्मा हवा में ऊपर चमकीले सितारों के पास चली जाती है। जैसे हम पानी से ऊपर उठकर धरती का जीवन देखते हैं वैसे ही वे ऊपर अनजानी सुन्दर जगहों पर जाते हैं, जिन्हें हम कभी नहीं देख सकते।"

"हमारी आत्मा अमर क्यों नहीं है ?" समुद्र कन्या ने दुख से पूछा, "मैं केवल एक दिन मनुष्य बनने और स्वर्ग में जाने के बदले अपने जीवन के हज़ार दिन दे सकती हूँ।"

"तुम्हें यह नहीं सोचना चाहिए।" बूढ़ी औरत बोली, "हम मनुष्यों से कहीं बेहतर और ज़्यादा ख़ुश हैं।"

"फिर तो मुझे समुद्र के ऊपर झाग बनकर तैरना होगा, मैं लहरों का संगीत नहीं सुन सकूँगी और न ही सुन्दर फूलों और लाल सूरज को देख सकूँगी ? क्या मैं किसी भी तरह अमर आत्मा नहीं पा सकती ?"

"नहीं !" दादी बोली, "यह तभी हो सकता है जब कोई मनुष्य तुम्हें अपने माता और पिता से भी ज़्यादा प्यार करे। यदि वह पूरे दिल से तुम्हें चाहे और पादरी उसका दायाँ हाथ तुम्हारे हाथ में देकर अनन्त काल तक साथ निभाने का वचन दिलाये तब तुम्हारे शरीर में उसकी आत्मा आ जायेगी और तुम्हें मनुष्य होने की ख़ुशी मिलेगी। वह अपनी आत्मा तुम्हें सौंप देने के बावजूद अपनी आत्मा

अपने पास रखेगा। लेकिन ऐसा कभी नहीं होता। यहाँ समुद्र में जिसे सुन्दर माना जाता है—तुम्हारी यह मछली की पूँछ—पृथ्वी पर उसे ही वे बदसूरत मानेंगे। वे इसे अच्छा नहीं मानते, वहाँ लोगों के पास हमारी पूँछ की जगह दो अजीब-सी चीज़ें होती हैं। उन्हें वे 'पैर' कहते हैं और उन्हें वे सुन्दर समझते हैं।''

समुद्र-कन्या ने आह भरी और दुख से अपनी पूँछ को देखा।

''हम आनन्द उठायेंगे !'' दादी बोली, ''हम अपने तीन सौ सालों तक नाचेंगे-गायेंगे। कितना लम्बा समय है यह। और इसके बाद हम आराम करेंगे। आज शाम हम एक शानदार नाच का आयोजन करेंगे।''

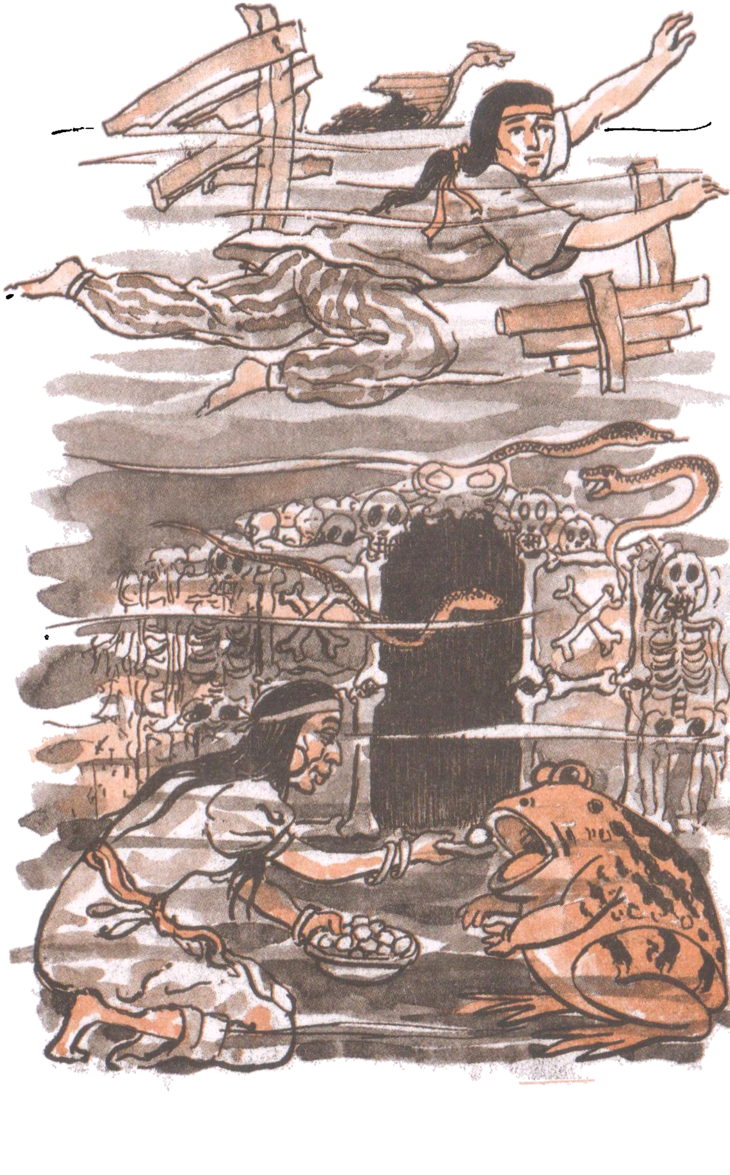
यह बहुत ही भव्य दृश्य था जैसा पृथ्वी पर कभी नहीं देखा गया था। नाच के कमरे की दीवारें और छतें मोटे लेकिन पारदर्शी काँच की थीं। सैकड़ों गुलाबी और लम्बी हरी सीपियाँ नीली आग से भरी हुई दोनों ओर क़तारों में खड़ी थीं—जिनसे पूरा कमरा जगमगा रहा था और बाहर भी रोशनी जा रही थी। यहाँ तक कि समुद्र भी जगमगा रहा था। ढेर-सी बड़ी-छोटी मछलियाँ काँच की दीवार के पास तैरती दिखायी देती थीं, जिनमें से कुछ बैंगनी थीं, कुछ रूपहली और कुछ सुनहरी। कमरे के बीचोबीच एक छोटा-सा झरना बह रहा था जिसमें वे लोग अपने सुन्दर गीतों पर नाच रहे थे। इतनी सुन्दर आवाज़ मनुष्यों की नहीं होती। नन्हीं समुद्र कन्या ने सबसे सुन्दर गीत गाया और सभी ने अपने हाथों और पूँछ से तालियाँ बजा दीं। एक क्षण के लिए उसे थोड़ा-सा गर्व हुआ क्योंकि वह जानती थी कि पूरे समुद्र में और पृथ्वी पर उसके जैसा सुन्दर कोई नहीं गा सकता है। लेकिन तुरन्त ही वह बहुत दुखी हो गयी। वह सुन्दर राजकुमार को भूल नहीं पा रही थी और उसे उसके जैसी अमर आत्मा न मिल पाने का बेहद दुख था। यह सब सोचते हुए वह महल से बाहर चली आयी और जिस समय भीतर नृत्य-संगीत और आनन्द चल रहा था वह बाहर दुख में अपने छोटे बग़ीचे में बैठी थी। तभी उसने पानी में से आती हुई बड़े मनुष्यों की आवाज़ सुनी और सोचा, ''अब वह निश्चय ही ऊपर आ रहा है, जिस पर मेरी सारी आशाएँ टिकी हैं और जिसके हाथों में मैं अपने जीवन की सारी ख़ुशियाँ रख देना चाहती हूँ। मैं उसे और अमर आत्मा को पाने के लिए कुछ भी कर सकती हूँ। मेरी बहनें तो भीतर महल में नाच रही हैं और मैं समुद्र की जादूगरनी के पास जाऊँगी जिससे मैं हमेशा डरती थी। शायद वह मुझे सलाह दे सके और मदद कर सके।''

समुद्र कन्या अपने बगीचे से निकलकर झाग वाले चक्रवात के पास गयी जिसके पीछे वह जादूगरनी रहती थी। वह उस रास्ते पर कभी नहीं गयी थी।

वहाँ कोई फूल नहीं था और न ही समुद्री घास। केवल मटमैली रेत फैली हुई थी और पानी चक्रवातों के रूप में हर चीज़ को नष्ट कर देता था। इन चक्रवातों के बीच से होकर उसे जादूगरनी के घर जाना था और उस राह पर बहुत दूर तक गर्म दलदल था। इसे वह जादूगरनी अपना दलदली धारा का मैदान कहती थी। इसके पीछे एक ही तरह के पौधों के जंगल में उसका घर था। इस जंगल में सभी पेड़ और झाड़ियाँ आधे जीवन और आधे पौधे थे। वे पृथ्वी के सौ सिर वाले साँपों जैसे लगते थे। इनकी सभी शाख़ें मुलायम केंचुओं की तरह उँगलियों वाली थीं और वे जड़ से ऊपरी सिरे तक शाख़ों में बँटे हुए थे। वे पानी में जो कुछ भी मिलता था उसे कसकर पकड़ लेते थे और उसे नहीं छोड़ते थे। समुद्र-कन्या भयभीत होकर उनके सामने रुकी, उसका दिल डर से धड़क रहा था और वह वापस लौटने ही वाली थी कि उसे राजकुमार और मनुष्य की आत्मा का विचार आ गया और उसका साहस वापस आ गया। उसने अपने लम्बे उड़ते हुए बाल बाँध लिए जिससे वे अर्द्ध जीव उन्हें पकड़ न पायें। उसने अपने सीने पर दोनों हाथ रखे और उनके बाँहों के बीच से तैरती हुई आगे बढ़ी। उसने देखा कि उनमें से हर मज़बूत हाथ ने कुछ-न-कुछ पकड़ रखा था। जो लोग समुद्र में डूब गये थे उनके सफ़ेद कंकाल, जहाज़ की खपच्चियाँ और टुकड़े, जानवरों के कंकाल और एक समुद्री स्त्री—जिन्हें उन्होंने पकड़ लिया था। राजकुमारी को यह सब बहुत ही भयानक लगा।

अब वह जंगल की एक बड़ी दलदली जगह आ गयी जहाँ मोटे-मोटे पानी के पीले साँप रेंग रहे थे। उस दलदल के बीचोबीच जहाज़ों में मरे हुए मनुष्यों की हड्डियों से बना हुआ एक घर था। वहाँ एक समुद्री जादूगरनी एक मेंढक को अपने हाथ से खाना खिला रही थी जैसे लोग पीली चिड़िया को शक्कर खिलाते हैं। वह मोटे, बदसूरत पानी के साँपों को अपनी मुर्ग़ियाँ कहकर बुलाती थी और उन्हें अपने ऊपर और आसपास रेंगने देती थी।

"मुझे मालूम है तुम्हें क्या चाहिए।" जादूगरनी बोली, "तुम बेवकूफ़ हो लेकिन अपना काम निकाल सकती हो। इससे तुम्हें दुख ही मिलेगा राजकुमारी ! तुम अपनी पूँछ से छुटकारा पाकर मनुष्यों जैसे दो पैर पाना चाहती हो—जिससे राजकुमार तुम्हें प्यार करने लगे और तुम्हें अमर आत्मा मिल जाये।" और यह कहकर जादूगरनी बहुत अजीब तरीक़े से ठहाका लगाकर हँसी जिससे साँप और मेंढक ज़मीन पर लुढ़क गये और वहीं रेंगने लगे। "तुम ठीक समय पर आयी हो।" जादूगरनी बोली, "क्योंकि कल सूर्यास्त के बाद एक साल तक मैं तुम्हारी मदद नहीं कर पाऊँगी। मैं तुम्हारे लिए एक दवा बना दूँगी जिसे लेकर तुम कल



सूरज उगने से पहले तैरकर ज़मीन पर चली जाना और वहाँ बैठकर उसे पी लेना जिससे तुम्हारी पूँछ झड़ जायेगी और पैर उग आयेंगे। लेकिन इससे तुम्हें तकलीफ़ होगी—ऐसा लगेगा जैसे तुम्हें एक तेज़ तलवार से काटा जा रहा है। जो भी तुम्हें देखेगा वह यही कहेगा कि तुम सबसे सुन्दर लड़की हो। तुम्हारी चाल-ढाल शालीन होगी। कोई भी नृत्यांगना तुम्हारी तरह नहीं चल सकेगी लेकिन अपना हर क़दम तुम्हें ऐसा लगेगा जैसे तुम तेज़ चाकू की धार पर चल रही हो और तुम्हारे पाँव से खून बह रहा हो। यदि तुम यह सब सह सकती हो तो मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ।"

"हाँ !" 'समुद्र'-कन्या काँपती आवाज़ में बोली और उसे राजकुमार और अमर आत्मा का ध्यान आया।

"लेकिन याद रखो।" जादूगरनी बोली, "एक बार तुम मनुष्य बन गयी तो दोबारा समुद्र-कन्या कभी नहीं बन सकोगी। तुम पानी में तैरकर कभी अपनी बहनों या पिता के पास नहीं जा सकोगी और यदि राजकुमार जब तक तुमसे इतना प्यार न करने लगे कि वह अपने माता-पिता को भूल जाये और तुम्हारे हृदय में उतरकर पादरी से तुम्हारा हाथ अपने हाथ में देने को न कहे, तब तक तुम्हें अमर आत्मा नहीं मिलेगी। जिस दिन वह किसी और से शादी कर लेगा उसकी अगली सुबह तुम्हारा दिल टूट जायेगा और तुम पानी पर झाग बनकर तैरने लगोगी।"

"मैं ऐसा ही करूँगी।" समुद्र-कन्या बोली लेकिन वह मृत्यु की तरह पीली पड़ गयी थी।

"लेकिन तुम्हें मुझे भी कुछ देना पड़ेगा।" जादूगरनी बोली, "और मैं कोई छोटी-सी चीज़ ही माँग रही हूँ। तुम्हारी आवाज़ यहाँ सबसे सुन्दर है और इसी से तुम उसे मोहित करना चाहती हो, लेकिन यह आवाज़ तुम्हें मुझे देनी पड़ेगी। तुम्हारी सबसे अच्छी चीज़ मैं अपनी क़ीमती दवा के बदले माँगती हूँ। इसमें मैं अपना खून भी डालूँगी जिससे यह दवा दुधारी तलवार की तरह तीखी हो जाये।"

"लेकिन यदि तुम मेरी आवाज़ ले लोगी तो मेरे पास क्या बचेगा ?" राजकुमारी ने पूछा।

"तुम्हारा सुन्दर रूप।" जादूगरनी ने कहा, "तुम्हारी सुन्दर चाल और तुम्हारी बोलती आँखें, इनसे तुम मनुष्य का दिल जीत सकती हो। अरे यह क्या, तुम्हारी हिम्मत जवाब दे गयी ? अपनी जीभ बाहर निकालो और मैं अपने मेहनताने के रूप में इसे काट लूँगी। इसके बाद तुम तीखी दवा पीना।"

"ऐसा ही होगा।" समुद्र-कन्या बोली। और जादूगरनी ने दवा बनाने के लिए आग पर बर्तन चढ़ा दिया।

"सफ़ाई अच्छी आदत है।" वह बोली और बर्तन को साँपों से बाँधी गयी एक बड़ी गाँठ से साफ़ किया। फिर उसने अपने आपको चाकू से खरोंचा और अपना काला खून उसमें डाल दिया। बर्तन में से डरावने रूप में भाप ऊपर उठी। हर थोड़ी देर में वह उस बर्तन में कुछ डालती और जब वह उबलता तो उसमें से मगरमच्छ के रोने जैसी आवाज़ आती। आख़िरकार दवा तैयार हो गयी। यह एकदम साफ़ पानी जैसी दिख रही थी।

"अब तुम इसे पी लो।" जादूगरनी ने कहा। और उसने समुद्र-कन्या की जीभ काट ली। राजकुमारी अब गूँगी थी। वह न गा सकती थी और न ही कुछ बोल सकती थी।

उसे अपने पिता का महल दिखायी दे रहा था। बड़े कमरे की रोशनियाँ बुझ रही थीं और भीतर वे लोग सो रहे थे लेकिन उसे वहाँ जाने की हिम्मत नहीं हुई क्योंकि वह अब गूँगी थी और उन्हें छोड़कर हमेशा के लिए जाने भी वाली थी। वह वहाँ से ऐसे निकली जैसे उसका दिल दुख से फट ही जायेगा। वह बग़ीचे में आ गयी, अपनी बहनों की क्यारियों से एक-एक फूल तोड़ा, महल की तरफ़ हज़ारों हवाई चुम्बन उछाले और गहरे नीले समुद्र में ऊपर आने लगी।

जब उसे राजकुमार का महल दिखायी दिया और वह उसकी संगमरमर की सीढ़ियों पर बैठी तब सूरज उगा भी नहीं था। चाँदनी अभी भी फैली थी। समुद्र-कन्या ने जलती हुई तीखी दवा पी और उसे लगा जैसे तेज़ दुधारी तलवार उसके नाजुक शरीर में उतर गयी हो। वह बेहोश होकर गिर पड़ी और ऐसे पड़ी रही जैसे कि उसमें जान ही न हो। जब सूरज उगा तब वह जगी और उसे तीखा दर्द हुआ। लेकिन उसके ठीक सामने सुन्दर राजकुमार खड़ा था। राजकुमार ने अपनी काली आँखें उस पर इस तरह गड़ा दीं कि वह नीचे देखने लगी और तभी उसे पता लगा कि उसके एक जोड़ी बहुत सुन्दर, गोरे पैर निकल आये हैं। लेकिन उसने कपड़े नहीं पहने थे इसीलिए उसने अपने आपको लम्बे बालों में छिपा लिया। राजकुमार ने उससे पूछा कि वह यहाँ किस तरह आयी है? समुद्र-कन्या उसे अपनी गहरी नीली आँखों से प्यार और दुख से देखने लगी—क्योंकि वह कुछ बोल नहीं सकती थी। राजकुमार ने उसका हाथ पकड़ा और महल में ले गया। जैसा कि जादूगरनी ने कहा था, हरेक क़दम पर उसे ऐसा लगता था जैसे पैरों में सुइयाँ और छुरियाँ चुभ रहीं हैं, लेकिन वह इस दर्द को ख़ुशी-ख़ुशी सहन करती गयी। वह राजकुमार के सीधे हाथ की तरफ़ वह एक

साबुन के बुलबुले की तरह हल्की होकर चल रही थी और राजकुमार उसकी शालीन चाल से मुग्ध था।

उसे महल में रेशम और मलमल के सुन्दर कपड़े दिये गये। वहाँ वह सबसे सुन्दर थी लेकिन गूँगी थी और न तो बोल सकती थी और न ही गा सकती थी। रेशम और सोने के कपड़े पहने हुए सुन्दर दासियाँ सामने आयीं और राजकुमार और उसके माता-पिता के सामने गाने लगीं। उनमें से एक ने सबसे सुन्दर गाया और राजकुमार ने खुश होकर तालियाँ बजायीं। समुद्र-कन्या दुखी हो गयी। वह जानती थी कि उन सब से बहुत मधुर गीत वह गा सकती थी। उसने सोचा, "ओह, वह कभी नहीं जान पायेगा कि मैंने उसके साथ रहने के लिए अपनी आवाज़ हमेशा के लिए खो दी है।"

अब दासियाँ मधुर संगीत पर सुन्दर नृत्य करने लगीं। समुद्र-कन्या ने अपनी सुन्दर, गोरी बाँहें ऊपर उठायीं। वह अपने पंजों के बल खड़ी हुई और इस तरह नाचने लगी जैसा आज तक कोई न नाचा होगा। हर क़दम पर उसकी सुन्दरता और भी बढ़ती जाती और उसकी आँखें दासियों के गीतों से भी ज़्यादा बोलने लगीं।

सभी बहुत प्रसन्न हुए ख़ास तौर पर राजकुमार जो उसे एक त्यागी हुई कन्या कहता था। वह बार-बार नाचती गयी। हालाँकि हर क़दम पर उसे लगता कि वह छुरियों पर नाच रही हो। राजकुमार ने कहा कि वह हमेशा उसके साथ रहेगी और उसे अपने कमरे के सामने मख़मल के गद्दे पर सोने की अनुमति दी।

उसने उसके लिए एक ख़ास पोशाक बनवायी। जिससे वह उसके साथ घुड़सवारी करने जा सके। वह घोड़े पर बैठकर जंगल में जाते जहाँ शाखें उनके कन्धों से टकरातीं और हरे-भरे पत्तों के बीच पक्षी-गाना गाते रहते। वह राजकुमार के साथ पहाड़ों पर चढ़ती रही हालाँकि उसके नाज़ुक पैरों से इतना खून बहा कि सबको दिखायी पड़ा फिर भी वह अपने आप पर हँसती रही और राजकुमार के साथ तब तक चलती रही जब तक कि उन्हें दूर देश को उड़कर जाते हुए बादल पक्षियों के झुण्डों की तरह नहीं दिखायी देने लगे।

राजकुमार के महल में रात में जब सब सो जाते तो वह बाहर संगमरमर की सीढ़ियों पर आ जाती। इससे उसके जलते हुए पैर समुद्र के ठण्डे पानी में ठण्डे होते और फिर वह गहराई में रह रहे अपने प्रियजनों के बारे में सोचती।

एक बार रात में उसकी बहनें हाथों में हाथ डाले ऊपर आयीं। वे पानी पर तैरते

हुए दुख से गा रही थीं। उसने उन्हें इशारा किया और उन्होंने उसे पहचान लिया। उन्होंने उसे बताया कि उसके बिना वे बहुत दुखी हैं। वह हर रात उनसे मिलने लगी और एक बार तो उसे दूर से ताज पहने समुद्र के राजा और अपनी दादी भी दिखायी दीं जो बहुत सालों से पानी के ऊपर नहीं आये थे। उन्होंने उसे देखकर अपने हाथ हिलाये लेकिन उसकी बहनों की तरह धरती के बहुत पास नहीं आये।

"दिनों दिन राजकुमार उसे ज़्यादा से ज़्यादा चाहने लगा। वह उसे एक प्यारे, अच्छे बच्चे की तरह चाहता था लेकिन उससे शादी करने की इच्छा उसके मन में नहीं थी। यदि वह उसकी पत्नी नहीं बन पाती तो उसे अमर आत्मा नहीं मिलती और उसे राजकुमार की शादी की अगली सुबह समुद्र पर झाग बनकर ख़त्म हो जाना होता।

"क्या तुम मुझे सबसे ज़्यादा प्यार नहीं करते ?" जब राजकुमार उसे बाँहों में लेकर उसका माथा चूमता तब समुद्र-कन्या की आँखें कुछ कहतीं जान पड़तीं।

"हाँ, तुम मुझे सबसे प्यारी हो !" राजकुमार बोला, "क्योंकि तुम्हारा हृदय सबसे सुन्दर है। तुम मेरे प्रति सबसे ज़्यादा समर्पित हो और उस लड़की जैसी हो जिसे मैंने एक बार देखा था और दोबारा कभी नहीं मिल सकूँगा। मैं एक जहाज़ पर था और जहाज़ टूट गया था। लहरों ने मुझे एक चर्च के पास फेंक दिया था जहाँ बहुत-सी लड़कियाँ पूजा कर रही थीं। उनमें सबसे छोटी लड़की को मैं मिला और उसने मेरी जान बचायी। मैंने उसे केवल दो बार देखा। दुनिया में मैं केवल उसी से प्यार करता हूँ लेकिन तुम उसकी तस्वीर मेरे दिल से हटा रही हो, तुम उससे इतनी मिलती-जुलती हो। वह लड़की चर्च की है इसीलिए मेरे भाग्य ने तुम्हें मेरे पास भेजा है। हम कभी अलग नहीं होंगे।"

"ओह ! यह नहीं जानता कि मैंने ही इसकी जान बचायी थी।" समुद्र-कन्या ने सोचा, "मैं ही इसे समुद्र के ऊपर जंगल में चर्च के पास लायी थी। मैने ही यहाँ बैठकर इन्तज़ार किया था कि इस राजकुमार को लेने कोई आए। मैंने उस सुन्दर लड़की को देखा था जिसे यह मुझसे ज़्यादा चाहता है।" उसने गहरी आह भरी—वह रो नहीं सकी। "वह लड़की चर्च की है।" वह मन में बोली, "और वह अब कभी दुनिया के सामने नहीं आयेगी।—ये अब कभी नहीं मिल सकेंगे। मैं रोज़ राजकुमार के साथ रहती हूँ, मैं इसकी देखभाल करूँगी, इसे प्यार करूँगी और अपना जीवन इसे दे दूँगी।"

तभी लोगों में चर्चा हुई कि राजकुमार की शादी पड़ोसी देश के राजा की बेटी से होने वाली है और इसीलिए इतना सुन्दर जहाज़ तैयार किया जा रहा

है। इसके साथ वह कहानी भी बनी कि राजकुमार पड़ोसी देश के राजा की बेटी को देखने जायेगा। उसके साथ बहुत-से लोग भी जाने वाले थे। समुद्र-कन्या ने अपना सिर हिलाया और मुस्करायी। वह राजकुमार के विचारों को किसी और से बेहतर पहचानती थी।

"मुझे यात्रा करनी चाहिए।" राजकुमार ने उससे कहा था, "मुझे सुन्दर राजकुमारी को देखना चाहिए। मेरे माता-पिता की यही इच्छा है लेकिन वे मुझ पर शादी के लिए ज़बर्दस्ती नहीं करना चाहते। मैं, उसे प्यार नहीं कर सकता। वह चर्च की लड़की की तरह सुन्दर नहीं है, तुम उसके जैसी दिखती हो। यदि मुझे लड़की पसन्द करनी ही होगी तो मैं तुम्हें चुनूँगा, मेरी बोलती आँखों वाली प्यारी गूँगी बच्ची !"

और उसने समुद्र कन्या के लाल होठों को चूमा और उसके बाल सहलाये जिससे वह ख़ुशी और अमर आत्मा का सपना देखने लगी।

"क्या तुम समुद्र से नहीं डरतीं मेरी गूँगी बच्ची ?" जब वे पड़ोसी देश ले जाने वाले भव्य जहाज़ पर खड़े थे तब राजकुमार ने पूछा। उसने समुद्र-कन्या को तूफ़ान, गहरे समुद्र की अनोखी मछलियों और गोताख़ोरों के अनुभवों के बारे में बताया। वह उसकी बातें सुनकर मुस्कुराती रही क्योंकि उसे तो समुद्र की गहराइयों के बारे में ज़्यादा जानकारी थी।

चाँदनी रात में जब जहाज़ चलाने वाले नाविकों के अलावा सब सो गये थे, वह जहाज़ के पास बैठकर साफ़ पानी में देख रही थी। उसने कल्पना की कि वह अपने पिता का महल देख रही है। परकोटे पर ऊपर दादी चाँदी का मुकुट पहने खड़ी थीं और ऊपर लहरों को देख रही थीं। फिर उसकी बहनें पानी के ऊपर आयीं और उसे दुख से देखने लगीं। उसने उन्हें इशारा किया, मुस्कुरायी और उन्हें कहना चाहा कि वह बहुत ख़ुश है लेकिन तभी जहाज़ का एक कर्मचारी उसकी तरफ़ आने लगा और उन्होंने डुबकी लगा दी। कर्मचारी को लगा कि उसने सतह पर जो सफ़ेद चीज़ें देखी थीं, वह पानी का झाग था।

अगली सुबह जहाज़ पड़ोसी देश के सुन्दर शहर के बन्दरगाह में पहुँच गया। चर्च की घण्टियाँ बज रही थीं और ऊँची मीनारों पर बिगुल बज उठे। सिपाही वहाँ रंगीन झण्डे और गरजती बन्दूक़ों के साथ खड़े थे। हर दिन उत्सव का दिन होता, नाच और मनोरंजन होते, लेकिन उस देश की राजकुमारी वहाँ नहीं थी। लोग कहते थे कि वह एक चर्च में राजसी तौर-तरीक़ों की शिक्षा प्राप्त कर रही है। आख़िरकार वह आ गयी।

समुद्र-कन्या राजकुमारी की सुन्दरता को देखने के लिए उत्सुक थी और

वह सचमुच सुन्दर थी। इससे सुन्दर रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था। उसकी त्वचा साफ़ और गोरी थी और लम्बी काली बरौनियों के पीछे एक जोड़ी ईमानदार गहरी नीली आँखें मुस्कुरा रही थीं।

''जब मैं एक लाश की तरह समुद्र तट पर पड़ा था तब तुम्हीं ने मेरी जान बचायी थी।'' राजकुमार बोला और उसने अपनी शर्मीली वधू को अपने हृदय से लगा लिया। ''ओह मैं बहुत, बहुत खुश हूँ।'' वह समुद्र कन्या से चिल्लाकर बोला, ''मेरी सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गयी है। तुम भी मेरी खुशी से खुश होगी क्योंकि तुम ही मेरे प्रति सबसे अधिक समर्पित हो।''

और समुद्र'कन्या ने राजकुमार का हाथ चूमा और उसे लगा कि उसका हृदय टुकड़े-टुकड़े होने वाला है क्योंकि राजकुमार की किसी और से शादी की अगली सुबह उसके लिए मृत्यु लेकर आने वाली थी और वह झाग बनकर समुद्र में बह जाने वाली थी।

सभी तरफ़ चर्च की घण्टियाँ बज रही थीं और सड़कों पर इस सम्बन्ध की घोषणा हो रही थी। हर वेदी पर चाँदी के सुन्दर दीपकों में सुगन्धित तेल जल रहा था। पादरी ने धूपदान घुमाया। राजकुमार और राजकुमारी ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और पादरी का आशीर्वाद प्राप्त किया। समुद्र-कन्या ने सुनहरे कपड़े पहने थे और दुल्हन की पोशाक सम्हाली हुई थी। लेकिन उसके कानों में उत्सव के संगीत का कोई सुर भी नहीं पड़ रहा था, उसकी आँखें इस शुभ समारोह को नहीं देख रहीं थीं उसे केवल अपनी मृत्यु, की रात का विचार था। और उस सबका विचार था जो इस दुनिया में उसने खोया था।

उसी शाम वर-वधू जहाज़ पर चले गये। तोप गरजी और झण्डे लहराये। जहाज़ के बीचोबीच सुन्दर गद्दियों वाला सुनहरा और बैंगनी मण्डप सजा था और यहाँ विवाहित जोड़े को ठण्डी रात में सोना था।

जहाज़ की पालें फूल गयीं और जहाज़ शान्त समुद्र पर तैरता रहा। अँधेरा होने पर रंगीन दीपक जल गये और नाविक डेक पर तरह-तरह के नृत्य करते रहे। समुद्र कन्या को वह दिन याद आया जब वह पहली बार समुद्र के ऊपर आयी थी और उसकी आँखों के सामने हँसी-खुशी का वही सुन्दर दृश्य आ गया। वह घूम-घूमकर नाचने लगी और फुदकने लगी जैसे अबाबील पीछा किये जाने पर फुदकता है। सभी ने ताली बजाकर उसके नृत्य की प्रशंसा की। वह सचमुच बहुत सुन्दर नाची थी। उसके नाजुक पैर लहूलुहान थे, जैसे वे छुरी से कट गये हों, लेकिन उसे दर्द महसूस नहीं हुआ क्योंकि उसके दिल का दर्द इससे कहीं ज्यादा बड़ा था। वह जानती थी कि आज की शाम की आख़िरी बार वह उसे

देख सकती थी जिसके लिए उसने अपने घर और साथियों को छोड़ दिया था, अपनी सुन्दर आवाज़ खो दी थी और हर रोज़ भयानक दर्द सहा था। राजकुमार को इस सबके बारे में कुछ मालूम भी नहीं था। आज ही वह आख़िरी शाम थी जब वह उसके साथ कुछ साँस लेगी और गहरे समुद्र और सितारों भरे आकाश को देखेगी। बिना सपनों और विचारों वाली अन्तहीन रात उसकी राह देख रही थी क्योंकि उसकी कोई आत्मा नहीं थी और न ही वह कोई आत्मा प्राप्त कर पायी थी।

जहाज़ पर मध्यरात्रि तक मनोरंजन चलता रहा और वह हृदय में मृत्यु का विचार लिए नाचती और हँसती रही। राजकुमार ने अपनी सुन्दर दुल्हन को चूमा और वह उसके काले बालों को सहलाता रहा। हाथ में हाथ डाले वे उस सुन्दर मण्डप में चले गये।

जहाज़ पर शान्ति छा गयी, केवल नाविक पतवार के पास खड़े रहे। समुद्र कन्या परकोटे पर अपनी बाँहें टिकाये पूर्व में सूरज के उगने की राह देखती रही—वह जानती थी कि पहली किरण उसे मार देगी। तभी उसने देखा कि उसकी बहनें पानी से ऊपर आ रही हैं, वे उसी की तरह पीली थीं, उनके लम्बे बाल हवा में नहीं लहरा रहे थे। वे कट गये थे।

"हमने उन्हें जादूगरनी को दे दिया है जिससे हम तुम्हारी मदद कर सकें और तुम आज रात नहीं मर सको। उसने हमें एक छुरी दी है, वह यहाँ है—देखो। कितनी तेज़ ! सूरज उगने से पहले तुम इसे राजकुमार के दिल में भोंक दो और जब उसका गर्म खून तुम्हारे पैरों पर गिरेगा वे वापस पूँछ में बदल जायेंगें और तुम वापस समुद्र-कन्या बनकर हमारे पास वापस आ जाओगी। तब तुम समुद्र का नमकीन झाग बनने से पहले, तीन सौ साल जी सकोगी। जल्दी करो। सूरज उगने से पहले तुम्हें या उसे मरना ही होगा। हमारी दादी इतनी दुखी हैं कि उनके बाल झड़ गये हैं जैसे कि हमारे बाल जादूगरनी की कैंची से कट गये हैं। राजकुमार को ख़त्म करो और वापस आओ। जल्दी करो ! तुम आसमान में लाल रेखा नहीं देख रही ? कुछ ही समय में सूरज उगेगा और तुम मर जाओगी।"

समुद्र कन्या ने बैंगनी रंग का पर्दा खींचा और सुन्दर दुल्हन को अपने पति के सीने पर सिर रखे हुए लेटे देखा। वह झुकी उसने उसकी भौंहें चूमीं और ऊपर आकाश में देखा जहाँ सुबह की लाली बढ़ती जा रही थी और फिर उसने अपनी छुरी देखी। उसने फिर राजकुमार पर अपनी आँखें टिका दीं जो नींद में अपनी दुल्हन का नाम बड़बड़ा रहा था। वह केवल उसके विचारों में

थी। छुरी समुद्र कन्या के हाथों में काँप गयी। लेकिन फिर उसने छुरी को लहरों में फेंक दिया—लहरों में लाली चमकी और ऐसा लगा जैसे पानी से खून की धार उछली हो। एक बार फिर उसने आधी बुझी आँखों से राजकुमार को देखा और समुद्र में कूद गयी। उसकी काया समुद्र में झाग बनकर घुलती गयी।

सूरज उगा। सूरज की गुनगुनी और नर्म किरणें समुद्र के ठण्डे झाग पर पड़ीं और समुद्र कन्या को मृत्यु का अहसास भी नहीं हुआ। उसने चमकता सूरज देखा और उसे सिर के ऊपर स्वर्ग के सैकड़ों सुन्दर जीव उड़ते दिखायी दिये—वह उन्हें जहाज़ के सफ़ेद पालों और आकाश के लाल बादलों के बीच देख सकती थी। उनकी आवाज़ में संगीत था लेकिन वह संगीत इतना अलौकिक था कि उसे कोई मनुष्य नहीं सुन सकता था, वैसे ही जैसे कोई मनुष्य उन्हें देख भी नहीं सकता था। बिना पंखों के वे हवा में उड़ते जा रहे थे। समुद्र-कन्या को लगा कि उसकी काया उनके जैसी ही है और वह झाग से ऊपर और ऊपर उठती जा रही है।

"मैं कहाँ जा रही हूँ ?" उसने पूछा और उसकी आवाज़ भी उन्हीं जीवों जैसी गूँजी—इतनी अलौकिक कि कोई भी धरती का संगीत उसकी बराबरी का नहीं था।

"हवा की बेटियों के पास !" औरों ने जवाब दिया। "समुद्र-कन्या की आत्मा अमर नहीं होती और जब तक वह किसी मनुष्य का प्रेम न पा ले, वह अमर हो भी नहीं सकती। उसका बाहरी अस्तित्व किसी और की शक्ति पर निर्भर करता है। हवा की बेटियों की भी इसी तरह अमर आत्मा नहीं होती लेकिन वे अच्छे कामों से इसे प्राप्त कर सकती हैं। हम गर्म देशों में जाते हैं जहाँ घातक हवा लोगों की जानें ले लेती है। वहाँ हम ठण्डक लाते हैं। हम हवा में फूलों की खुशबू फैलाते हैं और स्वास्थ्य और ताज़गी लाते हैं। तीन सौ सालों तक सभी अच्छे काम पूरे करने के लिए संघर्ष करने के बाद हमें अमर आत्मा मिलती है और हम मनुष्य के इस आनन्द के हक़दार बन पाते हैं। तुम हो समुद्र कन्या, तुमने अपने पूरे दिल से हमारे जैसे ही लक्ष्य के लिए संघर्ष किया है—तुमने कष्ट झेले हैं। तुमने अपने अच्छे कामों से अपने आपको अलौकिक विश्व तक ऊपर उठा लिया है। और तुम तीन सौ सालों बाद अमर आत्मा प्राप्त कर सकती हो।"

समुद्र-कन्या ने अपनी गौरवान्वित आँखें सूरज देवता की ओर उठायीं और पहली बार उसकी आँखों में आँसू आ गये। जहाज़ पर फिर से जीवन और शोर-शराबा था। उसने देखा कि राजकुमार और उसकी पत्नी उसे तलाश रहे हैं और दुख से मोतियों जैसे झाग को देख रहे हैं जैसे कि वे जानते हों कि वह

समुद्र में कूद गयी थी। अदृश्य रूप में ही उसने दुल्हन का माथा चूमा। राजकुमार को पंखे से हवा की और हवा में उड़ते अलौकिक गुलाबी बादल पर हवा के दूसरे बच्चों के साथ बैठ गयी।

"तीन सौ साल बाद हम स्वर्ग में चलेंगे।"

"हम वहाँ पहले भी जा सकते हैं।" हवा की एक बेटी फुसफुसाकर बोली, "हम अदृश्य रूप में मनुष्यों के घरों में घुस जाते हैं जिनमें बच्चे होते हैं। हर उस दिन के साथ, जब हमें कोई ऐसा बच्चा मिलता है, जो अपने माता-पिता को खुशी देता है और उनका प्यार पाता है, हमारे तीन सौ साल का समय कम होता जाता है। बच्चा नहीं जानता कि हम कब कमरे में आ जाते हैं और जब हम बच्चे के व्यवहार पर खुशी से मुस्कुराते हैं तब तीन सौ सालों में से एक साल कम हो जाता है। लेकिन जब हम किसी बदमाश या दुष्ट बच्चे को देखते हैं तो हम देख के आँसू बहाते हैं क्योंकि हर आँसू के साथ हमारी परीक्षा की अवधि में एक दिन बढ़ जाता है।"

ोखक और महान बाल साहित्यकार **हैंस**
(जन्म 2 अप्रैल 1805, निधन 4 अगस्त
ानाने का काम करते थे तो माँ कपड़े धोने
महानायक बचपन में अपने छोटे-से घर में
ो इस रूप में पाता था—"जूते बनाने की
सोने की बेंच से ही मेरा वह कमरा भर
दीवारें खूबसूरत चित्रों से सजी हुई
ों में सुन्दर प्याले, गिलास और सजावटी
स ही एक खिड़की और दिलचस्प कहानियों
ताबों से भरी एक आलमारी थी...दरवाज़े
कर मुझे यही लगता जैसे मैं किसी आर्ट
आरंभिक कहानियों के प्रकाशन के बाद
ता, उनकी अभिनव कल्पना और कथाकथन
न्हें बाल कथा साहित्य की दुनिया का सबसे
या।

उनके जिगर में कैंसर हो जाने के बाद भी
ासन्न और जीवन के प्रति आशावान बने
को उन्होंने अपना जन्म दिवस धूमधाम से
अगस्त 1875 को वह अचानक ही चल
ाके पास उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने के
स डेनमार्क के तत्कालीन राजा और रानी
रबारी उपस्थित थे। उनके शोक में कोई
ि पूरा डेनमार्क रोया था।

ाम से उन्होंने मानवता, सच्चाई, भाईचारा
श्वत मूल्यों की वकालत की और 'उपदेशक'
हीं मानवीय गुणों, सहज सौन्दर्य बोध तथा
वेत्रता के कारण पिछली डेढ़-दो शताब्दी में
ाश्व की सौ से अधिक भाषाओं में अनुवाद
अपार लोकप्रियता के प्रमाण हैं।

ण्डरसन की श्रेष्ठ कहानियाँ (दो भागों में)
देमी द्वारा इस प्रकाशन आयोजन का भारतीय
ारा अवश्य ही स्वागत होगा।

चित्र : सुरेन्द्रपाल सिंह (भाग दो)

हैंस एण्डरसन की कहानियाँ (दो भागों में) प्रस्तुत करते हुए साहित्य अकादेमी को इस बात का हर्ष है कि इस महत्त्वपूर्ण कार्य को पूरा करने का दायित्व **डॉ. हरिकृष्ण देवसरे** (जन्म 1940) ने लिया। डॉ. देवसरे हिन्दी बाल साहित्य पर कार्य करने वाले विद्वानों में महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। आपने हिन्दी बाल साहित्य पर अपना शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कर जबलपुर विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आप 1960 में आकाशवाणी की सेवा में आये। आपने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य से सम्बन्धित अनगिनत लेख लिखे और इस दिशा में मार्गदर्शन भी दिया। 1984 में आकाशवाणी से स्वैच्छिक अवकाश प्राप्त कर आप टाइम्स ऑफ़ इण्डिया की बाल पत्रिका 'पराग' के संपादक बने। 1991 में इस कार्य से मुक्त होकर आप इन दिनों स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं।

स्वतंत्र लेखक के रूप में डॉ. देवसरे ने दो सौ पचास से अधिक पुस्तकों की रचना की है। आपने दूरदर्शन के लिए दस से अधिक धारावाहिकों का लेखन किया है एवं कई वृत्तचित्रों के लेखन-निर्देशन से जुड़े हुए हैं। आपकी पाँच टेलीफ़िल्में प्रसारित हो चुकी हैं। डॉ. देवसरे ने अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष (1979) में *बच्चों की सौ कविताएँ, बच्चों के सौ नाटक* और *बच्चों की सौ कहानियाँ* प्रकाशित कर हिन्दी बाल साहित्य प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। आप भारत की उन संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हैं, जो बाल साहित्य लेखन तथा इसके समग्र विकास से जुड़ी परियोजनाएँ कार्यान्वित करती हैं। आपकी कई कृतियों के अनुवाद भारतीय भाषाओं में हो चुके हैं तथा आप कई संस्थाओं से सम्मानित एवं पुरस्कृत हैं जिनमें हिन्दी अकादमी, दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान परिषद, दिल्ली, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ प्रमुख हैं। आपने साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित कई कृतियों के अनुवाद किये हैं और उसी क्रम में *हैंस एण्डरसन की कहानियाँ* (दो भागों में) तथा *ग्रिम बन्धु की कहानियाँ* (दो भागों में) सम्मिलित हैं। आशा है, उनके द्वारा अनूदित प्रस्तुत कृति न केवल बाल पाठकों को बल्कि कहानियों में रुचि रखनेवालों को भी अच्छी लगेगी।

मूल्य : 145 रुपये (प्रति भाग)



ISBN 81-260-0505-X
9 798126 005054